रक्सौल : अतीत व वर्तमान

रक्सौल नगर के उद्भव व क्रमागत विकास पर संदर्भ पुस्तक

- कन्हैया प्रसाद

लेखक, शिक्षक, शिक्षाविद व पत्रकार

This is a digital copy of first edition of the reference book originally published in 1979 on evolution and growth of Raxaul (a sub-divisional town in East Champaran district of state of Bihar in India situated on India-Nepal border).

The work is a unique piece of research, a case study on evolution and growth of an urban settlement in nineteenth and first half of twentieth century in the region and how interplay of forces of British colonialism and Indian nationalist movement shaped migration and the trade centre with a particular note on the role played by the British officer Mr Fletcher and the Scottish missionary Dr Duncan in shaping course of the town.

The author, Late Shri Kanhaiya Prasad had a very humble beginning and had no academic or professional background in urban studies or any research training hence the depth and rigour of his research work is indeed commendable.

This book will always remain useful for the local people in the region. For researchers, this documented piece of record on Raxaul will certainly serve as a reliable reference point for comparative analysis and assessing changes in any future study on the town.

- Umesh Prasad
December 2022

रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान

(सन्दर्भ-पुस्तक)

न

कन्हैया प्रसाद

रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान

लेखक : कन्हैया प्रसाद

नागा रोड, रक्सौल (पू० चम्पारण)

प्रकाशक : शशिकान्त प्रसाद

नागा रोड, रक्सौल (पू० चम्पारण)

प्रथम संस्करण : १५ अगस्त १९७९

(एक हजार प्रतियाँ)

मुद्रक : अर्चना प्रेस, रक्सौल

मूल्य : दस रुपये

रक्सौल : अतीत और वर्तमान

समर्पण

शिक्षा-प्रेमी, कलाकार एवं प्रखर समाज - सेवी
डा. पी. डी. सिन्हा, एम. डी. (ऑस्ट्रिया), एफ. सी. सी. पी. (भारत);
जिनकी सतत प्रेरणा से इस पुस्तक
का प्रणयन हो सका—
को सादर-सस्नेह
समर्पित

श्री गगनदेव प्रसाद सिंह

प्रधानाध्यापक, फूलचन्द साह रा० मध्य विद्यालय, रक्सौल; उपाध्यक्ष पूर्वी चम्पारण जिला प्राथमिक शिक्षक संघ; रक्सौल के साहित्यिक जागरण में अप्रतिम योगदान देनेवाले: अपने दायित्व के प्रति सतत सजग-जागरूक, जिनकी कर्मठता ने मध्य विद्यालय, रक्सौल को चतुर्दिक प्रगति दी है।

श्री ओम्प्रकाश राजपाल

सिन्ध से विस्थापित, गैर-हिन्दी भाषी, पर हिन्दी के कट्टर समर्थक; रक्सौल-सिन्धी समाज के अध्यक्ष, लोक-समिति, रक्सौल के संयोजक; रक्सौल नगर जनता पार्टी (तदर्थ) के अध्यक्ष, कस्तूरबा क० उ० वि० के उपाध्यक्ष, गौशाला के भू० पू० उपाध्यक्ष एवं नगर की अन्य अनेक संस्थाओं को जिनका बौद्धिक-शारीरिक-आर्थिक योगदान सुलभ है।

श्री रामनारायण राम लोहिया

समाज-सेवी, कांग्रेस के प्रबल समर्थक, प्रखर आर्यसमाजी,
जिन्होंने लगातार दो दशकों तक आर्यसमाज,
रक्सौल के प्रधान के दायित्वपूर्ण
पद को सुशोभित किया है।

श्री निर्गुण राम

स्वतन्त्रता-सेनानी, रामगढ़वा थाना कांग्रेस (आई०) कमिटी के अध्यक्ष, रक्सौल-रामगढ़वा की सामाजिक गतिविधियों में समान अभिरुचि लेनेवाले; रामगढ़वा को-ऑपरेटिव कॉलेज के कक्ष-निर्माता; रक्सौल आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान, जिनके कार्यकाल में रक्सौल आर्य समाज का स्वर्ण जयन्ती-समारोह शालीनता के साथ सम्पन्न हुआ।

महान शिक्षा-प्रेमी, उदारमना श्री महावीर प्रसाद जी, सचिव
श्री ठाकुर राम कैम्पस, वीरगंज; त्रिभुवन विश्वविद्यालय-सिनेट के
भूतपूर्व सदस्य, गोरखा दक्षिण बाहु पदक प्राप्त, जिन्होंने लाखों
रुपये के व्यय से वीरगंज त्रियुद्ध बहूद्देश्यीय विद्यालय
तथा श्री ठाकुर राम कैम्पस का निर्माण कराया,
जिन श्री महावीर प्र० जी ने रक्सौल की
परसौनी गद्दी में दीर्घकाल तक व्य-
वसाय के क्षेत्र में एक कीर्ति-
मान स्थापित किया।

श्री हरि प्रसाद् गिरि, एम० ए० (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

नेपाल के यशस्वी उद्योगपति; नेपाल उद्योग संघ तथा वीरगंज उद्योग-वाणिज्य संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष; नेपाल रेडक्रॉस सोसाइटी (पर्सा) के उपाध्यक्ष; नेपाल राष्ट्र बैंक के भूतपूर्व डाइरेक्टर; त्रिभुवन विश्वविद्यालय के भूतपूर्व सिनेट-सदस्य; लायन्स इन्टरनेशनल के भूतपूर्व डेपुटी गवर्नर (डि० ३२२ ए०) तथा वीरगंज की अन्य अनेक सामाजिक - सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध, जिन्होंने रक्सौल के लायन्स-लियो क्लब के उद्भव-विकास में अहम् भूमिका अदा की ।

श्री चिरंजीवी लाल सरावगी

नेपाल केमिकल एण्ड सोप इन्डस्ट्रीज प्रा० लि०, वीरगंज के वर्किङ्ग डाइरेक्टर; अपनी व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद नगर के सामाजिक कार्यों के निमित्त अधिकतम ऊर्जा एवं समय समर्पित करनेवाले; जेसीज वीरगंज के भूतपूर्व अध्यक्ष; लायन्स कलब वीरगंज के भूतपूर्व सक्रिय सचिव; नेपाल रेडक्रॉस सोसाइटी, वीरगंज शाखा के सचिव; जिनका रक्सौल के साहित्य-कारों-पत्रकारों को सदा स्नेह-प्यार मिलता रहा है :

लायन **श्री गोपाल प्रसाद,** स्नातक (पटना विश्वविद्यालय)

वीरगंज उद्योग वाणिज्य संघ के सचिव; पर्सा जिला शिक्षा-समिति के सदस्य;
वीरगंज, अशोक ट्रेडिंग क० प्रा० लि० के डायरेक्टर; नेपाल-रेड-
क्रास सोसाइटी के आजीवन सदस्य तथा त्रियुद्ध बहूद्देश्यीय
विद्यालय, वीरगंज के अध्यक्ष— जिन्होंने प्रवेशिका स्तर
तक रक्सौल में शिक्षा ग्रहण की, जिन्हें वीरगंज
की मिट्टी से उतना ही प्यार है, जितना कि
रक्सौल की मिट्टी से ।

श्री शंकर लाल केडिया (सुपुत्र–श्री बृजलाल केडिया)

नेपाल रेडक्रॉस सोसाइटी के आजीवन सदस्य; वीरगंज कन्या उच्च विद्यालय एवं वीरगंज नेत्र-चिकित्सालय के संस्थापक; भूतपूर्व अध्यक्ष लायन्स क्लब (वीरगंज); जिन्होंने आर्य समाज, रक्सौल की स्वर्ण जयन्ती-स्मारिका (१९७१ ई०) के विमोचन-समारोह में अहम् भूमिका अदा की ।

सम्प्रति मुजफ्फरपुर के शानदार सिनेमा-हॉल

'संजय-टॉकिज' के लिजी-प्रोप्राइटर

श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह,

जिन्होंने नेहरू-युवा-विचारमंच, रक्सौल के अध्यक्ष; महदेवा-सहयोग-समिति-के सचिव; रक्सौल-व्यापार मंडल के डाइरेक्टर; नेहरू-युवा-क्रीड़ा परिषद्, रक्सौल के अध्यक्ष तथा प्रखंड-सहकारिता मंत्रियों के प्रतिनिधि की हैसियत से बी० डी० सी०, रक्सौल के सक्रिय सदस्य के रूप में वर्षों अहम् भूमिका अदा की; जिनकी रक्सौल के सामाजिक-साहित्यिक कार्यकलापों को बेसब्री से प्रतीक्षा है।

श्री रघुनाथ प्रसाद भरतिया

रक्सौल नगर के सुशिक्षित एवं सम्भ्रांत नागरिक, कस्तूरबा
क० उच्च विद्यालय की प्र० का० स० तथा रक्सौल
नगर लोक-समिति के अध्यक्ष एवं रक-
सौल की अन्य कई संस्थाओं
से सम्बद्ध, जिनकी हिन्दी साहित्य
परिषद्, रक्सौल को अपरिमित
स्नेह-छाया मिलती
रही है।

दो अन्य सहयोगी

(जिनके ब्लॉक शीघ्रता में उपलब्ध नहीं हो सके)

श्री गिरिधारी लाल लाठ

प्रखर समाज-सेवी, विभिन्न संस्थाओं को अपनी
अधिकतम ऊर्जा प्रदान करनेवाले वीरगंज के
लोकप्रिय नागरिक, जो वर्षों से
रक्सौल में लकड़ी-व्यवसाय से
जुड़े हैं ।

श्री रामजी लाल अग्रवाल

(स्नातक-बिहार विश्वविद्यालय),
वीरगंज को अनेक सामाजिक संस्थाओं के क्रियाशील सह-
भागी साहित्य प्रेमी, सुवक्ता एवं सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व
से युक्त, जिन्होंने विश्व का विस्तृत भ्रमण
किया है और जिनका लेखक
को हजारीमल उच्च विद्यालय,
रक्सौल में अंतरंग सहपाठी
के रूप में साहचर्य प्राप्त
हुआ है ।

प्राक्कथन

१९७८ ई० के आखिर में कुछ मित्रों की राय से 'रक्सौल : साहित्य, कला और संस्कृति'—नाम से मैंने एक पुस्तक लिखने की योजना बनायी। पर इस संदर्भ में जब सूचनाएँ एकत्र करने लगा तो मुझे महसूस हुआ कि इस विषय पर पुस्तक तो नहीं, हाँ, तीस-चालीस पृष्ठों की एक छोटी-मोटी पुस्तिका अवश्य तैयार की जा सकती है। इसी बीच जिला के जाने-माने साहित्यकार श्री रमेशचन्द्र झा से मुलाकात हुई। उन्होंने शीर्षक बदलकर 'रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान' कर देने का सुझाव दिया।

अस्तु, इस पुस्तक को विस्तृत आयाम मिला। पर साथ ही कठिनाइयाँ भी बढ़ गईं। पुस्तक के 'अतीत' के लिए सामग्री जुटाने में अपेक्षाकृत अधिक श्रम करना पड़ा। चूंकि मात्र रक्सौल बाजार का ही नहीं, बल्कि पूरे रक्सौल क्षेत्र का क्रमबद्ध इतिहास लिपिबद्ध करना था, इसलिए सूचनाएँ एकत्र करने के क्रम में रक्सौल बाजार के कुछ व्यक्तियों, अधिकारियों तथा संस्थाओं के अतिरिक्त कई गांवों के वयोवृद्ध लोगों से भी सम्पर्क साधना पड़ा। कुछ महत्व-पूर्ण सूचनाओं के लिए पटना, दिल्ली और इंगलैंड तक पत्राचार किया। इन सूचनाओं को एकत्र करने में काफी खट्टे-मीठे अनुभव हुए।

एक लम्बी अवधि तक रामगढ़वा-क्षेत्र रक्सौल थानान्तर्गत रहा है। इस तरह रामगढ़वा का इतिहास बहुत कुछ रक्सौल का इतिहास है। इसलिए रामगढ़वा-क्षेत्र के भी कई विशिष्ट लोगों से मुलाकातें कर मैंने सूचनाएँ एकत्र कीं। पर इन सारे तथ्यों को लिपिबद्ध करने के क्रम में मैंने महसूस किया कि सामग्री इतनी एकत्र हो गयी है कि पुस्तक अपने पूर्व निश्चित कलेवर से काफी बढ़ जायेगी। इसलिए उस भाग का प्रकाशन सम्प्रति स्थगित कर देना पड़ा है। कुछ और विस्तृत सूचनाएँ एकत्र कर उसे पुस्तक के दूसरे खंड के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। हाँ, कहीं-कहीं इस खंड में भी राम-गढ़वा क्षेत्र की चर्चा आ ही गयी है। खासकर, स्वतन्त्रता-संग्राम-प्रकरण में, जिसे अलग कर पाना कुछ कठिन-सा था।

रक्सौल का आधी शताब्दी से ऊपर का इतिहास हरदिया कोठी का इतिहास है—यदि ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं। सन् १८६२ से चम्पारण में महात्मा गांधी के आगमन तक, अर्थात् १९१७ ई० तक—रक्सौल

क्षेत्र पर हरदिया कोठी के साहबों का लगभग पूर्णतः वर्चस्व था। वे इस इलाके के बाईस मौजे के मालिक थे। रक्सौल बाजार का जन्म तो बहुत बाद में हुआ है। लगभग साठ वर्षों तक इस इलाके के लोगों का जीवन इन साहबों के जीवन से जुड़ा था। इसलिए इस लम्बी अवधि का इतिहास कुछ विस्तार के साथ देने की आवश्यकता महसूस हुई है। इस संदर्भ में एक बात उल्लेखनीय है कि जब मैं रामगढ़वा में रह रहे कोठी के अन्तिम मुलाजिम श्री जंगबहादुर सिंह से निलहे साहबों के संदर्भ में कुछ सूचनाएँ प्राप्त करने के उद्देश्य से मिला, तो उन्होंने सूचनाएँ तो दी हीं, सन् १९१७ में इंगलैंड में छपी सात सौ से अधिक पृष्ठोंवाली एक वृहदाकार पुस्तक भी दी, जिसमें बंगाल, आसाम, बिहार और उड़ीसा के विभिन्न पहलुओं पर तो प्रकाश डाला ही गया है, चम्पारण की नील की कोठियों का संक्षिप्त इतिहास भी है। पर मेरा दुर्भाग्य कि किसी पूर्व पाठक-बन्धु ने हरदिया कोठी से संबंधित पृष्ठों को फाड़कर उन्हें अपनी निजी सम्पत्ति बना लिया था! हरदिया कोठी के इतिहास लिखने के लिए मैं प्रामाणिक आधार चाहता था। इसलिए मैंने भारत के आठ प्रमुख पुस्तकालयों में इस पुस्तक तथा इसकी अनुक्रमणिका के अनुसार पृष्ठों की चर्चा करते हुए पत्र लिखे। कुछ के पास जवाबी स्मार-पत्र भी दिए। पर डेढ़ महीना प्रतीक्षा करने के बाद भी कहीं से 'हाँ' या 'ना' में जवाब तक नहीं आया। फिर ४ फरवरी १९७९ को मैंने इस संदर्भ में इंगलैंड की 'ज्यॉग्राफिकल सोसाइटी' के पास एक पत्र लिखा, इसलिए कि पुस्तक के लेखक मि० ब्लाइन कभी इस 'सोसाइटी' के 'फेलो' रह चुके थे, ऐसा इस पुस्तक से ही ज्ञात हुआ। वहाँ यह पुस्तक नहीं थी, पर इस संस्था ने इंगलैंड में कुछेक संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित कर यह पता लगा ही लिया कि यह पुस्तक कहाँ उपलब्ध है, और मेरा पत्र सीधे वहाँ भेज दिया। २३ फरवरी १९७९ को—अर्थात् मेरे पत्र भेजने के उन्नीस दिनों के अन्दर ही—मेरे पास संबंधित पृष्ठों की 'फोटोस्टैट' कापी पहुंच गयी। मैं समझता हूँ संस्था का इसमें दो सौ रुपये से अधिक का व्यय हुआ होगा। मैं 'ज्यॉग्राफिकल सोसाइटी' के सम्बद्ध अधिकारी तथा 'इंडिया लाइब्रेरी एंड रेकर्ड्स' विभाग की प्रबंधक मिस सी० आर० पिकेट के प्रति किन शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापित करूँ, समझ में नहीं आता। मैं सोचता हूँ, हममें ऐसी गुणवत्ता कब आयेगी!

मैं उपर्युक्त प्रसंग की चर्चा कर रक्सौल की कई संस्थाओं तथा कार्यालयों से सूचनाएँ प्राप्त करने में सफल हुआ हूँ। रक्सौल के कार्यालयों में आंकड़े तथा अन्य सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए मुझे तीन-तीन, चार-चार बार तक

जाना पड़ा था। फिर भी कई कार्यालयों से मुझे निराशा ही हाथ लगी थी। ऐसे कार्यालयों में जब अन्तिम बार पहुँचता तो किसी-न-किसी तरह उपर्युक्त प्रसंग उपस्थित कर देता और तत्क्षण मुझे सूचनाएँ प्राप्त हो जातीं।

मैं जानता हूं कि रक्सौल में ऐसे कई व्यक्ति हैं, जिनके पास रक्सौल बाजार की भूमि से संबंधित पूरे रेकार्ड्स मौजूद हैं, जिन्हें देखकर बाजार का इतिहास लिखने में पर्याप्त सुविधा होती, पर मुझे महसूस हुआ कि ऐसे लोगों को लगा कि रेकार्ड्स दिखला देने से उनसे संबंधित किसी बड़े रहस्य का उद्घाटन हो जायेगा! अतः सूत्र जोड़ने में काफी कठिनाई हुई।

जिन व्यक्तियों से मैंने अन्तर्वीक्षाएँ लीं, अन्य सूचनाएँ तथा आवश्यक पुस्तकें प्राप्त कीं, उनके प्रति आभार प्रकट नहीं करना कृतघ्नता होगी। वैसे लोग हैं—सर्वश्री हरि प्र० जालान, ताराचन्द अग्रवाल, महादेव सीकरिया, इब्राहिम मियाँ, महेन्द्र सिंह, रामजीवन प्र०, गौरीशंकर प्र०, द्वारिका प्र० चौधरी, दारोगा महतो (लछनौता), जयपाल महतो (सेनुवरिया), मजीद हुसैन (डुमरिया), महमद जान (परेउआ), महमुद मियाँ (कनना), वीर शमशेर राउत (चैनपुर), जंगबहादुर सिंह (रामगढ़वा), वैद्यनाथ प्र०(इनरवा), महावीर प्र० (निर्माता-ठाकुर राम कॉलेज, वीरगंज), बी० के० शास्त्री, लक्ष्मी सिंह, ऋषिराम आचार्य, भरत प्र० आर्य, अमला प्र०, आदि। जिन व्यक्तियों से मैंने मात्र उनके ही सम्बन्ध में वैयक्तिक सूचनाएं एकत्र कीं, उनके नामों की सूची देना यहाँ आवश्यक नहीं।

अपने मित्र श्री गगनदेव प्र० सिंह के प्रति कृतज्ञता क्या ज्ञापित करूँ जो मेरे अपने हैं, अभिन्न हैं, जिन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साह-वर्द्धन किया है, सुझाव-परामर्श दिए हैं और समय निकालकर मेरी पांडुलिपि देखी है।

मैं मानता हूँ कि उस कृति का कोई महत्व नहीं, जो आलोचना से वंचित रह जाय। इस पुस्तक की आलोचना की भी मैं आशा रखता हूं। पाठकों के लिखित सुझाव-परामर्श सादर-सहर्ष आमंत्रित हैं, जिससे कि अगला संस्करण संशोधित-परिवर्द्धित रूप में आपके सामने आ सके। वैसे, प्रयास किया गया है कि पुस्तक में प्रामाणिक तथ्य ही प्रस्तुत किए जायं। इसके लिए महत्व-पूर्ण तथ्यों के संदर्भ में मैंने तीन-तीन चार-चार व्यक्तियों से बातें कीं और जो बातें आपस में मिल गईं, उन्हें ही पुस्तक में देने का प्रयास किया है। फिर भी त्रुटियाँ हो सकती हैं, होंगी। इन त्रुटियों के प्रति ध्यान आकृष्ट करने वालों के प्रति मैं हृदय से अनुगृहीत होऊँगा। इस पुस्तक में मैंने जिन विषयों को स्पर्श किया है, उन पर सम्पूर्ण सामग्री देने का मैं दावा नहीं करता। कुछ

प्रामाणिक सूचनाओं के अभाव में कतिपय विन्दुओं पर प्रकाश डालने में कठिनाई होने के कारण उन्हें छोड़ देना ही मैंने उचित समझा है।

इस पुस्तक में सैकड़ों व्यक्तियों के नामों की चर्चा आयी है। इतनी वृहत् सूची में कुछेक नाम छूट सकते हैं, छूटे होंगे। वैसे व्यक्तियों से भूल के लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूं।

इसे मैंने संदर्भ-पुस्तक के रूप में लिखने का प्रयास किया है। पर यह मैं मानता हूँ कि सरकारी स्तर पर जो संदर्भ पुस्तकें (Reference books)—सांख्यिकी-संबंधी पुस्तकें, जिला गजेटियर, आदि प्रकाशित होती हैं, उनमें लेखक को सरकारी स्तर पर बहुत सारे तथ्य एवं आंकडे आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इस पुस्तक के लिखने के क्रम में आंकड़े तथा सूचनाएँ एकत्र करने में बड़ी कठिनाई हुई है। कुछेक प्रकरणों के संदर्भ में मात्र लोगों से पूछताछ पर ही निर्भर करना पड़ा है। फिर भी वे प्रामाणिक होने के निकट हैं, ऐसा मैं मानता हूँ।

रक्सौल और वीरगंज के अपने आत्मीय सुहृद्जनों के प्रति अमित आभार, जिनके हार्दिक सहयोग के अभाव में इस पुस्तक का प्रकाशन कठिन ही नहीं, असंभव-सा था।

कन्हैया प्रसाद

रक्सौल,
रक्षा-बन्धन (२०३६)
(८ अगस्त, १९७९)

कृति और कृतिकार

–श्री रमेशचन्द्र झा

प्रतिभा, अभ्यास तथा अध्ययन, ये तीन मान्यतायें निरुपति हैं किसी कवि के लिए, कहिए किसी साहित्यकार के लिए। ये विशेषताएँ पर्याप्त हैं सफलता के लिए, सफलता के शिखर तक जाने के लिए। श्री कन्हैया प्रसाद एक ऐसे ही प्रतिभा-सम्पन्न रचनाकार हैं, अभ्यास जिनका सहयोगी है और अध्ययन संस्कार।

जीवन के तीखे-मीठे अनुभव साक्षी हैं कि अक्सर परिस्थितियाँ जीवन को मोड़ती आयी हैं, लेकिन कभी-कभी जिन्दादिल जिन्दगी भी आंधियों से जूझकर मोड़ देती है परिस्थितियों को। श्री कन्हैया प्रसाद संघर्षशील एवं सृजनशील पौरुष के जीवन्त प्रतीक हैं। अपनी साधना, श्रम-संघर्ष से जिन्दगी की विपरीत परिस्थितियों को ही मोड़कर रख दिया कन्हैया बाबू ने, अपने भविष्य के संकल्प को निश्चित दिशा-बोध से घोषित कर दिया कि जीवन ऐसे जिया जाता है, जीवन की कल्पना ऐसे की जाती है।
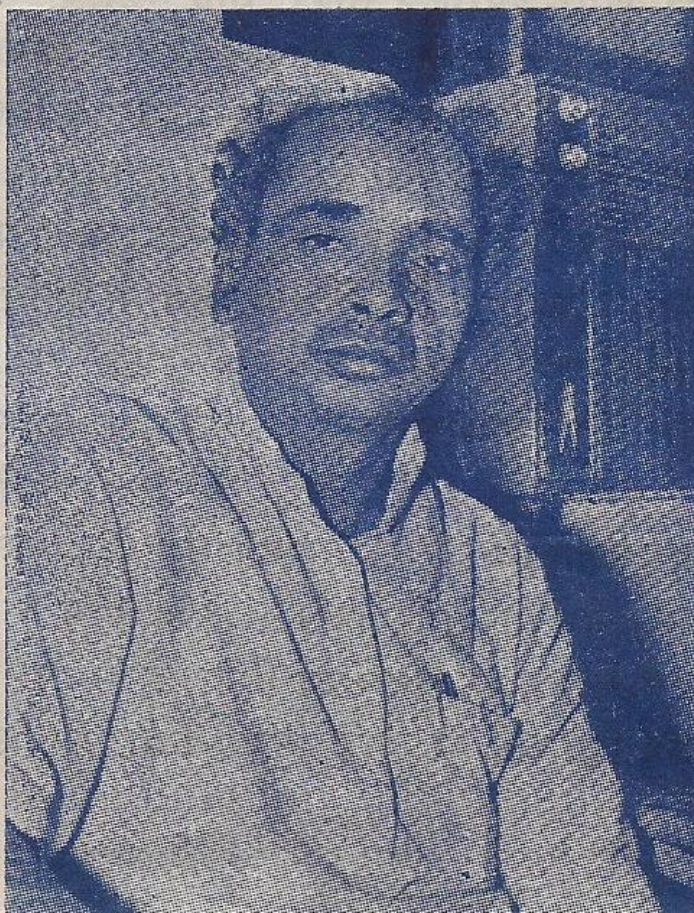
कृतिकार

श्री रमेशचन्द्र झा

महान् अगस्त क्रांति (१९४२ ई०) के तूफान भरे दिन, दमन की आशंका से चिन्तित रातें। कन्हैया जी का परिवार ब्रिटिश प्रशासन की शनि

दृष्टि से आतंकित होकर मढ़ौड़ा (सारन) से चला भारत-नेपाल की सीमा-भूमि रक्सौल की ओर आश्रय-भूमि की तलाश करता हुआ। कन्हैया जी ने अभी चार-पाँच बसंत ही देखे होंगे, बिलकुल कुँअर कन्हैया, दूधिया दाँत, फूल-सी आँखें, मासूम हथेलियों पर मढ़ौड़ा की बनी मशहूर मार्टन की मीठी-मोहक टाफियाँ।

सात-आठ वर्ष की उम्र रही होगी कन्हैया जी की कि माता का सशक्त सम्बल हाथ से जाता रहा। वह आदि शक्ति ही शेष न रही, जो उनके शरीर की शिराओं को अपने जीवन-रस से अभिसिंचित करती आ रही थी। वह निर्झरिणी समय की चिता पर विलीन हो गयी और कन्हैया जी के लिए—

"मँझधार तक पहुँचना तो हिम्मत की बात थी,
साहिल के आस-पास ही तूफान आ गया।"

लेकिन आबदार मोतियों की तलाश के लिए, किनारे पर आनेवाले तूफान से वे तनिक विचलित न हुए, बीच धार की ओर बढ़ते रहे। यह सत्य है कि स्वप्निल कल्पनाएँ अक्सर बिखर जाती हैं. संकल्पशील कल्पनाओं के धनी कन्हैया बाबू के छात्र-जीवन को एक तेज धक्का लगा, लेकिन इस मोर्चे पर भी पराजित न किया जा सका।

हजारीमल हाई स्कूल (रक्सौल) से प्रवेशिका-परीक्षा योग्यता-छात्र-वृत्ति के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद आई० एस-सी० तक की शिक्षा का आधार बना श्रमशील जीवन। यह परीक्षा भी आशातीत सफलता के साथ बीत गयी। अध्ययन-अध्यापन के कर्मशील जीवन ने कन्हैया बाबू जैसे व्यक्ति को प्रांजल व्यक्तित्व दिया, व्यक्तित्व सादर स्नेह-श्रद्धा के योग्य।

स्वभाव की शालीनता, प्रतिभा एवं सौजन्य के आधार पर हजारीमल हाई स्कूल के विज्ञान-शिक्षक (१९५५ ई०) नियुक्त हुए। एक अध्ययनशील विद्यार्थी की आत्मा उनके भीतर पलती रही। साहित्य के अंकुर सुगबुगाते रहे, धरती की मोटी पर्त को भेदकर बाहर निकल आने को। हिन्दी साहित्य के प्रति अभिरुचि ने अनुप्रेरित किया और बिहार विश्वविद्यालय से स्वतंत्र रूप में १९६२ ई० में ऑनर्स के साथ हिन्दी स्नातक हुए। हजारीमल हाई स्कूल (रक्सौल) में हिन्दी और विज्ञान—दो विपरीत विषयों के अध्यापन का सुयोग है कन्हैया बाबू को।

सन् १९५७ से ही लगातार विद्यालय-पत्रिका 'अरुणिमा' का सम्पादन करनेवाले कन्हैया जी ने पत्रिका के दशाब्दी विशेषांक (१९६८) में साहित्य के प्रति अनुराग एवं अपनी कार्य-क्षमता का सुपरिचय दिया है। मेरा अनुमान है कि 'अरुणिमा' के सम्पादित अंक ही उन्हें मुद्रण-कला का सम्यक्

ज्ञान, कुछ नये अनुभव दे गए। इस प्रकार इन्होंने अर्चना प्रेस की स्थापना (१९७२ ई०) कर 'सेतु' हिन्दी पाक्षिक (१९७३ ई०) फिर 'सेतु' का ही अंग्रेजी संस्करण The Setu का सम्पादन-प्रकाशन (१९७६ ई०) आरंभ किया पश्चात् इनके नाम क्रमशः 'सांस्कृतिक सेतु' एवं The Cultural Bridge कर दिए गए।

आज के भौतिकवादी युग की देन है भागना, भागते जाना। ऐसे कितने लोग हैं जो सांस्कृतिक-साहित्यिक या सामाजिक कार्यों के लिए अपना समय निकाल पाते हैं? कन्हैया बाबू इसके अपवाद हैं। एक अध्येता साहित्यकार, एक प्राणवान-शिल्पी, एक कर्त्तव्य-चेता व्यक्तित्व कन्हैया जी के व्यक्तित्व के साथ आरम्भ से ही विकसित होता रहा है। हिन्दी साहित्य परिषद् (रक्सौल) की ओर से प्रकाशित 'नीलिमा' के कई अंक इनकी लेखनी से सम्पादित होकर हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि सिद्ध हुए।

कर्मशील जीवन के इसी वातावरण के बीच इनके लेखकीय व्यक्तित्व का जन्म ही नहीं, एक स्व-निर्मित व्यक्तित्व का विकास भी हुआ, इसलिए उनकी दृष्टि एक चिन्तक की दृष्टि है, अनुभव अनुभूति का प्रतीक है।

हजारीमल हाई स्कूल के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक स्व० श्री प्रेमचन्द्र जी के नागरिक अभिनन्दन के अवसर पर 'सांस्कृतिक सेतु' का 'प्रेमचन्द्र : अभिनन्दन अंक' सम्पादित कर आपने एक गौरवमय परम्परा का शुभारम्भ किया। इस परम्परा को नया अवदान मिला 'नीलिमा' के 'श्रीलाल भरतिया : स्मृति अंक' से। इस विशेष अंक के माध्यम से स्व० श्रीलाल भरतिया का मरणोपरांत मूल्यांकन किया गया। 'नीलिमा' का यह अंक हमारी सांस्कृतिक निधि है।

मुझे स्मरण नहीं कि कन्हैया जी से मेरा परिचय कब-कहाँ हुआ। अगस्त की महान् क्रांति के समय उनका बचपन रक्सौल आया। मेरा किशोर रक्सौल थाना लूट-केस का अपराधी घोषित होकर जेल के भीतर गया, इसलिए परिचय और सम्पर्क की लम्बी कड़ी मेरे और उनके बीच है। इतना स्मरण अवश्य है कि उन्होंने जब कभी किसी रचनात्मक साहित्य के लेखन या सम्पादन की योजना बनायी, मुझे अवगत कराया, विचार दिए, विचार लिए। जिज्ञासु आत्मा की महानता ही उनके संकल्प साकार करती गयी। स्वप्न को सिद्धि का स्वरूप सुलभ होता गया।

× × × ×

औसत कद, माथे पर छोटे-छोटे बाल तरतीब से सजे-सजाये, स्वस्थ मांसल शरीर पर स्वच्छ-सुघर परिधान, धोती-कुरता, दूर-सुदूर तक देखती-

परखती हुई आंखें कभी चिन्ता से थकीं, कभी चिन्तन से झुकीं, निरन्तर कुछ सोचते-गुनते होंठ, उन्नत कपोलों पर विचारों की खिंची लकीरें, यही साधारण रूप-रेखा है भाई कन्हैया जी के व्यक्तित्व की-ऐसी रूप-रेखा जो किसी को भी सहज ही प्रभावित करे, आकर्षित करे।

रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान

यह विश्वास के साथ कहने दिया जाय कि रक्सौल से संबंधित ऐसा कोई संदर्भ नहीं है, जो लेखक की लेखनी से वंचित रह गया है। ऐसे संदर्भ भी आये हैं, जिनका ज्ञान रक्सौल के बहुत कम लोगों को है।

रक्सौल मेरे लिए बहुत ही प्रिय है। मुझे बेहद प्रिय हैं मेरे लोग, मेरे मित्र। मेरे साहित्यकार संस्कार की कर्मभूमि रक्सौल है। इस भूमि के प्रति मेरी आत्मिक अभिरुचि है। इस अन्तरर्ष्ट्रीय नगरी को लेकर बहुत सारी बातें की जा सकती हैं, लेकिन इस पुस्तक के लेखक की तूलिका ने रक्सौल की आकृति पर इतना आकर्षक रंग चढ़ा दिया है, जो कभी मद्धिम न होगा। यह सत्य सर्वमान्य है कि रक्सौल की मिट्टी के भीतर पलनेवाले सांस्कृतिक अंकुर को अपने श्रम-सीकर से पल्लवित रखने का जो संकल्प किया कन्हैया बाबू ने वह एक अध्याय है, इस भूमि के सांस्कृतिक इतिहास का।

कन्हैया जी को लेकर लिखी जानेवाली इन पंक्तियों के लेखन से पूर्व ही वह बहुत आशंकित हुए और आग्रह किया कि कोई अतिशयोक्ति न आये, लेकिन मुझे विश्वास है कि ऐसा कोई वाक्य नहीं आया है जो अतिरंजना से भरा लगे। यदि कृतिकार का मूल्यांकन छोड़कर कृति का ही मूल्यांकन किया जाय तो यह कृति 'रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान' अपने विषय की अकेली मौलिक कृति है। एक नगर विशेष को लेकर कोई अन्य सर्वांगीण कृति मेरे सामने से कभी नहीं गुजरी। कुछ छोटी पुस्तिकायें देश के कई प्रमुख नगरों को लेकर अवश्य प्रकाशित हैं, लेकिन उनका कोई साहित्यिक महत्व नहीं है।

हाँ, 'काशी' को लेकर एक शोध-कृति बहुत पहले प्रकाशित हुई थी श्री विश्वनाथ मुखर्जी की। इधर दिल्ली पर एक संदर्भ ग्रंथ श्री महेश्वर दयाल का आया है। निश्चय ही ये ग्रंथ अत्यन्त ही उल्लेखनीय हैं। 'रक्सौल: अतीत और वर्त्तमान' इसी परम्परा की एक जीती-जागती कड़ी मानी जा सकती है।

रक्सौल एक अन्तर्राष्ट्रीय नगर है, नेपाल की सीमा को स्पर्श करता हुआ एक विचित्र नगर। भारत की ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसकी ध्वनि-प्रतिध्वनि इस भूमि पर सुनने को न मिले। अपने देश का ऐसा कोई प्रदेश

प्रदेश नहीं है जहाँ के लोग इस भूमि पर न मिलें। कुल मिलाकर रक्सौल एक लघु भारत है। प्रस्तुत कृति इस भूमि की गौरव-गाथा ही नहीं, एक बहुरंगी चित्रावली है, जिसकी रेखाएँ अपने आप बोलती हैं। यह कृति इतिहास की आत्मा लिए इतिहास से चार कदम आगे है। सच मानिए, तो यह एक प्रांमाणिक दस्तावेज है बकलम कन्हैया प्रसाद ऐसा दस्तावेज जो समय पर काम आए।

इस ग्रन्थ के लेखन से पूर्व कन्हैया जी से काफी देर तक बातचीत हुई। मेरे भीतर का साहित्यकार सशंकित हुआ। क्षेत्रीय साहित्य के लेखन-प्रकाशन का मेरा निजी अनुभव बहुत ही तीखा रहा है। हिन्दी साहित्य की किसी स्वस्थ कृति के प्रकाशन के बाद उसकी बिक्री को लेकर लम्बी प्रतीक्षा करनी होती है। एक ऐसी कृति, जो एक नगर की विषय-भूमि को लेकर लिखी या प्रकाशित की जाय, उसका क्या परिणाम हो सकता है? मैंने कन्हैया बाबू को अपने अनुभव बताये लेकिन उनकी कल्पना संकल्प का स्वरूप लेकर उभर आयी थी। वह निरन्तर काम करते रहे निष्ठा के साथ, मनोयोग के साथ।

'रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान' हमारे सामने है। कृतिकार के कठिन श्रम का फल है यह ऐतिहासिक ग्रन्थ। इस ग्रन्थ को उपयोगी; तथ्यपूर्ण एवं प्रामाणिक स्वरूप देने के लिए जितना श्रम किया गया है, वह कन्हैया जी के लिए ही संभव था। इस बात को अधिकारपूर्वक कहने दिया जाय कि इस ग्रन्थ के लिए सामग्री-संचयन की प्रक्रिया उन्हें परेशान करती रही है।

इस ग्रन्थ पर मुद्रित मूल्य से कन्हैया बाबू के लेखक को पारिश्रमिक देना कभी संभव नहीं है। उनकी आत्मा का जो रक्त इस ग्रन्थ को अर्पित हुआ है, उसका मूल्यांकन असंभव है।

भाषा का शिल्प, भाषा की एकरूपता, विषय-वस्तु का प्रतिपादन इस कृति की अपनी विशेषताएँ हैं। भाई कन्हैया प्रसाद के अजेय संकल्प को वन्दन, धैर्य को नमन कि पांडुलिपि को ऐसे तराशा गया जैसे कोई महा धैर्यवान मूर्तिकार प्रस्तर-मूर्ति को तराश कर जीवन्त बना देता है। कृतिकार की लेखनी ने इस जीवन्त कृति से रक्सौल की मिट्टी को स्पर्श कर कंचन बना

दिया है। रक्सौल की मिट्टी को नमन, कृतिकार की लेखनी के लिए कोटिशः प्रणाम और कन्हैया जी के लिए मेरे आंतरिक आशीर्वाद, सफल दीर्घजीवन के लिए हमारी शत-शत शुभकामनाएँ।

सुगौली,
९ अगस्त (१९७९)

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	रक्सौल—इतिहास के पृष्ठों पर	२१
२.	क्या नेपाल की सीमा कभी सीवान तक थी ? (सैनिक गतिविधियों का प्रत्यक्षदर्शी यह स्थल)	२४
३.	निलहे साहबों का वर्चस्व, गांधी का आगमन और जनता को शोषण से मुक्ति	३०
४	रक्सौल नामकरण : कुछ अटकलबाजियाँ कुछ तथ्य	३९
५.	निलहे साहबों का स्वर्ग हरदिया कोठी और एक नये नगर का उद्भव	४२
६.	प्रशासन के आइने में रक्सौल	५५
७.	यातायात के गतिशील चक्के : व्यवसाय के बढ़ते चरण	५९
८.	भारतीय कस्टम्स चेकपोस्ट—नेपाल के साथ व्यापार को एक प्रमुख कड़ी	८०
९.	तस्करी : सीमा-भूमि की देन	८३
१०.	डाक, दूरभाष, दूरध्वनि-कार्यालय (पोस्ट, टेलिफोन एवं टेलिग्राफ ऑफिस)	८७
११.	भारतीय दूतावास-सदन (जो कभी रेजिडेन्सी और लिगेशन भी कहलाता था)	९२
१२.	रक्सौल नगरपालिका, नगर की सफाई समस्याएँ एवं रक्सौल में विदेशी	९५
१३.	जन-स्वास्थ्य और चिकित्सा (पीने के पानी से लेकर डंकन अस्पताल की कहानी तक)	९९
१४.	स्वतंत्रता-संग्राम के मोर्चे पर जूझता रक्सौल	११०
१५.	शिक्षा : तेलिया मास्टर से महाविद्यालय तक	१२०
१६.	साहित्य-साधना की जलती लौ : पत्रकारिता के उभरते स्वर	१३१
१७.	कला के चितेरे : संस्कृति के उपासक	१५०
१८.	धर्म का दीप : अध्यात्म की बाती	१५५
१९.	कुछ अन्य विभाग, योजनाएँ एवं संस्थाएँ	१६०
२०.	विशिष्ट व्यक्तित्व : जिनकी श्रम-साधना ने रक्सौल को गति दी	१६५
२१.	रक्सौल और नेपाल : राजनीतिक दृष्टि से	१८५

क्रम	विषय	पृष्ठ
२२.	नगर की कुछ ज्वलंत समस्याएँ एवं अपेक्षाएं	१९५
२३.	ये बोलते आंकड़े	२००
२४.	कुछेक संस्थाओं के पदाधिकारी-सदस्य	२०२
२५.	रक्सौल के व्यक्तित्व चित्रों में	२०५
२६.	सहायक पुस्तकें	२१७
२७.	अनुक्रमणिका	२१८

१. रक्सौल—इतिहास के पृष्ठों पर

यह रक्सौल की भूमि है, हिमालय की तलहटी में अवस्थित—नेपाल का मुख्य स्थलीय प्रवेश-द्वार। आज रक्सौल भारत के ही नहीं, विश्व के मानचित्र पर अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। किन्तु इस रक्सौल नगरी की उम्र है कितनी? मात्र बहत्तर वर्षों की। पर यह रक्सौल है कि अपनी भौगोलिक अवस्थिति के कारण आज विशिष्ट राजनैतिक-व्यावसायिक महत्व प्राप्त कर चुका है। अपने मुख्यालय मोतिहारी की अपेक्षा दूर-दराज के स्थानों में रक्सौल अधिक चर्चित है, अधिक मशहूर है। इस संदर्भ में एक प्रसंग याद आता है। 'बिहार इन्स्टीच्युट ऑफ टेक्नालॉजी', सिन्दरी के प्राचार्य ने एक बार अपने भाषण में कहा था—"संस्था की स्थापना के प्रारंभिक काल में कहा जाता था—सिन्दरी धनबाद के निकट है, पर आज स्थिति यह है कि दूर-दराज के स्थानों में कहना पड़ता है—धनबाद सिन्दरी के निकट है।" पहले भले ही रक्सौल को मोतिहारी के निकट बताया जाता हो, पर आज दूर-स्थित नगरों में रक्सौल मोतिहारी की अपेक्षा अधिक ख्याति-प्राप्त स्थान है। विदेशियों की जुबान पर रक्सौल जितना चढ़ा है उतना मुजफ्फरपुर और पटना भी नहीं।

अपनी प्रसिद्धि के बावजूद रक्सौल की उम्र छोटी है, जैसा कि ऊपर कहा गया है, पर रक्सौल नाम से पुकारी जानेवाली नगरी की ही। इसका पार्श्ववर्ती क्षेत्र—कहलें रक्सौल-विधान सभाई क्षेत्र या रक्सौल अंचल के अन्तर्गत पड़नेवाले गांव और कस्बे बड़े ही प्राचीन हैं। इस भूमि ने इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। जीवन के सुखद क्षणों के दर्शन किए हैं और समय की मार भी सही है। इस छोटे-से क्षेत्र के अन्तर्गत ऐसे अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं, जो आज मात्र भग्नावशेष (डीह आदि) के रूप में शेष रह गये हैं, जिन्हें उजागर करने के लिए श्रम और शोध की अपेक्षा है। जो इतिहास और रहस्य समय की मोटी परतों में ढका पड़ा है, उसे प्रकाश में लाने के लिए साधन और साधना दोनों की अपेक्षा है। फिर भी ऐसे अनेक संदर्भ सुलभ हैं, जिनके द्वारा इस क्षेत्र के ऐतिहासिक तारतम्य को जोड़ा जा सकता है।

यह जनपद चम्पारण का एक हिस्सा है। चम्पारण चम्पकारण्य का अपभ्रंश है। पौराणिक काल में यह भूभाग चम्पा के वन से आच्छादित था। उस समय यहाँ आदिम जाति के लोग रहा करते थे, जिनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। कई ऋषि-मुनियों का यह तपोस्थल भी रहा है। एक इतिहासकार

के अनुसार "पुराणों से यह भी पता चलता है कि चम्पारण राजर्षि जनक के शासन काल मे मिथिला में सम्मिलित था, क्योंकि उन दिनों वैशाली और मिथिला की शासन प्रणाली संयुक्त थी और संयुक्त राज्य उस समय का बिहार था। इतिहास के पृष्ठों को पलटने से ज्ञात होता है कि आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व चम्पारण पर लिच्छिवी वंशियों का आधिपत्य था। चन्द्रगुप्त के समय चम्पारण मगध के अधीन था—यह भी इतिहास बतलाता है। कलिंग-युद्ध के पश्चात् बौद्ध धर्मावलम्बी सम्राट् अशोक के लिए चम्पारण की भूमि कितनी प्रिय थी, यह चम्पारण में उसके द्वारा कई स्थानों में स्थापित अशोक-स्तम्भ से प्रकट होता है। सम्राट् अशोक ने स्वयं चम्पारण की यात्रा की थी, यह उसके शिला-लेखों से स्पष्ट है। सम्राट् हर्षवर्द्धन तथा उसके बाद कई हिन्दू राजाओं ने इस पर शासन किया कि सन १३२५ में मुहम्मद तुगलग ने चम्पारण पर अधिकार कर लिया। ऐसा संदर्भ सुलभ है कि मुहम्मद तुगलग ने सुगाँव (सुगौली) के पंडित कामेश्वर ठाकुर की योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें इस क्षेत्र का शासक नियुक्त किया। फिर यह चम्पारण की भूमि सिकन्दर लोदी के अधीन आयी।

अकबर ने अपने शासन-काल में अपने अधीन आये भारत को पन्द्रह सूबों में बांटा, प्रत्येक सूबा कई सरकारों(जिलों)में विभक्त हुआ और फिर प्रत्येक सरकार अर्थात् जिला कई परगनों में। उस समय चम्पारण जिला—मेहसी, सिमरौन और मझौआ—तीन परगनों में विभक्त था और मेहसी में चम्पारण का मुख्यालय (सदर) था। प्रत्येक परगना कई तपों में विभक्त था। रक्सौल का यह क्षेत्र परगना मझौआ और तपा बहास के अन्तर्गत पड़ता था। आज भी भूमि-सम्बन्धी दस्तावेजों में इस क्षेत्र के लिए परगना मझौआ और तपा बहास लिखा जाता है। "मझौआ और बहास"—ये दोनों शब्द यत्किंचित हीनता के सूचक बन गए हैं। कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध के एक विद्वान शिष्य आचार्य मझिझम ने यहाँ तपस्या की थी। मझिझम से ही मझौआ शब्द बना है—यह सिद्ध है। पर यह अजीब विडम्बना है कि बुद्ध के विद्वान् शिष्य की तपोभूमि के निवासी 'मझौआ का बागड़' की संज्ञा पायें। हाँ, यह सही है कि आज भी इस परगना में सिकरहना और गंडक के किनारे कुछ ऐसे इलाके है, जहाँ अलुआ और सूथनी की अधिक उपज होती है, अनेक लोग घेघ और फिलपांव से पीड़ित हैं, मन्द-बुद्धि हैं, पर इसी मझौआ में ऐसे भी इलाके हैं, जहाँ के लोग बड़े तेज-तर्रार होते हैं और हमारा रक्सौल का इलाका तो ऐसा है,जिसके लिए कहावत मशहूर है-'वन देस मझौआ,जहाँ भात न पूछे कौआ।

हाँ, तो अकबर के समय में चम्पारण का मुख्यालय मेहसी में था। एक बार स्वयं अकबर ने मेहसी की यात्रा की थी। शाहजहाँ के शासन में भी चम्पारण मुगलों के अधीन रहा। इसके बाद बेतिया राज्य की कहानी शुरू होती है।

बेतिया राज्य की कहानी का यहाँ उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा, जिस राज्य के अधीन रक्सौल का विस्तृत क्षेत्र शताब्दियों तक रहा है और आज से मात्र ढाई दशक पूर्व इस क्षेत्र से उसका वर्चस्व समाप्त हुआ है।

उदयकर्ण सिंह ने अकबर के दरबार में एक प्रमुख मुलाजिम के रूप में अच्छी प्रतिष्ठा पायी थी। उनके पौत्र उग्रसेन सिंह की भी अच्छी प्रतिष्ठा थी, जिन्होंने सम्राट् शाहजहाँ से सन १६२७ में बेतिया राज्य प्राप्त किया था। उग्रसेन सिंह, गज सिंह, दिलीप सिंह, ध्रुव सिंह, युगलकिशोर सिंह ने क्रमशः इस पर सन् १७८३ तक राज्य किया। इस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के पूर्व तक बेतिया राज्य एक पूर्ण स्वतन्त्र राज्य था। राजा युगलकिशोर सिंह के शासन-काल में सन १७६५ में बंगाल बिहार की दीवानी के साथ ही शाह आलम ने चम्पारण को भी अंग्रेजों को दे दिया, किन्तु राजा युगलकिशोर सिंह ने इस्ट इंडिया कम्पनी से युद्ध छेड़ दिया, हालांकि इसमें उनकी हार हुई और उन्हें बाध्य होकर बुंदेलखंड भाग जाना पड़ा। सन् १७६६ में कर्नल राबर्ट बेकर ने बेतिया पर कब्जा कर लिया, पर राज्य की मालगुजारी घट गई, प्रशासन ढीला पड़ गया और अंग्रेजों को बाध्य होकर युगलकिशोर सिंह को पुनः बुलाना पड़ा। युगलकिशोर सिंह को सेमरौन और मझौआ (जिसमें रक्सौल क्षेत्र पड़ता है) दो परगने मिले। उनके निधन के बाद उनके पुत्र वीर किशोर सिंह ने सन् १८१६ तक राज्य किया। अन्तिम राजा हरेन्द्र किशोर सिंह १८८४ ई० तक गद्दी पर रहे। फिर महारानी शिवरतन कुँवर राज्याधिकारिणी हुई और उनके पश्चात् महारानी जानकी कुँवर, जिन्हें अयोग्य शासिका घोषित कर अंग्रेजों ने बेतिया राज्य को १ अप्रैल १८९७ से कोर्ट ऑफ वार्ड्स में सम्मिलित कर लिया। इस राज्य के संचालन के लिए १८९४ ई० से १९५४ ई० तक—यानी जमीन्दारी प्रथा की समाप्ति तक—अनेक अंग्रेज और भारतीय मैनेजर नियुक्त हुए। जमीन्दारी प्रथा की समाप्ति एवं देशी राज्यों के भारतीय संघ में विलयन के बाद से यह पूर्णतः बिहार राज्य में सम्मिलित है।

निलहे गोरों ने बेतिया राज्य से रक्सौल क्षेत्र को कैसे प्राप्त किया और फिर उस पर कैसे अपना वर्चस्व स्थापित किया, यह एक अलग कहानी है, जिसकी चर्चा इस पुस्तक के तीसरे अध्याय में विस्तार के साथ आई है।

२. क्या नेपाल की सीमा कभी सीवान तक थी ?

(सैनिक गतिविधियों का प्रत्यक्षदर्शी यह स्थल)

इतिहास बतलाता है कि पिछले दो-ढाई हजार वर्षों में भारत और नेपाल की सीमाएँ अनेक बार परिवर्त्तित हुई हैं। श्री एन० थापा ने लिखा है—"भारतीय सामंतों ने नेपाल पर शासन किया और नेपाल के राजाओं ने भारत के बड़े हिस्से पर शासन किया।"

आइये, हम इतिहास के कुछ और पन्नों को पलटें और देखें कि यह सीमा-परिवर्त्तन कब और कैसे हुआ तथा हमारा यह इलाका इस सीमा-परिवर्त्तन तथा सैनिक गतिविधियों से कैसे प्रभावित हुआ।

गुप्तकाल में भारत का विस्तार नेपाल तक था। ऐसे ऐतिहासिक संदर्भ सुलभ हैं जिनसे स्पष्ट है कि समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त ने नेपाल तक विजय प्राप्त की थी।

श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव ने अपनी 'नेपाल की कहानी' में लिखा है—"यक्षमल्ल ने अपने राज्य का विस्तार तिरहुत, गोरखा, तिब्बत में शिगत्से तथा बुद्ध गया तक कर लिया था। सन १४८० ई० में उन्होंने नेपाल राज्य को अपने तीन पुत्रों में विभाजित किया।"

"जब जयनन्द देव और जयरूद्र नेपाल की घाटी में शासन कर रहे थे, नान्यदेव के छठे वंशज हरिसिंह देव का सिमरौन गढ़ पर (सिमरौन गढ़ घोड़ासहन के निकट आज नपाल में है) अधिकार था। उस समय दिल्ली के मुसलमान सुलतान शक्तिशाली थे, और पूरे उत्तर भारत पर उनका अधिकार था। उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि सिमरौन गढ़ नामक एक छोटा-सा राज्य बड़ी प्रगति पर है। गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल पर आक्रमण किया और दिल्ली के रास्ते उसने तिरहुत पर भी चढ़ाई की तथा सिमरौन गढ़ पर कड़ी घेराबन्दी की। हरिसिंह देव महम्मद तुगलग का सामना नहीं कर सका और वह नेपाल की पहाड़ियों में भाग गया।" (नेपाल का संक्षिप्त इतिहास—एन० थापा)

श्री बम्ब बहादुर सिंह मगन ने अपनी पुस्तक 'चम्पारण' में लिखा है—"पहले चम्पारण जिला की सीमा हाजीपुर, सीवान, गोरखपुर आदि स्थानों तक थी, किन्तु अब नारायणी के इस पार तथा पूर्व में महवल रेलवे स्टेशन तक ही है। यह उस समय की बात है जब बुटवल (पालपा राज्यान्तर्गत) तनहुँ, नेपाल आदि राज्यों का अधिकार था और वे लोग दिल्ली राज्य या लखनऊ के

नवाबों को सालाना कर दिया करते थे। कालान्तर में यह सब स्थान नवाबों के द्वारा अंग्रेजों को मिल गया। तब से चम्पारण की सीमा बांध दी गयी है। प्रमाण-स्वरूप आज भी हाजीपुर में नेपाली लोगों का वह पुराना किला मौजूद है।"

इसका तात्पर्य यह हुआ कि नवाबों के काल में नेपालियों ने कुछ समय के लिए चम्पारण पर अधिकार कर लिया था, जिस चम्पारण की सीमा सीवान तक थी। हाजीपुर आदि स्थानों में उन्होंने किले भी बनवाए। पर यह स्पष्ट है कि उस भूमि पर उनकी स्वतंत्र प्रभुसत्ता नहीं थी, क्योंकि वे भारतीय नवाबों को कर दिया करते थे।

अठारहवीं शती के अन्त में एक बार फिर नेपाल शक्तिशाली हो उठा।

नेपाल के बहादुर शाह ने सन् १७९४ तक कुमायूँ एवं गढ़वाल पर अधिकार कर लिया। "गोरखा साम्राज्य कश्मीर की सीमा से सिक्किम तक तथा हिमालय से आगरा और अवध तथा दक्षिण में बिहार और बंगाल तक फैल गया था।" श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव ने लिखा है– "गोरखों ने मकवानपुर (अमलेखगंज और हेथौड़ा के बीच पड़नेवाला स्थान) का पहाड़ी प्रदेश भी जीत लिया और दक्षिण की जीती हुई भूमि को कर लेकर ब्रिटिश सरकार को देने के लिए स्वीकृति दी गई। अंग्रेज तीस वर्षों तक इस भूमि के लिए प्रतिवर्ष एक हाथी भेंट में दिया करते थे और यह प्रथा सन् १८०० तक चलती रही।"

पर इसके बाद से ही सीमा-विवाद को लेकर इस्ट इन्डिया कम्पनी और नेपाल के बीच भयंकर संघर्ष हुए, जिससे हमारी यह सीमा-भूमि भी प्रभावित हो उठी।

'नेपाल का संक्षिप्त इतिहास' में श्री थापा ने लिखा है– सारन और गोरखपुर जिलों में ब्रिटिश और नेपाली प्रदेश की सीमाओं पर कुछ क्षेत्रों के लिए संघर्ष उठ खड़े हुए। ब्रिटिश और नेपाली प्रदेशों की सीमाएं अनिश्चित थीं। नेपाल सरकार ने उन प्रदेशों पर अपना हक जताया पर ब्रिटिश सरकार ने यह तर्क प्रस्तुत करते हुए इन भूखण्डों पर अपना हक बताया कि यह प्रदेश उन जमीन्दारों के अधिकार में रहा था, जिन्हें ब्रिटिश सरकार का संरक्षण प्राप्त था तथा जो उन्हें इस प्रदेश के लिए भू-कर दिया करते थे।" श्री थापा ने आगे लिखा है–"नेपाली हृदय से शान्ति चाहते थे और अंग्रेजों से युद्ध करने का उनका ख्याल नहीं था। किन्तु वे इस बिन्दु पर झुक भी नहीं सकते थे, क्योंकि नेपाल और भारत की पाँच सौ मिल लम्बी सीमा पर अनेक ऐसे बिन्दु थे, जहाँ ऐसे सीमा-विवाद उठ खडे हुए थे। नेपाली जानते थे कि एक स्थान

पर झुकने का मतलब है स्थिति को बदतर बनाना तथा अन्य स्थानों पर भी हक जताने के लिए अंग्रेजों को प्रोत्साहित करना। नेपाल ने अपने हक पर दृढ़ रहने का निश्चय किया और जब अंग्रेजों ने विवादास्पद क्षेत्रों को अपने अधिकार में कर लिया, नेपाल ने अंग्रेजों द्वारा स्थापित पुलिस-चौकियों पर प्रत्याक्रमण किया और खोयी हुई भूमि फिर से प्राप्त की। इसी के फलस्वरूप सन् १८१४ में अंग्रेजों और नेपालियों के बीच संघर्ष छिड़े।

दोनों देशों के बीच संघर्ष छिड़ने के और भी कारण थे। अंग्रेजों ने अपने आधुनिक अस्त्र-शस्त्र, प्रशिक्षित सेना तथा परिपक्व रणनीति की बदौलत अनेक भारतीय राजाओं को अपने आधिपत्य में कर लिया था। धीरे-धीरे मुगल नवाब भी उनकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे। फिर, अंग्रेजों को नेपाल की ओर से चिंता हुई। अपनी सीमा की रक्षा करने के साथ-साथ अंग्रेज नेपाल में भी प्रवेश पाना चाहते थे। सीमा-विवाद को प्रमुख मुद्दा बनाकर सन् १८१४ में अंग्रेज नेपालियों पर चढ़ बैठे।

पर्सा का युद्ध - पर्सा नेपाल का एक जिला है, जिसका मुख्यालय आज वीरगंज है। परसा नामक स्थान वीरगंज और आमलेखगंज के बीच में पड़ता है। जेनरल मारली के नेतृत्व में बढ़ने वाली फौज हथौड़ा होकर काठमाण्डू पहुँचना चाहती थी। परन्तु नेपाल की राजधानी में पहुँचने के लिए तराई को जीतना आवश्यक था। उन्होंने दो टुकड़ियों को दो विभिन्न रास्ते से भेजा और स्वयं अपनी फौज के साथ पर्सा पहुँच गए। इस भूमि पर घमासान युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेज सेनापति मारा गया तथा जेनरल मारली को भागना पड़ा। इस लड़ाई में अंग्रेजों की हार हुई। पर उसी वर्ष जेनरल आक्टरलोनी ने गोरखालियों के कई पहाड़ी किले जीत लिए। बाध्य होकर नेपालियों को अंग्रेजों के साथ संधि करनी पड़ी जो संधि २ दिसम्बर १८१५ को सुगौली में सम्पन्न हुई। इस संधि की अभिधारा २ के अनुसार—"युद्ध के पूर्व दोनों राज्यों के बीच जिन प्रदेशों के लिए वादानुवाद था, नेपाल के राजा उसका परित्याग करते हैं। और उन प्रदेशों पर आनरेबुल इस्ट इंडिया कम्पनी के एकाधिपत्य का अधिकार स्वीकार करते हैं।" अभिधारा ३—नेपाल के राजा आनरेबुल इस्ट इंडिया कम्पनी के प्रति निम्न सूचित भूमिखण्ड चिरस्थायी रूप से परित्याग करते हैं—

द्वितीय—राप्ती और गंडक के मध्य की समस्त नीची भूमि (बुटवल खास को छोड़कर)। तृतीय—गंडक और कुसाह के मध्य की समस्त नीची भूमि, जहाँ ब्रिटिश शासन का अधिकार प्रारम्भ हो चुका है अथवा प्रारम्भ

होने जा रहा है। ... ...

इन शर्तों को लेकर गजराज मिश्र सुगौली से काठमाण्डू लौटे और उन्होंने पन्द्रह दिनों में नेपाल महाराज की स्वीकृति लाकर देने का वचन दिया। पर नेपाल के फौजी सरदारों ने इसका विरोध किया और नेपालियों ने तराई से अपनी फौज नहीं हटायी। इस बीच नेपाल सरकार ने चीन से सैनिक सहायता भी मांगी। जब इसकी सूचना अंग्रेजों को मिली तो वे बहुत रुष्ट हुए और लार्ड हेस्टिंग्स ने आक्टरलोनी के नेतृत्व में बीस हजार फौज नेपाल के विरुद्ध भेजी। जेनरल आक्टरलोनी ने सुगौली में ही अपना फौजी मुख्यालय स्थापित किया, जहाँ से उसने अपने नेतृत्व में चार ब्रिगेड भेजे। आक्टरलोनी की फौज नेपाली सेना को परास्त करती हुई हथौडा की ओर बढ़ी। कुछ फौज सेमरा होती हुई भिखनाठोरी पहुँच गयी। आक्टरलोनी की फौज हथौडा से आगे बढ़ती गयी। राजधानी के निकट अंग्रेजी फौज को पहुंचते देख नेपालियों ने पुनः संधि का प्रस्ताव रखा। अंग्रेजों को भी पहाडी लड़ाइयों में बड़ी क्षति उठानी पड़ी थी। अतः उन्होंने भी संधि करना स्वीकार कर लिया। ८ दिसम्बर १८१६ को पुनः सुगौली में संधि हुई।

इस संधि की भूमि एवं सीमा-संबंधी धाराएँ यों हैं—२. एक विषय पर जो राजा के मन में अधिक है और उन्हें संतुष्ट करना है, ब्रिटिश शासन तराई के हस्तगत प्रदेश को उन्हें दे देना चाहता है। तराई का वह प्रदेश जो कूसा और गंडक के बीच में है, केवल **सिरहुत और सारन** के विवादास्पद प्रदेशों को छोड़कर, तथा उन ऐसे प्रदेश के भागों को छोड़कर जो सीमा-निर्धारण के लिए छोड़े जायेंगे, तथा उस भूमि को छोड़कर जो ब्रिटिश शासन के अधिकार में आया है। ... ... ३. ब्रिटिश शासन गंडक और राप्ती के बीच की तराई, अर्थात् गंडक से गोरखपुर जिले की पश्चिमी सीमा, उसके साथ बुटवल व शिवराज, जो विवाद के पूर्व नेपाल के पास था, उन्हें दे देना चाहता है। उसमें तराई के विवादास्पद प्रदेश तथा सीमा-निर्धारण के लिए भूमि शामिल नहीं है। ४. बिना नाप-जोख किए दोनों देशों की सीमा तय हो लेना असंभव है, इससे यह ठीक होगा कि दोनों ओर से कमिश्नर नियुक्त किये जायं जो पिछले नियमों के अनुसार सीमा-निर्देश करें और सीमांत की सीधी रेखा निर्धारित करें जिसमें दोनों देशों के प्रदेशों का उचित विभाजन हो जाय, नेपाल का उत्तर में और ब्रिटिश राज्य का दक्षिण में। ६. तराई का भूभाग कभी भी मिल जाने पर नेपाल के राजा को वार्षिक दो लाख रुपये देना बन्द हो जायेगा, जिसे ब्रिटिश शासन के कुछ बारहदारों के लिए देना स्वीकार किया

था। ८. इन शर्तों को मानने के बाद सीमा-निर्धारण का कार्य किया जायेगा और सीमा-चिह्न लगा दिए जायेंगे। तत्पश्चात् दोनों देश सनद तैयार कर और मुहर लगाकर एक दूसरे को देंगे और स्वीकार करेंगे।

११ दिसम्बर १८१६ को नेपाल के राजा द्वारा लिखित पत्र का सारांश—"मैंने ८ दिसम्बर १८१६ का मसौदा पढ़ा, मेरे नियमों को स्वीकार करने पर तराई की दक्षिणी सीमा वही हो जायगी जैसी इस शासन की थी। मुझे आपकी संधि की धाराएँ स्वीकृत हैं। आपने यह भी सूचित किया कि विवादास्पद भूमि को छोड़कर तथा कमिश्नरों द्वारा सीमा-निर्धारण भूमि को छोड़कर बाकी प्रदेश दे दिया जायेगा। इन तथा अन्य विषयों पर आप जो चाहें करें। सुगौली की संधि का हवाला देकर आपने यह कहा है कि मेरी मैत्री व स्नेह के कारण आप उसकी कुछ शर्तें हटा देना चाहते हैं। मैं पूर्ण रूप से समझता हूं कि हृदय से आप मेरी चिन्ता दूर ही करना चाहते हैं तथा आप ऐसा काम करेंगे जिसमें इस देश की भलाई होगी तथा दोनों राज्यों की मैत्री सुदृढ़ होगी।"

सुगौली की संधि के बाद से सुगौली में स्थायी रूप से अंग्रेजी फौज रहने लगी। सेना में घुड़सवारों की संख्या भी काफी थी। भारत-नेपाल-सीमा के निकट इस फौज का अपना महत्व था। उन दिनों आजकी रक्सौल बाजार वाली भूमि तो सूनसान थी, पर रक्सौल क्षेत्र तथा इसके इर्द-गिर्द के इलाकों ने इन सैनिक गतिविधियों को प्रत्यक्ष देखा था। सुगौली-संधि के समय तक भी अंग्रेजों का शासन सुदृढ़ नहीं हुआ था। नेपाल के साथ संधि के बावजूद अपनी सीमा की सुरक्षा के लिए सीमा के निकट फौजी किला रखना आवश्यक था। काठमांडू में अंग्रेज रेजिडेन्ट तो था ही। उन दिनों भी यह मार्ग फौज भेजने के लिए अथवा अन्य सम्पर्क स्थापित करने के लिए सुगम था।

सन् १८५७ का प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम, जो सिपाही-विद्रोह के नाम से प्रसिद्ध है, सुगौली को भी प्रभावित कर गया। सुगौली किले की फौज ने वहाँ रह रहे अंग्रेज अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस संदर्भ में यहाँ 'सिपाही विद्रोह' नामक पुस्तक का एक अंश प्रस्तुत है—"सुगौली में १२ नं० देशी रिसाला रहता था, जिसके अधिनायक होल्मस थे। ये बहुत ही चालाक आदमी थे। ३० वीं जुलाई १८५७ को ये अपनी गाडी पर चढ़े अन्यत्र जा ही रहे थे कि इसी समय १२ नं० पल्टन में ६ घोड़सवारों ने इनकी गाड़ी रोक ली, और उनका तथा उनकी स्त्री का सिर तलवार से काट डाला। तदन्तर उन्होंने यहाँ के और भी अंग्रेजों को मार डाला और उनके कई घर जला दिये। रिसाले के सवारों ने यहाँ खूब लूट-पाट मचाई और सरकारी खजाना आदि लूट कर

सीवान की ओर चल दिए।" फिर तो अंग्रेजों में दहशत छा गई और फौजी आज्ञा जारी हुई, मार्शल लॉ लागू हुआ। १० दिसम्बर १८५७ को लार्ड कैनिंग ने नेपाल से सहायता मांगी और नेपाल के प्रधान मंत्री जंगबहादुर राणा स्वयं आठ हजार फौज के साथ काठमांडू से चले। उनका पहला आक्रमण सुगौली-किले पर ही हुआ था। २३ दिसम्बर को यहाँ से उन्होंने बेतिया के लिए प्रस्थान किया।

सन् १८५७ के सिपाही-विद्रोह में नेपाल के प्रधानमंत्री ने अंग्रेजों के साथ जो सच्ची हमदर्दी दिखलायी, जो हार्दिक सहयोग किया, उससे प्रसन्न होकर दोनों देशों के बीच भूमि-सीमा सम्बन्धी एक और समझौता हुआ। १ नवम्बर १८६० को हुई इस संधि के अनुसार अंग्रेजों ने नेपालियों को कई स्थान दिए। काली सरिता और गोरखपुर जिले की समस्त नीची भूमि नेपाल को लौटा दी गई; जो १८१५ ई० में नेपाल के अधीन थी। कई स्थानों पर सीमा-चिह्न भी लगाए गए। तबसे आज तक दोनों देशों की सीमाएँ लगभग वहीं हैं।

३. निलहे साहबों का वर्चस्व, गांधी का आगमन और जनता को शोषण से मुक्ति

रक्सौल थानान्तर्गत पड़ने वाली हरदिया कोठी तथा रामगढ़वा कोठी के साहबों का साठ-सत्तर वर्षों का इतिहास रक्सौल थाना का इतिहास है। इन साठ-सत्तर वर्षों में इस क्षेत्र के पच्चासों गांवों की जनता किस तरह उनके अत्याचारों का शिकार होती रही, कैसे उनके खिलाफ समय-समय पर आवाजें उठती रहीं, किस तरह गाँधी जी ने उन्हें इन अत्याचारों से मुक्ति दिलाई, एक निलहे साहब द्वारा रक्सौल बाजार की नीव कैसे पड़ी, कैसे इसका विस्तार हुआ, यह सब एक लम्बा अध्याय है, जिसकी विशद चर्चा के वगैर रक्सौल थाना का इतिहास अधूरा होगा, निष्प्राण होगा।

वैसे तो बिहार में सर्वप्रथम १७७८ ई० में नील की खेती करने का रिकार्ड मिलता है, जिसे इस्ट इंडिया कम्पनी के एक मुलाजिम ने मुजफ्फरपुर में प्रारंभ किया था। पर १८०० इ० तक आते-आते मुजफ्फरपुर जिले में नील की एक दर्जन कोठियाँ स्थापित हो गई। चम्पारण में सर्वप्रथम सन् १८०२ में बारा कोठी, सन् १८०७ में पिपरा कोठी, सन १८१५ में तुरकौलिया कोठी, सन १८१७ में मोतिहारी कोठी, सन् १८२२ में लाल सरैया (सुगौली) कोठी खुली और फिर तो कोठियाँ खुलती ही गयीं, जिनकी संख्या सत्तर तक पहुँच गई।

रामगढ़वा के निकट 'मुरला कन्सर्न' नाम से १८६२ ई० में टी० एम० गिब्बन (बेतिया राज्य का तत्कालीन मैनेजर), एच० एल० हालवे तथा एफ० गिब्बन ने मिलकर एक नील का कारखाना खोला और निवास के लिए शानदार कोठियाँ बनवाई। रक्सौल थानान्तर्गत जिन गांवों पर उनका अधिकार था, उनका क्षेत्रफल था २०० वर्ग मील—२० मील लम्बा और १० मील चौड़ा। (लगभग एक दशक पूर्व तक रामगढ़वा रक्सौल थानान्तर्गत था।) उपर्युक्त तीन साहबों ने 'मुरला कन्सर्न' की शाखा के रूप में हरदिया में भी एक कोठी की स्थापना की और नील की खेती प्रारंभ की। आठ वर्षों तक यह कारखाना उनके सम्पूर्ण आधिपत्य में रहा, पर सन् १८७० से हरदिया कोठी रामगढ़वा कोठी की शाखा के रूप में नहीं रही, बल्कि उसका अस्तित्व स्वतन्त्र हो गया। कालान्तर में इन दो कोठियों से चार कोठियाँ बनीं—मुरला कोठी, हरदिया कोठी, इनिलिया - बरहरवा कोठी (बिशुनपुरवा) और डोरवा

कोठी (लक्ष्मीपुर-लौकरिया) ।

रेकर्ड बतलाता है कि चम्पारण की नील की कोठियाँ एक साहब के हाथ से किसी दूसरे साहब के हाथ भी बिकती रही हैं। इन चार कोठियों पर जिन तीन अन्य साहबों का अधिकार हुआ, वे हैं—एल० हार्मन, सी० एच० गार्डन, एवं आर० हडसन। लगता है हरदिया कारखाना में आर० हडसन का अधिक हिस्सा था जो बाद में उसका हो गया तथा मुरला कन्सर्न में एल० हारमन की अधिक पूँजी थी जो बाद में पूर्ण रूपेण उसके आधिपत्य में आ गया। चम्पारण में गांधी के आगमन के समय अर्थात् सन् १९१७ में मुरला कोठी के हिस्सेदार एवं मैनेजर के रूप में सी० एच० गार्डन कार्यरत था तथा उसके अधीन देखभाल के लिए अन्य तीन सहायक अंग्रेज मैनेजर नियुक्त थे। उन-दिनों हरदिया कोठी में आर० हडसन का मैनेजर जे० पी० एडवर्ड था। इसके पूर्व हरदिया कोठी के मैनेजर के रूप में तीन साहबों के नाम आते हैं—बाम्बा साहेब (शुद्ध नाम ज्ञात नहीं हो सका।) थाप साहब (Mr Thorpe) एवं फलेजर साहब (मि० एफ० डी० फ्लेचर)

केवल हरदिया कोठी के अधीन २२ गांव थे—हरदिया, रतनपुर, गम्हरिया बसतपुर, नकरदेई, कटकेनवा, धनगढ़वा, भवानीपुर, हरैया, कनना, मनना, परेउआ, रक्सौल मौजे, आदि। इन २२ गांवों की हजारों-हजार जनता लगभग आधी शती तक इन अंग्रेज साहबों का गुलाम रही और विभिन्न रूपों में उनका जीवन इन साहबों से प्रभावित होता रहा।

रक्सौल थानान्तर्गत पड़नेवाला यह इलाका शताब्दियों से बेतिया राज्य के अधीन रहा है, जैसा कि पहले कहा गया है। इस राज्यका विस्तार लगभग दो हजार वर्गमील में था।

बेतिया राजा की दानशीलता एवं फिजुलखर्ची के कारण राज्य की आर्थिक अवस्था शोचनीय हो गयी। इस राज्य के मैनेजर मिस्टर गिब्बन ने बेतिया राज्य को इंगलैंड से ९५ लाख रुपये का कर्ज दिलाया, इस शर्त पर कि बेतिया राज्य इंगलैंड के उन अंग्रेजों को, जिनके सहयोग एवं जमानत पर यह कर्ज प्राप्त हुआ था, अपने राज्य की कुछ भूमि नील की खेती करने के लिए बन्दोबस्त कर देगा। इसी शर्त के अनुसार बेतिया राज्य ने चौदह फैक्टरियों के के लिए स्थायी रूप से इतनी भूमि बन्दोबस्त कर दी कि कर्ज सधाने के लिए मालगुजारी आदि के रूप में उससे प्रति वर्ष साढ़े पाँच लाख रुपये प्राप्त होने लगे। इस तरह प्राप्त भूमि पर अपना स्थायी प्रभाव देखकर इन निलवरों की यहाँ की भूमि में क्रमशः दिलचस्पी बढ़ती गयी। ये बेतिया राज्य से समय-

समय पर अस्थायी भूमि भी बन्दोबस्त कराते रहे। इस तरह वे न केवल आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते गए, बल्कि दिनोंदिन इस क्षेत्र पर उनका दबदबा भी बढ़ता गया और एक दिन वे ही इस इलाके के मालिक बन गए। आधे चम्पारण पर उनका अधिकार छा गया।

हरदिया कोठी का मालिक आर० हडसन इंगलैंड में ही रहा करता था। दो–चार वर्षों में कभी-कभार एक-दो सप्ताह के लिए यहाँ आ जाता। सुना जाता है कि आर० हडसन इंगलैंड का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था और रक्सौल के इस इलाके के गरीब किसानों की कमाई की बदौलत वहाँ उसकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लग गए थे।

चम्पारण में महात्मा गाँधी के आने के समय कोई मि० बी० पी० हडसन बेतिया राज्य का सहायक मैनेजर था। लगता है यह बी० पी० हडसन हरदिया कोठी के मालिक आर० हडसन का कोई सगा-संबंधी था।

आर० हडसन की अनुपस्थिति में हरदिया कोठी का प्रबंध उसके मैनेजर किया करते थे। कुछ मैनेजरों के नाम ऊपर दिये जा चुके हैं। पर इन मैनेजरों में फलेजर का नाम विशेष रूप से उभर कर सामने आता है।

नील की खेती और यहाँ की जनता

सन् १८९७ तक चम्पारण में नील की सत्तर कोठियाँ स्थापित हो गयी थीं, जिनमें प्रतिदिन ३३००० कृषक-मजदूर काम करते थे तथा ९५,९७० एकड़ भूमि में नील की उपज होती थी। रक्सौल थानान्तर्गत पड़नेवाली चार कोठियों में नील से संबंधित कृषक मजदूरों की संख्या एक हजार से ऊपर थी। हाँ, इनमें धांगड़ जाति के आदिवासी मजदूर भी सम्मिलित थे, जो नील की 'महाई' जैसे श्रमसाध्य कार्य के लिए हर कोठी के पास इन निलवरों द्वारा बसाए गये थे। आज नील की कोठियाँ समाप्त हो गयी हैं, पर लगभग हर कोठी के पास धांगड़ टोली आज भी मौजूद है। अगर आज भी किसी धांगड़ से पूछा जाय कि तुम्हारे बेटे या बेटी की शादी कहाँ हुई है तो वह किसी-न-किसी कोठी का ही नाम लेगा।

हरदिया कोठी में सन् १८६२ से सन् १९०० तक बड़े पैमाने पर नील की खेती होती रही। सन् १९०० में रासायनिक रंग के आविष्कार के कारण नील की खेती करना अब उतना लाभप्रद न रहा। पर इस अवधि में इस कोठी के अधीन २२ गांवों की जनता इन अंग्रेज साहबों के शोषण का जिस प्रकार शिकार होती रही, वह कम हृदय-द्रावक नहीं है।

हरदिया कोठी को बेतिया राज्य से प्राप्त अपनी जिरात थी, ३० वर्षों के

लिए मोकर्ररी जमीन थी, जिसकी अवधि ३०-३० वर्षों के लिए दो बार बढ़ायी गयी थी। २२ गाँवों से मालगुजारी वसूल करने का उन्हें अधिकार प्राप्त था, जिसपर उन्हें बेतिया राज्य से कमीशन मिलता था। एक तरह से इन २२ गांवों के वे ही मालिक थे। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार से वे जनता का शोषण किया करते थे। कृषकों को नील की खेती तीनकठिया प्रथा के अनुसार करनी होती थी और इसी घृणास्पद प्रथा के कारण कृषकों का भयंकर शोषण होता था। इस प्रथा के अनुसार रैयत को बीघा पीछे तीन कट्टा की दर से अपनी सबसे अच्छी भूमि में नील की खेती करनी होती थी। नील की खेती करने के लिए निलहे कृषकों से सट्टा लिखवा लेते थे। कभी-कभी तीस-तीस वर्षों का सट्टा। अगर कोई किसान इस सट्टा को मानने में असमर्थ होता, तो वह इसके लिए हर्जाना देने को बाध्य था।

नील की खेती श्रमसाध्य तो थी ही, फैक्ट्री के अमलों द्वारा भी रैयतों पर कम धांधली नहीं की जाती। दस्तूरी के नाम पर उनकी मजदूरी से एक बड़ा हिस्सा काट लिया जाता। नील की खेती में जितने पैसे लगते थे, उसके अनुपात में उन्हें आमदनी नहीं थी, जबकि नील की खेती में साहबों को बड़ा मुनाफा था। एक तरफ वे मालोमाल हो रहे थे, दूसरी तरफ किसान पिस रहे थे। साहब किसानों को खेती के लिए अग्रिम राशि देते अवश्य, पर यह ध्यान रखते कि रैयत उसे पूरा-पूरा लौटाने की स्थिति में न हो। इस तरह किसान कर्जदार भी थे, आसामी भी और एक तरह से उनके गुलाम भी।

बैलगाड़ी के लिए जबरदस्ती सट्टा लिखवा लेना आम बात थी। रैयत को बहुत मामूली राशि पर अपनी बैलगाड़ी को फैक्ट्री के लिए मुहैया करना होता था। अक्सरहा फैक्ट्री में रैयत के हल घेर लिए जाते, उस समय भी जबकि रैयत को अपनी खेती के लिए इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती थी।

गाछ की बिक्री की आधी राशि साहब की होती। बगैर साहब की अनुमति के कोई व्यक्ति अपनी भूमि के वृक्ष को भी नहीं बेच सकता था।

साहब निकलता तो किसान एक तरह से धरती पर लेट कर सलाम करते। फिर भी सलामी के नाम पर उनसे रुपये वसूल किये जाते। साहब के बाग में फलनेवाले कुछ फल इलाके के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के घर भेजे जाते और फिर हस्ती के अनुसार साहब को सलामी मिलती। बड़े दिन के अवसर पर इलाके के प्रतिष्ठित व्यक्ति नजराना चढ़ाते।

इसके अतिरिक्त अमलों द्वारा तहरीर, रसीदाना, हिसाबाना, फगुअही, दवातपूजा, रामनवमी, दशहरा, आदि के नाम से विभिन्न प्रकार के 'टैक्स' वसूल

किये जाते। 'गोड़ाइत' की भी कोई कम चलती नहीं थी। नील की खेती से संबंधित मजदूरों से अक्सरहा वे गाली के मुँह ही बातें किया करते।

हरदिया कोठी के साहब के बंगला का क्या कहना! लगभग दो बीघे की प्रशस्त भूमि के घेरे के अन्दर स्थित बंगले की सानी नहीं थी। हर मौसम में फूलने वाले फूलों एवं उसके बाहर से अनेक प्रकार के फलों के वृक्षों की कतार बंगला की शोभा में चार चाँद लगा देती। साहब की सेवा के लिए दर्जनों नौ-कर-चाकर होते। ६ घोड़ों के लिए एक अस्तबल था, कई साईस थे। माली थे, घास गढ़नेवाले घसियाड़ा थे। भोजन बनाने के लिए खानशामा थे। खान-शामा के पास घी-दूध का अम्बार लग जाता। अमलों को भी साहब के नाम पर घी-दूध के लिए पैसे खर्च नहीं करने पड़ते। मुख्यालय मोतिहारी में साहबों के लिए पुस्तकालय था, पोलो-ग्राउन्ड था, घोड़ा-रेस की सुविधाएँ थीं, चर्च था, अन्य मनोरंजन के साधन थे। कहने का तात्पर्य यह कि इसी भूमि पर वे स्वर्ग का सुख भोग रहे थे।

साहब की धाक ऐसी कि बंगला के सामने से गुजरने वाली सड़क से आम आदमी चल नहीं सकता था। दूल्हे को भी घोड़ा से उतर जाना होता था और छाता मोड़ लेना होता था। साहब की अपनी कचहरी थी—सेनुअरिया गाँव में, कोठी से सटे पश्चिम, जहाँ लगभग हर तरह का फैसला साहब के द्वारा ही सम्पन्न होता। उन दिनों थाना-दारोगा की कोई पूछ नहीं थी। सब कुछ साहब की मर्जी पर था। थोड़ी भी गलती के लिए रैयत को कोड़े से पिटाई होती और फिर आर्थिक दंड भी लिये जाते। जुर्माने के पैसे साहब की जेब में जाते। फ्लेजर ने एक बड़ी भद्दी गाली सीख ली थी, जिसे वह अक्सरहा इस्तेमाल करता। 'योनि' के लिए प्रयुक्त 'होनवाले देहाती शब्द के आगे' 'मर-वनी सूअर डैमियल' जैसी वीभत्स गाली मुंह से निकालने में उसे जरा भी संकोच नहीं होता। किसी से बातें करते समय अक्सरहा वह आँखें मूंद लेता। उसकी वीभत्स गाली तथा आंखें बन्द कर बात करनेवाले रूप को याद कर आज भी कई बूढ़े नाक-भौं सिकुड़ लेते हैं।

अब थोड़ा हम पीछे मुड़ें। निलवरों द्वारा सतायी जनता ने पहली बार उनके खिलाफ उन्नीसवीं सदी के सातवें दशक में प्रदर्शन किया था। कुछ छिट-फुट हिंसा की घटनाएँ भी हुईं। पर इसका नतीजा भी निकला। मजदूरी साढ़े सात रुपये प्रति बीघा से बारह रुपये प्रति बीघा हो गई। इस प्रदर्शन एवं हिंसक घटनाओं के फलस्वरूप निलहे झुके अवश्य, पर थोड़े ही दिनों के लिए। जनता में शिक्षा और संगठन दोनों का ही अभाव था। अतः जनता फिर विभिन्न

तरह से सतायी जाने लगी, जैसा कि पहले वर्णन किया गया है । ये निलहे उस जाति के थे, जिनका यहाँ साम्राज्य था। स्थानीय अधिकारियों से शादी-विवाह या कमसे कम दोस्ती का रिश्ता तो था ही।

सन् १९०० के बाद नील की खेती करना उतना लाभप्रद न रहा, जैसाकि पहले कहा गया है। अतः ईख, धान, जई आदि की खेती पर विशेष बल दिया जाने लगा। पर नील की खेती में जो मुनाफा था, वह ईख और धान की खेती में कहाँ? इस घाटे की पूर्ति साहब अन्य तरीकों से करने लगे। पहले मालगुजारी ४ रु० बीघा थी। पर एक बीघा में तीन कट्ठा नील नहीं बोने के कारण ३ रु० कट्ठा की दर से ९ रुपये तथा बीघा पीछे आम-लिच्ची के नाम पर २रुपये—इस तरह फी बीघा १५ रुपये वसूल किये जाते, पर रसीद मात्र ४रु० की ही कटती। अधिकांश किसान यह नाजायज राशि देने को मजबूर थे। पर धीरे-धीरे विरोध की अग्नि सुलग रही थी। अधिकारियों के पास शिकायतें दर्ज हुईं। सन् १९०७ में वृहत् पैमाने पर अव्यवस्था फैली। तेल्हारा कोठी का मैनेजर बलूमफिल्ड जान से मार डाला गया। निलवरों में एक दहशत-सी छा गयी। बड़े पैमाने पर नाजायज ढंग से मालगुजारी वसूल करना कुछ बन्द हुआ। रक्सौल के परेउआ में गुलामन मियाँ ठकुराई, जटिआही के खीरू साह तेली जैसे लोगों ने हिम्मत दिखलाई। हर्जाना नहीं दिया और अमलों को पीटा।

सन् १९११ में जब सम्राट् छठे जार्ज नेपाल से लौट रहे थे, तो रास्ते में सताये कृषकों ने अपनी कठिनाइयों के प्रति सम्राट् का ध्यान आकृष्ट करने के लिए जोरों की आवाज लगायी। सम्राट् द्वारा अपने अधीनस्थों से इस आवाज के बारे में पूछताछ करने पर उन्हें बतलाया गया कि यह आवाज सम्राट् के प्रति स्वागत एवं प्रसन्नता की सूचक थी।

निलहे निलहा-संघ के माध्यम से सुसंगठित थे और कुछ उच्च पदस्थ अधिकारियों के सहयोग से गरीब और पिछड़ी जनता के शोषण में उन्हें पूरी कामयाबी मिलती थी। सन् १९१३ में जब लार्ड हार्डिंज पटना आये, उन्होंने चम्पारण के निलहों को रैयत के साथ अच्छे व्यवहार का प्रमाण-पत्र दे दिया, जिसके उत्तर में बाबू ब्रजकिशोर प्र० ने सन् १९१४ में बिहार प्रांतीय अधिवेशन के अपने अध्यक्षीय भाषण में निलहों का काला चिट्ठा खोलकर रख दिया। सन् १९१५ के अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से निलहों और रैयत के बीच बुरे सम्बन्धों की जाँच के लिए सरकारी और गैरसरकारी व्यक्तियों की एक समिति बनाने की मांग की। पर ये कोठीवाले अंग्रेज कब डरनेवाले थे? उनका शोषण और अत्याचार चलता ही रहा।

महात्मा गांधी का चम्पारण-आगमन—मुरली भितिहरवा के पं० राजकुमार शुक्ल के प्रयास से चम्पारण के किसानों की दयनीय हालत अपनी आंखों देखने महात्मा गांधी १५ अप्रैल १९१७ को मोतिहारी पहुँचे। अगले दिन निलहों के अधीन पड़नेवाले कुछ गांवों का भ्रमण किया और उसी दिन जिला कलक्टर मि० हेकॉक द्वारा गांधी को चम्पारण छोड़ देने का आदेश मिला। गांधीजी ने इस आदेश को जनता के हक में पालन करने से नम्रतापूर्वक इंकार कर दिया। १७ अप्रैल को दूर-दूर से आये किसान कोठीवाले साहबों के विरुद्ध अपनी शिकायतें दर्ज कराते रहे। सरकार के सामने स्थिति भयंकर थी। उसने १८ अप्रैल को गांधी जी पर नोटिस और समन तामिल किया। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी और मोतिहारी में ऐसी भीड़ हुई जैसी कभी नहीं हुई थी। रक्सौल क्षेत्र के भी सैकड़ों लोग वहाँ उपस्थित हुए। कचहरी के दरवाजे का शीशा फुट गया। गांधीजी ने अपनी वकालत स्वयं की। मजिस्ट्रेट ने २१ अप्रैल को आदेश निर्गत करने को कहा। पर इस बीच वह एक सौ रुपये की जमानत पर गांधी को छोड़ने के लिए तैयार था। गांधी जी ने जमानत और जमानतदार प्रस्तुत करने में असमर्थता प्रकट की। मजिस्ट्रेट ने कहा—"अगर आप जमानत नहीं दे सकते, आप अपनी वैयक्तिक पहचान प्रस्तुत करें।" जब इसे भी प्रस्तुत करने से गांधी जी ने इंकार कर दिया तो मजिस्ट्रेट ने कहा—"बहुत अच्छा, २१ अप्रैल को आइये। उस दिन मैं अपना निर्णय दूँगा।"

१९ अप्रैल से किसान भारी संख्या में पुनः आने लगे और राजेन्द्र बाबू, धरणीधर बाबू, अनुग्रह बाबू, रामनवमी बाबू जैसे उनके सहयोगियों से अपनी शिकायतें दर्ज कराते रहे।

२० अप्रैल को गांधी जी को सूचना मिली कि लेफ्टीनेन्ट गर्वनर के आदेश से उनके विरुद्ध मुकदमा उठा लिया गया। कलक्टर ने कहा, 'आप जब मुझसे मुलाकात करना चाहें, कर सकते हैं। यह सविनय अवज्ञा का पहला पाठ था।

८५० गांवों से ६० कोठीवालों के खिलाफ लगभग ४० हजार शिकायतें दर्ज हुईं। २२ अप्रैल को गांधीजी बेतिया पहुँचे, जहाँ दस हजार लोगों की भीड़ हुई। महात्मा गांधी ने स्वयं कई कोठियों का भ्रमण किया और गांवों की तथा रैयतों की दुर्दशा अपनी आंखों देखी।

कोठीवाले और स्थानीय अधिकारी गांधी जी के पीछे बुरी तरह पडे हुए थे। चम्पारण में गांधी जी की उपस्थिति में साहबों तथा अधिकारियों का रोब घटता जा रहा था। कुछ ने लेफ्टीनेन्ट गवर्नर से मुलाकात कर गांधी

जी की जाँच के विरुद्ध शिकायत की, पर गांधी जी की जाँच चलती रही। ४ जून को ले. गवर्नर सर एडवर्ड गेट की बुलाहट पर गांधी जी ने राँची में उनसे मुलाकात की, जहाँ दो दिनों तक उनसे बातें होती रहीं। सर गेट गांधीजी की बातों से बहुत प्रभावित हुए और सरकार की ओर से एक जाँच समिति गठित करने की घोषणा कर दी, जिस समिति के एक सदस्य के रूप में स्वयं गांधी जी सम्मिलित किए गए। विशद चर्चा के बाद ३ अक्टूबर १९१७ को समिति ने रिपोर्ट पर हस्ताक्षर कर दिए। १ मई १९१८ को चम्पारण एग्रेरियन एक्ट स्वीकृत हो गया। इसके अनुसार तीनकठिया प्रथा की समाप्ति हो गयी और इसे गैरकानूनी घोषित किया गया। मालगुजारी के अतिरिक्त अमलों द्वारा किसी प्रकार की दस्तूरी लेना गैरकानूनी घोषित किया गया। बैलगाड़ी के लिए सट्टा की उचित दर तय हुई—आदि, आदि। चम्पारण की हजारों जनता के साथ रक्सौल क्षेत्र की सैकड़ों जनता ने भी चैन की साँस ली।

गांधी जी ने चम्पारण आते ही जनता की शिकायतों के संदर्भ में कोठी वाले साहबों के पास कई पत्र भी लिखे थे। यहाँ मात्र हरदिया कोठी से संबंधित उसके मैनेजर जे० पी० एडवर्ड के पास भेजे दो पत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

Letter to J. P. Edward — Bettiah

May 17, 1917

Dear sir,

Butai Sahu Halwai, Guli Sahu Kanu and Bhadrul thakur Badai of Raxaul Bazar have shown me receipts they hold for lands leased them by you. They say that their houses are burnt down and that they are now being prevented from rebuilding and are being asked to vacate the lands in their possession. Will you kindly let me know whether there is any truth in the above statements and if so why they are being prevented from rebuilding?

Yours faithfully

M. K. Gandhi

अर्थात् — जे० पी० एडवर्ड के पास पत्र — बेतिया

मई १७, १९१७

प्रिय महाशय,

रक्सौल बाजार के बुटाई साह हलुवाई, गुली साह कानू और भरदुल ठाकुर बढ़ई ने आपके द्वारा उनके नाम से बन्दोबस्त की हुई जमीन की रसीद, जो उनके पास है, दिखाई है। उनका कहना है कि उनके घर जल गए हैं और

उस पर पुनः घर बनाने से उन्हें रोका जा रहा है । यहाँ तककि उनसे उस जमीन को खाली कर देने के लिए कहा जा रहा है। क्या कृपया आप मुझे अवगत करायेंगे कि उनके इस कथन में कहाँ तक सत्यता है ? अगर इसमें सच्चाई है तो उन्हें फिर से घर बनाने से क्यों रोका जा रहा है ?

आपका विश्वासी
एम० के० गाँधी

(बुटाई साह कामरेड वैद्यनाथ प्र० के पितामह तथा गुली साल कानू श्री हरिराम पानवाले के पिता थे। भरदुल ठाकुर बढ़ई ने बहुत दिनों तक आज के सिनेमा चौक के पास बढ़ईगिरी का काम किया था ।)

उपर्युक्त एक पत्र हरदिया कोठी के साहब की ज्यादतियों को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है ।

वैसे, जे० पी० एडवर्ड ने शीघ्र ही उस पत्र का जवाब दिया—दिनांक २०-५-१७ को, जो पत्र उपलब्ध नहीं है। पर उसके प्रत्युत्तर में गांधी जी ने २१-५-'१७ को एडवर्ड के पास जो पत्र लिखा वह उपलब्ध है, जिससे जे० पी० एडवर्ड की भी कुछ बातें मालूम होती हैं, और इलाके के साहबों पर गांधी जी का प्रभाव भी ।

वह पत्र यों है—

Bettiah
May 21,1917

Dear Mr. Edward,

I thank you for your letter of the 20th instant. I have told the men the contents of your letter.

Your
M. K. Gandhi.

अर्थात्

बेतिया
२१ मई १९१७

प्रिय श्री एडवर्ड,

आपकी २० तारीख की चिट्ठी के लिए धन्यवाद। आपके पत्र के तथ्यों से मैंने संबंधित व्यक्तियों को अवगत करा दिया है।

आपका
मो० क० गांधी

गांधी जी १५ अप्रैल १९१७ को चम्पारण आए। उनके यहाँ आगमन के एक माह के अन्दर ही साहबों पर उनका प्रभाव जम चुका था। अतः लगता है उपर्युक्त तीन व्यक्तियों को एडवर्ड ने घर बनाने का आदेश दे दिया था, जिसके लिए गांधी जी ने एडवर्ड को धन्यदाद दिया।

४. रक्सौल नामकरण : कुछ अटकलबाजियाँ, कुछ तथ्य

लगभग हर स्थान के नाम के पीछे कोई-न-कोई इतिहास होता है। किसी स्थान-विशेष का नाम किसी विशिष्ट व्यक्ति के नाम पर, वहाँ उत्पन्न होनेवाली किसी प्रमुख चीज के नाम पर, किसी ऐतिहासिक घटना के नाम पर या उससे सम्बद्ध अन्य वस्तु के नाम पर पड़ता है। रक्सौल नाम की खोज करने पर इसी तरह की एक-दो बातें सामने आयी हैं।

कुछ लोगों का यह कहना कि कभी यह क्षेत्र घनघोर जंगल था और यहाँ राक्षस रहा करते थे, इसलिए इसका नाम रक्सौल पड़ा; तथा कुछ लोगों का सीमा-भूमि पर बनने-बिकने वाली रक्शी (शराब) से रक्सौल नाम जोड़ना, तथा फिर कुछ लोगों द्वारा अंग्रेजी के 'रैक्सल' से बिगड़ते-बिगड़ते रक्सौल हो जाना—कहना न केवल कल्पना की उड़ान है, बल्कि कुछ-कुछ हास्यास्पद भी है।

इस शताब्दी के प्रारंभिक काल में, जिस समय सुगौली से यहाँ-तक रेलवे लाइन आयी थी, रक्सौल बाजार का अस्तित्व भी नहीं था, पर निश्चय ही रेलवे स्टेशन का नाम रक्सौल था। स्टेशन का नाम रक्सौल पड़ने का भी एक प्रमुख कारण था। स्टेशन-भवन के ठीक सामने दक्षिण, कुछ ही गज की दूरी पर, रक्सौल गांव था, जो आज भी है और रक्सौल मौजे के नाम से जाना जाता है। यह गांव बहुत पुराना गांव है। फिर, बहुत पुराने सर्वे-नक्शे में, जब रेलवे-स्टेशन निर्मित भी नहीं हुआ था, एक विस्तृत क्षेत्र के लिए रक-सौल नाम अंकित है।

सन् १८४६ में हुए भूमि-सर्वे (जो प्रथम प्रोफेशनल विलेज सर्वे के अन्तर्गत रेवेन्यू सर्वे के नाम से जाना जाता है) के अनुसार निर्मित नक्शे में रक्सौल क्षेत्र अंकित है, जिस क्षेत्र के लिए नक्शे में ८१ नं० आवंटित है। उस नक्शे में रक्सौल क्षेत्र की परिसीमा मात्र एक रेखा द्वारा घिरी हुई दिखाई गई है। इसके अन्दर खेतों या अन्य भूमिखंडों का बटवारा नहीं किया गया है। इस नक्शे के अनुसार रक्सौल का सम्पूर्ण क्षेत्र मात्र एक ही प्लॉट के अन्तर्गत है। इसे बाउन्ड्री–सर्वे भी कहते हैं। इस नक्शे के अनुसार रक्सौल की चौहद्दी यों है—उत्तर में नेपाल, दक्षिण में कौड़िहार पूरब, में नोनेया और पश्चिम में धनगढ़वा टोला परेउआ।

सन् १८८५ में हुए कैडेस्ट्रल सर्वे के अनुसार नक्शे में बहुत कुछ वही है,

पर खेतों एवं अन्य भूखंडों को रेखाओं – चित्रों द्वारा थाना नं० ७ के अन्तर्गत दिखलाया गया है। उस समय रक्सौल आदापुर थाना के अन्तर्गत था, जिसका नं० ७ था।

तीसरा भूमि सर्वे सन् १९१४ में सम्पन्न हुआ। इस सर्वे के अनुसार रक्सौल क्षेत्र के लिए बने नक्शे में अपेक्षाकृत अधिक छोटे-छोटे टुकड़े दिखलाए गए हैं। रक्सौल बाजार कुछ बस गया है। उस समय तक बाजार में बसे हुए लोगों द्वारा लिए गए 'प्लॉट' इसमें अंकित हैं। चौहद्दी पहले की तरह है।

ऊपर की सारी बातों से स्पष्ट है कि कम-से-कम सन् १८४६ से रक्सौल नाम का अस्तित्व है। वैसे, सर्वे–कार्य से संबंधित एक जानकार व्यक्ति का तो यहाँ तक कहना है कि अकबर के समय में टोडरमल द्वारा जो भूमि की पैमाईश हुइ थी, उस समय भी रक्सौल नाम का अस्तित्व था।

जो भी हो, प्रश्न उठता है कि यह रक्सौल नाम आया कहाँ से ?

इस पुस्तक के दूसरे अध्याय से स्पष्ट है कि भारत-नेपाल की सीमा शताब्दियों से परिवर्तित होती रही है। यहाँ से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर घोड़ासहन के पास स्थित सिमरौनगढ़ आज नेपाल में है, कभी यह चम्पारण में था। नेपाल के छोटे-छोटे राजाओं तथा बेतिया के राजा के साथ सीमा-प्रश्न को लेकर कई बार संघर्ष हुए हैं। सुगौली में सन् १८१६ से एक लम्बी अवधि तक फौजी छावनी रही है। सन् १८५७ में इस फौजी छावनी में विद्रोहियों ने कई अंग्रेज अधिकारियों को मौत के घाट उतारा था। इन सारे प्रसंगों का वर्णन दूसरे अध्याय में सविस्तार आया है। कहा जाता है कि मसीनाडीह में, जो रक्सौल बाजार से लगभग ३ किलोमीटर दक्षिण है, रक्षा की दृष्टि से कभी फौज रहा करती थी। वहाँ एक किला था, जिसका संबंध कुछ लोग राजा मानसिंह से जोड़ते हैं, तो कुछ लोग केसरिया के बेणु राजा से। वह किला आज मिट्टी के अन्दर छुपा है और एक डीह (किला) का रूप धारण कर चुका है। ग्रामीणों द्वारा खुदाई करने पर उसमें से उस जमाने की कइ चीजें आज भी उपलब्ध हो जाती हैं। सचमुच सरकार द्वारा उसकी खुदाई कराकर सच्चाई जानने का प्रयत्न होना चाहिए।

नेपाल से मिलने वाली इस सीमा-भूमि पर कई स्थानों में जमाने से फौज रहा करती थी। ढेंग के उत्तर में मेचरगंज तथा घोड़ासहन के उत्तर लाइन बसवरिया में ब्रिटिश फौज रहती थी, उसके चिह्न आज भी मौजूद हैं। कभी नेपाल की सेना भी रक्षा की दृष्टि से इस सीमा–भूमि पर रहती थी। सुना

जाता है कि मसिनाडीह का संबंध, कुछ ही दिनों के लिए सही, नेपाल से भी था। जो भी हो, यह स्पष्ट है कि इस भूमि का रक्षा की दृष्टि से अत्यधिक महत्व रहा है। जमाने से फौजी दृष्टि से या अन्य दृष्टि से इस भूभाग से होकर मुख्य मार्ग भी रहा है, जो आज भी है।

हाँ, तो रक्षा की दृष्टि से इस क्षेत्र के महत्व के कारण इसका नाम रक्षालय (रक्षा का घर) या रक्षावलि पड़ा। 'रक्षावलि' शब्द से रक्षा पंक्ति का बोध होता है। कहते हैं इस स्थान के लिए यह संस्कृत शब्द नेपालियों द्वारा प्रदत्त है। 'रक्षालय' या 'रक्षावलि' से ही रक्सौल अपभ्रंश हुआ है। यह अपभ्रंश या तो मुस्लिम काल में हुआ होगा या अंग्रेजी काल में। रक्सौल को अंग्रेजी में Raksaul नहीं लिखते, बल्कि 'Ks' के स्थान पर 'x' व्यवहार करते हैं। अंग्रेजी में बहुधा 'क्ष' के लिए 'x' लिखा जाता है। यथा लक्ष्मी (Laxmi). उर्दू जुबान वाले भी संस्कृत के शब्दों को अक्सरहा विकृत रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसके घनेरों उदाहरण हैं।

बेंतों की अधिकता के कारण 'बेत्रवती' नाम से पुकारा जाने वाला स्थान बाद में बेतिया बन गया। भक्त 'महेश' द्वारा बसायी गयी बस्ती 'महेशी' कालान्तर में 'मेहसी' बन गयी। ऐसे विकृत नामों के अनेकों उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। तो किसी तरह यह 'रक्षालय' या 'रक्षावलि' भी पहले 'रक्षाल' 'रक्साल' और फिर रक्सौल में परिणत हो गया। आज अधिकतर ग्रामीण इसे 'रकसउल' या 'रसकउल' भी कहते हैं।

५. निलहे साहब का स्वर्ग हरदिया कोठी और एक नये नगर का उद्भव

रक्सौल बाजार की नींव एक ऐसे व्यक्ति द्वारा पड़ी जो इस इलाके का नहीं, इस जिले का नहीं, इस देश का नहीं, बल्कि सात समुन्दर पार इंगलैंड का बासी था। वह व्यक्ति था हरदिया कोठी का अंग्रेज मैनेजर मि०एफ० डी० फ्लेचर जो फलेजर साहब के नाम से मशहूर था। फलेजर के पूर्व कोठी का मैनेजर थाप साहब था। अपने कार्यकाल के अन्तिम समय में थाप की चल नहीं पायी। रैयतों से मालगुजारी वसूल की जाती सही, पर वसूल करने वाले कर्मचारी ही उसका अधिकांश खा जाते। लगता है थाप कुछ ढीला-ढाला आदमी था। रैयतों के साथ कर्मचारी, साहब के नाम पर कठोरता दिखलाते, मालगुजारी के साथ और कई तरह के अबवाब वसूल करते, किसी-किसी रैयत से साल में दो बार तक मालगुजारी वसूल लेते, पर थाप के पास बहुत कम राशि पहुँच पाती थी। हरदिया कोठी के मालिक आर० हडसन की आमदनी में तेजी से ह्रास होने लगा। जोकियारी के लोगों ने कुछ कर्मचारियों को बुरी तरह पीटा भी। इस तरह की छिट-फुट घटनायें घटने लगीं। थाप से मामला संभल नहीं रहा था। हडसन ने थाप को हरदिया कोठी से कार्यमुक्त कर दिया। थाप संभवतः सिकटा कोठी में नियुक्त हो गया।

गोलान्ड हडसन ने इस बिगड़ी स्थिति में किसी कड़े मैनेजर की नियुक्ति की बात सोची। उसने कैप्टन एफ० डी० फ्लेचर को मैनेजर के पद पर नियुक्त किया, जिसमें सैनिक कठोरता के साथ व्यवहार-कुशलता भी थी।

फलेजर बीसवीं सदी के बिल्कुल प्रारंभ में हरदिया कोठी पहुँचा। उन दिनों सुगौली से रक्सौल तक ट्रेन चालू हो चुकी थी। फलेजर की ट्रेन जब रामगढ़वा से खुली, हरदिया कोठी के कई गांवों में दहशत-सी छा गयी। लोगों ने सुन रखा था कि कोई मिलिट्री का कैप्टेन मैनेजर के रूप में आ रहा है। जब फलेजर रामगढ़वा से ट्रेन द्वारा आ रहा था, कुछ ऐसी घटना घटी कि लोगों में और दहशत छा गयी। अधिक कुहासा के समय जब ट्रेन-ड्राइवर को कुछ दिखाई नहीं पड़ता, उसे ढलान अथवा सिग्नल की स्थिति बताने के उद्देश्य से फॉग सिग्नल (Fog Signal) का व्यवहार किया जाता है। ऐसे स्थानों में पटरी से सटे पटाखों की तरह कोई चीज रख दी जाती है, जो गाड़ी के चलने पर तेज

आवाज करती है और ड्राइवर को सही स्थिति का भान हो जाता है। कहा जाता है कि जब फलेजर रामगढ़वा से ट्रेन द्वारा आ रहा था, तो इसी तरह के फॉग सिग्नल का व्यवहार किया गया था। एक वयोवृद्ध का कहना है कि उस समय वस्तुतः कुहासा नहीं था। रेलवे लाइन के इर्द-गिर्द हरदिया कोठी के गावों में महज दहशत पैदा करने के उद्देश्य से इस तरह की आवाज पैदा की गई थी। अभी--अभी रेलवे लाइन चालू हुई थी। इसके पूर्व किसी ने गाड़ी आते समय रेलवे लाइन पर इस तरह की आवाज सुनी नहीं थी। संभव है कि कुहासा रहा भी हो, पर पहली बार इस तरह की आवाज से फलेजर के आने के साथ ही उसके रोब की दहशत लोगों पर पूरी तरह छा गयी।

फलेजर अपने दो खुंख्वार कुत्तों के साथ रक्सौल स्टेशन से हरदिया कोठी पहुँचा। भय के कारण कई दिनों तक कोठी के कर्मचारियों के अतिरिक्त इलाके के साधारण जनों ने उससे मुलाकात नहीं की। लोगों ने कुछ दिन पहले कोठी के कर्मचारियों को पीटा था, इसलिए भी लोगों में भय व्याप्त था। कई तो सीमा पार कर नेपाल की भूमि में चले गए थे। फलेजर स्वयं कई गांवों में घूमा, पर पुरुषों से उसकी मुलाकात नहीं हुई। फिर फलेजर ने अपने कुछ कर्मचारियों को उन्हें समझा-बुझाकर लाने को कहा। कई आये भी। फलेजर उनके साथ बहुत अच्छी तरह पेश आया। इस तरह कई लोगों से उसने मुलाकातें कीं। उसे सही स्थिति का पता चल गया। उसे मालूम हो गया कि कर्मचारी ही मालगुजारी के पैसे खा गए हैं। रैयत में दोष नहीं है।

उन दिनों साहबों द्वारा रैयतों को कई तरह के दंड दिये जाते थे। इनमें एक दंड प्रचलित था मुर्गीखाने या सूअरखाने में उन्हें कुछ समय के लिए बन्द कर देना। फलेजर ने रैयत के स्थान पर कुछ दोषी कर्मचारियों को सूअरखाने में बन्द कर दिया। कुछ दिनों के लिए वह कर्मचारियों के साथ बड़ी सख्ती के साथ पेश आया। स्थिति सम्भलती नजर आने लगी। वैसे, कर्मचारियों के बगैर सहयोग के २२ गांवों पर शासन करना, कर वसूलना, खेती कराना आदि आसान काम न था, इसलिए कर्मचारियों की मनमानी कुछ हद तक चलती रही। हाँ, शुरू में कुछ दिनों के लिए उनकी मनमानी पर अंकुश अवश्य रहा।

शुरू में २२ मौजे की रैयत से मालगुजारी वसूल करने के लिए उसने अलग-अलग २२ दिन निश्चित किए। गावों में ताशा बजाकर सूचना दे दी गयी। निश्चित तिथि को निश्चित मौजे के किसान हरदिया कोठी पहुँचते और साहब के सामने मालगुजारी की रसीद कटती। जाते वक्त प्रत्येक के हाथ में दो-दो लड्डू होते। कहते हैं २२ दिनों में फलेजर ने २२ मन लड्डू बांटे। उन दिनों

पटवारी मालगुजारी की रसीद काटने पर फरकावन के नाम पर प्रत्येक रसीद पर एक रुपया वसूल करते, हालांकि कोठी की ओर से इसके लिए उन्हें कमीशन प्राप्त होता था। इन २२ दिनों में फलेजर के सामने जितनी भी रसीदें कटीं, एक के लिए भी यह नाजायज राशि नहीं वसूल की गई। इस तरह फलेजर ने अपने रोबदार व्यक्तित्व, सैनिक चुस्ती एवं व्यवहार-कुशलता से शीघ्र हीं स्थिति संभाल ली। कोठी की आमदनी बढ़ गयी। कोठी का मालिक रोलान्ड हडसन, जो अधिकतर इंगलैंड में ही रहा करता था, फलेजर की कार्य-कुशलता से प्रभावित हुआ।

हरदिया कोठी की आमदनी बढ़ने के साथ ही फलेजर की शान-शौकत में भी चार चाँद लग गए। हरदिया कोठी का परिवेश, जो पहले से ही भव्य एवं आकर्षक था, स्वर्ग बन गया। हरदिया जैसे पिछड़े इलाके में फलेजर के परिवार के लिए सुख के लगभग सारे साधन उपलब्ध थे। जीवन को सुख-मय बनानेवाली इंगलैंड से जो भी वस्तु कलकत्ता पहुंचती, फलेजर के पास आ जाती। बहुत सारे सामान सीधे इंगलैंड से भी पहुँचते। फलेजर इन वस्तुओं को खरीदने में काफी पैसे खर्च करने लगा।

अब फलेजर को अपने नाम से एक बाजार बसाने की धुन सवार हुई। इसकी प्रेरणा उसे 'वीरगंज' से प्राप्त हुई। हरदिया में फलेजर के आने तक वीरगंज बाजार बहुत कुछ बस चुका था। वीरगंज बसने के पूर्व नेपाल राज्य में निकट में छपकैया, सुगौली और गहवा प्रमुख बाजार थे। अलऊ में कच-हरी थी। पर नेपाल के प्रधान मंत्री वीर शमशेर राणा ने, जिनका शासन-काल सन् १८८५ से ५ मार्च १९०१ तक रहा, अपने नाम पर वीरगंज नगर बसाया। फलेजर को मालूम हुआ कि निकट में ही किसी व्यक्ति के नाम को स्थाई रखने के लिए एक नगर का निर्माण हुआ है। सुना जाता है कि इस इलाके के किसी प्रमुख व्यक्ति ने साहब को खुश करने के उद्देश्य से अपने नाम पर इस तरह के एक नगर बसाने की प्रेरणा दी थी।

फलेजर ने रक्सौल स्टेशन के निकट की भूमि के महत्व को, जो ठीक सीमा पर स्थित थी, पहचान लिया था। अतः बाजार बसाने के उद्देश्य से फलेजर ने ३ अप्रैल १९०७ को बेतिया राज्य से २२ बीघा का एक प्लॉट प्रथम चरण में १७ वर्षों के लिए लिया। वैसे, यह भूमि हरदिया कोठी के अन्त-र्गत पड़ने वाले २२ मौजे के अधीन थी, पर इस प्लॉट को बाजार बसाने के लिए उसने मोकर्ररी कराया। इस भूमिखंड की चौहद्दी यों थी—उत्तर में

रक्सौल रेलवे स्टेशन से मुख्य मार्ग तक आनेवाली सड़क, दक्षिण में स्व० सरयुग प्र० कानू (राजकीय अस्पताल के सामने पश्चिम), पूरब में आज का राष्ट्रीय उच्च पथ २८ ए०, पश्चिम में रक्सौल रेलवे की भूमि, जो आज भी खाली है।

फ्लेजर ने बाजार बसाने में जो रुचि ली, जो श्रम किया, जो तरीके अपनाए, उसे भुलाया नहीं जा सकता। फ्लेजर ने सबसे पहले अपनी कल्पना के अनुसार एक छोटा-सा नकशा तैयार किया। २२ बीघा के प्लॉट के अन्दर उसने कई मार्ग निकाले। काश ! वे मार्ग आज ज्यों-के-त्यों होते, तो रक्सौल बेतरतीब-बसी नगरी की संज्ञा न पाता।

फ्लेजर सैनिक होते हुए भी पक्का बनिया था। कुछ ही दिनों के अन्दर उसने यहां के लोगों की मनोवृत्ति को अच्छी तरह समझ लिया था। इसलिए इस हिन्दू-बहुल क्षेत्र में हिन्दू-पद्धति के अनुसार एक शुभ मुहूर्त में उसने बाजार की नींव डाली। बाजाप्ता उसने वास्तु-पूजा करायी। वास्तु-पूजा करानेवाले पंडित थे स्व० श्री देवनारायण पांडेय (वैद्य श्री रामसकल पांडेय के पिता जी) जो गोबिन्दगंज थाना से आकर गम्हरिया में खेती-बारी कराते थे और इलाके में पूजापाठ कराने वाले पंडित के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे। तो, फलेजर ने विधिवत् वास्तु-पूजा करायी। कलश-स्थापन हुआ। हवन-यज्ञ हुआ। प्रसाद बंटे। फलेजर ने वास्तुपूजा के लिए पंडित जी को बाजार में ही जमीन देनी चाही। पर उस समय उस जमीन की क्या कीमत? पंडित जी ने नगद राशि लेनी चाही। यह किसी मकान की वास्तु-पूजा तो थी नहीं, एक भावी नगर की वास्तु-पूजा थी। अतः इसका पारिश्रमिक उस जमाने में भी १०१ रु० से क्या कम हो सकता था?

फलेजर द्वारा लिए गए उस भूखंड का अधिकांश भाग उन दिनों कोठा-डुमर, खरहुल, भांग, आदि के पौधों से भरा था—बिल्कुल सूनसान और वीरान। नेपाल राज्य से चोरी कर भागनेवालों का अड्डा था यह भाग उन दिनों। कहा जाता है कि आज के पटेलपथ (श्री राम निहोरा साह स्वर्णकार के मकान के निकट) कुछ अहीर परिवारों का मात्र एक छोटा-सा टोला था, जो अहिरवा टोला के नाम से जाना जाता था, जिसे फलेजर ने खाली कराकर टोला को सिरिसिया नदी के पास बसाया। तबसे यह अहिरवा टोला उसी के आस-पास कई स्थानों पर उजड़ता-बसता रहा है। फलेजर द्वारा लिए गए इस भूखंड से सटे कोइरिया टोला, रक्सौल मौजे, कौड़िहार, परेउआ, आदि ऐसे गांव हैं, जिनका अस्तित्व सैकड़ों वर्षों का है, जैसा कि पहले कहा गया है।

हरदिया कोठी के अन्तर्गत पड़नेवाली २२ मौजे की कृषि योग्य भूमि की मालगुजारी ३ रु० से ४ रु० बीघा थी। पर इस बाजार की भूमि की मालगुजारी फलेजर ने आठ आने धूर निश्चित की ! इसका मतलब था कि बाजार बस जाने के बाद उसे प्रतिवर्ष ४ हजार से अधिक रु० मात्र मालगुजारी से प्राप्त होते। जमीन बन्दोबस्त करने में जो राशि प्राप्त होती वह अलग। हाँ, शुरू-शुरू में जमीन बन्दोबस्त करने में किसी-किसी से उसने पैसे नहीं लिए, अगर लिए भी तो बहुत कम। फिर भी जमीन लेने से लोग हिचकते थे। क्योंकि मालगुजारी सचमुच बहुत अधिक थी। हाँ, कुछेक दूरदर्शी व्यक्तियों ने विशेष हिचकिचाहट नहीं दिखलाई। 'फलेजरगंज बाजार' शीघ्र बसे और द्रुतगति से विकसित हो, इसके लिए फलेजर ने बहुत श्रम किया।

फलेजर गंज बाजार की नींव पड़ने के पूर्व निकट में कौड़िहार, मसिनाडीह तथा सीमा-पार नेपाल में छपकैया तथा सुगौली के प्रमुख बाजार थे। इन निकटस्थ नेपाली बाजारों में भी रक्सौल क्षेत्र के लोग भारी संख्या में खरीद-फरोक्त के लिये जाया करते थे। सन् १८८८ में मुजफ्फरपुर से सुगौली तक रेलवे लाइन आ गयी थी। सुगौली से पैदल नेपाल के यात्री मुख्य मार्ग होते हुए नयकाटोला से गुजरते, जहाँ खाने-पीने की कुछेक दूकानें खुल गयी थीं। महत्वाकांक्षी फलेजर ने इन सारे बाजारों को तोड़कर फलेजर गंज बसाना चाहा।

जिन प्रथम दो व्यक्तियों को यहाँ के प्रारंभिक नागरिक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे हैं स्व० श्री शिवनन्दन साह हलुआई एवं स्व० श्री गुली साह कलवार। फलेजर गंज की नींव पड़ने के पूर्व इन दोनों की दुकानें भारत-नेपाल सीमा पर बने पुल के पास थीं। उन दिनों यह पुल अभी निर्मित नहीं हुआ था। भारतीय माल से लदी नेपाल जानेवाली बैलगाड़ियों को सिरिसिया नदी पार करना होता था। गाड़ीवानों तथा अन्य पैदल यात्रियों के लिये उपर्युक्त दो व्यक्तियों ने नदी के पास खाद्य-समाग्री की दुकानें खोल रखी थीं। स्व० श्री शिवनन्दन साह (स्व० श्री अक्षय लाल के पिता) चम्पापुर बखरी से तथा स्व० गुली साह (स्व० श्री गोरख राम भुटेली राम के पिता) गोबिन्दगंज से यहाँ आये थे। इन दोनों व्यक्तियों पर फलेजर की पहली दृष्टि पड़ी। उसने आज के टेलीफोन एक्सचेंज रोड में इन्हें जमीन दी। आज भी उनके मकान उसी रोड में स्थित हैं। सन् १९०७ में सबसे पहले यही रोड बसा। फलेजर ने लारेन्स नामक एक क्रिश्चन बढ़ई को इसी रोड में बसाया, जो शुरू-शुरू के बसनेवालों में था। प्रथम बसने वालों में कुछ अन्य लोग

यों हैं—पटना के श्री महावीर प्रसाद चौधरी (श्री द्वारका राम, मिलवाले के पिता जी), श्री जगन्नाथ प्र० जालान (जो मोतिहारी से आये), श्री गोवर्द्धन राम हलुआई (श्री हरिहर राम हलुआई के पितामह) तथा हलुआई जाति के इनके कई अन्य निकटस्थ, श्री नन्हकी भगत, श्री गुरतली मियाँ, श्री शेखावत मियाँ, श्री अब्दुलाह मियाँ (जहीर बाबू के पिताजी) श्री गोपाल राम घिवाड़ी, रामधारी भगत, परमेसर भगत, पराउ साह तेली, श्री लालधारी साह-रामधारी साह-दिलबोध साह, श्री इसरी साह तेली, श्री तपेसर साह (जोकियारी), श्री मीना ठाकुर (श्री विन्ध्याचल प्र० "फ्रेमर" के पितामह) उनके अन्य निकटस्थ, श्री सखीचन्द साह (स्व० श्री रामगोविन्द राम के पिता जी), उनके अन्य निकटस्थ, आदि।

पक्का का प्रथम मकान श्री जगन्नाथ प्र० जालान का निर्मित हुआ। प्रारंभिक अवस्था में यह बहुत ही छोटा था, जो साधारण व्यापार की दृष्टि से निर्मित हुआ था। उसी स्थान पर आज उनका विशाल आवासीय भवन खड़ा है। लगता है दूसरा पक्का मकान श्री लालधारी साह-रामधारी साह का बना। बहुत दिनों तक यहाँ पक्का के मकान उंगलियों पर गिनने लायक थे। रक्सौल के फूस के मकानों में कई बार भयंकर आग लगी है और बाजार लगभग स्वाहा हुआ है।

फलेजर ने नगर की वास्तु-पूजा कराने के बाद जो पहला प्रमुख काम किया वह था एक पोखरे का निर्माण। श्री हरि प्रसाद जालान के आवासीय भवन के पीछे (पूरब) वाली भूमि को फलेजर ने हाट लगाने के लिए उपयुक्त स्थान समझा, जहाँ दूर-दराज से आने वाले गाड़ीवानों, हाट-बाजार करने वाले लोगों तथा मवेशियों को पानी की सुविधा मुहैया करने के उद्देश्य से उसने इस पोखरे का निर्माण कराया। उसी के किनारे हाट लगाना शुरू हुआ।

ऊपर कहा गया है कि उन दिनों इधर चार बाजार प्रमुख थे—कौड़िहार, मझिनाडीह एवं सीमा पार छपकैया तथा सुगौली। सुगौली में प्रमुख हाट रविवार और बुधवार को लगा करते थे, जहाँ इस क्षेत्र के लिए लोग भारी संख्या में खरीद-बिक्री के लिए जाया करते थे। फलेजर ने यहाँ भी प्रमुख हाट रविवार और बुधवार को ही लगाना शुरू किया और सुगौली (नेपाल) जाने वाले लोगों को अपने अमलों द्वारा, रेलवे लाइन के पास, जहाँ से सुगौली बाजार जाने का रास्ता था, एक तरह से घेरवाता। फलेजर के आदमी उन्हें नये बाजार की ओर मोड़ देते। आज भी यहाँ प्रमुख हाट रविवार एवं बुधवार

को ही लगते हैं। फलेजर ने मसिनाहीह और कौड़िहार के बाजार को भी तोड़ा। धीरे धीरे नये बाजार में खरीद-फरोख्त करने वाले लोगों की संख्या बढ़ती गयी।

हाट की स्थिति मजबूत करने के साथ-साथ फलेजर का ध्यान नगर-विस्तार-योजना की ओर भी गया। कौड़िहार में बहुत पहले से कुछ स्थायी दुकानें थीं। छपरा जिला के लकड़ी ग्राम के श्री मनमोध साह ने कपड़े की दूकान खोल रखी थी। जोकियारी-निवासी श्री तपेसर साह के अतिरिक्त कुछ स्थानीय व्यक्तियों की भी कपडे की दूकानें थीं। नेपाल तराई में बसे थारु जाति के लोग उनके विशेष खरीददार थे। ये कपडे के कुछ दुकानदार बेतिया से बैल और घोड़ों पर कपडे लाते और कौड़िहार में बेचते थे। बुधवार और रविवार को सुगौली के नेपाली बाजार में भी इनका कपड़ा बिकता था। फलेजर की दृष्टि इन कपड़ा-विक्रेताओं पर गयी और वह उन्हें अपने बाजार में खींच लाया। नयका टोला के कुछ दुकानदारों को भी, जिनमें स्व० श्री रामगोविन्द राम के कुछ निकटस्थ भी थे, अपनी जमी-जमायी दुकानदारी छोड़कर इस नयी जगह में आना पड़ा। फलेजर रामगढ़वा से भी कुछ लोगों को यहाँ खींच लाया। स्व० श्री सरयुग राम कानू, कुछ कुर्मी जाति के लोग रामगढ़वा से ही यहाँ आये। इस तरह चारो तरफ से लोगों को जुटाने में फलेजर को बड़ा श्रम करना पड़ा। इनमें से अधिकांश अपनी जमी-जमायी दुकानदारी छोड़कर आना नहीं चाहते थे। पर फलेजर अपने इलाके के लोगों पर अपने रोब का भी इस्तेमाल करता और उन्हें बसने की सुविधाएँ भी मुहैया करता। शुरू-शुरू में, अधिकांश मामलों में उसने खर-बाँस और मिस्त्री की स्वयं व्यवस्था की। फिर भी मालगुजारी इतनी अधिक थी कि लोग जल्द बसने की हिम्मत नहीं करते थे। कइयों ने तो ली हुई जमीन भी छोड़ दी। यह अजीब विडम्बना है कि आज लगभग ७० वर्ष बाद भी इस भूमि की मालगुजारी ८ आने ही धूर है, जबकि इन ७० वर्षों में वस्तुओं की कीमत में लगभग ५० गुनी वृद्धि हुई है। मुख्य मार्ग के पूरबवाली जमीन की मालगुजारी ३ रु० ४ रु० बीघा थी, जो आज भी ज्यों-की-त्यों है।

फलेजर ने बाजार के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास किया। इस धर्म-बहुल प्रदेश में फलेजर की व्यवस्था में प्रति वर्ष महीनों रामलीला होती, जिसे देखने के लिए दूर-दराज के लोग आते, फलेजर की ओर से प्रसाद बंटता। ताजिए का मेला लगता, नामी-गिरामी पहलवानों की कुश्ती होती और इसी तरह का कोई-न-कोई आयोजन होता रहता, जिससे बाजार की महत्ता बढ़ती

गयी और इन खेल-तमाशों के दर्शकों के आवागमन के कारण खाद्य-सामग्री तथा अन्य छोटी--मोटी दुकानों की संख्या भी बढ़ती गई।

सुनते हैं फलेजर बच्चों में बड़ी दिलचस्पी लेता था। जब भी वह हरदिया से बाजार आता बच्चे उसे घेर लेते और वह उन्हें मिठाइयाँ देता। कभी-कभार अच्छे बिस्कुट और छोटे--मोटे मिट्टी के खिलौने भी। बाजार से लौटती बार हरदिया कोठी के रास्ते में लक्ष्मीपुर, धांगड़टोली आदि के लड़के उसे घेर लेते, वह अपना फिटिन रोक देता और बच्चों में मिठाइयाँ बांटता। इस काम में उसकी 'मेम' अधिक हाथ बटाती। २२ मौजे के लोगों में फलेजर के रोब की धाक थी। दूसरी तरफ बच्चे उससे हिलमिल-से गये थे। सुनते हैं दीवाली के बाद, ज्यों ही शरद ऋतु शुरू होती, फलेजर सैकड़ों गरीबों के बीच रूई का रग (एक प्रकार का हल्का कम्बल) वितरित करता।

बाजार अच्छा-खासा जम गया। फिर भी इर्द--गिर्द के गांवों के लोगों ने बाजार में विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाई। इसका एक प्रमुख कारण तो यह था कि यहाँ के लोग अपनी खेती में ही मस्त रहने वाले जीव थे। लोगों में व्याव--सायिक प्रवृत्ति नहीं के बराबर थी। अधिकतर यहाँ दक्षिण के लोग आये। निकट के गाँवों के लोगों की संख्या नगण्य ही रही। आज उनमें से अधिकांश अपनी भूल पर पछताते हैं। फलेजर के कथनानुसार सचमुच रक्सौल आज सोने की चिड़िया बन गया है, जिसका अधिकांश लाभ बाहर के लोग उठा रहे हैं। इर्द-गिर्द के लोग, जिनमें अब कुछ--कुछ व्यावसायिक प्रवृत्ति जगी है, अधिकांश मामलों में किराये के मकान में व्यवसाय करते हैं। और मकान का किराया इतना अधिक है जितना कई बड़े नगरों में भी नहीं है।

फलेजर ने अपने नाम को स्थायी रखने के उद्देश्य से फलेजरगंज बसाया अवश्य, पर उसके जीवन-काल में ही इस नाम का महत्व समाप्त हो चुका था। एक तो बाजार की नींव डालने के बाद फलेजर मात्र आठ वर्षों तक ही यहाँ रह सका, दूसरे, जमाने से इस क्षेत्र के लिए अधिकृत नाम रक्सौल ही था। चाहे सर्वे-विभाग द्वारा निर्मित नक्शा हो या अन्य सरकारी रिकार्ड सबमें इस बाजार के लिए रक्सौल नाम ही अंकित मिलता है। सन् १९१४ में हुए भूमि-सर्वे के अनुसार इस क्षेत्र के लिए निर्मित नक्शे में स्पष्ट एवं बड़े अक्षरों में लिखा है—मशहूर नामः रक्सौल। कुछ भूमि--सम्बन्धी दस्तावेजों में अवश्य लिखा मिलता है—रक्सौल उर्फ फलेजरगंज; पर केवल फलेजरगंज नहीं। पोस्ट ऑफिस, रेलवे स्टेशन, थाना--आउट पोस्ट, रेजिडेन्सी—सबके लिए स्थान के नाम पर 'रक्सौल' ही अंकित मिलता है। 'फलेजरगंज नाम बाजार के दुकानदारों में अथवा इर्द-गिर्द के ग्रामीण क्षेत्रों में अवश्य धड़ल्ले से प्रचलित

था। पर यहाँ से फलेजर के जाने के बाद से इस नाम की महत्ता में कमी आने लगी और कुछ ही वर्षों के बाद यह नाम लुप्तप्राय हो गया।

ऊपर कहा गया है कि हरदिया कोठी का स्वामी आर० हडसन स्थायी रूप से इंगलैंड में रहा करता था। फलेजर द्वारा बसाया गया बाजार हरदिया कोठी के ही अधीन था। हाँ, इस पर मोकररीं हक प्राप्त था। फलेजर के प्रबंध-काल में २२ मौजे तथा बाजार से कुल मिलाकर अच्छी आमदनी थी। पर ऐसा ज्ञात होता है कि हडसन को इसका बहुत कम अंश मिल पाता था। हडसन ने कोठी के अन्तर्गत पड़नेवाली ६० बीघा मोकररीं कृषि-योग्य भूमि पर समस्तीपुर तथा पटना के किन्हीं साहबों से कर्ज लिया था, जिस कर्ज को सधाने के लिए हडसन की ओर से फलेजर को आदेश प्राप्त था। फलेजर को हडसन के पास इंगलैंड भी राशि भेजनी होती थी। पर जब उस राशि में कमी होने लगी तो हडसन सपत्नीक हरदिया कोठी आ धमका। ऐसा सुना जाता है कि फलेजर ने पहले रुपये के मामले में कई बहाने बनाए, पर जब हडसन ने हरदिया कोठी को कलकत्ते के किसी साहब के हाथ से बेच देने की बात कही तो फलेजर के होश उड़ गये। उसकी आँखों के सामने यहाँ का ऐशो-आराम शानो-शौकत, रोब-दाब क्षण भर में ही नाच गए। उसने हडसन साहब के सामने 'पास-बुक' रख दिया, जिसमें अच्छी खासी राशि थी, ऐसा बताया जाता है। हडसन की पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई और खुशी में ताली पिटने लगी। कहा जाता है कि वह इतनी प्रसन्न हुई कि हडसन ने बाजार को फलेजर के नाम से लिख दिया।

फलेजर की बाजार बसाने में दिलचस्पी और बढ़ गयी। ऊपर कहा गया है कि सन् १९१४ तक बाजार का कुछ हिस्सा अच्छी तरह बस गया था। खासकर गल्ले की एक अच्छी खासी मंडी कायम हो चुकी थी। इसी बीच प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया, जिसमें इंगलैंड को बुरी तरह जूझना पड़ा। विदेश में रह रहे वैसे सभी अंग्रेजों के पास, जिनका सम्बंध कभी-न-कभी सेना के साथ रहा था, इंगलैंड उपस्थित होने का फरमान पहुँचा। चम्पारण में ऐसे कई कोठीवाले अंग्रेज थे, जो कभी सेना में रह चुके थे। फलेजर तो मिलिट्री का कैप्टेन ही रह चुका था। फलेजर की आंखों के सामने फिर एक बार अंधेरा छा गया, उसे अपना सपना चकनाचूर होते नजर आने लगा। एक बार उसने फिर बहाना ढूढ़ निकाला। अस्वस्थता तथा आंखों से दिखाई नहीं देने की बात इंगलैंड लिख भेजी। चम्पारण के कई साहबों ने इसी तरह का कोई-न-कोई बहाना बनाया था।

मोतिहारी-स्थित निलहों के क्लब में जिला के लगभग सभी कोठियों के साहब किसी विशेष अवसर पर उपस्थित थे। फलेजर भी वहाँ पहुँचा था। सरकार की ओर से नियुक्त किसी अंग्रेज अधिकारी को वहाँ उन साहबों की गतिविधि देखने के लिए, छद्म वेष में भेजा गया था, जिन्होंने अस्वस्थता का बहाना बनाकर युद्ध में जाने से इन्कार किया था। फलेजर बड़ी शान से मुंह में पाइप दाबे स्वयं फिटिन हांकता हुआ क्लब के मैदान में दिखाई पड़ा कि उस अंग्रेज अधिकारी ने उसे रोका। एक बार फिर फलेजर के होश उड़ गए।

फलेजर को युद्ध में चला जाना पड़ा। यह सन् १९१५ की बात है। फलेजर के स्थान पर जे० पी० एडवर्ड नामाक एक अंग्रेज हरदिया कोठी का मैनेजर नियुक्त हुआ। फलेजर ने जाते समय 'फलेजरगंज' को हरदिया कोठी में 'शिकमी' लिख दिया और कलकत्ता में रह रहे अपने किसी निकट के संबंधी को, संभवतः अपने भगिना को उसकी आमदनी प्राप्त करने का अधिकार दे दिया।

एडवर्ड के समय में बाजार का अच्छा विस्तार हुआ, हालांकि एडवर्ड को उतना श्रम नहीं करना पड़ा जितना फलेजर को करना पड़ा था। एक तो फलेजर के समय में ही बाजार बसने का सिलसिला बन चुका था, दूसरे, इस सीमा-भूमि के महत्व को लोग अब समझने लग गए थे।

ऐसा लगता है कि एडवर्ड फलेजर की तरह व्यवहार-कुशल व्यक्ति नहीं था। उसके समय में बाजार में जमीन-संबंधी कुछ मामलों को लेकर हड़तालें भी हुईं। जिस समय महात्मा गाँधी पहले-पहल चम्पारण के कोठीवाले साहबों के अत्याचारों से सतायी जनता की हालत स्वयं अपनी आँखों देखने यहाँ पहुँचे थे, हरदिया कोठी के अन्तर्गत पड़ने वाले गांवों के लोग अपनी शिकायतें लेकर महात्मा गाँधी से मोतिहारी और बेतिया में मिले थे। महात्मा गाँधी ने इस संदर्भ में क्या कुछ किया और जनता को कैसे राहत मिली, इसका विशद वर्णन अध्याय ३ में आ चुका है। बाजार की जमीन से संबंधित एडवर्ड के खिलाफ शिकायतें लेकर भी रक्सौल के कुछ लोग बेतिया में महात्मा गाँधी से मिले थे। महात्मा गाँधी ने १७ और २१ मई १९१७ को बेतिया से इस संदर्भ में जे० पी० एडवर्ड के पास जो दो पत्र लिखे थे, उनकी चर्चा पृष्ठ ३७ और ३८ में आ चुकी है।

फलेजर की तरह जे० पी० एडवर्ड भी हरदिया कोठी से अक्सरहा बाजार आया करता था। उसके बैठने की यहाँ एक निश्चित जगह थी, जहाँ से वह बाजार के मामलों का निबटारा किया करता था। नन्दू बाबू की पुरानी दवा

दूकान के पास (मीना बाजार से उत्तर) मात्र पायों पर स्थित, लगभग चारों तरफ से खुला एक बैठकखाना था, जिसके ऊपर कई कबूतरखाने थे, जिनमें सैकड़ों की संख्या में कबूतर रहा करते थे, जो साहबों की खुराक बनते । इन कबूतरखानों की याद आज भी कई बूढ़े विशेष रूप से किया करते हैं। यह बैठकखाना एडवर्ड का विश्राम-स्थल भी था और बाजार के लोगों से मिलने-जुलने का स्थान भी ।

एडवर्ड हट्टाकट्टा और परिश्रमी तो था ही, साधारण-से-साधारण काम करने में भी उसे हिचक नहीं होती थी। कहते हैं घर बनाने के लिए जो लोग कोठी से बाँस खरीदते, एडवर्ड स्वयं अपने हाथों से उन बांसों को खींच देता और उसका पारिश्रमिक स्वयं ग्रहण कर लेता।

चम्पारण में महात्मा गांधी के आने के बाद अर्थात् सन् १९१८ से कोठी-वाले साहबों की स्थिति बद्तर होती गयी। एक तो गांधी ने लोगों में निर्भीकता उत्पन्न कर दी थी, दूसरे 'एग्रेरियन एक्ट' स्वीकृत हो जाने से साहबों के बहुत सारे नाजायज तरीके बन्द हो गए थे, जिनपर वे जिन्दा थे । कोठी की आर्थिक अवस्था बदतर होती गयी और इधर हडसन साहब की ओर से रुपये की मांग जारी रही। कहते हैं एडवर्ड ने रक्सौल के श्री रतनलाल जी के हाथों हरदिया कोठी की कुछ जमीन बारह हजार रुपये में जरपेशगी लिख दी, जो जमीन बाद में रुपये लौटा देने के बाद पुनः हरदिया कोठी के अधीन चली आयी।

पर कोठी की आर्थिक अवस्था संभल नहीं रही थी। व्यय कम करने के उद्देश्य से हडसन ने जे० पी० एडवर्ड को मैनेजर के पद से कार्य-मुक्त कर दिया। आर० हडसन का पुत्र कैप्टन बी० आर० हडसन स्वयं कोठी की देख-भाल करने लगा। अब वह कोठी का स्वामी भी था और मैनेजर भी।

अभी बाजार का बहुत हिस्सा बन्दोबस्त होना शेष था । स्व० रतनलाल जी ने बाजार का ठेका लेना चाहा। रतनलाल जी कलकत्ता गए और इस संदर्भ में फलेजर के भगिना से बातें कीं। उसे निश्चित राशि भेजना तय हुआ और कागजी कार्रवाई पूरी करी ली गई। रतनलाल जी रक्सौल बाजार की मालगुजारी वसूल करने लगे और शेष भूमि की बन्दोबस्ती भी । वे प्रत्येक वर्ष तय की हुई निश्चित राशि कलकत्ता भेजते रहे । एक निश्चित अवधि के पूरा हो जाने के बाद, कानूनी परामर्श द्वारा उन्हें निश्चय हो गया कि बाजार पर उनका वैसा ही हक हो गया है, जैसा कोठी का था। परन्तु कोठी ने मुकदमा कर दिया। सुनते हैं यह मुकदमा हाई कोर्ट तक गया । परन्तु

जीत श्री मस्करा की ही हुई। फलेजर को स्वयं इंगलैंड से रक्सौल आना पड़ा। यह लगभग सन् १९३४ की बात है। फलेजर अबतक बूढ़ा हो चुका था। फिर भी उसके रोब में लेश मात्र भी कमी नहीं आयी थी। कभी उसके अधीन में रहने वाले २२ मौजे तथा रक्सौल बाज़ार के लोगों में से अनेक पर अभी भी उसका रोब गालिब था। कुछ लोगों को तो शायद ऐसा लगने लगा कि फलेजर रक्सौल बाजार का पुनः मालिक बनने जा रहा है। अभी भी अंग्रेजों का शासन था। इसलिए भी फलेजर की प्रतिष्ठा में कमी नहीं आयी थी।

रक्सौल में एक मिड्ल स्कूल की स्थापना-हेतु श्री दमड़ी साह के गोले में २४-४-१९३४ को प्रथम बैठक हुई थी। मिडल स्कूल की पुरानी कार्यवाही-पुस्तिका को देखने से फलेजर की प्रतिष्ठा का कुछ आभास मिलता है। २३-४ १९३४ को हुई इस प्रथम बैठक का प्रस्ताव न० ८ कहता है—"श्री बाबू रामदयाल सिंह ने सभा में यह प्रस्ताव किया कि स्कूल की स्वीकृति में सुविधा के लिए इस बाजार के संस्थापक मि० फ्लेचर साहब से स्कूल की प्रबंध-समिति में सभापति रहने तथा स्कूल के मकान का शिलारोपण करने की प्रार्थना की जाय।

उक्त बैठक ने सर्वसम्मति से फलेजर को सभापति तथा श्री वीर शमशेर सिंह को उप सभापति चुना। २-८-'३४ को हुई दूसरी बैठक के एक प्रस्ताव से स्पष्ट है कि फलेजर ने भी यह सभापति-पद स्वीकार कर लिया था। उस बैठक का प्रस्ताव नं० ५ कहता है—"स्थायी सभापति मि० फ्लेचर साहब के आगमन पर विचार हुआ और तय पाया कि साहब बहादुर से प्रार्थना की जाय कि उन्हें जब सुविधा हो आने की कृपया सूचना देवें। इस कार्य का भार बाबू वीरशमशेर सिंह को दिया गया।"

उपर्युक्त दो प्रस्तावों से स्पष्ट है कि फलेजर की प्रतिष्ठा और धाक में अभी भी कमी नहीं आयी थी। वैसे, स्व० श्री रतनलाल जी भी बहुत रोबीले आदमी थे, इसमें संदेह नहीं। दोनों तरफ से डटकर मुकाबला हुआ। अन्त में फलेजर ने पटना जाकर अंग्रेज बैरिस्टर से कानूनी परामर्श लिया। कहते हैं कागजात देखने के पश्चात् बैरिस्टर ने फलेजर को राय दी कि या तो वह रुपये ले सकता है अथवा जमीन।

फलेजर ने जमीन बेतिया राज्य को लिख दी और रुपये लेकर रक्सौल सदा के लिए छोड़ दिया। फलेजर जब रक्सौल से लौट रहा था, मुजफ्फरपुर में ही उसकी मृत्यु हो गयी।

रोलन्ड हडसन का पुत्र कैप्टन बी० आर० हडसन स्वयं हरदिया कोठी

की देखभाल किया करता था, इसकी चर्चा ऊपर आ चुकी है। उसके अधीन कोठी चौथे दशक में भी रही, यह कुछ पुराने कागजातों को देखने से स्पष्ट है।

कोठीवाले धीरे-धीरे भारतवर्ष छोड़ रहे थे। हमारे कुछ नेताओं का कहना था-इन साहबों से इनकी कोठी कोई न खरीदे। इनके दिन अब लद चुके हैं, अब ये भागने ही वाले हैं। वे अपने सिर पर कोठी लादकर तो जायेंगे नहीं।

फिर भी साहबों ने कोठियाँ बेचीं और यहाँ के लोगों ने खरीदीं। हडसन ने अपनी कोठी मोतिहारी के श्री जौवाद हुसैन से बेची और कोठी के साथ अपनी निजी भूमि भी। छिटफुट जमीनें कुछ दूसरे लोगों ने भी खरीदीं। हडसन अच्छी राशि के साथ इंगलैंड चला गया।

जब श्री विपिन विहारी वर्मा बेतिया राज्य के मैनेजर हुए तो एक किंग शॉट (King Shot) नामक अंग्रेज ने, जो 'सूट साहब' के नाम से पुकारा जाता था—खेती करने तथा मालगुजारी वसूलने के लिए पुनः हरदिया कोठी के गाँवों आदि का ठेका लिया। पर किंग शॉट के कुछ ऐसे भारतीय कारिन्दे थे, जिन्होंने स्वयं अपनी जेब गर्म करना शुरू किया। किंग शॉट की भी आर्थिक हालत अच्छी नहीं रही। उसे भी यहाँ से चले जाने को बाध्य होना पड़ा।

तबसे हरदिया कोठी के अन्तर्गत पड़नेवाले गाँव तथा रक्सौल बाजार की मालगुजारी लेने की व्यवस्था बेतिया राज्य द्वारा सीधे अपने हाथ में ले ली गयी। उस समय से कांग्रेस सरकार द्वारा सन् १९४७ में शासन में आने तक बेतिया राज्य के मोतिहारी सर्किल के मैनेजर कैम्प साहब के प्रबंध में इस क्षेत्र की व्यवस्था चलती रही। इस क्षेत्र की देखभाल करने के लिए कैम्प साहब की कचहरी हरदिया कोठी में ही निर्मित हुई। आज उस कचहरी के भवन में डंकन अस्पताल, रक्सौल का ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र चल रहा है।

जमीन्दारी प्रथा की समाप्ति एवं अंचल के निर्माण हो जाने के बाद पटवारीगिरी समाप्त हो गयी और अंचल के कारिन्दे ही मालगुजारी आदि वसूल करते हैं। तबसे यही व्यवस्था चली आ रही है।

६. प्रशासन के आइने में रक्सौल

प्रशासन की दृष्टि से अकबर के समय में सूबा बिहार सरकारों में विभक्त था, जिनमें एक सरकार चम्पारण भी थी। मुगल काल में सरकार चम्पारण का मुख्यालय मेहसी में था। जब इस्ट इन्डिया कम्पनी ने सरकार चम्पारण पर अधिकार किया, उस समय मेहसी में ही मुन्सिफी कचहरी थी। उन दिनों इस दूरस्थ सीमा-भूमि के लोगों को भी न्याय के लिए मेहसी में उपस्थित होना पड़ता था। मेहसी की कचहरी तथा साहबों के बंगले आदि के भग्नावशेष आज भी वहाँ देखे जा सकते हैं।

उन दिनों सरकार चम्पारण तीन परगनों में विभक्त थी—मेहसी, सेमरौन और मझौआ। फिर, प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से ये परगने ३२ छोटे-छोटे टुकड़ों अर्थात् तपाओं में विभक्त थे। लगता है ये छोटी इकाइयाँ थाना के समकक्ष थीं। सिमरौन परगना में एक तथा मेहसी परगना में चार तपे थे। मझौआ परगना, जिसके अन्तर्गत रक्सौल का इलाका आता था—सबसे बड़ा था और इसके अन्तर्गत सत्ताइस तपे थे। रक्सौल क्षेत्र तपा बहास में पड़ता था। प्रशासन की दृष्टि से इन परगनों एवं तपाओं का आज कोई महत्व नहीं है, पर आज भी भूमि-सम्बन्धी दस्तावेजों में रक्सौल की भूमि के लिए परगना मझौआ एवं तपा बहास लिखा जाता है, जैसा कि पहले कहा गया है। हमारे यहाँ कुछ ऐसा है कि एक लकीर जो बन जाती है, उसी पर चलना अधिक निरापद समझा जाता है। जमाना पहले, भूमि-सम्बन्धी दस्तावेज लिखने का जो ढंग चला था, वह आज भी प्रचलित है।

सरकार चम्पारण की महत्ता बतलाते हुए श्री पी० सी० राय चौधरी ने "चम्पारण गजेटियर" में आइने-अकबरी का उद्धरण देते हुए लिखा है कि राजस्व की दृष्टि से सरकार चम्पारण की अपनी महत्ता थी। अबुलफजल का हवाला देते हुए उन्होंने आगे लिखा है कि सरकार चम्पारण पर सात सौ फौजी घोड़ों एवं तीस हजार सैनिकों के खर्च और रखरखाव का दायित्व था।

टोडरमल द्वारा की गई भूमि-पैमाइश के अनुसार चम्पारण में १८७८ वर्गमील भूमि के लिए राजस्व की रकम १,३७,८३५. रु० थी, जो औरंगजेब के समय २,१०,१५१ रु० हो गयी। जब अंग्रेजों ने सरकार चम्पारण को

१७६५ ई० में अपने कब्जे में किया, राजस्व की रकम लगभग दो लाख रु० थी। मझौआ का भूमि-राजस्व सन् १५८२ में ३७,३७३ रु० तथा सन् १७७३ में ८०१८८ रु० था।

सन् १७७० में चम्पारण में भयंकर अकाल पड़ा, जो १८वीं शताब्दी का सबसे बड़ा अकाल था। इसमें सरकार चम्पारण की लगभग आधी जनता काल-कवलित हो गई। शेष लोगों में से हजारों ने जमीन्दारों की ज्यादतियों से तंग आकर चम्पारण छोड़ दिया और नेपाल की भूमि में शरण ली। इस अकाल में आदापुर और रक्सौल का इलाका अपेक्षाकृत कम प्रभावित हुआ, पर राजस्व की रकम घट गयी।

अकबर के समय में सरकार चम्पारण में गावों की संख्या १८०२ थी जब कि १९७१ में संयुक्त चम्पारण में २८५३।

ब्रिटिश शासन के प्रारंभिक काल में सरकार सारन में सारन और चम्पारण दोनों सम्मिलित थे, और उनका मुख्यालय छपरा था। नेपाल की सीमा पर अवस्थित इस उत्तरी छोर के लोगों को भी कचहरी, आदि के कामों से छपरा जाना होता था। उन दिनों रेलवे लाइन भी नहीं थी। कहते हैं, उन दिनों रक्सौल-क्षेत्र के लोग अक्सरहां पैदल गोविन्दगंज होते हुए छपरा पहुंचते थे।

धन-धान्य से परिपूर्ण इस क्षेत्र में लूट पाट करनेवाले अक्सरहां नेपाल में प्रवेश कर जाते थे। प्रशासन की दृष्टि से यह इलाका बिल्कुल अलग-थलग पड़ जाता था। उन दिनों मोतिहारी का प्रशासन की दृष्टि से कोई महत्व नहीं था। एक बहुत बड़े विस्तृत क्षेत्र के लिए प्रशासनिक दृष्टि से छपरा केन्द्र-विन्दु था। पर दूर-दराज के स्थानों में, खासकर इस उत्तरी छोर पर फैली अराजकता पर नियंत्रण कर पाना कठिन था। ब्रिटिश सरकार द्वारा यह कठिनाई पहली बार ५ अप्रैल १८३० को महसूस की गई। पर ७ वर्षों के बाद ही सन् १८३७ में मोतिहारी में एक ज्वायंट मजिस्ट्रेट का पदस्थापन हुआ। इस क्षेत्र में होनेवाली अराजकता में कुछ कमी आयी।

चम्पारण मजिस्ट्रेसी में तीन मुन्सिफ क्षेत्र तथा आठ थाना बने। ये थाना थे - मोतिहारी, बेतिया, कल्याणपुर, गोविन्दगंज, मुशहरवा (Musowra), ढाका, बरजरिया (Burijuria) और बिरगाह (Birgah)। यह स्पष्ट नहीं हो सका कि उन दिनों रक्सौल, रामगढ़वा, आदापुर आदि क्षेत्र किस थाना में थे। संभवतः ढाका थाना में?

सन् १८६६ में चम्पारण सारन से बिल्कुल अलग हो गया और एक स्व-

तन्त्र जिला घोषित हुआ। प्रशासन की दृष्टि से तो बहुत बड़ी सुविधा हो गई, पर सन १९०६ तक इस इलाके के लोगों का पिंड छपरा से नहीं छूटा। सन्-१९०६ के बाद चम्पारण मुजफ्फरपुर के जिला और सेशन्स जज के अधीन आया। ६ जून १९२१ को मोतिहारी में सबजजी कचहरी अस्थायी तौर पर स्थापित हुई, जो पहली जनवरी १९२५ से स्थायी हो गई। पर सन् १९४५ तक यह मुजफ्फरपुर के जिला और सेशन्स जज के ही अधीन रही। मोतिहारी में पदस्थापित सबजज को ५०० रु० तक की ही अपील सुनने का अधिकार था। पहली जून १९४५ को चम्पारण के लिए मोतिहारी में स्वतंत्र जिला एवं सेशन्स जज के पदस्थापन से चम्पारण के अन्य इलाकों के साथ इस क्षेत्र के लोगों को भी मामला-मुकदमा के संदर्भ में विस्तृत सुविधाएँ उपलब्ध हो सकीं।

सन् १८४६ के बाद सन् १८९२ में जमीन की पैमाइश हुई थी। इसमें लगभग पाँच वर्षों का समय लग गया था। उस समय चम्पारण जिला ९ राजस्व थाना (Revenew Thana) में विभक्त हुआ, जिनमें एक आदापुर थाना भी था, जिसका क्षेत्रफल २२४ वर्ग मील था। आदापुर, रक्सौल, भेलाही, रामगढ़वा, छौड़ादानो, आदि क्षेत्र इस थाना के अन्तर्गत पड़ते थे।

बहुत जमाने तक रक्सौल-क्षेत्र आदापुर थाना (पुलिस स्टेशन) के अधीन रहा है। सन् १९०३ में थाना आदापुर के अन्तर्गत रक्सौल, छौड़ादानों और मधुवन तीन आउट-पोस्ट थे। लगता है भेलाही, रामगढ़वा आदि क्षेत्र के लिए रक्सौल का आउट-पोस्ट ही पर्याप्त था पर 'केस' दर्ज कराने के लिए लोगों को आदापुर से ही संबंध रखना होता था।

सन १९१९ के अप्रैल से रक्सौल को स्वतन्त्र थाना का दर्जा प्राप्त हुआ है। रक्सौल के निकटस्थ गांव पनटोका के एक प्राथमिक विद्यालय (लोकल बोर्ड द्वारा संचालित) की एक पुरानी पंजी को देखने से स्पष्ट है कि सन् १९१९ के मार्च तक इस विद्यालय में नामांकन कराने वाले पनटोका गांव के छात्रों के लिए लिखा है-मौजा पनटोका, थाना आदापुर। पर सन् १९१९ के मई-जून में नामांकन कराने वाले छात्रों के नाम के सामने अंकित है - मौजा पनटोका, थाना रक्सौल।

सन् १९१४ में हुए भूमि-सर्वे के अनुसार रक्सौल के लिए निर्मित नक्शे में रक्सौल-पुलिस थाना का वह विस्तृत अहाता दिखलाया गया है, जितना लगभग आज भी उसके अन्तर्गत है।

सन् १९१९ से रामगढ़वा, रक्सौल थाना के एक आउट-पोस्ट के रूप में रहा, जबकि लगभग एक दशक पूर्व वह एक स्वतन्त्र थाना बना।

आज रक्सौल थाना के अधीन जो दो आउट-पोस्ट हैं, उनके नाम हैं हरैया एवं भेलाही। हरैया में बाजाप्ता एक पुलिस सब-इन्सपेक्टर का पदस्थापन है तथा भेलाही में एक जमादार का। लगभग एक दशक से रक्सौल थाना में एक पुलिस इन्सपेक्टर की नियुक्ति है। सम्प्रति इस थाना में एक पुलिस इन्सपेक्टर ३ पुलिस सब इन्सपेक्टर, २ सहायक पुलिस सब इन्सपेक्टर, १ हवलदार एवं ९ सिपाही हैं।

कानून और व्यवस्था को और चुस्त एवं दुरुस्त बनाने के उद्देश्य से पुलिस-विभाग के अधीन थाना को और छोटा करने की योजना है। इस योजना के अनुसार रामगढ़वा की दो पंचायत – जैतापुर एवं पखनहिया तथा रक्सौल की ६ पंचायतों को मिलाकर पजनवा थाना निर्मित करने का प्रस्ताव है।

इस तरह जिला में ११ नये थाना निर्मित करने की योजना है। इसके फलस्वरूप मात्र पूर्वी चम्पारण जिला में ३२ थाने हो जायेंगे जबकि सन् १९५५ में संयुक्त चम्पारण में केवल २६ थाने थे।

रक्सौल को आरक्षी अनुमंडल मुख्यालय बनाने का भी प्रस्ताव है। १५ अगस्त १९७९ से यहाँ एक आरक्षी उपाधीक्षक (D. S. P.) का पदस्थापन हो जायेगा, ऐसी आशा की जाती है।

रक्सौल थाना की स्थिति चम्पारण जिला के अन्य थानाओं की स्थिति से कुछ भिन्न है। नेपाल-क्षेत्र में अपराध करनेवाले व्यक्ति अक्सरहां भारतीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं, उसी तरह सीमा से सटे भारतीय क्षेत्र में अपराध करनेवाले व्यक्ति नेपाल-क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं। इन सारी स्थितियों पर रक्सौल थाना को निगरानी तो रखनी ही होती है, नेपाल के ठीक प्रवेश-द्वार पर स्थित होने के कारण इस थाना को इन अपराधों के संदर्भ में दो देशों के आरक्षी-विभाग के उच्च अधिकारियों की बैठकों का भी समय-समय पर आयोजन करना पड़ता है।

७. यातायात के गतिशील चक्के: व्यवसाय के बढ़ते चरण

दिल्ली से रक्सौल को जोड़ने वाले राष्ट्रीय उच्च पथ तथा रक्सौल से काठमांडू को संयुक्त करने वाले प्रशस्त मार्ग के निर्माण से नेपाल के स्थलीय प्रवेश-द्वार रक्सौल की महत्ता और बढ़ गई है।

कई लोगों की यह धारणा है कि यह भूमि सदा से नेपाल का प्रवेश-द्वार रही है। पर यह धारणा भ्रांत है। अशोक के समय में वैशाली से नेपाल तक जो राजमार्ग था, वह केसरिया, अरेराज, बेतिया, लौरिया से होता हुआ भिखनाठोरी की पहाड़ी घाटी से निकलता था। बुद्धदेव, अशोक, ह्वेंगसांग ने अपनी नेपाल की यात्रा इसी मार्ग से की थी। बहुत जमाने तक इस मार्ग की अपनी महत्ता थी। उन दिनों नेपाल छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। काठमांडू की महत्ता-वृद्धि के साथ ही इस क्षेत्र से गुजरनेवाले मार्ग की महत्ता में भी वृद्धि हुई है।

एक लम्बी अवधि तक बेतिया नेपाल जाने वाली वस्तुओं का मुख्य केन्द्र रहा है। भारत के दूर-दराज के स्थानों से नेपाल जानेवाला माल बेतिया पहुँचता, फिर वहाँ से नेपाल जाता।

भारत और नेपाल के बीच प्रथम वाणिज्य-संधि १ मार्च १७९२ को सम्पन्न हुई थी, जिस पर इस्ट इंडिया कम्पनी की ओर से बनारस-स्थित रेजिडेन्ड जोनाथन डंकन का हस्ताक्षर हुआ था। फिर एक कायदे के साथ दोनों देशों के बीच व्यापार शुरू हुआ। पर उचित संचार-साधन के अभाव में कठिनाई होती रही।

सन् १८०० में सारन के जिलाधिकारी ने सड़क-सम्बंधी अपनी एक रिपोर्ट में लिखा था कि चम्पारण में एक भी सड़क नहीं है।

इस्ट इंडिया कम्पनी और नेपाल के बीच सन् १८१६ में हुई संधि के पूर्व लगभग दो वर्षों तक भयंकर संघर्ष हुआ था। सुगौली में सैनिक छावनी के निर्माण के फलस्वरूप इस भाग में अच्छे मार्ग की आवश्यकता महसूस की गयी। सन् १८५७ के सिपाही-विद्रोह के समय अंग्रेजों की मदद के लिए ८००० फौज के साथ नेपाल के प्रधान मंत्री जंगबहादुर राणा स्वयं पहले सुगौली पहुँचे थे। पर उस समय तक भी मार्ग की स्थिति संतोषप्रद नहीं थी। सन् १८७६ तक सम्पूर्ण चम्पारण में ४३८ मील लम्बी सड़क बनकर तैयार हुई थी। सन् १८८६ में जिला बोर्ड के गठन के साथ ही इस कार्य में भी तेजी से प्रगति

आई। बोर्ड पर निलहे साहबों का अधिकार था। अतः अपने नील-प्रतिष्ठानों के लिए उन्हें मार्ग बनवाने में सुविधा हुई। रामगढ़वा तथा हरदिया कोठी के अन्तर्गत ऐसे कई छोटे-मोटे मार्ग बने तथा कइयों का सुधार हुआ।

सन् १८८८ में मुजफ्फरपुर से सुगौली तक ट्रेन दौड़ने लगी थी। इसके पहले नेपाल के लिए पटना आदि से आनेवाला माल नाव से गोविन्दगंज घाट आता और वहाँ से बैलगाड़ी द्वारा रक्सौल होते हुए भीमफेदी पहुँचता, जहाँ से कुलियों द्वारा काठमांडू पहुँचाया जाता था। हाँ,सुगौली तक ट्रेन के चालू हो जाने से नेपाल में माल पहुँचाने में कुछ और सुविधा प्राप्त हो गई।

रक्सौल में प्रथम बसने वाले परिवारों में एक परिवार था पटना का, जिसके प्रमुख व्यक्ति थे श्री महावीर प्रसाद चौधरी। रक्सौल बाजार बसने के बहुत पहले से नेपाल के लिए जी० बी० टी० कम्पनी के नाम से इनका ट्रान्सपोर्ट का काम होता था। काठमाण्डू के व्यापारी कलकत्ता, पटना आदि से माल खरीदते और इसी तरह के एजेन्टों द्वारा उनका माल नेपाल पहुँचाया जाता था।

जी० बी० टी० कम्पनी के नाम से जानी जानेवाली इस कम्पनी का कार्यालय मोतिहारी में था। पर सन् १८९८ में सुगौली से रक्सौल तक ट्रेन चालू हो जाने के बाद इसने अपना कार्यालय रक्सौल-क्षेत्र में स्थापित कर लिया। उस समय रक्सौल बाजार की नींव नहीं पड़ी थी। अतः श्री महावीर प्रसाद चौधरी ने रक्सौल स्टेशन के निकट परेउआ टोला में अपना कार्यालय स्थापित किया। रक्सौल बाजार की नींव पड़ते ही फलेजर की दृष्टि श्री चौधरी पर पड़ी और उसने उन्हें रक्सौल बाजार में बसाया। श्री चौधरी का नेपाल के लिए ट्रान्सपोर्ट का काम सन् १९३४-३५ तक चलता रहा। हाँ,कुछ दिनों के लिए जी. बी. टी. कम्पनी से नाम बदलकर रक्सौल ट्रान्सपोर्ट कम्पनी हो गया था। उन दिनों बैलगाड़ियों के माध्यम से ही ये माल भींमफेदी तक पहुँचाये जाते थे।

परसौनी गद्दी—ट्रान्सपोर्ट का काम करने के उद्देश्य से दक्षिण से कुछ लोग आकर नेपाल के परसौनी नामक गांव में, जो रक्सौल से लगभग १० किलोमीटर की दूरी पर कलैया-मार्ग में स्थित है, बस गये थे। बैल, घोड़ा और बैलगाड़ी पर, नेपाल के लिए रक्सौल से उतरने वाला माल, उनके द्वारा भीमफेदी तक पहुँचाया जाता था। मुशहर साह-बेंगाराम, राम खेलावन साह-योगेन्द्र प्रसाद और बिसुनी साह—गोपाल राम नाम से तीन फर्में पहले स्थापित हुई थीं। मुशहर साह-बेंगा राम नामक फर्म से सम्बद्ध कुछ

लोगों ने आगे चलकर कुछ अन्य फर्में खोलीं। उनके नाम हैं — फूलचन्द साह-बाबूलाल राम, रामफल साह-ज्ञानी राम एवं ठाकुर राम-महावीर प्रसाद। इनमें 'ठाकुर राम महावीर प्र०' फर्म वीरगंज में बड़ी प्रगति पर है, जिसने कई शिक्षण संस्थाओं के निर्माण में बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है।

सन् १९२७ में रक्सौल से आमलेखगंज तक नेपाली रेलवे लाइन (एन० जी० आर०) के चालू हो जाने पर परसौनी-स्थित ये फर्में उठकर काठमांडू के सूब्बा गणेश दास के रक्सौल-स्थित मकान में (आज के बैंक रोड में) चली आयीं और रक्सौल में भी परसौनी-गद्दी के नाम से ही पुकारी जाती रहीं। मुशहर साह-बेंगा राम, विसुनी साह-गोपाल राम एवं फूलचंद साह-बाबूलाल राम की गद्दियाँ कलकत्ता में भी स्थापित हुई।

ये गद्दीवाले निजी व्यवसाय के अतिरिक्त कमीशन एवं फारवार्डिंग एजेंट का भी काम करते थे। कानपुर, आगरा, अमृतसर, कलकत्ता, बम्बई आदि स्थानों से नेपाल के लिए आनेवाला माल रेलवे से रक्सौल आता और फिर ये कमीशन एजेन्ट नियमों की खानापूर्ति कर माल को सीमा पार कराते। रक्सौल से आमलेखगंज तक मालगाड़ी द्वारा, वहाँ से भीमफेदी तक बैल-गाड़ी और ट्रक द्वारा और फिर 'रोपवे' आदि की सहायता से यह माल काठमांडू पहुँचता।

सन १९६२-६३ तक परसौनी गद्दी का काम चलता रहा, पर इसके बाद से मंदी आने लगी। आज भी कुछ फर्में नये-पुराने नामों से काम करती हैं, पर स्थिति वह नहीं है, जो पहले थी।

परसौनी वालों के सम्पर्क से छपरा के माधोपुर ग्राम का एक और परिवार परसौनी आ बसा था, जिसने गरीब साह-लक्ष्मी प्रसाद के नाम से नेपाल के लिए माल ढोने का काम शुरू किया था, जिस काम को उस परिवार के श्री दीप साह एवं उनके पुत्र श्री धरीक्षण प्रसाद ने और विस्तार दिया। सन् १९२५ में धरीक्षण प्रसाद-राजालाल के नाम से बीरगंज में इनका कारोबार शुरू हुआ और फिर धरीक्षण प्रसाद-अवध किशोर के नाम से। इस फर्म ने पिछले पचास वर्षों में निजी व्यवसाय तथा ट्रान्सपोर्ट-कार्य के अतिरिक्त फारवार्डिंग एवं कमीशन एजेंट के रूप में अच्छी ख्याति अर्जित की है। आज भी रक्सौल, काठमांडू एवं कलकत्ता में इनके कार्यालय स्थित हैं।

सन् १९२८ में सर्वप्रथम 'धरीक्षण प्रसाद-अवध किशोर' ने आमलेख-गंज से भीमफेदी तक बैलगाड़ी के स्थान पर 'हाफ टन ट्रक' (लगभग साढ़े तेरह मन वजन ढोने वाली हल्की गाड़ी) चलाना प्रारंभ किया था। फिर कुछ

अन्य लोगों की भी ऐसी ट्रकें चलने लगी थीं। सन् १९४० में आमलेखगंज से भीमफेदी तक डाक ढोने का काम भी इस 'फर्म' को मिला, जो बीच में एक वर्ष छोड़कर सन् १९६३ तक चालू रहा।

इस फर्म ने नेपाल में प्रतिष्ठा अर्जित की और सन् १९४१ से नेपाल महाराजा के नारायण हिट्टी-दरबार से संबंधित सामानों को काठमांडू पहुंचाने का दायित्व प्राप्त किया। दरबार के लिए कलकत्ता बन्दरगाह पर विदेश से पहुंचे हुए तथा भारत में खरीदे हुए माल को तो काठमांडू पहुँचाना ही होता है, समय-समय पर भारत से कुछ उपभोग्य वस्तुएँ खरीद कर दरबार में पहुँचाने का भी इस फर्म को आदेश प्राप्त होता है। काठमांडू-राजमहल के लिए प्रति सप्ताह बम्बे से दो बार रक्सौल पहुंचने वाले फलों को भी रक्सौल से काठमांडू पहुँचाने का दायित्व इस फर्म को प्राप्त है। नेपाल का चावल समुद्र-पार भेजने के लिए नेपाल में गठित 'एसियन एजेन्सी' प्रतिष्ठान से भी यह फर्म सम्बद्ध है। नेपाल का यह चावल बड़ी मात्रा में मौरिशस, सिंगापुर, मलेशिया आदि देशों में भेजा जाता है, जो रक्सौल, बैरगनिया आदि स्थानों से होकर गुजरता है।

अन्य ट्रान्सपोर्ट कम्पनियाँ- रक्सौल-वीरगंज को जोड़ने वाली सड़क की, सन् १९५६-५७ के पूर्व की दयनीय स्थिति आज भी बहुतों को याद है, जब इस सड़क पर रिक्शा का नामोनिशान नहीं था, इस उबड़-खाबड़ पथरीली सड़क पर मात्र दो-चार मड़ियल घोड़ी वाली टमटमें चला करती थीं, जिनपर सवारी करने की अपेक्षा लोग पैदल चलना अधिक पसन्द करते थे।

एक जमाना था जब नेपाल के राणाओं के लिए रक्सौल रेलवे-स्टेशन पर उतरने वाली मोटर-कार बड़ी कठिनाई से काठमांडू पहुँच पाती थी। पहाड़ी रास्ते से ले जाने के पूर्व उसके सारे पार्ट-पुर्जे अलग कर दिये जाते थे और फिर लगभग दो सौ परिश्रमी कुलियों द्वारा उन्हें काठमांडू पहुँचाया जाता था, जहाँ उन्हें फिर जोड़कर मोटरकार तैयार की जाती!

राणाशाही की समाप्ति के बाद नेपाल अंधकार से प्रकाश में आया। दुनिया के देशों से उसका सम्पर्क बढ़ता गया, तथा विकास के लिए उसकी आवश्यकताएँ भी बढ़ती गयीं। सन् १९५६ तक भारत के सहयोग से ७२ मील लम्बा त्रिभुवन राजपथ, जो भारतीय इंजीनियरिंग का चमत्कार कहा जाता है, बनकर तैयार हो गया। अमेरिका के सहयोग से ४२ मील लम्बी रक्सौल-भैंसे सड़क भी सन् १९५८ तक निर्मित हो गयी। फलस्वरूप न केवल

रक्सौल से काठमांडू का सीधा और सुविधाजनक सम्पर्क हो गया, बल्कि व्यापार आदि के क्षेत्र में एक महान क्रान्तिकारी परिवर्त्तन आ गया। रक्सौल से काठमांडू को संयुक्त करने वालेइस राजमार्ग ने एक तरह से नेपाल के विकास का दरवाजा खोल दिया। साथ ही रक्सौल की महत्ता में भी तेजी से वृद्धि होने लगी।

नेपाल के लिए माल ढोने के निमित्त रक्सौल में एक-एक कर ट्रान्सपोर्ट कम्पनियाँ खुलने लगीं। इस राजपथ के निर्माण के बाद रक्सौल में प्रथम ट्रान्सपोर्ट कम्पनी के रूप में ऑल इन्डिया जेनेरल ट्रान्सपोर्ट कॉरपोरेशन लि० का नाम आता है, जिसने सन् १९५७ के आस-पास अपना एक कार्यालय रक्सौल में स्थापित किया, और बाजार तथा नेपाल-दोनों के लिए माल ढोने का कार्य शुरू किया। पर यह कम्पनी अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकी। आज रक्सौल में एक दर्जन से ऊपर ट्रान्सपोर्ट कम्पनियाँ हैं, जिनके कार्यालय एवं गोदाम भारतीय सीमा के आस-पास अवस्थित हैं। इनके नाम हैं— डुआर्स ट्रान्सपोर्ट, नेपाल कैरियर्स, स्काईलैंड ट्रान्सपोर्ट क०, प्रकाश ट्रान्सपोर्ट, प्रिमियर रोड कैरियर्स प्रा० लि०, ट्रान्सपोर्ट कारपोरेशन ऑफ इन्डिया, इन्टर स्टेट ट्रान्सपोर्ट एजेन्सी, युनाइटेड ट्रान्सपोर्ट, नेपाल एक्सप्रेस ट्रान्सपोर्ट, एसोशिएटेड ट्रान्सपोर्ट इंजीनियरिंग क०, एवरेस्ट रोड ट्रान्सपोर्ट, मेहता ट्रान्सपोर्ट, रोड ट्रान्सपोर्ट कारपोरेसन, इस्ट इंडिया ट्रान्सपोर्ट एजेन्सी, ओम कैरिंग कारपोरेशन, बालुर घाट ट्रान्सपोर्ट क०, नेपाल रोड लाइन्स, आदि। इनमें से कई कम्पनियाँ मात्र नेपाल के लिए माल ढोती हैं, तथा कुछ रक्सौल बाजार तथा नेपाल दोनों के लिए। नेपाल से सम्बद्ध रक्सौल-स्थित यातायात संस्थान तथा नेपाल माल चालानी बीमा द्वारा मात्र नेपाल के लिए माल ढोने का काम होता है।

रक्सौल से सम्बद्ध इन ट्रान्सपोर्ट कम्पनियों की माल से लदी नेपाल जाने वाली ट्रकों की संख्या का अनुमान कुछ-कुछ उस समय होता है, जब ट्रेन गुजरने के समय इस मार्ग पर स्थित रेलवे-गुमटी के पास फाटक बन्द हो जाते हैं। अमेरिका, रूस, चीन, जापान, इंगलैंड कनाडा, स्वेडन, जर्मनी, कोरिया, युगोस्लाविया, आदि देशों से नेपाल के लिए कलकत्ता बन्दरगाह पर उतरनेवाला माल रेलवे अथवा ट्रकों के माध्यम से रक्सौल पहुँचता है, और फिर ट्रकों द्वारा रक्सौल-स्थित कस्टम्स-कार्यालय से गुजरते हुए नेपाल पहुँचता है। रक्सौल से होकर नेपाल जानेवाले भारतीय माल की मात्रा भी कम नहीं होती। कलकत्ता, बम्बे, दिल्ली, बंगलोर, अमृतसर जैसे स्थानों से

इन सबका सम्बद्ध रक्सौल के जन-जीवन से भी है, नेपाल का माल ढोनेवाली रक्सौल-स्थित इन ट्रान्सपोर्ट कम्पनियों से सम्बद्ध सैकड़ों व्यक्तियों की जीविका इनसे जुड़ी है। सच्चाई यह है कि इन मालों को नेपाल पहुँचाने के लिए यदि रक्सौल से रास्ता न होता तो रक्सौल की महत्ता आज की आधी भी न होती। आज रक्सौल को जो अन्तर्राष्ट्रीय महत्व प्राप्त है वह न होता।

रक्सौल-रेलवे स्टेशन—१८९० ई० में इंगलैंड में बी० एन० डबल्यू० आर० (बंगाल नौर्थ वेस्टर्न रेलवे) नाम से एक रेलवे कम्पनी का गठन हुआ। मुजफ्फरपुर से सुगौली होते हुए बेतिया तक जाने वाला रेल-पथ, जिसका निर्माण सन् १८८८ में हुआ था और तिरहुत स्टेट रेलवे के अधीन था, इस कम्पनी के अधीन आ गया। फिर इस कम्पनी के सामने नेपाल की महत्ता को मद्देनजर रखते हुए सुगौली से रक्सौल तक एक शाखा रेल-पथ के निर्माण का प्रश्न सामने आया। कहते हैं प्रथम सर्वे के अनुसार यह रेल-पथ मसिनाडीह के आस-पास से आज बने रेल-पथ से कुछ पूरब होते हुए आज के एक्सचेंज रोड से गुजरने वाला था। उस प्रथम सर्वे के अनुसार अधिगृहित भूमि में रेल बिछाने के लिए कुछ मिट्टी भरने आदि का काम भी हो चुका था कि तकनीकी खामियों के कारण इस रास्ते को छोड़ देना पड़ा।

रेल बिछाने का काम मंथर गति से चल ही रहा था कि सन् १८९७ में चम्पारण में अकाल पड़ा जो १९ वीं शताब्दी का सबसे भयंकर अकाल था। चम्पारण गजेटियर को देखने से पता चलता है कि उस समय चम्पारण में महवल से लेकर मात्र बेतिया तक रेल-पथ था। समुचित रेल-पथ के अभाव में चम्पारण के विभिन्न हिस्सों में राहत-कार्य पहुँचाने में बड़ी कठिनाई हुई। अकाल-पीड़ित लोगों को राहत के लिए काम देने के उद्देश्य से भी इस सुगौली-रक्सौल रेल-पथ में तेजी से काम लगाया गया। सन् १८९८ में सुगौली से रक्सौल तक गाड़ी दौड़ने लगी, पर चम्पारण का दुर्भाग्य कि उसी वर्ष सितम्बर माह में चम्पारण में भयंकर बाढ़ आ गयी और इस रेल-पथ को भारी क्षति पहुँची। चम्पारण गजेटियर में श्री पी० सी० राय चौधरी ने लिखा है—"चम्पारण में आयी जिन बाढ़ों का लिखित उल्लेख मिलता है, उनमें सितम्बर १८९८ में आयी बाढ़ सबसे भयंकर थी। .... बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे मीलों तक पानी में डूब गयी, जिसके फलस्वरूप एक माह से ऊपर तक गाड़ियाँ बन्द रहीं और इसमें सुगौली रक्सौल-लाइन को सबसे भयंकर क्षति पहुँची थी।

रक्सौल-सुगौली रेलवे लाइन को बाढ़ की क्षति से बचाने के लिए प्रथम सर्वे में निर्धारित पुलों के अतिरिक्त समय-समय पर कई अतिरिक्त पुल देने पड़े हैं।

चम्पारण गजेटियर के ही अनुसार यहाँ उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा कि सुगौली के पास सिकरहना नदी में बना ७०० फीट लम्बा पुल सन् १८९८ की बाढ़ में बह गया। तब से आधी शताब्दी से ऊपर तक सुगौली-रक्सौल के बीच सड़क द्वारा आवागमन में असुविधाएँ रहीं। सन् १८९८ की भयंकर बाढ़ में यह पुल बह गया था और उसी वर्ष सुगौली-रक्सौल रेलवे लाईन चालू हुई थी, जिसपर पहले कुछ दिनों तक मात्र बालिस ट्रेन (Ballast train) चली थी और फिर यात्री-गाड़ी। अतः लगता है एक लम्बी अवधि तक सिकरहना पर पुल बनाने की आवश्यकता नहीं महसूस की गई—उस समय तक जबतक कि सुगौली-रक्सौल-पथ का राष्ट्रीयकरण नहीं हो गया और तेजी से विकास कर रहे नेपाल की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रेल के समानान्तर अच्छी सड़क की जरूरत नहीं महसूस की गई। इस बीच आधी शताब्दी से ऊपर तक नावों अथवा अस्थायी घटही पुल द्वारा सिकरहना पार किया जाता रहा।

प्रारम्भिक अवस्था में रक्सौल में एक कोठरी वाले स्टेशन भवन से ही तारघर, टिकटघर आदि का काम लिया जाता था। वर्षों तक यही स्थिति रही। सन् १९१२ के आस-पास पूरब से पश्चिम की ओर जाने वाले रेल-पथ के निर्माण हो जाने के बाद, जब रक्सौल स्टेशन जंक्शन में परिणत हो गया, भवन विस्तार आदि की बातें सामने आयीं। यह मानना पड़ेगा कि जिस किसी व्यक्ति ने रेलवे के लिए रक्सौल में भूमि का अधिग्रहण किया था, वह अवश्य दूरदर्शी रहा होगा, जिसने रक्सौल के भविष्य को दृष्टिपथ में रखते हुए इतनी प्रशस्त भूमि अधिग्रहित की। हाँ, समय-समय पर इसमें अतिरिक्त भूमि भी जुड़ी है।

टिकट घर, तारघर, मालगोदाम, पार्सलघर, उपाहारालय, प्रतीक्षालय, आदि का विस्तार कई चरणों में हुआ है। पर १९६० ई में मुख्य भवन की विस्तार-योजना के साथ इसके निर्माण में जिस नेपाली स्थापत्य कला का उपयोग हुआ है, वह निश्चय ही इस नेपाल-प्रवेश द्वार की गरिमा के अनुरूप है। उत्तरी बिहार में कई दृष्टियों से अपनी अलग विशिष्टता रखने वाला रेलवे स्टेशन का यह आधुनिक भवन २१ जनवरी १९६१ को तत्कालीन रेल मंत्री श्री जगजीवन राम के कर-कमलों द्वारा उद्घाटित हुआ। नेपाल के पशुपति नाथ

मंदिर की अनुकृति पर निर्मित मुख्य भवन का प्रवेश-द्वार और ऊपरी मंजिल के चारों कोनों पर बने लघु मंदिर दूर से ही यात्रियों को आकृष्ट कर लेते हैं। मुख्य भवन के सामने मोटरकार, आदि के ठहरने के लिए प्रशस्त भूमि, सुन्दर-सा पार्क, ऊपरी मंजिल में आधुनिक शैली पर निर्मित प्रतीक्षालय—ये सब इस रेलवे स्टेशन की विशिष्टताएँ हैं।

पहली जनवरी १९४३ से रक्सौल-स्टेशन का प्रबंध बी० एन० डबल्यू० आर० से ओ० टी० आर० के अधीन चला आया और १४ अप्रैल १९५२ से एन० ई० आर० के अधीन।

आज रक्सौल एक ऐसे व्यापार-केन्द्र में परिणत हो चुका है कि रक्सौल रेलवे पार्सल एवं मालगोदाम का कार्यभार अत्यधिक बढ़ गया है। नेपाल से संबद्ध वस्तुओं के लिए एक अलग मालगोदाम है, जो नेपाल-साइडिंग के नाम से जाना जाता है।

रक्सौल-रेलवे स्टेशन से मात्र एक माह में (दिसम्बर'७८ में) विभिन्न स्थानों के लिए ८८६९५ यात्रियों के लिए टिकटें कटीं तथा इनसे १,९४,३५४ रु० प्राप्त हुए और इसी माह में लगभग ग्यारह हजार टन माल यहाँ से विभिन्न स्थानों के लिए बुक किया गया। पर रक्सौल में रेलवे का महत्व यहाँ से बाहर जाने वाले मालों के कारण नहीं, बल्कि बाहर से आनेवाले मालों के कारण है।

नेपाली रेलवे स्टेशन—सन १९२७ में रक्सौल से आमलेखगंज तक नेपाली रेल-पथ चालू हुआ। नेपाल-सरकार ने रक्सौल में नेपाली स्टेशन-भवन के निर्माण तथा भारतीय भूमि में रेल-पथ बिछाने के लिए भारत सरकार से लगभग २८ एकड़ जमीन ली। रक्सौल के कुछ लोगों की धारणा है कि यह भूमि भारत सरकार ने नेपाल सरकार को एक निश्चित अवधि के लिए 'लिज' पर दी है। पर नेपाली रेलवे के एक अधिकारी से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि २७.७८ एकड़ का यह भूमिखंड नेपाल सरकार ने तत्कालींन ब्रिटिश सरकार से ३१,७२५ रु० में खरीदा था, कि इस भूमि-संबन्धी दस्तावेज पर लिखा है—This piece of land is declared to be the property of Nepal Government -यानी यह भूखंड नेपाल-सरकार की सम्पत्ति के रूप में घोषित किया जाता है।

भारत और नेपाल के बीच सन् १९५० में हुई संधि के अनुसार भारतीय और नेपाली नागरिक एक दूसरे के देश में सम्पत्ति अर्जित करने को स्वतंत्र हैं। रक्सौल में ही बीसियों नेपाली नागरिकों की सम्पत्ति खड़ी है। इसी तरह सोमा-पार वीरगंज में बीसियों भारतीयों ने अचल सम्पत्ति अर्जित की है।

पर सरकारी स्तर पर विशेष परिस्थिति में ही एक द्वारा दूसरे के देश में भूमि अर्जित करने का प्रश्न उठता है। इस संदर्भ में एक प्रसंग उल्लेखनीय है। नेपाल के भूतपूर्व भारतीय राजदूत श्री श्रीमन्नारायण ने अपनी पुस्तक 'इन्डिया एंड नेपाल' के पृष्ठ १२५ पर लिखा है- 'आगे की बातचीत के दौरान राजा महेन्द्र ने इंगित किया कि १९५६ के कोशी-समझौते के अनुसार नेपाल को अपनी भूमि का कुछ हिस्सा उचित मुआवजा लेकर भारत को देना है। उन्होंने (राजा ने) सवाल किया कि क्या भारत जैसे मित्र राष्ट्र के लिए यह उचित है कि वह इस योजना के लिए नेपाल को अपने प्रदेश के कुछ हिस्से से वंचित होने के लिए कहे? समझौते की यह उपधारा—राजा ने कहा-हमारी राष्ट्रीय भावना को पीड़ा पहुँचाती है और यह हमारी प्रभुसत्ता पर आँच है। फिर भी, योजना का कार्यान्वयन आसानी से हो सके, काफी लम्बी अवधि के लिए इस छोटे क्षेत्र को भारत को 'लिज' करने में मुझे आपत्ति नहीं होगी। मैंने(श्री श्रीमन्नारायण ने) तत्क्षण कहा-मुझे प्रसन्नता है कि महामहिम ने इस मनोवैज्ञानिक पहलू को उठाया है। मैं पूर्णतः इसकी कद्र करता हूँ। मुझे विश्वास है कि समझौते में इस प्रस्तावित परिवर्त्तन के चलते कोई आर्थिक पेचीदगी नहीं आयेगी 'बिल्कुल नहीं,' राजा महेन्द्र ने कहा—मेरा मुख्य विरोध मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक है।' कोशी-योजना के लिए वह नेपाली भूमि भारत सरकार को १९९ वर्षों के 'लिज' पर प्राप्त हुई। संभव है, इसके बाद किसी अन्य मामले में दोनो देशों के बीच मुआबजा लेकर एक दूसरे को भूमि देने की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई हो। पर रक्सौल-स्थित भारतीय भूमि, जो नेपाल सरकार को नेपाली रेलवे के लिए दी गई, उस समय दी गई, जब भारत में ब्रिटिश सरकार थी।

कलकत्ता की मार्टिन एंड बर्न कम्पनी ने रक्सौल से आमलेखगंज तक-२७ मील की दूरी में छोटी लाइन (नैरो गेज) बिछाने के काम का ठेका लिया। इस काम में बर्न कम्पनी ने कुछेक स्थानींय लोगों को भी छोटा-मोटा ठेका दिया। रक्सौल के स्व० श्री रामगोविन्द राम उनमें प्रमुख थे। वहीं से उनके ठेकेदारी-जीवन का प्रारंभ हुआ।

२७ फरवरी १९२७ को रक्सौल नेपाली स्टेशन का विधिवत् उद्‌घाटन हुआ और प्रथम ट्रेन चली। लगभग ५ वर्षों तक इस रेलवे की व्यवस्था मार्टिन कम्पनी के ही हाथ में रही। १-१०-१९३२ से नेपाल सरकार ने इसका पूरा प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया।

शिवरात्रि के अवसर पर नेपाल के पशुपतिनाथ के दर्शन के निमित्त भारत के कोने-कोने से हजारों की संख्या में पहुंचने वाले तीर्थयात्रियों के

लिए यह रेल-पथ लगभग तीन दशकों तक यातायात की सुविधाएँ मुहैया करता रहा। इस प्रसंग में एक बात उल्लेखनीय है कि प्रारंभ के कुछ वर्षों में शिवरात्रि के अवसर पर रक्सौल से आमलेखगंज तक ट्रेन द्वारा तीर्थ-यात्रियों को मुफ्त पहुँचाने की व्यवस्था थी। हाँ, बाद में इस अवसर के लिए टिकट-दर आधी कर दी गयी थी। इस रियायत का भी कुछ ही वर्षों तक तीर्थयात्रियों ने लाभ उठाया था कि इस अवसर के लिए भी टिकट पूरी लगने लगी।

रक्सौल से काठमांडू को संयुक्त करने वाले राजपथ के निर्माण के बाद से जब भारी संख्या में वीरगंज से काठमांडू के लिए बसें दौड़ने लगीं—इस रेल-पथ की कोई उपयोगिता नहीं रह गयी। सन् १९६० के आस-पास यात्री-गाड़ियाँ बन्द हो गईं। आज मात्र रक्सौल से वीरगंज के लिए इस रेल-पथ पर ३-४ छोटे डब्बोंवाली मालगाड़ी बड़ी ही मन्थर गति से चला करती है। और किसी तरह इस रेलवे का अस्तित्व बचाए हुए हैं।

मार्गों की स्थिति एवं विभिन्न वाहन—जहाँ तक नगर के भीतरी भाग के मार्गों का प्रश्न है, सदा से उनकी अवस्था दयनीय रही है। यूनियन बोर्ड के समय में ईंटों की कुछ सड़कें बनीं, अधिसूचित क्षेत्र--समिति द्वारा भी कुछ मार्गों का निर्माण हुआ, पर नाली का समुचित प्रबंध नहीं होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय नगर कहा जानेवाला रक्सौल सदा नारकीय दृश्य उपस्थित करता रहा है। नगरपालिका के गठन के बाद भी इस संदर्भ में कोई ठोस काम नहीं हो सका है।

आज रक्सौल और वीरगंज-नगरपालिकाओं से नम्बर प्राप्त रिक्शों की संख्या ६०० से ऊपर है, हालांकि सामान्य स्तर पर ४०० के अन्दर ही रिक्शा चला करते हैं। हाँ, दशहरा आदि के अवसर पर इनकी संख्या अवश्य बढ़ जाती है। लगभग एक दशक से दोनों नगरों के बीच स्कूटर भी चलते हैं, जिनकी संख्या लगभग ६० है।

छठे दशक में (सन् १९५५-५६ के आसपास) पहली बार रक्सौल से किसी स्थान के लिए बस-सेवा आरंभ हुई। इस पहली बस-सेवा का नाम पशुपति दर्शन बस-सर्विस था, जो रक्सौल से मोतिहारी और मोतिहारी से रक्सौल के लिए था। रक्सौल से मुजफ्फरपुर के लिए सन् १९६० के लगभग भारत-नेपाल ट्रान्सपोर्ट नाम से बस-सेवा प्रारंभ हुई। परन्तु सुगौली के पास सिकरहना नदी में पक्का पुल बनने के पूर्व तक समय अथवा आराम की दृष्टि से बस द्वारा यात्रा करना संतोषप्रद न था। सुगौली से रक्सौल तक की सड़क की हालत भी अच्छी नहीं थी। वर्षा के दिनों में बस-सेवाएँ अक्सरहां

ठप्प हो जाया करती थीं। सिकरहना नदी पर, सुगौली के पास, पुल बन जाने के बाद सुगौली से रक्सौल तक के मार्ग में भी कई पुल बने। राष्ट्रीय उच्च पथ (२८ ए०) में काफी सुधार हुआ। फिर तो रक्सौल से खुलने वाली बसों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई और उनकी संख्या लगभग ५० तक पहुँच गयी। मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, अरेराज, सीवान, बेतिया, भैंसालोटन आदि स्थानों के लिए यहाँ से बसें खुलने लगीं। इनमें से कई नन-स्टॉप बसें भी थीं। परन्तु राज्य सरकार की परिवहन-नीति के कारण आज प्राइवेट बसों की संख्या घट गई है। अब राज्य-परिवहन की भी कुछ बसें चलने लगी हैं। बसों के चलने लायक रक्सौल से गुजरने वाला कोई पूरब-पश्चिम मार्ग नहीं है। अतः आदापुर, छौड़ादानों, भेलाही, सिकटा जैसे निकट के स्थानों के यात्रियों के लिए बस-सेवा उपलब्ध नहीं है। आमोदेई से आगे 'नरिरगिर पोखरा' के पास से चम्पापुर होते हुए एक मार्ग का निर्माण हुआ है, जो आदापुर की ओर चला गया है। उसका कुछ भाग पीच भी हो चुका है।

राष्ट्रीय उच्च पथ (२८ ए०) का वह भाग, जो रक्सौल के सिनेमा हॉल (कृष्णा टॉकिज) के सामने से गुजरता है, काफी प्रशस्त होने के बावजूद खुमचा, गुमटी, रिक्शा, टाँगा तथा बसों से भरे रहने के कारण संकीर्ण हो गया है। फुटपाथ एवं नालियों के साथ इसे नये ढंग पर निर्मित करने की योजना स्वीकृत है।

हवाई अड्डा - रक्सौल के हरैया गांव के निकट निर्मित हवाई अड्डा, जो नगर से लगभग २ किलोमीटर पर अवस्थित है, कई दृष्टियों से विशिष्ट है। १९६० में बने इस हवाई अड्डा के अन्तर्गत एक 'टरमिनस' भवन भी है। इस हवाई अड्डा के संबंध में चम्पारण गजेटियर (१९६०) में वर्णन है— 'इसकी हवाई पट्टी (रनवे) की लम्बाई साढ़े चार हजार फीट से अधिक है, जिससे पूर्वी भारत में, कलकत्ता के निकट दमदम हवाई अड्डे के बाद नागरिक हवाई अड्डों में इसका दूसरा स्थान है। हमारे उत्तरी पड़ोसियों को निकट लाने में यह हवाई अड्डा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। और यह भी आशा की जाती है कि दिल्ली-मास्को हवाई उड़ान की अवधि बहुत घट जायेगी, जब रक्सौल से होते हुए यह सेवा चालू होगी। भारत-चीन, भारत-तिब्बत और भारत-नेपाल की हवाई-उड़ान की अवधि बहुत कम हो जायेगी और इस तरह स्वभावतः रक्सौल द्वारा यात्रियों, आदि की संख्या बढ़ जायेगी। जब अन्तर्राष्ट्रीय वायु-मार्ग पर इसकी स्थिति हो जायेगी और कलकत्ता के साथ यह जुड़ जायेगा तो रक्सौल नगर का भविष्य उज्वलतर हो जायेगा,

जहाँ तक इसके उद्योग एवं वाणिज्य का संबंध है। वर्त्तमान में इस हवाई अड्डे पर डैकोटा उतर सकते हैं।"

'चम्पारण गजेटियर' में इस हवाई अड्डा के संदर्भ में लिखित उपर्युक्त सूचनाओं द्वारा रक्सौल की महत्ता तो प्रकट होती है, पर लगभग दो दशक बीत जाने के बाद भी अबतक ऐसी कोई अन्तर्राष्ट्रीय सेवा चालू नहीं हो सकी है। हाँ, समय-समय पर मंत्रियों, विशिष्ट अधिकारियों,आदि के हवाई जहाज यहाँ अवश्य उतरा करते हैं। आज से लगभग एक दशक पूर्व 'कलिंग सर्विस' नाम से रक्सौल से मुजफ्फरपुर और भागलपुर होते हुए कलकत्ता के लिए हवाई सेवा शुरू हुई थी। पर कुछ ही महीने चलने के बाद यह सेवा बन्द हो गई। कहते हैं कि तस्करी में रुकावट पड़ने के कारण यात्रियों की संख्या में कमी होने लगी और बाध्य होकर इस सेवा को बन्द कर देना पड़ा।

व्यवसाय—१९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नील का व्यवसाय ऐसा था, जो सुसंगठित था, और अंग्रेजों द्वारा संचालित होने के कारण लाभप्रद भी था। पर इसका सारा मुनाफा अंग्रेज ही उठाते थे। इलाके की जनता तो मात्र श्रम करने वाली थी, जिसे उचित पारिश्रमिक भी नहीं मिल पाता था। इसका विशद वर्णन अध्याय ३ में आ चुका है। हरदिया कोठी में तैयार नील की बटियाँ कलकत्ता चली जाती थीं और फिर वहाँ से यूरप। रासायनिक रंग के आविष्कार हो जाने के कारण १९ वीं सदी के अन्त में हरदिया में नील का व्यवसाय बन्द हो गया।

१८ वीं सदी में यह इलाका अफीम के व्यवसाय के लिए भी प्रसिद्ध था। चम्पारण गजेटियर के अनुसार यहाँ किसी म० मनीर को अफीम के व्यवसाय का एकाधिकार प्राप्त था। चम्पारण गजेटियर के ही अनुसार "उत्तमोत्तम श्रेणी के अफीम के लिए दूरस्थ स्थानों में चम्पारण का बड़ा नाम था।" गोबिन्दगंज के बाद जिला में आदापुर थाना में (जिसमें रक्सौल क्षेत्र था) सबसे अधिक अफीम की खेती होती थी। सन १९०० में यहाँ ७७५५ एकड़ में अफीम की खेती हुई थी। मोतिहारी और बेतिया में एक-एक 'सब-डिप्टी ओपियम एजेन्ट' की नियुक्ति थी।

अन्न के व्यवसाय के लिए यह इलाका सदा से मशहूर रहा है। सन् १८५५ में बिहार में चम्पारण ही मात्र एक जिला था, जहाँ से बिहार के अन्य जिलों में चावल निर्यात किया जाता था। बगहा तथा रक्सौल--आदापुर क्षेत्र धान के लिए प्रसिद्धि-प्राप्त स्थान हैं। हरदिया कोठी के निलहे साहबों ने नील-

व्यवसाय के चौपट हो जाने के बाद बडे. पैमाने पर ईख और अन्न का व्यवसाय किया। पुस्तक "बंगाल एंड आसाम : बिहार एंड उड़ीसा" में लिखा है—"हरदिया कोठी के अन्तर्गत एक बड़ा सा-बाजार है, जो नेपाल के साथ व्यापार-केन्द्र का काम करता है।"

बाजार बसने के कुछ ही दिनों बाद यह गल्ले की एक खासी मंडी में परिणत हो गया। बेतिया का कोई 'रेली ब्रदर्स' नामक फर्म था, जो रक्सौल में बडे. पैमाने पर गल्ला की खरीद किया करता था। कुछ वयोवृद्ध व्यक्तियों का कहना है कि उस जमाने में रेलवे मालगोदाम से आज के मारवाड़ी मंदिर तक का स्थान अन्न–भरे बोरे की छल्लियों से अटा रहता था।

बेतिया के उदयराम-सेवाराम, चनपटिया के सहायी राम-फकीरा राम, गोविन्दगंज के विसुनदयाल साह; दमड़ी साह, अशर्फी साह तथा अन्य स्थानों के कुछ लोग—जैसे श्री लक्ष्मण नारायण मस्करा, महावीर प्रसाद, गुरतली मियाँ, शेखावत मियाँ जैसे लोगों का गल्ले का कारोबार बड़ी प्रगति पर था। यहाँ दूसरे-तीसरे दशक में गल्ले का व्यापार सबसे महत्वपूर्ण व्यापार था।

रक्सौल में किसी बडे. प्रतिष्ठान की नींव डालने का श्रेय स्व०श्री जगन्नाथ प्रसाद जालान को जाता है। सर्वप्रथम उन्होंने सन् १९१४ के आस-पास चावल मिल स्थापित की। उन्होंने आटा मिल एवं तेल मिल का भी शुभारंभ किया। श्री पशुपति नाथ राइस,फ्लावर एंड आयल मिल्स के नाम से यह प्रतिष्ठान दशकों इस क्षेत्र का प्रमुख प्रतिष्ठान रहा है। उस जमाने में चावल से सम्बंधित बिहार का यह दूसरा प्रतिष्ठान था और प्रथम प्रतिष्ठान इसी थानान्तर्गत मुरला गांव में था, जिसके मालिक निलहे साहब थे। श्री ब्लाइन ने अपनी पुस्तक 'बंगाल एंड आसाम:बिहार एंड उड़ीसा' में लिखा है- "As recently as five years ago there was not a single rice mill in the province of Bihar. The month of February, 1913 was a red letter day for the province, as its pioneer rice mill, the Moorla rice-mill was formally opened amid a flourish of trumpets by Mr. Rainy, I. C. S., collector of the district of Champaran" यानी ५ वर्ष पूर्व (१९१२) तक बिहार प्रांत में एक भी चावल मिल नहीं थी। प्रांत के लिए सन् १९१३ का फरवरी माह महत्वपूर्ण माह है, जब प्रांत की प्रथम चावल-मिल—मुरला राइस मिल का विधिवत् उद्घाटन श्री रेनो, आई० सी० एस०, चम्पारण जिला-कलक्टर द्वारा बाजे-गाजे के बीच हुआ।" उन दिनों प्रतिदिन ६०० मन चावल तैयार करने वाली इस मिल की अपनी महत्ता थी। पर कोठीवालों का यहाँ से अस्तित्व समाप्त होते ही इस

मिल का भी अस्तित्व समाप्त हो गया।

श्री जालान की मिल की स्थिति १९५४ ई० के जून तक संतोषप्रद रही। पर इस वर्ष के जुलाई के अन्त में आई भयंकर बाढ़ ने मिल की सम्पत्ति को भारी क्षति पहुंचाई।

श्री श्रीलाल भरतिया की श्री अन्नपूर्णा राइस मिल सन् १९२३ तथा तेल मिल सन् १९४० के आसपास स्थापित हुई। श्री रतन लाल मस्करा ने श्री 'गणेश राइस मिल' के नाम से वर्षों चावल मिल चलायी, जिसे बाद में श्री जयकिसुन राम ने 'नरसिंह राइस मिल' के नाम से चलाया। श्री राम गोविन्द राम ने भी कुछ समय के लिए एक चावल-मिल चलायी थी।

आज ये सारी मिलें जमाने से बन्द हैं। उन दिनों इन मिलों में अधिकतर धान नेपाल-क्षेत्र के निकटवर्ती इलाकों से प्राप्त होता था, पर जब इस नेपाली क्षेत्र में भी मिलें खुलती गयीं, सरकारी नीति में परिवर्त्तन हुआ और धान पर 'लेवी' लगना शुरू हुआ तो बड़े पैमाने पर चावल--मिल चलाना लाभप्रद न रहा। आज मात्र हवाई अड्डा-मार्ग की बगल में एक बड़ी चावल मिल चलती है, पर इन दिनों कम कीमत पर स्थापित डिजल अथवा बिजली से चलने वाली छोटी-छोटी अनेक मिलें खुल गयी हैं, जिनकी संख्या आज इस इलाके में ४० से ऊपर है।

सन १९६१-६२ के आस-पास इस क्षेत्र में तेल एवं प्राकृतिक गैस की संभावना का पता लगाने के लिए रूस के सहयोग से सर्वेक्षण-कार्य हुआ था। कुछ ही दिनों के बाद एक इटालियन फर्म को हरदिया कोठी में ड्रिलिंग करने के लिए ठेका प्राप्त हुआ। काफी पैसे के व्यय से एक गहरे कुएँ की खुदाई हुई। लगने लगा कि अंग्रेज निलहों के जाने के बाद एक बार फिर हरदिया कोठी में रौनक छायेगी। हाँ, उन दिनों इस इलाके की जनता का शोषण होता था, इस बार उनका भाग्य चमकेगा। पर कुछ ही दिनों के बाद सुना गया कि यह कुआँ मात्र अध्ययन-कूप (Study-well) के रूप में काम आयेगा।

लगभग डेढ़ दशक के बाद इस वर्ष (सन १९७९ के फरवरी-मार्च माह में) सर्वेक्षण करनेवाले एक नये दल ने हरदिया कोठी के आस-पास इस संदर्भ में पुनः कुछ कार्य किया था। सुना जाता है कि जाँच के लिए पुनः मिट्टी विभाग के मुख्य कार्यालय में भेजी गयी है। अगर सचमुच तेल निकल आता है, तो इस इलाके का काया-पलट हो जायेगा।

कपड़ा-व्यवसाय—कपड़े के व्यवसाय के संदर्भ में श्री मनमोध साह, श्री रामधारी साह, श्री तपेसर साह जैसे व्यक्तियों की चर्चा पहले आ

चुकी है। श्री जगन्नाथ प्र० जालान, श्री रतन लाल मस्करा, श्री हजारी मल, श्री बोहित राम जैसे व्यक्तियों ने जब कपड़े के व्यापार में हाथा डाला, रक्सौल का यह व्यापार भी चमक उठा।

सन् १९१४ में प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ने के बाद व्यापार को, विशेषतः कपड़े के व्यापार को—एक नया मोड़ मिला। हजारीमल जी के श्रम और निष्ठा के साथ भाग्य ने भी साथ दिया। उनके पुत्र बोहित राम जी, जो व्यवसाय के सिलसिले में अधिकतर कलकत्ता में रहा करते थे, की पैनी व्यापार-दृष्टि थी। उन दिनों जापान तथा मैनेचेस्टर-निर्मित कपड़ा न केवल रक्सौल-मंडी में बिकता, बल्कि बड़ी मात्रा में नेपाल भी जाता। युद्ध का समय और दो देशों की सीमा-भूमि! इस परिवार ने तीन-चार वर्षों में ही अच्छी सम्पत्ति अर्जित की। धर्मनिष्ठ हजारीमल जी ने इन रुपयों का सदुपयोग भी किया। आज भी उनके कई कीर्ति-स्तम्भ खड़े हैं।

एक लम्बी अवधि तक रक्सौल बाजार की कपड़ा की दुकानें आज के मीना बाजार के आस-पास तक ही सीमित रहीं। ऊपर जिन कपड़ा-व्यवसायियों की चर्चा की गई है, उनके अतिरिक्त अनन्त राम-बनारसी लाल, गनपत राम जी, श्री केदार प्रसाद जैसे कपड़ा-व्यवसायियों की प्रमुखता रही है।

रक्सौल में कपडे का व्यापार विशेषतः नेपाल-क्षेत्र पर निर्भर रहा है। जमाने से थारु एवं वीरगंज तथा उसके निकटवर्ती निवासी रक्सौल में सामानों के खरीददार रहे हैं।

समय-समय पर रक्सौल तथा वीरगंज के बाजार में उतार-चढ़ाव आता रहा है। कभी रक्सौल का बाजार चमका है तो कभी वीरगंज का। कपडे पर 'कन्ट्रोल', 'ड्यूटी' जैसे मुद्दे इसके प्रमुख कारण रहे हैं।

आज रक्सौल कपड़ा के व्यवसाय की दृष्टि से जिला में सर्वोत्तम है। जिले के मुख्यालय मोतिहारी के कपडे की दुकानों में वह रौनक नहीं, जो रक्सौल के कपड़ों की दुकानों में दिखलाई पडती है। रूप बहार, किसान-वस्त्रालय, वन्दना, कल्पना, अर्चना, मंजुश्री, (बम्बे डाइंग), अप्सरा, आम्रपाली, नवरंग वस्त्रालय, आराधना, रंजना, श्रीमान्-श्रीमती—एक-से-एक आकर्षक दुकानें ग्राहकों को आकृष्ट करने के लिए खड़ी हैं। आज कपडे का पुराना बाजार फीका-फीका-सा नजर आता है। सारी रौनक बैंक रोड में सिमट आयी है। शुक्रवार और शनिवार को इस मार्ग की रौनक और बढ़ जाती है, जब इन दुकानों में इन नेपालियों की भीड़ इकट्ठी होती है। अब तो रक्सौल में ऐसी भी कपडे की दुकान है—जिसका "शो रूम" दोमंजिले पर स्थित है।

आज रक्सौल में छोटी-बड़ी ६० कपड़े की दुकानें हैं । बीरगंज तथा इसके आस-पास के नेपाली क्षेत्र के निवासियों की ही नहीं, बल्कि दूर-दराज यहाँ तककि काठमांडू के कुछ लोगों की भी दिलचस्पी रक्सौल के कपड़ा-बाजार में बढ़ गयी है ।

बीरगंज तथा अन्य नेपाली क्षेत्रों में भारतीय कपड़े की दुकानों की कमी नहीं है, फिर भी रक्सौल के बाजार में भारतीय कपड़ों के लिए नेपालियों की भारी भीड़ रहती है । इसका प्रमुख कारण तो यह है कि नेपाली क्षेत्र में बिकने वाला भारतीय कपड़ा भारतीय क्षेत्र में बिकने वाले इसी कपड़े की अपेक्षा महंगा पड़ता है । नेपाली क्षेत्र में इस भारतीय कपड़े पर ड्यूटी (भंसार) के अतिरिक्त विक्रय-कर बहुत अधिक है—कुल मिलाकर लगभग २५ प्रतिशत । बीरगंज की विदेशी कपड़ों की दुकानों में आकर्षण है, जहाँ भारतीय खरीददार खींचे चले जाते हैं और रक्सौल में भारतीय कपड़े की दुकानों में रौनक है, और कपड़े की अनेक किस्में हैं, जो नेपाली ग्राहकों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं ।

कीराना-व्यवसाय—रक्सौल की प्रारम्भिक कीराना की दुकानों में तीन दुकानों की अच्छी ख्याति थी—मुरला के झुमक राम-महावीर राम, सिसवनिया के झोंटी राम (फर्म : युगेश्वर प्र०-मुखलाल राम) एवं मुरला के ही नकछेद राम की दुकानों की । उन दिनों एक और छोटी पर प्रमुख किराना की दुकान थी—श्री रामभुज चौधरी की । ये किराना की दुकानें रक्सौल बाजार की नींव पड़ने के बाद ही खुलीं और सन् १९५० के आस-पास बन्द हो गयीं । एक लम्बी अवधि तक इन दुकानों ने न केवल इस इलाके की कीराना-सामग्री की आवश्यकताओं को पूर्ति की, बल्कि जाने-अजाने ही रक्सौल के भावी कीराना-विक्रेताओं को भी तैयार करती रहीं । कई ऐसे मुलाजिमों ने, जिन्होंने इन दुकानों में काम करते हुए अनुभव प्राप्त किये थे, आगे चलकर अपनी स्वतन्त्र कीराना की दुकानें खोल लीं । सन् १९३० से ४० के दशक में कई नयीं दुकानें खुलीं । रघुवीर राम-गया राम, गोकुल राम (भरत प्रसाद-बृजनाथ प्रसाद), दारोगा लाल-दुर्गा प्रसाद, लक्ष्मी राम-कंचन प्रसाद, सूर्य प्र०, लखिचन्द राम, आदि की कीराना-दुकानें उन दिनों अच्छी प्रगति पर थीं । फिर भी सन् १९५० के पूर्व रक्सौल में कीराना की दुकानें उंगलियों पर ही गिनने लायक थीं, जबकि आज उनकी संख्या २६९ है । किसी एक तरह (एक समूह) की चीजों से संबंधित दुकानों में कीराना-दुकानों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि हुई है ।

थोक-कीराना-सामग्री के क्षेत्र में भी रक्सौल का अपना एक स्थान है। श्री गया राम-रघुवीर राम, श्री मोहन लाल अग्रवाल एवं श्री ताराचन्द अग्रवाल से सम्बद्ध थोक कीराना-दुकानें न केवल रक्सौल की सैकड़ों छोटी-मोटी दुकानों के लिए सामग्री मुहैय्या करती रही हैं, बल्कि दूर-दराज के विक्रेता भी यहाँ से बड़ी मात्रा में कीराना-सामान ले जाते रहे हैं। आज भी ये दुकानें कुछ नये-पुराने नाम से थोक बिक्री के लिए इलाके में प्रतिष्ठित हैं। आज रक्सौल में थोक-कीराना सामग्री से संबंधित कुछ फर्मों के नाम यों हैं—प्रसाद एन्ड कम्पनी, अरविन्द कीराना स्टोर्स, बिहार ट्रेडिंग क०, मुरलीधर जैनलाल, सिंह ब्रदर्स, सती चाव कीराना भंडार, रघुवीर राम-गया प्र०, राधेश्याम अग्रवाल, आदि।

मनिहारी— वर्षों तक मनिहारी की सामग्री कीराना-दुकानों में ही बिकती रहीं। सन १९३३ में कुछ बड़े पैमाने पर नन्दू बाबू की मनिहारी की दुकान खुली, हालाँकि वर्षों तक इसमें दवा भी साथ-साथ बिकती रही। अन्य मनिहारी की दुकानों में केशव बाबू तथा भगत जी (श्री रामजतन राम) की दुकानें अधिक प्रसिद्धि प्रात कर सकीं। आज रक्सौल में मनिहारी की दुकानों की संख्या ३० है। तीन बडे स्टॉकिस्ट हैं- सीकरिया ब्रदर्स, प्रसाद एन्ड कम्पनी एवं श्री सत्यनारायण भरतिया।

लघु उद्योग— पिछले १०-१५ वर्षों में लघु उद्योग के क्षेत्र में भी रक्सौल ने अच्छी प्रगति की है। रक्सौल से काठमांडू को जोड़ने वाले मार्ग के निर्माण हो जाने के बाद से वाहनों की संख्या में हुई तेजी से वृद्धि तथा अन्य मशीनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लेथ-संबंधी लघु उद्योग से आज यहाँ सैकड़ों व्यक्ति जुडे हैं। और भी अनेक लघु औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना हुई है। ऐसे कुछ नये-पुराने प्रतिष्ठानों के नाम यों है—हिन्दुस्तान आयरन एंड स्टील कम्पनी, जालान इंजीनियरिंग वर्क्स, ठाकुर इंजीनियरिंग वर्क्स, जनता इंजीनियरिंग वर्कशाप, सूरज इंजीनियरिंग वर्कशाप, राजेश इंजीनियरिंग वर्क्स, स्टैन्डर्ड डिजल औटो मोबायल, ओ० के० बैट्री सर्विस, नेशनल एग्रो सर्विस सेन्टर, चम्पारण सीमेंट प्रोडक्ट्स, विश्वकर्मा डिजल मोटर गैरेज, पटना इंजीनियरिंग वर्क्स, विश्वनाथ बस-बडी बिल्डर्स, संसार बैट्री वर्क्स, भरतिया प्लास्टिक कम्पनी, बिहार रिफाइनरी, अन्नपूर्णा दाल मिल, नेशनल दुग्ध उत्पादन केन्द्र, शंकर शॉ मिल, योगेन्द्र इन्डस्ट्रीज, महावीर शॉ मिल, अशोक कन्फेक्शरी, महावीर बिस्कुट कम्पनी, सीताराम बिस्कुट कम्पनी, सुरेश वर्क्स, पटना ग्रिल कम्पनी, आजम इंजीनियरिंग, राजेश इंजीनियरिंग,

सत्य प्रकाश मोटर गैरेज, डी० एन० इन्टरप्राइजेज, ध्रुव इन्जीनियरिंग, ओम् इन्जीनियरिंग, आदि। यहाँ मोमबत्ती बनाने वाली पाँच फैक्ट्रियाँ हैं। एक अनुमान के अनुसार इन लघु उद्योगों में पाँच सौ से ऊपर व्यक्ति सम्बद्ध हैं।

मुद्रणालय—(प्रिंटिंग प्रेस) यहाँ प्रकाश प्रेस, किरण प्रेस, अर्चना प्रेस वीणा प्रेस, राजेश प्रिंटिंग वर्क्स, जानकी प्रेस, दुर्गा प्रेस, सीमा प्रेस, विजय बुक बाइन्डिंग और हिमालय एक्सरसाइज बुक वर्क्स है। प्रथम, पाँचवे, तथा अन्तिम दो प्रेसों में सस्ती वैशाली कॉपियों के निर्माण की भी व्यवस्था है।

बीड़ी उद्योग—इस उद्योग से इस इलाके के सैकड़ों मजदूर संबद्ध हैं। रक्सौल में बीड़ी की खपत इतनी है कि स्थानीय तौर पर निर्मित बीड़ी के अतिरिक्त भेलाही, आदापुर, रामगढ़वा, छौड़ादानों चकिया में निर्मित बीड़ी का अधिकांश यहाँ बिक जाता है। झाझा से भी यहाँ बड़ी मात्रा में बीड़ी मंगायी जाती है। बीड़ी-व्यवसाय से सम्बद्ध रक्सौल में १० ऐसी गद्दियाँ हैं, जो बड़े पैमाने पर रक्सौल में इस व्यापार को करती हैं। नेपाल के तराई-क्षेत्र में इन बीड़ियों की बड़ी खपत है।

सन् १९७१ में हुए सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार रक्सौल में तीन प्रमुख उत्पादित वस्तुओं के नाम हैं—बिस्कुट, मोमबत्ती और बीड़ी।

होटल व्यवसाय—इन दिनों रक्सौल का होटल-व्यवसाय बड़ी प्रगति पर है। नेपाल-भ्रमण के निमित्त रक्सौल से गुजरने वाले देशी-विदेशी भ्रमणार्थियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। अतः रक्सौल में आज आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न एक से बढ़कर एक आवासीय होटल खड़े हैं।

कहाँ उस जमाने का कंदली पांडे का वह झोपड़ीनुमा और सीलन-भरा होटल और कहाँ आज आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न होटलों की लम्बी सूची। पेरिस लॉज, आम्रपाली होटल, अजन्ता लॉज, अजन्ता होटल, न्यू भागीरथ होटल, बाम्बे लॉज, नेशनल लॉज, टुरिस्ट लॉज, न्यू दिल्ली होटल, अशोक होटल, जैसे होटल एवं लॉज न केवल विदेशियों को बल्कि विभिन्न स्थानों से आनेवाले भारतीयों को भी आवासीय तथा भोजन आदि की सुविधाएं मुहैया कर रहे हैं। आश्रम रोड-स्थित अजन्ता होटल रक्सौल का सर्वोत्तम आवासीय होटल है, जो नगर का गौरव भी है।

सिनेमा—सन् १९५१ में स्थापित श्री कृष्णा टॉकिज १९७७ के मार्च माह तक रक्सौल का एक मात्र सिनेमा हॉल रहा है। आधुनिक शैली पर निर्मित "पंकज" टॉकिज पिछले दो वर्षों से (२१-४-७७ से) सिनेमा-दर्शकों की भारी भीड़ इकट्ठा कर रहा है। एक अनुमान के अनुसार दोनों सिनेमा हॉलों में

दर्शकों की संख्या का लगभग ७०% नेपाली दर्शकों का होता है। न केवल वीरगंज, कलैया, हथौड़ा आदि के ही दर्शक, बल्कि अच्छी फिल्में लगने पर काठमांडू तक के कुछ दर्शक भी रक्सौल खींचे चले आते हैं। रक्सौल में एक अन्य सिनेमा हॉल निर्माणाधीन है।

आधुनिक मार्केट—'मीना बाजार' के बाद 'ताजमार्केट' एवं 'लक्ष्मी-मार्केट' जैसे आधुनिक मार्केट के निर्माण हो जाने के पश्चात् रक्सौल बाजार की रौनक में वृद्धि हो गई है।

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठान

● सुप्रिम फार्मास्युटिकल लैबोरेटरीज—श्री जगदीश प्रसाद सीकरिया के श्रम, अध्ययन एवं अध्यवसाय के फलस्वरूप रक्सौल में दवा का उत्पादन करने-वाला कारखाना सुप्रिम फार्मास्युटिकल लैबोरेटरीज न केवल रक्सौल का, बल्कि सम्पूर्ण चम्पारण जिला का गौरव है। सन् १९७१ के अन्त में स्थापित इस फैक्ट्री ने दवा-उत्पादन के क्षेत्र में पिछले ४-५ वर्षों में अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित की है। एक दर्जन से ऊपर दवाइयों का निर्माण करनेवाली यह फैक्ट्री स्वच्छता, दवाइयों की गुणवत्ता आदि की दृष्टि से काफी प्रशंसा प्राप्त कर चुकी है—ऐसा फैक्ट्री के 'विजिटर्स-बुक' को देखने से ज्ञात होता है, जिसमें चिकित्सा-जगत् तथा कुछ अन्य क्षेत्रों से सम्बद्ध पचास से ऊपर विशिष्ट व्यक्तियों ने अपनी प्रशंसात्मक सम्मति लिखी है। वातानुकूलित यह कारखाना न केवल चम्पारण में बल्कि बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल और नेपाल के दूर-दराज के स्थानों में भी अपने विभिन्न उत्पादनों की आपूर्ति करने लगा है। श्री एल० बी० रूंगटा जैसे सुयोग्य प्रबंधक की देखरेख में फैक्ट्री काफी प्रगति पर है।

● कंक्रीट प्रोडक्टस मैनुफैक्चरिंग कम्पनी—श्री सत्यनारायण प्र० गुप्त एवं श्री मुन्द्रिका सिंह अभियंता, जिन्होंने अमेरिका से इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त की है—के सम्मिलित प्रयास से कोइरिया टोला में कंक्रीट प्रोड-क्ट्स मैं० क० के नाम से संचालित प्रतिष्ठान विद्युत्-पोल के निर्माण का काम सन् १९७४ से कर रहा है। सन् १९७१ में बीस वर्षों के लिए 'लिज' पर ली गई दो एकड़ की प्रशस्त भूमि में सीमेन्ट-पोल के अतिरिक्त कुछ अन्य घरेलू सामग्रियों का निर्माण शुरू हुआ। यह प्रतिष्ठान न केवल बिहार-विद्युत् बोर्ड को बल्कि विद्युत्-कारपोरेशन, नेपाल को भी सीमेंट-पोल की आपूर्ति करता है।

५०० पोल प्रतिमाह उत्पादन-क्षमतावाले इस प्रतिष्ठान को कई तरह की कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा है, जिसके चलते बीच-बीच में फैक्ट्री

बन्द हुई है। बिहार विद्युत्-बोर्ड द्वारा रकम-अदायगी के प्रति उदासीनता, सीमेंट, आदि का अभाव—इन सबने प्रतिष्ठान की प्रगति में रुकावट डाली है। सरकारी नीति के विरुद्ध श्री मुन्द्रिका सिंह को पटना-सचिवालय के सामने भूख-हड़ताल भी करनी पड़ी है। आज प्रतिष्ठान की स्थिति संतोषप्रद है।

● बिहार फाउन्ड्री वर्क्स—श्री हरि प्रसाद जालान के मिलवाले अहाते में स्थापित बिहार फाउन्ड्री वर्क्स जालान-परिवार से ही सम्बद्ध है। आज से लगभग ३ वर्ष पूर्व स्थापित यह फाउन्ड्री वर्क्स बड़े पैमाने पर कड़ाही का उत्पादन करता है। इस प्रतिष्ठान को श्री सत्यनारायण प्र० जालान एवं अभियंता श्री गौरी प्रसाद जालान का अनुभव एवं सहयोग प्राप्त है।

इसी अहाते में लोहे की छड़ ढालने का कारखाना भी स्थापित हो रहा है, जहाँ मोटाई के अनुसार सात प्रकार की छड़ें ढाली जायेंगी। इस कारखाने के स्थापित हो जाने पर रक्सौल के उद्योग के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ जायेगी।

नेपाल जानेवाले माल के लिए रक्सौल से गुजरने वाला मार्ग प्रमुख मार्ग है। इसलिए रक्सौल को भारत और नेपाल के बीच किन्हीं परिस्थितियों में व्यापार-संबन्ध के सन्दर्भ में उत्पन्न तनाव का सामना आये दिन करना पड़ता है। सन् १९६२ की 'रक्सौल-नाकेबन्दी' की याद आज भी रक्सौल तथा वीरगंज के अनेक लोगों को है। श्री श्रीमन्नारायण ने अपनी पुस्तक 'इन्डिया एंड नेपाल' के पृष्ठ ९५ में लिखा है—"नेपाली अभी भी भारत के साथ अपने व्यापार-संबन्ध के इतिहास में उस दुखद घटना को नहीं भूले हैं। यह १९६२ की 'रक्सौल-नाकेबन्दी' (The Raxaul – Blockade) है, जब कई सप्ताहों तक भारतीय सामानों का काठमांडू जाना लगभग पूर्णतः रुक गया था और घाटी के लोगों को आवश्यक उपभोग्य वस्तुओं को प्राप्त करने में भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। उस समय इन दो देशों के बीच राजनैतिक संबंधों में नयी गिरावट आयी और यह आम रूप से विश्वास किया जाने लगा कि नेपाली कांग्रेस के नेता भारत सरकार की चुप्पी, बल्कि सहयोग से शीघ्र ही नेपाल पर आक्रमण करने वाले हैं। नेपाल को अपने विश्वास में लेने के प्रयत्न में चीनी विदेश मंत्री मार्शल चेन यी ने घोषणा की कि नेपाल पर किसी भी विदेशी आक्रमण के समय चीन नेपाल को फौजी सहायता प्रदान करेगा। जब सन् १९६२ के अक्टूबर माह में चीन ने भारतीय सीमा पर आक्रमण किया, और भारतीय फौज वस्तुतः परास्त हो गयी, तो नेपाल ने शांति, बल्कि संतोष की सांस ली।"

रक्सौल में नेपाली सिका धड़ल्ले से प्रचलन में है। हालांकि नियमतः इसका प्रचलन नहीं होना चाहिए। परन्तु रक्सौल का व्यापार बहुत कुछ नेपाली क्रेताओं पर निर्भर करता है। नेपाली सिक्का भारतीय क्षेत्र में व्यापारियों द्वारा नहीं स्वीकार किया जाय, इसके लिए न तो सरकार की ओर से कड़ाई है, न ही यहाँ सिक्का-विनिमय की समुचित व्यवस्था है। रक्सौल के बाजार में कुछ सिक्का-विनिमयकर्त्ता नाजायज ढंग से खुलेआम सिक्का-विनिमय करते हैं।

एक लम्बे समय तक नेपाल में विधानतः द्वि-सिक्का (Dual Currency) का प्रचलन था। परन्तु वर्षों से नेपाल मात्र अपने नेपाली सिक्का को ही आन्तरिक व्यापार-व्यवसाय में मान्यता दे रहा है। वहाँ इस नियम का कड़ाई के साथ पालन किया जाता है, इसमें संदेह नहीं। वीरगंज के व्यापारी भारतीय रुपये स्वीकार करते हुए पुलिस द्वारा पकड़ लिए जाने पर दंड के भागी बनते हैं। फिर भी, छुपे रूप में वहाँ भी भारतीय सिक्के स्वीकार कर ही लिए जाते हैं। नेपाली क्षेत्र में भारतीय सिक्का रखना अपराध नहीं है।

एक बुद्धिजीवी नेपाली नागरिक से इस संदर्भ में बातचीत करने के क्रम में उस नेपाली ने कहा—" हमारा नेपाल बहुत छोटा देश है। हम नहीं चाहते कि एक विशाल देश की भाषा, भूषा, सिक्का आदि को अपने यहाँ प्रश्रय देकर हम अपनी पहचान (Identity) ही खो दें। हमारा न तो हिन्दी से विरोध है, न तो भारतीय वेश-भूषा से, न ही भारतीय सिक्का से। हम मात्र चाहते हैं कि कड़ाई के साथ अपनी नेपाली भाषा, नेपाली वेश-भूषा (कार्यालय में नेपाली पोशाक पहन कर जाना अनिवार्य है, हालांकि कुछ अंश में ढिलाई देखी जाती है) एक नेपाली सिक्का आदि का हमारे देश में प्रचलन हो, और स्वतन्त्र राष्ट्र की श्रेणी में हम अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान बना सकें"। उस नेपाली बन्धु के तर्क में कुछ बल मालूम हुआ।

जब कभी नेपाली रुपये का अवमूल्यन होता है, रक्सौल को भी प्रभावित कर जाता है। सन् १९६६ के पूर्व भारतीय रुपये की तुलना में नेपाली रुपये की कीमत बहुत कम थी, परन्तु जून १९६६ में भारतीय रुपये के अवमूल्यन के फलस्वरूप भारतीय रुपये तथा नेपाली रुपये का मूल्य लगभग बराबर हो गया—१०० रु० भारतीय = १०१'५ रु० नेपाली। पर बाध्य होकर नेपाल सरकार को भी सन् १९६७ के अन्त में नेपाली रुपये का अवमूल्यन करना पड़ा। फलस्वरूप १०० रुपये भारतीय १३५ रु० नेपाली के बराबर हुए। सम्प्रति १०० रुपये भारतीय १४५ रुपये नेपाली के बराबर हैं। समय-समय पर होने वाले इस अमूल्यन के कारण रक्सौल तथा वीरगंज के अनेक लोग प्रभावित हो उठते हैं। कुछ लोगों को तो हजारों-लाखों का घाटा-मुनाफा उठाना पड़ता है।

८. भारतीय कस्टम्स चेक पोस्ट—नेपाल के साथ व्यापार की एक प्रमुख कड़ी

नेपाल के प्रवेश-द्वार पर स्थित होने के कारण कस्टम्स की दृष्टि से रक्सौल का आज महत्वपूर्ण स्थान है।

जमाने से भारत और नेपाल के बीच अबाध गति से व्यापार होता आ रहा है। हाँ, यह सही है कि सन १९५० के पूर्व नेपाल की आवश्यकताएँ थोड़ी थीं और कुछ जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं का ही व्यापार होता था। नेपाल से जड़ी-बूटी, घी, मोम, लकड़ी आदि का भारत में निर्यात होता था।

पी० सी० राय चौधरी ने 'चम्पारण गजेटियर' में भारत-नेपाल के व्यापार के संदर्भ में लिखा है—"व्यापर अच्छा था। सामान घोड़ों, आदमियों और हल्की गाड़ियों द्वारा ढोया जाता था। लकड़ियाँ नदियों द्वारा पहुँचायी जाती थीं।"

रक्सौल बाजार बसने के बहुत पहले रक्सौल के पूरब कटकेनवा गांव से होकर नेपाल के लिए माल जाता था। नेपाल से भारत में माल आने का भी वही रास्ता था।

पी० सी० राय चौधरी ने लिखा है—"१४ जनवरी १८७९ के फोर्ट विलियम के पत्र से मालूम होता है कि नेपाल और भारत सरकार में व्यापारिक वस्तुओं के आदान-प्रदान के लिए पारस्परिक समझौता था। यह पत्र आगे कहता है कि भारत सरकार नेपाल में लगाये गये उत्पाद कर की दर पर सहमत हो गयी और अवध फ्रन्टियर की वस्तुओं पर ड्यूटी, जो बिहार फ्रन्टियर पर की वस्तुओं पर की ड्यूटी के समान थी—यों थी—नेपाल से निर्यात होनेवाले घी पर १२ १/२%, खाद्यान्न पर ९ १/२%, मोम पर ९% तथा मसालों पर ६%। नेपाल में आयात होनेवाले खाद्यान्न पर ९ १/२%, घी पर १२ १/६%, धातुओं पर ७ १/२%, रूई पर ६ १/४%, मसालों पर ६%।" उत्पाद कर की दर के संदर्भ में चम्पारण के कलक्टर ने लिखा—"यह इतनी कम है कि किसी भी तरह दोनों देशों के व्यापार में रुकावट नहीं पड़ेगी।" (Foreign Department Secret E Proceedings October, 1890 No. 88-89) का उद्धरण देते हुए उन्होंने आगे लिखा है कि नेपाल के आयात एवं निर्यात क्रमशः १,१५,२२,९३५ रु० तथा १,४८,८८,८३७ रु० के थे।

लगता है एक लम्बी अवधि तक भारत-नेपाल की वस्तुओं से संबंधित ड्यूटी के मामले में, मोतिहारी, पटना जैसे प्रमुख स्थानों का ही संबंध रहा है, हालांकि रक्सौल से होकर माल गुजरता रहा। हाँ, रक्सौल में एक सरकारी कर्मचारी को, जो मुंशी के नाम से पुकारा जाता था, नियुक्ति अवश्य थी, जो रजिस्टर में माल से संबंधित कुछ सूचनाएँ मात्र दर्ज कर लिया करता था। ऐसे ही एक कर्मचारी 'घूर मियां' का नाम आज भी कई पुराने व्यापारी याद करते हैं,जो यहाँ एक लम्बी अवधि तक ऐसे माल से संबंधित पुर्जी आदि एकत्र करने के लिए नियुक्त था।

सन १९४३ में रक्सौल में केन्द्रीय उत्पाद केन्द्र (Central Excise Range) का निर्माण हुआ और यहां एक निरीक्षक (Excise Inspector) का पदस्थापन हुआ।

नेपाल में राणाशाही की समाप्ति एवं प्रजातंत्र की स्थापना के साथ ही नेपाल का विदेशों से सम्पर्क बढ़ा। विदेशी वस्तुएँ बड़ी मात्रा में नेपाल जाने लगीं, जो भारत से होकर गुजरतीं। नेपाल जाने वाली भारतीय वस्तुओं की मात्रा में भी तेजी से वृद्धि हुई। नेपाल में जाने वाली इन सारी वस्तुओं के लिए रक्सौल से गुजरने वाला मार्ग प्रमुख मार्ग बना।

जून १९५४ में रक्सौल में 'बॉर्डर पोस्ट' की स्थापना हुई। परन्तु कार्य-भार बढ़ जाने के फलस्वरूप १-११-१९६९ से केन्द्रीय उत्पाद विभाग और कस्टम्स चेक-पोस्ट—दो अलग विभाग कर दिए गए। उत्पाद-सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त स्थानीय तेल डिपो से पेट्रोलियम पदार्थों का नेपाल के लिए निर्यात से उत्पाद-विभाग का संबंध हो गया।

समय की गति के साथ रक्सौल कस्टम्स चेकपोस्ट का कार्य-भार बढ़ता गया और २०-५-१९७२ को उसे 'लैंड कस्टम्स स्टेशन' के रूप में परिणत कर दिया गया। १६-४-१९७७ को यहाँ इस विभाग के एक 'असिस्टेंट कलक्टर' का पदस्थापन हुआ। तब से इस पद पर श्री वासुदेव हो जैसे कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्ति कार्यरत हैं।

रक्सौल-स्थित कस्टम्स कार्यालय सदा व्यस्त रहता है। इस कस्टम्स कार्यालय को नेपाल से नेपाल के लिए माल से भी संबंध रखना पड़ता है। नेपाल के एक हिस्से से कुछ दूसरे हिस्सों में जाना आज भी बगैर भारतीय भूमि में प्रवेश किये आसान नहीं है। इस तरह नेपाली माल को नेपाल के ही कुछ हिस्सों में भेजने के लिए पहले रक्सौल लाना पड़ता है।

भारत को छोड़कर विश्व के अन्य देशों में जाने वाली नेपाल की वस्तुओं

की कीमत, जो रक्सौल से गुजरती है, कम नहीं होती। मात्र पिछले दो वर्षों में (सन् १९७७ तथा सन् १९७८ में) इस तरह की वस्तुओं की कीमत दस करोड़ रुपये से अधिक थी। इसी अवधि में रक्सौल द्वारा नेपाल से नेपाल के लिए जाने वाली वस्तुओं की कीमत लगभग ६ करोड़ रु० (नेपाली) थी। नेपाल के निमित्त भारत को छोड़कर विश्व के अन्य देशों से आने वाली वस्तुओं की कीमत, जो रक्सौल से गुजरीं, पिछले तीन वर्षों में लगभग एक अरब रु० थी। सन् १९७८ में रक्सौल होकर गुजरने वाले भारतीय माल से सम्बन्धित केवल इन्भॉयस-पत्रों की संख्या बीस हजार से ऊपर थी। ये सारे आंकड़े न केवल रक्सौल-स्थित कस्टम्स-कार्यालय का कार्य-भार प्रकट करते हैं, बल्कि इनका सम्बन्ध रक्सौल के जन-जीवन से भी है, जैसा कि रक्सौल की ट्रान्सपोर्ट कम्पनियों की चर्चा करते हुए बतलाया गया है।

रक्सौल-स्थित कस्टम्स चेक पोस्ट का दूसरा महत्वपूर्ण काम तस्करी को रोकना है। मुख्य मार्ग पर स्थित इस कस्टम्स चेक पोस्ट द्वारा निगरानी रखे जाने के बावजूद छिट-फुट रूप में तस्करी हो ही जाती है। हालांकि नेपाल से आनेवाली विदेशी वस्तुएँ, जो पकड़ में आ जाती हैं, जब्त कर ली जाती हैं और १२० प्रतिशत कर देकर ही उन्हें वापस लिया जा सकता है। सन् १९७० से सन् १९७७ तक की अवधि में ऐसे पकड़े हुए मामलों की संख्या एक हजार से ऊपर थी तथा वस्तुओं की कीमत ६ लाख रु० थी। ऐसा जब्त किया हुआ माल समय-समय पर विभाग द्वारा निलाम कर दिया जाता है।

भारत-नेपाल की सीमा लम्बी दूरी तक खुली है। इसलिए भारत से नेपाल और नेपाल से भारत में तस्करी करनेवाले मात्र मुख्य मार्ग से ही तस्करी नहीं करते, बल्कि इसके लिए उनके सामने लम्बी खुली सीमा है। मुख्य मार्ग को छोड़कर इस खुली सीमा से होने वाली तस्करी को रोकने के लिए रक्सौल में एक 'प्रिभेन्टिव कस्टम्स चेकपोस्ट' की भी स्थापना है।

६. तस्करी : सीमा-भूमि की देन

भारत और नेपाल की एक लम्बी सीमा बिल्कुल खुली है। अतः भारत से नेपाल और नेपाल से भारत में होनेवाली तस्करी को रोक पाना बड़ा कठिन है।

वैसे, सच्ची तस्करी की कहानी सन् १९५४ के बाद से शुरू होती है, जब नेपाल में विदेशी वस्तुएँ धड़ल्ले से आने लगीं। पर इसके पूर्व भी तस्करी होती थी, हालांकि उसकी मात्रा अत्यल्प थी। सन् १९२३ में भारत और नेपाल के बीच हुई संधि के अनुसार भारत से 'काठमाँडू' के लिए कर-मुक्त (Duty-free) निर्यात की व्यवस्था थी। उन वस्तुओं पर नेपाल में आयात-कर बहुत मामूली था। अतः कुछ वस्तुओं की तस्करी भारत में हो जाती थी। भारतीय क्षेत्र में कपड़े पर 'कन्ट्रोल' के जमाने में वीरगंज से रक्सौल में किस तरह छिट-फुट कपडे की तस्करी होती थी, आज भी बहुतों को याद है। दोनों देशों के बीच सन् १९५० में हुई संधि के बाद नेपाल सरकार ने भारत से आयातित वस्तुओं पर आयात-कर की दर बढ़ा दी। अतः इस तरह की वस्तुओं की तस्करी में कमी आयी।

एक लम्बी अवधि तक गांजा और अफीम की तस्करी के लिए यह क्षेत्र बड़ा बदनाम रहा है। सस्ता नेपाली गांजा नेपाल की सीमा से सटे रक्सौल, भेलाही, सिकटा, आदापुर, घोड़ासहन जैसे भारतीय क्षेत्रों से निकलकर भारत के दूर-दराज के स्थानों में चला जाता था और तस्करों को भारी मुनाफा देता था। उन दिनों इस सीमा-भूमि के इस इलाके में ऐसे तस्करों का जाल-सा बिछा था। तस्करी के भी क्या-क्या नायाब तरीके थे! एक ढंग विफल होता, तस्कर दूसरे नये ढंग का आविष्कार कर लेते। उन दिनों रक्सौल में ऐसे दिलचस्प तरीकों की चर्चा बराबर सुनने में आती।

नेपाली गांजा की भारत में बढ़ती हुई तस्करी से भारत सरकार चिन्तित हुई। कहते हैं भारत सरकार की चिन्ता व्यक्त करने पर नेपाल सरकार ने नेपाल में होनेवाली खुलेआम गांजा की खेती पर प्रतिबंध लगाने का निश्चय किया। कोइराला-मंत्रिमंडल के समय में इस पर प्रतिबंध लगा। फिर भी, उसके बहुत दिनों बाद तक भी गांजा की तस्करी धड़ल्ले से होती रही। जिन व्यक्तियों ने गांजा की बड़ी मात्रा छुपा रखी थी, अधिक मुनाफा पर तस्करी करने में सफल हुए।

आज भी अखबारों में 'नेपाली गांजा बरामद' जैसी खबर देखने को मिल जाती है तथा रक्सौल-स्थित आबकारी थाना की पकड़ में यदा-कदा ऐसे तस्कर आ जाते हैं। हालांकि अधिकांश तस्कर बच निकलने में सफल हो जाते हैं, क्योंकि उनके तरीके बड़े नायाब होते हैं, जैसा कि ऊपर कहा गया है।।

कहते हैं नेपाल में दो पहाड़ियों के बीच, जहाँ पुलिस मुश्किल से पहुँच पाती है, या खेतों के बड़े 'प्लॉट' में ईख, आदि के बीच में छुपाकर आज भी गांजा की खेती कर ली जाती है और इस तरह उपजे सस्ते गांजे की तस्करी भारत में होती है। पर निश्चय ही रक्सौल में गांजा की तस्करी करनेवालों की संख्या में भारी कमी आयी है।

सच्ची तस्करी की कहानी सन् १९५४ के बाद से शुरू होती है, जैसा कि ऊपर कहा गया है। जैसे-जैसे विदेशी वस्तुओं की मात्रा नेपाल में बढ़ती गयी, वैसे-वैसे तस्करी भयंकर रूप पकड़ती गयी।

काठमांडू के बाद रक्सौल से सटे बीरगंज इन विदेशी वस्तुओं का बड़ा भंडार है, जहाँ पचासों दुकानों में अरबों रुपये की विदेशी वस्तुएँ अटी पड़ी हैं। चीन, जापान,कोरिया, रूस, अमेरिका जैसे देशों से पोलिस्टर और टेरीकॉटन कपड़ों, शृंगार-प्रसाधनों तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं से बीरगंज 'छोटा हाँगकाँग' बन गया है। एक अनुमान के अनुसार लगभग ७५% ऐसी वस्तुओं की तस्करी भारतीय प्रदेश में हो जाती है। छोटा-सा देश नेपाल, जिसमें एसी वस्तुओं का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या अत्यल्प है, नेपाल में आनेवाली विदशी वस्तुओं कीं इतनी बड़ी मात्रा का उपयोग स्वयं कदापि नहीं कर सकता। अतः इसकी तस्करी होना लाजिमी है ।

सीमा पर स्थित भारतीय कस्टमस चेकपोस्ट, रक्सौल द्वारा कड़ी निगरानी के बावजूद मुख्य मार्ग से कुछ-न-कुछ तस्करी हो ही जाती है। रक्सौल तथा इर्द-गिर्द के इलाके के बीसियों लोग इस तस्करी के धंधे में लगे हैं, जिनका काम वीरगंज में खरीदे हुए विदेशी माल को सीमा 'टपाना' होता है । ऊपर कहा गया है कि दोनों देशों की सीमा खुली है इसलिए ऐसे 'कैरियर्स' मुख्य मार्ग से, जहाँ ठीक सीमा पर कस्टम्स चेकपोस्ट स्थित है, नहीं आते । फिर भी, मुख्य मार्ग से भी यात्रियों द्वारा कुछ-न-कुछ तस्करी हो ही जाती है । ऐसा भी सुनने में आता है कि मुख्य मार्ग से गुजरने वाले विदेशियों से भी कभी कभार 'कैरियर्स' का काम लिया जाता है।

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि रक्सौल में पदस्थापित इस

विभाग के सहायक कस्टम्स कलक्टर श्री वासुदेव हो के श्रम और मुस्तैदी के कारण मुख्य मार्ग से होने वाली तस्करी में बड़ी कमी आयी है। पर यह भी सुना जाता है कि उनकी अनुपस्थिति और ना-जानकारी में बड़े-बड़े तस्कर बड़े पैमाने पर इस मार्ग से तस्करी करने में सफल हो जाते हैं।

मुख्य मार्ग से हटकर खुली सीमा द्वारा तस्करी अधिक होती है। रक्सौल-स्थित प्रिवेन्टिव कस्टम्स चेकपोस्ट अपने क्षेत्र के अन्तर्गत पड़ने वाली लम्बी खुली सीमा पर अपने सीमित साधनों (आवश्यकता के अनुरूप सिपाहियों आदि की संख्या कम बतायी जाती है) से वृहत् पैमाने पर होने वाली तस्करी को रोक पाने में असमर्थ है।

यह सही है कि बड़े पैमाने पर तस्करी करने वाले लोगों की संख्या रक-सौल में कम है। ऐसे लोग तो दूर-दराज के स्थानों से सम्बद्ध हैं, जो रक्सौल के होटलों आदि में कभी-कभार अजनबी के रूप में दिखलाई पड़ जाते हैं। रक्सौल के कई प्रमुख होटलों में छापा मारकर तस्करी के ऐसे सामान बरा-मद किये गए हैं।

बड़े पैमाने पर तस्करी करने वालों का सम्बन्ध बम्बे, चंडीगढ़, बनारस, दिल्ली, जैसे स्थानों के तस्कर-गिरोहों से है, जिनके हाथ बड़े मजबूत हैं। 'पिस्तौल' और 'गन' आदि से लैस इन गिरोहों से पार पाना कभी-कभी कस्ट-म्स पुलिस के लिए भी मुश्किल हो जाता है।

वीरगंज से होने वाली विदेशी वस्तुओं की तस्करी के संदर्भ में यह कहना अयुक्तिसंगत न होगा कि इस तरह से तस्करी की गई वस्तुओं में से कई वस्तुएँ बड़ी घटिया किस्म की होती हैं। यह भी सुनने में आता है कि भारतीय कपड़ा तथा कई जीवनोपयोगी वस्तुएँ वीरगंज में, जब उनपर विदेशी मुहर लग जाती हैं, अपेक्षाकृत अधिक मूल्य में; विदेशी वस्तु के नाम पर बिक जाती हैं। वीर-गंज के बाजार में बहुत सारी 'डुप्लीकेट' वस्तुएँ भरी पड़ी हैं।

वीरगंज में विदेशी वस्तुओं की खरीद के लिए बिहार के दूरस्थ स्थानों से आनेवाले विभिन्न तबके के लोगों को, जिनमें सरकारी अधिकारी भी होते हैं, रक्सौल में देखा जा सकता है। रक्सौल के विभिन्न विभागों में 'निरीक्षण' के नाम पर आनेवाले अधिकारियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है। निरीक्षण कम, वीरगंज में सामान खरीदना अधिक होता है। सच्चाई यह है कि रक्सौल के कई लोगों को अपने दोस्तों अथवा अपने विभाग के उच्च पदस्थ अधिकारियों के लिए नहीं चाहकर भी तस्करी करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

नेपाल के भूतपूर्व भारतीय राजदूत श्री श्रीमन्नारायण ने अपनी पुस्तक 'इन्डिया एंड नेपाल' (सन् १९६५) में इस तस्करी के संदर्भ में लिखा है— ' ये विदेशी वस्तुएँ, नेपाल के विभिन्न शहरों में, खासकर भारतीय सीमा के निकट मुक्त रूप से बिकती हैं ; ... ... इससे भारतीय सीमा के पार तस्करी को पर्याप्त बल मिलता है। ... ... यह अजीब विचित्र बात है कि भारत से जानेवाले लोग काठमांडू के बाजारों में चीनी वस्तुओं को खरीदने के लिए टूट पड़ते हैं, जबकि भारतीय वस्तुओं से वे निम्न कोटि की होती हैं और चीन के साथ हमारे संबंध भी दोस्ताना नहीं हैं। इसके विपरीत काठमांडू में रहने वाले चीनी कभी भी भारतीय वस्तुओं को प्रश्रय नहीं देते। एक बार मुझसे कहा गया कि एक चीनी तकनीशियन ने, जिसने गलती से भारतीय सिगरेट का डब्बा खरीद लिया था, पता चल जाने पर सिगरेट को सड़क पर फेंक दिया और उन्हें पैरों तले कुचल दिया। " इसी पुस्तक में उन्होंने आगे लिखा है – " मुझे विश्वस्त रूप से सूचित किया गया कि बिहार और उत्तर प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी नेपाल से भारत में इन चीनी वस्तुओं की तस्करी में लगे हैं।"

समय-समय पर चीनी, कोयला जैसी वस्तुओं की तस्करी कैसे होती है, रक्सौल के लोगों को आये दिन देखने का मौका मिलता है। आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व, जब हमारे यहां चीनी का अभाव हो गया था, तो किस तरह महीनों प्रत्येक सुबह वीरगंज से चीनी ढोनेवालों का रक्सौल में तांता लग जाता था, इसे हमने स्वयं देखा है। इसी तरह कोयले के अभाव के समय में रक्सौल से वीरगंज कोयला ढोनेवाले अनेक मजदूरों को लोगों ने देखा होगा। इस खुली सीमा से इस तरह की तस्करी को रोक पाना सचमुच बड़ा कठिन है।

इसी संदर्भ में यहां यह उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा कि रक्सौल में नेपाल के नाम पर कई वस्तुएँ मंगायी जाती हैं, जो नेपाल नहीं जातीं और इस तरह कर बचा लिया जाता है।

१०. डाक, दूरभाष और दूरध्वनि-कार्यालय

(पोस्ट, टेलिग्राफ एवं टेलिफोन ऑफिस)

यह वर्णन करना कुछ कम दिलचस्प न होगा कि आज से लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व नेपाल-डाक-व्यवस्था के लिए सुगौली एक प्रमुख स्थान था और डाकिया रक्सौल–क्षेत्र से गुजरते हुए काठमांडू पहुँचता था। बाद में तो नेपाल की डाक के लिए रक्सौल ही प्रमुख केन्द्र बन गया ।

सन १८१६ में इस्ट इन्डिया कम्पनी और नेपाल सरकार के बीच सुगौली में हुई संधि के अनुसार काठमांडू में एक ब्रिटिश रेजिडेन्ट के पदस्थापन का निर्णय हुआ । विशेषतः ब्रिटिश रेजिडेन्ट के लिए ही भारत से काठमांडू तक नये ढंग पर डाक की व्यवस्था हुई । सन् १८५७ में सुगौली छावनी में मि० बेनेट्स नामक एक अंग्रेज डेपुटी पोस्ट मास्टर की नियुक्ति थी, जो सिपाही-विद्रोह में सुगौली–छावनी के अन्य कई अंग्रेज सैनिक अधिकारियों के साथ मारा गया । चम्पारण गजेटियर में श्री पी०सी० राय चौधरी ने लिखा है कि सन् १८३८ में मोतिहारी में पदस्थापित चम्पारण के मजिस्ट्रेट से पोस्ट॰ ऑफिस के अतिरिक्त भार को भी वहन करने का अनुरोध किया गया था। परन्तु इन्होंने इस भार को ढोने से इन्कार कर दिया । श्री मोरंग को मोतिहारी में पोस्ट-मास्टर के पद पर नियुक्त किया गया । सुगौली में डेपुटी पोस्ट-मास्टर का पद था, जैसाकि पहले कहा गया है। उन दिनों दौड़ाहा (runners) डाक ढोया करते थे। बहंगी-पार्सल की व्यवस्था थी। डाक ढोने का मार्ग यों था—"सुगौली-मुरला-रघुनाथपुर-छपकैया-ताजपुर-सेमराबासा- भीमफेदी-थानकोट-काठमाँडू ।"

उन दिनों की डाक-दर की चर्चा कर देना भी कुछ कम दिलचस्प न होगा। सन् १८४१ में एक पत्र को सुगौली से इलाहाबाद पहुँचाने में ५ रु० ४ आने, बनारस तक ३ रु०, पटना तक १ रु० ८ आने, गया तक ३ रु० तथा काठमांडू तक पहुँचाने में २ रु० १२ आने लगते थे। यानी उन दिनों दूरी के अनुसार डाक–दर थी।

चम्पारण गजेटियर को देखने से पता चलता है कि सन् १९०६-०७ में रक्सौल में न केवल पोस्ट-ऑफिस, बल्कि टेलिग्राफ ऑफिस भी काम कर रहा था। कुछ पुराने लोगों का कहना है कि यह पोस्ट और टेलिग्राफ ऑफिस उन दिनों थाना-कम्पाउन्ड में ही मिट्टी की भीत से बने छोटे-से कमरे में अवस्थित

था, जो कुछ ही वर्षों के बाद उस जगह स्थानान्तरित हो गया, जहाँ वह आज है। सन् १९१४ के भूमि सर्वे के अनुसार रक्सौल बाजार के लिए निर्मित नक्शे में वह भूखंड दिखलाया गया है, जहाँ आज पोस्ट और टेलिग्राफ ऑफिस खड़ा है।

ऊपर कहा गया है कि एक लम्बी अवधि तक नेपाल की डाक से सुगौली का संबंध रहा है। पर रक्सौल में डाकघर की स्थापना हो जाने के बाद नेपाल के लिए डाक भेजने का काम (Clearing works) रक्सौल से ही होने लगा। रक्सौल में पोस्ट और टेलिग्राफ ऑफिस की स्थापना उन दिनों हुई थी, जब बाजार की नींव भी नहीं पड़ी थी। इसके दो प्रमुख कारण थे। एक तो हरदिया कोठी के साहब को डाक-सुविधा मुहैय्या करनी थी और फिर रक्सौल-रेलवे स्टेशन तथा 'रेजिडेंसी' की स्थापना के बाद रक्सौल से काठमांडू-स्थित रेजिडेन्ट से डाकीय सम्पर्क रखना अधिक सुविधाजनक था।

लगभग डेढ़ शताब्दी तक नेपाल की डाक-व्यवस्था भारत सरकार के अधीन रही। आधी शताब्दी के ऊपर रक्सौल पोस्ट और टेलिग्राफ ऑफिस ने इसमें अहम भूमिका निभायी।

सन् १९२७ के पूर्व – अर्थात् रक्सौल से आमलेखगंज तक नेपाली ट्रेन चालू होने के पहले, रक्सौल से काठमांडू तक डाक पहुँचाने में कठिनाई थी। इस ट्रेन के चालू हो जाने के बाद रक्सौल से आमलेखगंज तक नेपाली डाक रक्सौल के डाक-कर्मचारियों की देखरेख में पहुँचायी जाने लगी। पर आमलेखगंज से काठमांडू तक डाक पहुँचाने की वही पुरानी व्यवस्था थी।

पहले कहा गया है कि रक्सौल के 'धरीक्षण प्र०-अवध किशोर' ने सन् १९२८ से 'हाफटन चेभरलेट' ट्रक आमलेखगंज से भीमफेदी तक चलाना शुरू किया था, पर खुली ट्रक में डाक भेजना निरापद नहीं था। सन् १९४० में, जब ट्रक बस में परिणत कर दी गई, यात्रियों को सुविधा तो हुई ही, डाक भी भीमफेदी तक बस द्वारा ढोयी जाने लगी। सन् १९५६ में त्रिभुवन राजपथ बनने के पूर्व तक यह व्यवस्था जारी रही।

१२-४-१९६५ को भारत सरकार ने नेपाल सरकार को डाक की पूरी व्यवस्था सौंप दी। इस तरह मोतिहारी और रक्सौल से नेपाल की डाक-व्यवस्था का सीधा संबंध समाप्त हो गया।

उन दिनों डाक-दौड़ाहा के रूप में पहाड़ों को तेजी से पार करने के लिए डाक-विभाग के चम्पारण अनुमंडल द्वारा बलिष्ठ नेपाली (पहाड़ी) नियुक्त

किये जाते थे। नेपाल सरकार को डाक-व्यवस्था सुपुर्द कर देने के बाद भी वे कर्मचारी डाक-विभाग के चम्पारण अनुमंडल के ही कर्मचारी रहे। वैसे कर्मचारी रक्सौल डाकखाना तथा चम्पारण अनुमंडल के अन्य डाकखानों में आज भी कार्यरत हैं।

रक्सौल के तेजी से बढ़ते हुए अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के अनुरूप रक्सौल का पुराना डाकखाना-भवन छोटा पड़ गया था। अतः सन् १९६९ के आसपास यह डाकखाना और तारघर यहाँ से उठकर बीच नगर से दूर एक किराये के मकान में चले गये। और उस समय तक वहाँ रहे, जबतक नया भवन बनकर तैयार नहीं हो गया। इस भवन के बनने में लगभग ७ वर्षों का लम्बा समय लग गया। इस बीच नगरवासियों को डाक-संबंधी कार्य के सम्पादन में बड़ी कठिनाई हुई। सन् १९७५ के प्रारंभ से नये भवन में यह डाक-तार विभाग काम कर रहा है। नयी शैली पर निर्मित यह भवन इस अन्तर्राष्ट्रीय नगरी के अनुरूप है।

टेलिग्राफ ऑफिस (तारघर)—सन् १९०६-०७ में चम्पारण जिला में ५२ पोस्ट-ऑफिस थे, जिनमें १० में टेलिग्राफ की व्यवस्था थी, उनमें रक्सौल का पोस्ट ऑफिस भी एक था। आज लगभग बीस वर्षों से रक्सौल-तारघर में हिन्दी में भी तार देने की व्यवस्था है। हालांकि अंग्रेजी भाषा में लिखे संवाद को ही अधिक प्रमुखता मिलती रही है। रक्सौल-तारघर में टेलिप्रिन्टर भी लग गया है। पर काफी लम्बे अर्से से वह खराब हालत में पड़ा हुआ है। ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय स्थान में उसकी काफी महत्ता है, पर पता नहीं क्यों डाक-तार विभाग उसे चालू करने की स्थिति में नहीं है?

टेलिफोन (दूरभाष)—सन् १९२७ में रक्सौल से आमलेखगंज तक नेपाली रेल-पथ चालू हो जाने के बाद नेपाली रेलवे की ही भूमि में एक टेलिफोन-कार्यालय स्थापित हुआ। इस टेलिफोन-कार्यालय का संबंध विशेषतः काठमांडू से था। हाँ, रक्सौल में मात्र एक स्थान, भारतीय दूतावास-सदन से भी इसका संबंध (Extension) था। काठमांडू स्थित रेजिडेन्ट और बाद में राजदूत-कार्यालय से सीधा सम्पर्क के लिए ही संभवतः इस सदन को यह संबंध (Connection) प्राप्त था।

सरकारी स्तर पर नेपाल के कई स्थानों के साथ राजधानी से भी सम्पर्क स्थापित करने के लिए यह टेलिफोन-कार्यालय था। वैसे, रक्सौल बाजार के व्यापारी आदि भी पैसे देकर इसका उपयोग करते थे। मुझे याद है, उन दिनों अक्सरहां लोग लिखित संवाद ही कार्यालय में देते थे। टेलिफोन कार्या-

लय का कर्मचारी उन संवादों को क्रमशः स्वयं बोलकर काठमांडू भेजता था, जहाँ नियुक्त दूसरा कर्मचारी उन्हें लिख लेता और पिउन द्वारा सम्बद्ध व्यक्ति के पास भेज देता। इसी पद्धति पर काठमांडू से रक्सौल भी सम्वाद आते। पैसे भी शब्दों की संख्या के आधार पर ही लिये जाते। यह पद्धति बहुत कुछ टेलिग्राम की पद्धति पर काम करती थी। काठमांडू, वीरगंज तथा रक्सौल में विकसित टेकनीक पर निर्मित टेलिफोन-एक्सचेंज की स्थापना के बाद इसकी कोई उपयोगिता नहीं रह गयीं। १९६४ ई० के लगभग यह टेलिफोन केन्द्र बन्द हो गया।

रक्सौल टेलिफोन-एक्सचेंज—१६ नवम्बर १९५६ को किराये के मकान में ५० लाइन क्षमतावाले एक मैगनेटोटाइप टेलिफोन एक्सचेंज का रक्सौल में शुभारंभ हुआ। सन् १९५६ में मात्र २६ कनेकशन थे और एक्सचेंज सुबह ७ बजे से रात्रि ९ बजे तक ही काम करता था। ऑपरेटरों की संख्या मात्र ३ थी। १९६१ में १०० लाइन की क्षमतावाले सी० बी० टाइप एक्सचेंज का शुभारंभ हुआ। पहले मोतिहारी और मुजफ्फरपुर के लिए ही यहां से लाइन थी, अब बेतिया, पटना आदि के लिए भी लाइनें जुड़ गयीं। सन् १९७३ में १०० लाइन क्षमतावाला एक दूसरा बोर्ड बैठा। सम्प्रति दो बोर्डों में १५० कनेक्शन हैं। रामगढ़वा, सिकटा, छौड़ादानों, आदापुर एवं घोड़ासहन के स्वचालित एक्स॰ चेंजों से इसका सीधा सम्पर्क है और ये पाँचों एक्सचेंज रक्सौल-एक्सचेंज से नियंत्रित होते हैं। इस एक्सचेंज का सम्बंध भारत के सहयोग से निर्मित वीरगंज-टेलिफोन एक्सचेंज से भी है। ट्रंक कॉलों की संख्या आरंभ के वर्षों की अपेक्षा ८ गुनो बढ़ गयी है। सम्प्रति यहाँ ३५ कर्मचारी कार्यरत हैं।

रक्सौल की अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता को दृष्टिपथ में रखते हुए आज से लगभग २० वर्ष पूर्व रक्सौल थाना के ठीक सामने पूरब, लगभग एक एकड़ की प्रशस्त भूमि टेलिफोन एक्सचेंज के लिए अधिगृहित की गयी। पर उसके भवन आदि के निर्माण में गत वर्ष (१९७८ ई०) ही में हाथ लग सका। टेलिफोन-एक्सचेंज के लिए मुख्य भवन के अतिरिक्त इस अहाते में सम्प्रति कर्मचारियों के लिए ५ क्वार्टर्स हैं। इस नये भवन में टेलिफोन एक्सचेंज शीघ्र ही काम करने लगेगा, ऐसी आशा की जाती है। कहा जाता है कि इस टेलिफोन एक्सचेंज का ६० फीट ऊँचा भवन मुजफ्फरपुर से रक्सौल तक के राष्ट्रीय उच्च पथ पर स्थित सभी भवनों से ऊँचाई और शिल्प की दृष्टि से अनूठा है।

इस एक्सचेंज के दो विभाग होंगे-टेलिफोन विभाग एवं माइक्रोवेव विभाग। हरदिया कोठी में माइक्रोवेव स्टेशन के लिए भवन बनकर तैयार है।

रक्सौल के माइक्रोवेव विभाग से केबुल द्वारा इसका संबंध स्थापित होगा। जब माइक्रोवेव विभाग काम करने लगेगा, इस एक्सचेंज की महत्ता बढ़ जायेगी, क्योंकि तब इसका सम्पर्क माइक्रोवेव-पद्धति पर काठमांडू, पटना, दिल्ली आदि प्रमुख स्थानों से हो जायेगा और एक साथ अनेकों कॉल बुक किये जा सकेंगे।

११. भारतीय दूतावास-सदन

(जो कभी रेजिडेन्सी और लिगेशन भी कहलाता था)

सन् १८१६ में हुई सुगौली-संधि के बाद काठमांडू में पदस्थापित ब्रिटिश रेजिडेन्ट का सीधा सम्पर्क सुगौली और बाद में मोतिहारी से भी था—इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है। पर ठीक सीमा-भूमि पर रेजिडेन्ट की कई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भवन, आदि की जरूरत महसूस की गई। रक्सौल के एक वयोवृद्ध व्यक्ति से पूछताछ के क्रम में ज्ञात हुआ कि रक्सौल बाजार बसने के पूर्व आज के थाना अहाता के ठीक सामने, पश्चिम, हरदिया कोठी के किसी साहब का बंगला था, और आज की रामजानकी मंदिरवाली भूमि में साहब के कुछ सिपाही रहा करते थे। उक्त व्यक्ति ने यह भी बतलाया कि भारत और नेपाल के अधिकारियों के बीच हुई किसी वार्ता के अनुसार साहब को सीमा से डेढ़ मील पीछे हट जाना पड़ा और हरदिया कोठी में साहब का स्थायी निवास बना। इस बात की पुष्टि अन्यत्र नहीं हो सकी। हाँ, सन १९१७ में इंगलैंड में छपी पुस्तक बंगाल एंड आसाम : बिहार एंड उड़ीसा' में हरदिया कोठी के भवनों के संदर्भ में लिखा है—" ... ... and the buildings include the resident's banglow, together with stores and sheds which were built in the year 1869, when Hurdia was an outwork of the Moorla Indigo concern." यानी भवनों में रेजिडेन्ट का बंगला भी है, (कोठी के अपने) सामान रखने के मकान हैं, जो सन् १८६९ में बने, जब हरदिया मुरला-नील प्रतिष्ठान की शाखा के रूप में था।" इन पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि हरदिया कोठी में रेजिडेन्ट का बंगला था। लगता है उपर्युक्त वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा दिए गए प्रसंग का संबंध हरदिया कोठी के किसी निलहे साहब से नहीं, बल्कि रेजिडेन्ट से ही था, जिसका बंगला आज के थाना अहाते से पश्चिम था, तथा कुछ दूरी पर उसके सिपाही रहते थे। पर किन्हीं राजनैतिक परिस्थितियों में उसे वह बंगला छोडना पड़ा और हरदिया कोठी में निलहे साहब के बंगले के पास उसका भी बंगला बना। यह बंगला रेजिडेन्ट का स्थायी निवास नहीं था। उसका पदस्थापन तो काठमांडू में था। पर समय-समय पर यह रेजिडेन्ट का निवास बनता और भारत से काठमांडू में रह रहे रेजिडेन्ट के सम्पर्क का माध्यम था।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ठीक सीमा-भूमि पर लगभग ४२ एकड़

की प्रशस्त भूमि के अहाते में रेजिडेन्ट के लिए बंगला बना । सन् १९१४ में हुए भूमि-सर्वे के अनुसार बने नक्शे में वह अहाता भी दिखलाया गया है, जैसा कि आज भी है । उस अहाते में रेजिडेन्ट के बंगला के अतिरिक्त और भी छोटे-छोटे मकान दिखाए गए हैं, चारो तरफ से बांध भी चिह्नित है, जिस तरह वह आज है ।

सन् १९३४-३५ में रक्सौल के प्रमुख ठेकेदार स्व० श्री रामगोविन्द राम एवं स्व० श्री हरि प्रसाद ने नया बंगला तथा कुछ नयी कोठरियाँ आदि बनाने का ठेका लिया । वह बंगला तथा अन्य सारे मकान आज भी ज्यों-के-त्यों मौजूद हैं ।

जबतक काठमांडू में रेजिडेन्ट का पद रहा, यह रेजिडेन्सी (राजडंसो) कहलाता रहा और जब काठमांडू की रेजिडेन्सी को लिगेशन का दर्जा प्राप्त हुआ, यह भी लिगेशन कहलाने लगा, हालांकि यह काठमांडू की रेजिडेन्सी अथवा लिगेशन से सम्बन्धित मात्र सदन था, जहाँ रेजिडेन्ट, आदि भारत से काठमांडू जाते अथवा काठमांडू से भारत लौटते समय इस सदन में ठहरा करते थे । समय-समय पर नेपाल के शासक वर्ग तथा अन्य उच्च अधिकारियों का भी यह पड़ाव बनता रहा । यहाँ रेजिडेन्ट के कुछ सैनिक और घुड़सवार भी रहते थे । यह सदन नेपाल के रेजिडेन्ट और ब्रिटिश भारत सरकार के बीच एक कड़ी का काम करता था, जहाँ ओभरसियर की श्रेणी के एक अधि-कारी का पदस्थापन था, जिसके अधीन अन्य कई कर्मचारी कार्यरत थे । एक तरह से काठमांडू-स्थित रेजिडेन्सी का यह 'बेस कैम्प' तथा 'स्टोर-हाउस' भी था ।

कहते हैं उस समय इस सदन की चहल-पहल बढ़ जाती थी जब पटना के बड़े लाट-साहब, काठमांडू-स्थित रेजिडेन्ट और नेपाल के प्रधान मंत्री तराई के जगलों में शिकार खेलने के उद्देश्य से यहाँ पड़ाव डाला करते थे ।

१२ जुलाई १९४७ को नेपाल की सार्वभौम सत्ता स्वीकार करते हुए ब्रि-टिश सरकार ने काठमांडू स्थित ब्रिटिश लिगेशन को दूतावास में परिणत कर दिया ।

कुछ दिनों के बाद भारत के स्वतन्त्र होने पर श्री सुरजीत सिंह मजीठिया नेपाल में भारत के प्रथम राजदूत हुए । रक्सौल-स्थित यह 'सदन' भारतीय दूतावास सदन' में परिणत हो गया ।

सन् १९५१ में काठमांडू के गोचर हवाई अड्डा के निर्माण होने के पूर्व इस सदन का महत्व इस मानी में था कि रेजिडेन्ट, राजदूत और नेपाल के मंत्री

जैसे विशिष्ट व्यक्तियों का यह समय-समय पर पड़ाव बनता रहा। प्रथम भारतीय राजदूत श्री मजिठिया के अस्थायी निवास के समय यहां कितनी चहल पहल थी, वह मुझे आज भी ज्यों-की-त्यों याद है।

सन् १९५१ में गोचर हवाई अड्डा के चालू हो जाने के बाद जब दिल्ली-पटना-काठमांडू का हवाई सम्पर्क जुड़ गया, ऐसे विशिष्ट व्यक्ति वायुयान से ही यात्रा करने लगे। पर भारत के सहयोग से नेपाल में चलने वाली विभिन्न परियोजनाओं में इस दूतावास-सदन को भारत-नेपाल के बीच कड़ी का काम करना पड़ा, जैसा कि आज भी करना पड़ रहा है।

त्रिभुवन राजपथ के निर्माण के बाद से दूतावास के कर्मचारी, जो छुट्टी पर इस मार्ग से आते हैं, यह सदन इन दिनों उनका पड़ाव बनता है।

१२. रक्सौल-नगरपालिका, नगर की सफाई-समस्याएँ एवं रक्सौल में विदेशी

रक्सौल की नींव डालने के बाद फलेजर मात्र ८ वर्षों तक ही रक्सौल में रह सका। उसने बाजार के लिए जो सड़कें निकाली थीं, बादमें उनमें बहुत कुछ परिवर्त्तन हुआ, कई नई सड़कें बनीं। पर धीरे-धीरे नागरिकों द्वारा गस-बन के कारण बाजार की स्थिति बदतर होती गई, और रक्सौल को बेतरतीब बसी नगरी की संज्ञा मिल गई। अच्छी सड़कों तथा नालियों के अभाव में शुरू से ही वर्षा के दिनों में रक्सौल की स्थिति नारकीय रही है।

सन् १९४५ तक सार्वजनिक रूप में बाजार की सफाई, सड़क-निर्माण आदि का समुचित प्रबंध नहीं था। सच तो यह है कि उन दिनों सरकार की दृष्टि में यह मात्र एक कस्बा था। सन् १९३८ में मि० स्वेन्जी, आई० सी० एस० ने इसे गाँव (Village) की संज्ञा दी थी। सन् १९२२ के ग्राम्य प्रशासन कानून (Village Administration Act of 1922) के अन्तर्गत सन् १९४६ में रक्सौल में यूनियन बोर्ड का गठन हुआ। इस यूनियन बोर्ड का क्षेत्रफल ३८ वर्गमील था। स्व० श्री रामगोविन्द राम बोर्ड के प्रथम उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए एवं स्व० श्री रामेश्वर लाल मस्करा ने सचिव के रूप में वर्षों अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। उस जमाने में – रक्सौल की भी कोई अहम समस्या है – ऐसा लोगों ने महसूस नहीं किया। अपने सीमित साधनों से बोर्ड ने छिटफुट कामों के अतिरिक्त खरंजे (ईंट) की कुछ सड़कें बनवायीं, जिनमें से आज भी कई मौजूद हैं। उन दिनों यूनियन बोर्ड को यूनियन टैक्स के अतिरिक्त सरकारी अनुदान तथा जिला बोर्ड से भी सहायता प्राप्त होती थी। शिक्षा, सफाई, सड़क-निर्माण, आदि में इसके पैसे व्यय होते थे।

चम्पारण की अधिकांश यूनियन बोर्डों का विघटन कर उनके स्थान पर ग्राम पंचायतें बनीं। सन् १९५६ के आसपास रक्सौल में अधिसूचित क्षेत्र समिति का गठन हुआ, जिसके प्रथम सचिव स्व० डा० बंगाली कुँअर हुए। फिर श्री ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव सचिव तथा बाद में उपाध्यक्ष बने। श्री चन्द्रदेव प्र० सर्राफ एवं श्री रामलखन प्र० गुप्त ने भी क्रमशः इस पद को सुशोभित किया। सन् १९५६ से सन् १९७२ तक – इन सोलह वर्षों की लम्बी अवधि में इस अधिसूचित क्षेत्र समिति ने सरकारी अनुदान एवं कर जैसे स्रोतों द्वारा

कुछ छिटफुट कामों के अतिरिक्त कोई महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय काम किया हो, ऐसा नहीं लगता। जल-निकासी की समुचित व्यवस्था के अभाव में रक्सौल की नारकीय स्थिति यथावत् बनी रही। इस दरम्यान अधिसूचित क्षेत्र समिति से लगभग बारह हजार रुपये का गबन विशेष चर्चा का विषय बना। आजतक दोषी व्यक्ति नहीं पकड़ा जा सका।

रक्सौल १५-८'-७२ को नगरपालिका के रूप में घोषित हुआ। इस घोषणा से रक्सौल के नागरिकों में नगर के भविष्य के बारे में कुछ आशाएँ बंधीं। सर्वश्री जहूर अहमद, अनन्त शुक्ल, तुलसी पासवान, रमाशंकर सिंह, कृष्ण कुमार पाठक—सभी सदर अवर-प्रमंडलाधिकारी क्रमशः इस नगरपालिका के प्रशासक रहे। श्री जगदीश सिंह, भूतपूर्व अंचलाधिकारी, रक्सौल वर्षों इसके कार्यालय-पदाधिकारी रहे। एक लाख रुपये के सरकारी अनुदान द्वारा आश्रम रोड, पोस्ट ऑफिस रोड, दुमड़िया टोला रोड, जैसे कुछ मार्गों तथा नालियों का निर्माण हुआ। पर सबसे बड़ी समस्या—जल-निकासी की समस्या का समाधान नहीं हो सका।

९ अक्टूबर १९७७ रक्सौल नगरपालिका के आयुक्तों के चुनाव के लिए तिथि निश्चित हुआ। १० वार्डों के लिए ४७ उम्मीदवार मैदान में थे। अन्ततः जो १० सदस्य निर्वाचित हुए, वे हैं—सर्वश्री हरिहर महतो, यूसुफ मियाँ, छोटेलाल प्रसाद, ज्वाला प्र० श्रीवास्तव, दिनेश त्रिपाठी, शिवनाथ गुप्त, जफर अहमद, विजय कुमार, बृजलाल अग्रवाल एवं प्रभुनाथ प्र०। अध्यक्ष श्री ज्वाला प्र० श्रीवास्तव एवं सभापति श्री विजय कुमार निर्वाचित हुए।

चुनाव से लेकर अबतक डेढ़ वर्षों का समय गुजर गया है, पर चुने हुए सदस्यों के दो विपरीत दलों में बट जाने के कारण, अबतक नगर-विकास के लिए कोई ठोस कार्यक्रम नहीं प्रस्तुत किया जा सका है। परन्तु मार्च १९७९ में जिला पर्षद के सदस्य के रूप में रक्सौल नगरपालिका के आयुक्त श्री जफर अहमद के संवावित किए जाने में रक्सौल नगरपालिका के आयुक्तों ने जो एकता एवं विश्वास का परिचय दिया है, उससे लगता है कि आपसी मतभेद बहुत कुछ दूर हो चुके हैं और नगर का भविष्य आशाप्रद है।

नेपाल के प्रवेश-द्वार के रूप में रक्सौल की अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता को सभी स्वीकारते हैं। परन्तु रक्सौल की नारकीय स्थिति से छुटकारा पाने के लिए अबतक कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सका है, जैसा कि पहले कहा गया है। रक्सौल नगर के सर्वांगीण विकास के निमित्त इसे 'मास्टर प्लान' के अन्तर्गत लाने की बात कई बार सुनी जा चुकी है। नेपाल के

भूतपूर्व भारतीय राजदूत श्री श्रीमन्नारायण ने भी रक्सौल नगर की बदतर स्थिति देखकर इसे 'मास्टर प्लान' के अन्तर्गत लाने के लिए उच्च स्तरीय प्रयास करने का आश्वासन दिया था। इधर हाल के दिनों में ऐसी सूचना मिली है कि रक्सौल को 'मास्टर प्लान' के अन्तर्गत लेने के लिए उच्च स्तरीय कार्यवाही जारी है।

रक्सौल का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व इसलिए नहीं है कि यहाँ नेपाल के लिए कई देशों का माल उतरता है, बल्कि विश्व के लगभग हर देश के नागरिकों की प्रतिदिन की उपस्थिति से इसकी महत्ता में वृद्धि हो गयी है। विदेशियों के यात्रा-संबंधी कागजात (Travel Documents) की जाँच के लिए सन् १९५८ में रक्सौल में एक पुलिस चेकपोस्ट की स्थापना हुई। सन् १९५९-६० में ही रक्सौल से गुजरने वाले विदेशियों की संख्या चार हजार तक पहुँच गयी। सन् १९७८ में यह संख्या लगभग पन्द्रह हजार थी। रक्सौल के नागरिकों के लिए वर्षों से विदेशी अजूबा नहीं रहे हैं। अब यहाँ के बच्चे भी उन्हें किसी विशिष्टता की नजर से नहीं निहारते। अमेरिका, कनाडा, इंगलैंड, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, फ्रांस, स्वीटजरलैंड, न्यूजीलैंड—शायद ही विश्व का कोई प्रमुख देश होगा, जहाँ के नागरिक यहाँ से न गुजरते हों। पर इनमें से जिन विदेशियों को भी नगर में प्रवेश करने का मौका मिलता है, उन्हें इस सीमान्त नगरी की स्थिति देखकर सचमुच बड़ी निराशा होती है। नगर के मुख्य मार्ग की दुःस्थिति देखने का तो लगभग सबको मौका मिल जाता है।

पर्यटकों की सुविधा के लिए यहाँ एक पर्यटक-सूचना केन्द्र भी वर्षों से स्थापित है, पर उसकी अवस्थिति ऐसी है, तथा पिछले दिनों यहाँ पदस्थापित अधिकारियों की काम के प्रति कुछ ऐसी उदासीनता रही है कि इस पर्यटक-सूचना केन्द्र से पर्यटकों को विशेष लाभ नहीं पहुँच सका है।

पुलिस चेक पोस्ट में, जिसकी ऊपर चर्चा की गई है, यद्यपि मुख्य मार्ग एवं ठीक सीमा-भूमि पर अवस्थित है, विदेशियों के लिए, जो वहाँ कागजात आदि दिखलाने के लिए उपस्थित होते हैं, बैठने आदि की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। अधिकांश मामलों में उन्हें खड़े-खड़े ही अपना कागजात दिखलाना पड़ता है। सचमुच यह बड़ी दयनीय स्थिति है।

ट्रेन अथवा बस से विदेशियों के उतरते ही होटल के एजेंट तथा रिक्शा-टांगावाले किस तरह उन पर टूट पड़ते हैं और कैसे उन्हें मूर्ख बनाते हैं, इसे बहुतों ने देखा होगा। रक्सौल से वीरगंज, जिसकी दूरी मात्र तीन किलोमीटर है, तक पहुँचाने के लिए रिक्शा-टांगावाले किसी-किसी विदेशी से बीस-

बीस रुपये तक ऐंठ लेते हैं। एक ऐसा भी उदाहरण है कि एक टांगेवाले ने चार अमेरिकनों से समझाना होटल, वीरगंज तक पहुंचाने के लिए फी बिजली-पोल एक रुपये की दर से सैकड़ों रुपये वसूल लिए थे !

नगरपालिका की उदासीनता के कारण रक्सौल की नारकीय स्थिति, पर्यटक-सूचना केन्द्र की निष्क्रियता, रिक्शा-टांगा वालों की लूट-खसोट,होटलों-बसों के एजेन्टों द्वारा विदेशियों पर टूट पड़ना, इस क्षेत्र में विदेशियों के सामानों–रुपयों की चोरी, नेपाली–भारतीय सिक्का-विनिमय के समय अनधिकृत व्यक्तियों द्वारा की गई धांधली--कुछ ऐसी वारदातें हैं कि विदेशी इस रास्ते से गुजरना पसन्द नहीं करते। अन्यथा इस मार्ग से गुजरनेवाले विदेशियों की संख्या में और तेजी से वृद्धि हुई होती। निश्चय ही इस मार्ग से नेपाल जानेवाले विदेशियों की अपेक्षा लौटनेवाले विदेशियों की संख्या कम होती है। वे दूसरे मार्ग से या अधिक व्यय कर वायुयान से लौट जाना अधिक पसन्द करते हैं। सन् १९७८ में रक्सौल से नेपाल गुजरनेवाले विदेशियों की संख्या लगभग दस हजार थी, पर लौटने वालों की संख्या मात्र पाँच हजार !

पहले नेपाल जाने के लिए एक मात्र रक्सौल से सुविधाजनक मार्ग था। पर आज उत्तर प्रदेश से भी होकर मार्ग निकल गए हैं। हाँ, यह सही है कि काठमांडू जाने के लिए आज भी यह सबसे सुविधाजनक मार्ग है। पर इस मार्ग से गुजरनेवाले अनेक विदेशियों को जो कटु अनुभव प्राप्त होते हैं, इससे इस सुविधा को वे भूल जाते हैं। फिर, अपने देश लौटने पर अपने लोगों में जो मार्ग की कठिनाइयों-वारदातों की चर्चायें करते हैं, उनका भी निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है !

क्या रक्सौल को इन खामियों से मुक्त कर इस मार्ग से विदेशियों को गुजरने के लिए आकृष्ट करने के निमित्त नगरपालिका, सरकार तथा नागरिकों द्वारा प्रयास किया जायेगा ? वस्तुतः इसमें सबके सम्मिलित सहयोग की पर्याप्त अपेक्षा है।

१३. जन-स्वास्थ्य और चिकित्सा

(पीने के पानी से लेकर डंकन अस्पताल की कहानी तक)

जनस्वास्थ्य की दृष्टि से रक्सौल का इलाका आज से मात्र तीन-चार दशक पूर्व तक अस्वास्थ्यकर समझा जाता था। चम्पारण के अन्य इलाकों की तरह यह इलाका भी मलेरिया, चेचक, हैजा, काला जार, प्लेग आदि रोगों से ग्रस्त था। समुचित चिकित्सा के अभाव में रोगियों के मरने की संख्या अधिक थी।

स्वास्थ्य की दृष्टि से रक्सौल बाजार की सबसे बड़ी समस्या थी पीने के पानी की। उन दिनों बाजार के विभिन्न हिस्सों में लगभग एक दर्जन कुएँ थे, जिनमें से अधिकांश का पानी पीले रंग का था—मानो पानी में हल्दी घोल दी गयी हो। वह पानी पीने में भी वैसा ही अरुचिकर था। स्नान करने पर कपड़ा का पीला हो जाना आम बात थी। किसी बर्त्तन में भरा हुआ पानी कुछ ही मिनटों में किरासन तेल की तलछट की नाई दिखलायी पड़ने लगता था। पर लोगों की मजबूरी थी। आम लोग वैसे पानी को भी व्यवहार में लाते थे। हाँ, बाजार के एक दो कुँओं का पानी कुछ साफ अवश्य था, जहाँ पानी भरनेवालों की भीड़ अधिक होती थी। तीन–चार अधिक गहराई-वाले चापाकल भी थे—पोस्ट ऑफिस, नेपाली रेलवे स्टेशन, श्री हरि प्रसाद जालान, रेजिडेन्सी आदि के अहाते में, पर अधिकांश वासिन्दों के निवास से वे इतनी दूर थे कि वहाँ से पानी भरकर लाना उनके लिए श्रमसाध्य था। पर आज स्थिति इसके विपरीत है। सार्वजनिक तथा वैयक्तिक चापाकलों की संख्या सैकड़ों में पहुँच गयी है, और उनका पानी इतना स्वादिष्ट कि इस पानी के सामने मोतिहारी, बेतिया, सीतामढ़ी जैसे स्थानों का पानी भी फीका-फीका लगता है। हाँ, रक्सौल के पानी में आयोडिन की कमी है, यह सिद्ध हो चुका है। गत मई माह में केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग के 'ग्वायटर कन्ट्रोल' (घेघ-नियंत्रण) इकाई ने रक्सौल के स्कूली बच्चों के घेघ रोग-संबंधी सर्वेक्षण के दौरान रहस्योद्घाटन किया कि यहाँ के बच्चों में से ५०% से अधिक इस रोग से कमोवेश पीड़ित हैं। पूरे चम्पारण में 'आयोडाइज्ड नमक' के वितरण की व्यवस्था है। पर व्यवहार में सबको ऐसा नमक मिल नहीं पाता।

चिकित्सा—रक्सौल बाजार के प्रारंभिक वर्षों में एक ही चिकित्सक थे—वैद्य श्री रामसकल पांडेय, जिनकी चिकित्सा के क्षेत्र में बाजार में अच्छी प्रतिष्ठा

थी। लगभग तीसरे दशक तक पांडेय जी ही रक्सौल बाजार के लोगों की चिकित्सा करते रहे। अन्य छिटफुट इलाज करनेवालों की कोई विशेष पूछ नहीं थी।

सन् १९३० में पहली बार सरकार ने चम्पारण डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन एक स्वास्थ्य अधिकारी (Health Officer) की नियुक्ति की। इसके पहले सिविल सर्जन के अधीन जिला की चिकित्सा-व्यवस्था थी। इसी समय—सन् १९२८ के अन्त में—रक्सौल में एक सरकारी चिकित्सालय की स्थापना हुई, जो चिकित्सालय सन् १९३० में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन आ गया। रक्सौल-सरकारी अस्पताल के प्रथम डाक्टर स्व० महावीर प्र०, एल०एम०पी०, एल० एम० एफ० (कलकत्ता) नियुक्त हुए, जो बाद में किसी दूसरे स्थान से नौकरी से त्याग-पत्र देकर सन् १९४५ से सन् १९५७ तक (स्वर्गवासी होने तक) रक्सौल में ही प्राइवेट प्रैक्टिस करते रहे। प्रथम डाक्टर श्री महावीर प्र० ने नौकरी छोड़कर रक्सौल में प्राइवेट प्रैक्टिस करने की जो शुरुआत की, रक्सौल-सरकारी अस्पताल में पदस्थापित कई डाक्टरों ने उसका अनुसरण किया।

प्रारंभिक अवस्था में यह चिकित्सालय किराये के मकान में था—पहले श्री तपेसर साह के मकान में, फिर आज के सुर्वाहट्टा क्षेत्र में बने श्री मातादीन के मकान में, जो बाद में स्व० श्री रामचन्द्र प्रसाद रौनियार के स्वामित्व में आ गया। ४-५ वर्षों के अन्दर ही इसका निजी भवन बनकर तैयार हो गया और यह चिकित्सालय उसमें स्थानान्तरित हो गया, जहाँ वह आज भी है।

१ मई १९५७ को यह जिला बोर्ड चिकित्सालय सरकारी चिकित्सालय (State dispensary) में परिणत हो गया। आज इसमें रोगियों के लिए खाट की भी व्यवस्था है।

सन् १९२८ से १९७९ तक—लगभग आधी शताब्दी की अवधि में यहाँ डा० महावीर प्र०, डा० रमतुल्लाह, डा० बंगाली कुँअर, डा० रामप्रसाद गुप्त, डा० रामाशीष प्र०, डा० लखिचन्द प्र०, डा० सूर्यदेव नारायण राय (डा० एस. एन. राय), डा० श्रीनाथ सिन्हा (डा० एस० एन० सिन्हा), डा० बसंत कुमार सिंह, डा० जनार्दन प्र० जैसे चिकित्सक रह चुके हैं और सम्प्रति डा० कामेश्वर प्र० सिन्हा यहाँ चिकित्सक के पद पर पदस्थापित हैं।

पिछले कुछ वर्षों से रक्सौल में तीन सरकारी चिकित्सक के पदों का सृजन हुआ है। इनमें से दो डाक्टर रक्सौल-अंचल से संबद्ध हैं, हालांकि इन्हें भी रक्सौल सरकारी चिकित्सालय में क्रम से अपनी सेवाएँ प्रदान

करनी होती है।

इस चिकित्सालय के आधी शताब्दी के इतिहास में स्व० डा० बंगाली कुँअर ने लम्बी अवधि तक अपनी सेवाएँ अर्पित कीं और बाद में रक्सौल में ही वर्षों निजी प्रैक्टिस किया। रक्सौल-अधिसूचित क्षेत्र समिति के सचिव तथा एक नम्र एवं व्यवहार-कुशल व्यक्ति के रूप में स्व० डा० बंगाली कुँअर ने प्रतिष्ठा तो अर्जित की ही, एक सुयोग्य डाक्टर के रूप में भी एक लम्बे समय तक इस क्षेत्र में सुयश प्राप्त किया।

कुछ अन्य चिकित्सक – रक्सौल के प्रथम वैद्य श्री रामसकल पांडेय की चर्चा पहले आ चुकी है। वैद्य श्री श्रीपति मिश्र ने लगभग डेढ़ दशकों तक—स्वतंत्रता प्राप्ति के आस-पास तक रक्सौल में अपनी चिकित्सा-सेवाएँ अर्पित कीं। स्व० श्री कन्हैया मिश्र, वैद्य ने सन् १९३५ से सन १९४६ तक निजी प्रैक्टिस किया। सन् १९५१ से पं० रामवचन मिश्र, वैद्य यहाँ सफलतापूर्वक प्रैक्टिस कर रहे हैं। वैद्य श्री शुकदेव मिश्र भी काफी लम्बे अर्से से यहाँ चिकित्सा-जगत से सम्बद्ध हैं। श्री गट्टूलाल, वैद्य ने मारवाड़ी-समाज में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, जो बाद में एक रहस्यमय व्यक्ति साबित हुए।

शुरू-शुरू में एलोपैथिक पद्धति पर सफलतापूर्वक निजी प्रैक्टिस करनेवालों में श्री पुष्परंजन मल्लिक का नाम प्रथम आता है, जो स्थानीय डंकन अस्पताल में कम्पाउन्डर के रूप में लगभग एक दशक तक अपनी सेवाएँ प्रदान करने के बाद १९४२ ई० से निजी प्रैक्टिस कर रहे हैं। श्री मल्लिक अपने प्रैक्टिस के प्रारंभिक वर्षों में मिक्श्चर तथा अन्य कमखर्चीली दवाओं के लिए इस इलाके में काफी लोक-प्रिय थे। आज भी, जबकि उनकी उम्र काफी ढल चुकी है, थोड़ी-बहुत प्रैक्टिस कर ही लेते हैं। स्व० श्री जगदीश प्रसाद ने, जो वर्षों तक जिला बोर्ड अस्पताल, रक्सौल में कम्पाउन्डर रह, यहाँ लगभग दो दशकों तक मरीजों की संख्या की दृष्टि से निजी प्रैक्टिस में अच्छा नाम किया।

डा० गंगा प्रसाद, एम. बी. बी. एस. ने सन् १९५२ में रक्सौल में प्रैक्टिस प्रारंभ किया। उन दिनों डाक्टर गंगा प्रसाद रक्सौल में निजी प्रैक्टिस करनेवालों में सबसे ऊँची डिग्री-प्राप्त चिकित्सक थे। सन् १९५२ से लेकर आज तक, लगभग ढाई दशकों में डा० प्रसाद ने अर्थ के साथ पर्याप्त यश भी कमाया है।

सन् '५६-५७ में किसी डा० मित्रा (एम० बी० बी० एस०) ने यहाँ कुछ दिनों के लिए निजी प्रैक्टिस किया था।

यहाँ विदेश में शिक्षा-प्राप्त डाक्टर मात्र एक हैं, और वे हैं डा० परमेश्वर

दयाल सिन्हा (डा० पी० डी० सिन्हा), एम० डी० (आस्ट्रिया), जो आज एक दशक से रक्सौल में निजी प्रैक्टिस कर रहे हैं । डा० पी० डी० सिन्हा चिकित्सक के साथ-साथ एक कलाकार और सामाजिक व्यक्ति भी हैं, जो रक्सौल की कई संस्थाओं से सम्बद्ध हैं । डा० एस० एन० राय, एम० एस०, डा० श्री नाथ सिन्हा, एम०बी०बी०एस०, डा० म० यूसुफ, एम० बी० बी० एस०, डा० आफताब आलम, एम० बी० बी० एस०, डा० बृजकिशोर कुमार, (नेत्र विशेषज्ञ), डा० एम० वहाब, एम० बी० बी० एस०, डा० बी० डी० शिन्डे, एम० बी० बी० एस०, जैसे डाक्टरों की भी यहाँ अच्छी प्रतिष्ठा और पूछ है । डा० रामनाथ प्र०, डा० लालबाबू प्र० जैसे डाक्टर भी यहाँ वर्षों से प्रैक्टिस कर रहे हैं ।

शुद्ध होमियोपैथी पद्धति पर चिकित्सा करनेवाले डाक्टर महेन्द्र देव नारायण सिन्हा हैं, जो एक लम्बे अर्से से यहाँ होमियोपैथी प्रैक्टिस कर रहे हैं । सन् १९५२ से आज तक—लगभग ढाई दशकों में इन्होंने होमियोपैथी क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित की है । देव होमियो क्लिनिक (डा० बी० एन० देव), चित्रगुप्त होमियो क्लिनिक, खुदादीन होमियो क्लिनिक भी वर्षों से चिकित्सा क्षेत्र में जुटे हैं । कभी डा० छत्रधारी प्र० भी रक्सौल में होमियो प्रैक्टिस करते थे ।

एलोपैथी, होमियोपैथी और आयुर्वेदिक-तीनों की जानकारी रखने-वाले और मिश्रित पैथी में प्रैक्टिस करने वाले हैं—डा० बनारसी दास दीक्षित, डा० रामएकबाल सिंह, डा० बिन्दा प्र०, आदि । डा० बनारसी दास दीक्षित चिकित्सक के साथ-साथ दवा-विक्रेता और होमियो चिकित्सा-जगत् के एक अच्छे लेखक भी हैं । होमियोपैथी पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर इनके लेख प्रकाशित हुआ करते हैं । 'धन्वन्तरी' के होमियोपैथी विशेषांक का इन्होंने सफल सम्पादन किया है । डा० रामएकबाल सिंह एक चिकित्सक के साथ-साथ आयुर्वेदिक दवा-निर्माता भी हैं । डा० बिन्दा प्र० ने यहाँ लगभग तीन दशकों से प्रैक्टिस करते हुए गांवों में अपनी अच्छी पैठ बना ली है ।

श्री जगदीश प्रसाद सीकरिया, जो दशकों से चिकित्सा-जगत् से सम्बद्ध हैं, जिन्होंने श्रम, अध्ययन और अनुभव के बल पर रक्सौल में सुप्रिम फार्मा-स्युटिकल लैबोरेटरीज जैसे दवा-उत्पादक प्रतिष्ठान की स्थापना की है, (जिसकी चर्चा अध्याय ७ में विस्तार के साथ आयी है) एलोपैथी और होमियोपैथी चिकित्सा में अच्छी योग्यता रखते हैं, और प्रत्येक सुबह मुफ्त चिकित्सा करने के लिए कुछ समय निकाल लेते हैं ।

रक्सौल आर्य समाज-दातव्य होमियो औषधालय में कभी डा० गोपाल प्र० ने अपनी अवैतनिक सेवाएँ प्रदान की थीं। बाद में यह दातव्य औषधालय 'निर्गुण राम दातव्य होमियो औषधालय' में परिणत हुआ, जिसके डाक्टर श्री चन्द्रदेव सिंह अपने निधन के पूर्व तक रहे।

महिला डाक्टरों में डा० श्रीमती जी० मिश्रा, एल०एम० एफ० (कलकत्ता) डा० श्रीमती सरोज श्रीवास्तव, एम० बी० बी० एस, डा० श्रीमती यूजीन शिन्डे, एम० बी० बी० एस० ने यहाँ प्रैक्टिस शुरू कर एक बहुत बडे अभाव की पूर्ति की है। डा० श्रीमती श्रीवास्तव ने जुलाई १९७९ से यहाँ प्रैक्टिस करना बन्द कर दिया है।

रक्सौल में दन्त-चिकित्सक चार हैं—डा० यमुना प्र० सिंह, डा० मोहन प्र०, (जगदम्बा फार्मसी) डा० हरेन्द्र प्र० वर्मा और डाक्टर रामाश्रय प्र०।

यहाँ एक्स-रे क्लिनिक की संख्या चार हैं—सिन्हा एक्स-रे क्लिनिक, जनता एक्स-रे क्लिनिक, शिन्डे एक्स-रे क्लिनिक, और डंकन अस्पताल से सम्बद्ध एक्स-रे क्लिनिक।

चाँदसी दवाखाना तीन हैं। कुल मिलाकर नीमहकीम कहे जानेवाले डाक्टरों की संख्या एक दर्जन से ऊपर है, हालांकि इनमें से कई अच्छी चिकित्सा कर लेते हैं।

स्व० श्री मोहनलाल अग्रवाल ने, जो स्वयं पैर की नस की बीमारी से पीड़ित थे, अपने उपयोग के साथ-साथ नस की बीमारी से पीड़ित अन्य लोगों की भलाइ के लिए विद्युत् द्वारा सेकाई करने वाले यंत्र खरीदे और वर्षों तक इस यन्त्र से लोगों का मुफ्त उपचार किया। आज भी उनके पौत्र श्री महेश कुमार अग्रवाल उस संयंत्र का उपयोग गरीब के मुफ्त उपचार में करते हैं।

दवा की दुकान—जहाँ तक दवा की दुकान का प्रश्न है, ज्ञात होता है कि रक्सौल में सबसे पहले श्री अता हुसैन की दवा की दुकान आज के श्री कृष्णा टॉकिज के सामने आर्य मिष्टान्न भंडार वाली दुकान में खुली थी। सन् १९३३ में नन्दू बाबू की दवा की दुकान (फर्म : महादेव प्रसाद जूरीमल) दवा से सम्बन्धित दूसरी दूकान थी, जिसमें मनिहारी का सामान भी बिकता था, जैसा कि पहले कहा गया है। एक लम्बी अवधि तक मात्र नन्दू बाबू की दवा की दुकान बडे पैमाने पर इस क्षेत्र की दवा की आवश्यकताओं की पूर्ति करती रही। आज रक्सौल में अनेक दवा की दुकानों के खुल जाने के बावजूद यह दुकान दवा-स्टॉक के मामले में सबसे बड़ी दुकान समझी जाती है।

इन दिनों रक्सौल में जो अन्य दवा की दुकानें हैं, वे हैं—अग्रवाल फार्मेसी, गुप्ता फार्मेसी, दवाई की दुकान (रामगोविन्द राम का दवाखाना) बरनवाल मेडिकल स्टोर्स, हिमालयन इम्पोरियम (अमला बाबू का दवाखाना) न्यू बिहार फार्मेसी, श्रवण स्टोर्स (केशव बाबू का दवाखाना), दुर्गा मेडिकल हॉल, राजन फार्मेसी, हिन्दुस्तान मेडिकल हॉल एवं नुरुल बाबू का दवाखाना।

जहाँ आयुर्वेदिक दवाएं बिकती हैं, उन दुकानों के नाम हैं—अशोक मेडिकल हॉल, वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन एवं दीक्षित फार्मेसी। होमियोपैथी दवा लगभग सभी होमियो-चिकित्सक बेच लेते हैं।

एलोपैथी की थोक दवा की बिक्री के क्षेत्र में रक्सौल की अपनी एक महत्ता है। 'जूरीमल महादेव प्र०' एजेन्सी के नाम से चलनेवाली दवा-एजेन्सी न केवल रक्सौल के दवा-दुकानदारों को दवा की आपूर्ति करती है, बल्कि बेतिया, मोतिहारी सीतामढ़ी, छपरा, सीवान जैसे दुरस्थ स्थानों को भी दवा देती है। इस प्रतिष्ठान को भारत के लगभग एक सौ मशहूर दवा-उत्पादन-कारखानों की एजेंसियाँ प्राप्त हैं। इन दिनों गुप्ता फार्मेसी भी थोक दवा बेचने लगी है।

डंकन अस्पताल—ऊपर की पंक्तियों में रक्सौल के चिकित्सा-जगत् से सम्बद्ध अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। पर मात्र डंकन अस्पताल, रक्सौल ने पिछली आधी शताब्दी में नेपाल और बिहार के दूरस्थ स्थानों में चिकित्सा के क्षेत्र में - विशेषतः शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में—रक्सौल की जो प्रतिष्ठा बढ़ायी है, वह एक अलग महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट अध्याय है।

उन दिनों नेपाल में किसी विदेशी मिशनरी का प्रवेश निषेध था। स्कौटलैन्ड-वासी डा० सिसिल डंकन, जिन्होंने डंकन अस्पताल की नींव डाली—के पिता दार्जिलिंग के मिशनरी स्कूलों के निरीक्षक थे और इसी माध्यम से नेपालियों के बीच मिशनरी काम करते थे। डा० सिसिल डंकन का जन्म दार्जिलिंग में हुआ था और वहीं उनका बचपन व्यतीत हुआ। कभी-कभार वे अपने पिता के साथ रक्सौल भी आते, जहाँ उनके पिता आज के डंकन अस्पताल के ठीक सामने उत्तर, वृक्षों के नीचे, खेमा गाड़कर नेपालियों और भारतीयों के बीच धर्म का प्रचार किया करते थे। यह सन् १९१५ के आस-पास की बात है। डा० सिसिल डंकन स्कौटलैंड की राजधानी एडिनबरा से अपनी चिकित्सा-संबंधी शिक्षा समाप्त कर भारत में सेवा करने के उद्देश्य से सन् १९२८ में भारत लौटे। लगभग डेढ़ वर्षों तक हरनाटांड़ के एक छोटे-से

अस्पताल में काम करने के बाद सन् १९३० में रक्सौल चले आये, जो उनकी जानी-पहचानी जगह थी, जहाँ से दो देशों के नागरिकों की चिकित्सा-सेवा करते हुए 'ईश्वरीय प्रेम का संदेश' भी प्रसारित कर सकते थे।

ठीक सीमा-भूमि पर, जहाँ आज रक्सौल कस्टम्स-चेकपोस्ट स्थित है, डा० डंकन ने एक फूस की झोपड़ी खड़ी की और वहीं से दवा बांटने लगे। लगभग एक वर्ष तक यहीं से उन्होंने रोगियों की चिकित्सा कीं। सन् १९३१ में डाक्टर डंकन के लिए बंगला, एक छोटा-सा चिकित्सालय, कार्यालय, आदि बनकर तैयार हो गए। सन् १९३२ में २४ सीटों का एक वार्ड बना, जो आज भी अस्पताल के उत्तरी भाग में सही-सलामत रूप में खड़ा है। डा० डंकन ने अपनी पत्नी, सिस्टर बेलर्ड एवं अप्रशिक्षित युवकों के सहयोग से अपना कार्य प्रारंभ किया। सन् १९३१ में ही श्री पुष्प रंजन मल्लिक कम्पाउन्डर के रूप में इस टीम में सम्मिलित हुए। उन दिनों डा० डंकन को बाजार के जिन व्यक्तियों ने सहयोग दिया था, उनमें से दो के नाम उन्हें आज भी याद हैं— स्व० श्री श्रीलाल भरतिया एवं स्व० श्री रामगोविन्द राम के।

उन दिनों डंकन अस्पताल में ऑपरेशन के नाम पर छोटे-मोटे घावों के अतिरिक्त आंखों के मोतियाबिन्द के ऑपरेशन अधिक हुआ करते थे। पेट का ऑपरेशन कराने से लोग भय खाते थे।

डंकन अस्पताल का क्रमिक विकास हो ही रहा था कि द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया और सन् १९४१ में युद्ध-पीड़ित सैनिकों की सेवा के लिए डा० डंकन की बुलाहट आ गयी। लखनऊ, कलकत्ता, वर्मा, इराक जैसी जगहों में डा० डंकन को जाना पड़ा। इराक में ही रुग्ण होकर डंकन स्वदेश-स्कौटलैंड चले गए।

डा० मिसेज हारवे रक्सौल डंकन अस्पताल की प्रभारी बनीं। पर स्टॉफ से उनकी पटती नहीं थी। वे सन् ४२ की गर्मी की छुट्टियों में अस्पताल की बन्दी की घोषणा कर पुना चली गयीं और सोचा, नये स्टाफ के साथ फिर से अस्पताल चालू करूँगी, पर १९४२ के आन्दोलन के कारण वे लौट नहीं सकीं। सन् १९४८ में डाक्टर स्ट्रौंग के आने के पूर्व तक अस्पताल बन्द रहा।

डा० डंकन तीन दशकों के बाद १४ मार्च १९७२ को रक्सौल पहुँचे। डंकन अस्पताल के विस्तार को देखकर उनका प्रसन्न होना स्वाभाविक था। इस अवसर पर रक्सौल के नागरिकों की ओर से आयोजित अपने अभिनन्दन-समारोह में बोलते हुए डा० डंकन ने उस दिन को अपने जीवन का सबसे आनन्दायक दिन बताया था।

डा० डंकन वर्षों तक स्कौटलैंड में ही प्रैक्टिस करते रहे हैं। इन दिनों ७५

वर्ष की उम्र में डा० डंकन रुग्ण हैं, और उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया है।

डा० स्ट्रौंग—आयरलैंड में जन्मे श्री टी० एन० स्ट्रौंग ने डाक्टरी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के बाद एक मिशनरी के रूप में काम करना चाहा। भारत में आने के पूर्व लंदन में इन्होंने चिकित्सा में पोस्ट ग्रेजुएट की शिक्षा प्राप्त की और लंदन के कुछ चिकित्सालयों में अनुभव प्राप्त करने के बाद सन् १९४८ में अपनी डाक्टर पत्नी के साथ रक्सौल पहुँचे, जहाँ डंकन अस्पताल पिछले ६ वर्षों से बन्द पड़ा था।

पति-पत्नी ने मिलकर अस्पताल में प्राण फूंक दिए। १९५२ ई० में पैथोलॉजिकल प्रयोगशाला तथा १९५६ में एक्स-रे विभाग खुला। डंकन अस्पताल के अधीक्षक (Medical Saperintendent) डा० स्ट्रौंग की देख-रेख में अस्पताल ने जो चतुर्दिक विकास किया, भवनों, डाक्टरों एवं अन्य कर्मचारियों की संख्या में जिस तेजी से वृद्धि हुई, रोगियों की बढ़ती हुई संख्या को दृष्टि में रखते हुए उन्हें सुविधाएँ मुहैया करने के उद्देश्य से जो काम हुए, अस्पताल-अहाते में जिस सफाई पर बल दिया गया, आन्तरिक अनुशासन को सुदृढ़ बनाने में डा० स्ट्रौंग को जो कामयाबी मिली, ऑपरेशन के मामले में डा० स्ट्रौंग ने जो कीर्तिमान स्थापित किया—इन सबके लिए डा० स्ट्रौंग एक लम्बे समय तक इस क्षेत्र में याद किये जाते रहेंगे।

डा० स्ट्रौंग के समय में बेडों की संख्या १५० तक, रोगियों की जाँच-संख्या वर्ष में बीस हजार तक और बड़े ऑपरेशनों की संख्या प्रतिवर्ष १३०० तक पहुँच गयी।

डा० स्ट्रौंग को उन दिनों मिशनरी संस्था से अपने खर्च के लिए मात्र चार सौ रुपये मासिक वेतन मिला करते थे। हाँ, स्वदेश जाने, आदि का खर्च भी मिल जाता था। अस्पताल की आमदनी का अधिकांश अस्पताल के विकास में ही खर्च होता।

डा० स्ट्रौंग ने डंकन अस्पताल के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत कुछ किया, जैसा कि ऊपर की पंक्तियों से स्पष्ट है। पर प्रतिदान में उन्हें वह न मिला, जिसके वे भागी थे। आंतरिक मतभेद, कभी-कभार इस मिशनरी संस्था के विरुद्ध प्रचार, आदि से वे बहुत असंतुष्ट हुए। अधिक चोट उनकी पत्नी को पहुँची, और फिर दोनों ने डंकन अस्पताल को सदा के लिए छोड़ दिया। डा० स्ट्रौंग काठमांडू के शान्ताभवन मिशन अस्पताल में सन् १९७२ के अन्त से अपनी सेवाएँ अर्पित करने लगे।

२५ वर्षों की अवधि में डा० स्ट्रौंग ने डंकन अस्पताल, रक्सौल में रहते

हुए मानवता के लिए जो कुछ किया, क्या उसे भुलाया जा सकता है ? सन् १९७५ के अप्रैल माह में काठमांडू से जब वे रक्सौल पहुँचे, तो रक्सौल के 'नटराज सेवा संगम' के तत्वावधान में उनका हार्दिक नागरिक अभिनन्दन हुआ, जिसमें वक्ताओं द्वारा डा० स्ट्रौंग को पुनः डंकन अस्पताल में लौट आने के निवेदन के उत्तर में उन्होंने कहा—'मैं समझता हूँ आनेवाले वर्षों में अस्पताल को आगे बढ़ाने के लिए इस समय अस्पताल को भारतीय नेतृत्व की आवश्यकता है।"

डा० जोसेफ (भारतीय) ने अस्पताल का नेतृत्व संभाला। डा० जोसेफ भी एक अच्छे सर्जन सिद्ध हुए। पर वे भी डंकन अस्पताल में अधिक दिनों तक नहीं टिक सके। सन् १९७७ में उन्हें भी यहाँ से चला जाना पड़ा। तब से डा० मिस बेल (कनाडा) डंकन अस्पताल की मेडिकल सुपेरिन्टेन्डेन्ट हैं।

डंकन अस्पताल के सर्वांगीण विकास में जिन अन्य व्यक्तियों का योगदान है, उनमें से कुछ प्रमुख व्यक्तियों की संक्षिप्त चर्चा कर देना यहाँ अप्रासंगिक न होगा।

डा० सैन्डर्स—ब्रिस्टल, इंगलैंड के निवासी डा० सैन्डर्स ने, जिनका जन्म सन् १९२५ में अंगोला में हुआ था, ब्रिस्टल में ही अपनी चिकित्सा-संबंधी योग्यताएँ प्राप्त की थीं। नेपाल में राणाशाही की समाप्ति के बाद जब विदेशी मिशनरियों पर से प्रतिबंध हट गया, डा० सैन्डर्स और उनकी पत्नी ने नेपाल में चिकित्सा-क्षेत्र में काम करने की योजना बनाई। सन् १९५६ में इस क्षेत्र की बीमारियों के संबंध में अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से मात्र तीन वर्षों के लिए डंकन अस्पताल, रक्सौल आए। पर यहाँ, चूंकि बिहार और नेपाल—दोनों स्थानों के लोगों की उन्हें सेवा करने का अवसर मिला—अठारह वर्षों तक यहीं रह गए। इन अठारह वर्षों में डा० सैन्डर्स ने चिकित्सा और सर्जरी-दोनों क्षेत्रों में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। डा० सैन्डर्स की रक्सौल की सबसे बड़ी उपलब्धि थी 'टिटनस' पर शोध। सन् १९५६ में जब वे यहाँ आये थे, टिटनस से मरने वालों की संख्या ८०% थी। वर्षों की शोध के बाद मृतकों की संख्या घटकर ५% हो गयी। डा० सैन्डर्स ने टिटनस पर शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत किया और ब्रिस्टल से एम० डी० की डिग्री प्राप्त की। डा० सैन्डर्स ने सपत्नीक सन् १९७४ में डंकन अस्पताल छोड़ दिया।

मिस स्टीफन—सन् १९०८ में लंदन में जन्मी, नर्सिङ्ग सिस्टर के रूप में ६ वर्षों तक काम करने के बाद सन् १९४८ में डंकन अस्पताल रक्सौल पहुंची। उन दिनों नर्स मिलना कठिन था। अत: मिस स्टीफिन को डंकन अस्पताल में

नर्सिङ्ग सेवा के लिए घोर श्रम करना पड़ा। उन्होंने इस अस्पताल में नर्सिंग की जो मजबूत आधारशिला रखी, उसी पर यह सेवा कुछ परिवर्त्तन-परिवर्द्धन के साथ आज भी अवस्थित है। आज उनके स्थान पर श्रीमती एन० आचार्या कार्यरत हैं।

मिस हौर्न- डंकन अस्पताल की 'बिजनेस मैनेजर' मिस हौर्न की निःस्वार्थ सेवा कभी भुलायी नहीं जा सकती। स्कौटलैंड के एक कट्टर क्रिश्चन-परिवार में जन्मी मिस हौर्न ने मैट्रिकुलेशन के समकक्ष परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के पश्चात् एडिनबरा में 'कानूनी एपरेन्टिस' के रूप में एक 'फर्म' में प्रथम दिन काम करना शुरू ही किया था कि उस 'फर्म' के उनके सहयोगी ने भारत में कुछ रुपये भेजने के लिए बैंक ड्राफ्ट खरीदने का आदेश दिया। मिस हौर्न को पता लगा कि वह व्यक्ति रक्सौल डंकन अस्पताल का अवैतनिक सचिव और कोषाध्यक्ष के रूप में भी काम कर रहा था। डंकन अस्पताल, रक्सौल के लिए कहीं से दान-स्वरूप रुपये आये थे, जिन्हें रक्सौल भेजना था। मिस हौर्न की दिलचस्पी उसी दिन से रक्सौल डंकन अस्पताल में हो गयी। जब डा० डंकन छुट्टी में स्कौटलैंड पहुंचे, मिस हौर्न ने डंकन अस्पताल, रक्सौल में काम करने के लिए आवेदन-पत्र दे दिया और सन् १९३६ में रक्सौल चली आयीं। १९४८ के बाद जब डंकन अस्पताल पुनः खुला, मिस हौर्न ने तेजी से विकसित हो रहे अस्पताल की आवश्यकताओं के अनुरूप घोर श्रम किया। सन् १९७२ के जून में मिस हौर्न की सेवा-निवृत्ति का समय आ गया। उन्हीं के शब्दों में—"मैं उदास हो गयी, उस संस्था को छोड़ते हुए, जिसे मैं इतना प्यार करने लगी थी।" परन्तु उनकी सेवा-निवृत्ति के ठीक पहले भारत के 'क्रिश्चन मेडिकल एन्सोसिएशन' ने उन्हें डंकन अस्पताल की 'बिजनेस मैनेजर' नियुक्त किया, जिस पद पर बाद में श्री रीत अशोक कुमार नियुक्त हुए। मिस हौर्न ने अपनी सच्ची कर्त्तव्य-निष्ठा, निःस्वार्थ सेवा और घोर श्रम के बल पर डंकन अस्पताल को आगे बढ़ाने में योगदान किया। अगर यह कहा जाय कि डा० स्ट्रौंग, डा० सैन्डर्स, मिस हौर्न जैसे व्यक्तियों ने डंकन अस्पताल, रक्सौल को बिहार और नेपाल में इतनी प्रतिष्ठा दिलाई तो कोई अत्युक्ति नहीं।

१२-४-१९७९ से श्री रीत अशोक कुमार के स्थान पर श्री फ्रैंक सुलले काम कर रहे हैं। श्री रीत अशोक कुमार का अन्यत्र किसी मिशनरी अस्पताल में स्थानान्तरण हो गया है। डा० स्ट्रौंग, डा० सैन्डर्स, मिस हौर्न, डा० पिकौक, डा० मार्टिन, डा० जोसेफ जैसे व्यक्तियों के चले जाने के बाद से

डंकन अस्पताल की स्थिति वह नहीं है, जो पहले थी। बड़े ऑपरेशनों की संख्या में भारी कमी आयी है। पिछले कुछ वर्षों में नवसिखुवे विदेशी डाक्टर-सर्जन यहाँ थोड़े-थोड़े समय के लिए आते रहे हैं, पर मात्र अपना हाथ साफ करने के लिए। आज अस्पताल की आमदनी घट गयी है, टीम में वह अनुशासन नहीं है, जो डा० स्ट्रौंग और मिस हौर्न के समय में था। रक्सौल की सबसे बड़ी सार्वजनिक संस्था की हालत आज सचमुच नाजुक है। इस पर डंकन अस्पताल के अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ रक्सौल के नागरिकों का भी ध्यान जाना चाहिए।

१४. स्वतंत्रता-संग्राम के मोर्चे पर जूझता रक्सौल

सन् १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ जो विद्रोह की अग्नि भड़की, उसकी लपटें इस इलाके को भी छू गयीं। उन दिनों सुगौली-छावनी की १२ नं० कन्टोनमेंट' मेजर होल्सस के अधीन थी। २६ जुलाई १८५७ को विद्रोहियों ने सुगौली के न केवल सैनिक और गैर-सैनिक अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी, बल्कि खजाना लूट लिया और बंगले में आग लगा दी। स्वतन्त्रता की इस प्रथम लड़ाई में स्थानीय शासन तथा सुगौली के अतिरिक्त रामगढ़वा का इलाका (जो बहुत दिनों तक रक्सौल थानान्तर्गत रहा) ने भी साथ दिया । इस पुनीत काम में दो-तीन मुसलमानों ने अच्छे साहस का परिचय दिया । ३० जुलाई को सुगौली में मार्शल लॉ की घोषणा हुई, और फिर नेपाल के प्रधान मंत्री जंगबहादुर राणा के नेतृत्व में आनेवाली गोरखा फौज की सहायता से अंग्रेजों ने बड़ी बेरहमी से काम लिया। अंग्रेजों ने इतना आतंक और भय फैलाया कि आम आदमी के हृदय से निर्भीकता जाती रही।

सन् १९१७ में महात्मा गांधी चम्पारण आये और लगभग एक वर्ष तक यहाँ रहे। इस अवधि में उन्होंने यहाँ निलहों के खिलाफ जो लड़ाई छेड़ी, गरीब किसानों को जो हक दिलाया, लोगों को सत्याग्रह का जो पाठ पढ़ाया, उससे न केवल पूर्ण चम्पारण जाग उठा, बल्कि पूरे भारतवर्ष पर स्वतन्त्रता की लड़ाई में इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा।

रक्सौल में महात्मा गांधी—चम्पारण के किसानों को उनका हक दिलाने के बाद महात्मा गांधी ने चम्पारण छोड़ दिया और पूरे भारतवर्ष में घूम-घूमकर अपने ढंग से स्वतन्त्रता का बिगुल फूंकते रहे। लगभग ढाई वर्षों के बाद वे पुनः चम्पारण आये और इसी क्रम में एक दिन रक्सौल भी पधारे । श्री मजहरूल हक के प्रयास से महात्मा गांधी ने बिहार के लिए १९२० ई० के दिसम्बर माह में ग्यारह दिनों का कार्यक्रम निश्चित किया और मोतिहारी, बेतिया होते हुए ९-१२-१९२० को रक्सौल पहुँचे । महादेव देसाई ने अपनी डायरी में लिखा है—''बिहार, गांधी जी का माना हुआ बिहार, कितने ही दिनों से गांधी जी के दर्शन के लिए तड़प रहा था। मजहरूल हक साहब के तार तो दो महीने पहले से ही शुरू हो गए थे। अन्त में पिछले माह के आखिर में तंग आकर उन्होंने तार दिया था कि आपका वचन फिर टूट गया । अब नहीं आयेंगे, तो हमें सार्वजनिक जीवन छोड़कर कहीं-न-कहीं भाग जाना

पड़ेगा। गांधी जी काशी में थे, तभी हक साहब ठीक ग्यारह दिनों का प्रवास-क्रम तैयार करके वहाँ लाये थे। वह प्रवास, उन्होंने जैसा रखा था, उसी के अनुसार आज (१३-१२-'२०) को पूर्ण हो गया।"

महात्मा गांधी ने रक्सौल के श्री हरिप्रसाद जालान की पथारी (धान सूखाने वाली भूमि) में अपना भाषण किया। लोगों की अपार भीड़ थी; न केवल इर्द-गिर्द के भारतीय इलाके की जनता, बल्कि निकट के नेपाली क्षेत्र के लोगों ने भी महात्मा गांधी का भाषण सुना। रक्सौल में महात्मा गाँधी के साथ श्री मजहरूल हक, श्री शौकत अली, श्री राजेन्द्र प्र० जैसे महान नेताओं के अतिरिक्त चम्पारण के कई नेता जैसे—श्री विपिन विहारी वर्मा, श्री प्रजापति मिश्र, आदि भी थे। भाषण के पश्चात् जन-समुदाय में से अधिकांश ने कांग्रेस के कार्यक्रमों के लिए पैसे से लेकर रुपये तक सहर्ष दान किए।

महात्मा गांधी ने रक्सौल अथवा इस यात्रा के दौरान कुछ अन्य स्थानों में जो भाषण दिए, उनका मुख्य मुद्दा एक ही था—विदेशी सरकार से असहयोग। सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, सूत कातना, खादी वस्त्र धारन करना, आदि इसमें कुछ प्रमुख बातें होती थीं—श्री देसाई की डायरी को देखने से ऐसा ही ज्ञात होता है। रक्सौल में महात्मा गांधी के भाषण का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनके जाते ही रक्सौल में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की व्यवस्था होने लगी और मात्र दो महीने के अन्दर ही दिनांक ८-२-१९२१ को यहाँ राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हो गयी। यह राष्ट्रीय विद्यालय यहाँ पढ़नेवाले विद्यार्थियों में न केवल राष्ट्र-प्रेम जाग्रत करता रहा, बल्कि वर्षों अन्य अनेक स्वतंत्रता-प्रेमियों का समय-समय पर निवास-स्थल भी रहा।

श्री महादेव देसाई द्वारा इस यात्रा के दौरान लिखी गयी उनकी डायरी का एक और अंश ...... "गांधी जी और शौकत अली को जिस प्रेम के दर्शन हुए, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। हमारे सफर में (२-१२'२० से १३-१२'२० तक)' एक भी दिन ऐसा नहीं हुआ कि हर जगह खड़ी रहने वाली गाड़ी का बी.एन. डबल्यू. रेलवे का एक भी स्टेशन सैकड़ों मनुष्यों से भरा हुआ न हो। कभी घर से बाहर न निकलनेवाली बहनें गांधी जी को सुनने के लिए जहाँ-तहाँ आये बिना नहीं रहीं। झुंड के झुंड विद्यार्थियों ने हर जगह अपने उत्साह से गांधी जी को गद्गद कर दिया है। ...... किसी जगह फॉग सिग्नलों से तोप की सलामी देनेवाले और कहीं अपनी हुकूमत के भीतर का सिग्नल न देकर दर्शनों के लिए गाड़ी रोक देनेवाले रेलवे के नौकर मिलते।

अनेक स्टेशनों को छोड़कर चली जाने वाली 'स्पेशल' की परवाह न करके इस श्रद्धा से खड़ी हुई भीड़ दिखाई देती कि शायद दर्शन तो हो ही जायेंगे और दर्शन नहीं हुए तो 'गांधी-शौकत अली की जय' की आवाज तो अन्त में पहुँचा ही देंगे।"

गांधी जी रक्सौल से दरभंगा, समस्तीपुर और भागलपुर होते हुए १३-१२-'२० को बंगाल में प्रवेश कर गए।

सन् १९२१ के असहयोग-आन्दोलन में रक्सौल तथा इसके इर्द-गिर्द के इलाकों में जो कुछ हुआ, इसका बहुत बड़ा श्रेय यहाँ महात्मा गांधी के इस आगमन तथा उनके द्वारा दिए गए भाषण को है—इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। उन दिनों जो प्रमुख कांग्रेसी समय-समय पर रक्सौल आते रहे और यहाँ के लोगों में स्वतंत्रता के लिए जागृति पैदा करते रहे—उनमें से कुछ के नाम यों हैं—महान् क्रांतिकारी श्री योगेन्द्र शुक्ल, हसरत मुहानी, पीर महम्मद मुनीस, डा० राजेन्द्र प्र०, आचार्य कृपालानी, राजा गोपालाचारी, ध्वजा प्र० साहू, श्री विपिन विहारी वर्मा, श्री गोरख प्र०, श्री प्रजापति मिश्र, श्री रामरत्न ब्रह्मचारी आदि।

उन दिनों रक्सौल में कई बार विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी तथा छात्र और नवयुवक समय-समय पर विदेशी कपड़ा तथा शराब की दुकानों पर 'पिकेटिंग' करते रहे। आज भी कुछ लोगों को याद है कि किस तरह 'रतन लाल चौक' पर विदेशी सामानों का ढेर लग जाता और किस बेरहमी के साथ उसमें आग लगा दी जाती। विदेशी माल के 'बॉयकाट' में स्व० श्री रामउग्रह राम (श्री गोपाल प्र०, पत्रकार के पिता) स्व० श्री मदन मोहन गुप्त, पत्रकार के नाम विशेष रूप से उभर कर सामने आते हैं। उन दिनों मिश्री ट्रोल, संग्रामपुर की महिलाओं ने भी रक्सौल के ऐसे कार्यक्रमों का नेतृत्व किया था। कपड़े की दुकान से विदेशी कपड़ा इकट्ठा कर उन्हें गट्ठर में बांध दिया जाता और उस पर कांग्रेस की मुहर लगा दी जाती। दुकानदारों से लिखित पत्र प्राप्त कर लिया जाता कि कांग्रेस के आदेश के पूर्व वे गांठ न खोलेंगे। हाँ, कुछ दुकानदारों ने सीमा-पार नेपाल क्षेत्र में हजारीमल जी की फुलवारी के पास अपनी दुकानें खोल रखी थीं, जहाँ वे विदेशी कपड़ा बेचने को स्वतन्त्र थे।

नमक सत्याग्रह—सन् १९३० के अप्रैल में जगह-जगह लोगों ने नमक-कानून तोड़ा। राजेन्द्र बाबू चम्पारण के कई स्थानों के साथ रक्सौल में भी घूमकर लोगों में जागृति पैदा कर गए थे। रक्सौल के गम्हरिया, चोकियारी

आदि स्थानों में नमक बना। लोगों में अपरिमित उत्साह था। नमकीन मिट्टी को चूल्हे पर कड़ाह आदि में गर्म कर नमक में बदल दिया जाता और वह नमक काफी पैसे में निलाम हो जाता। श्री व्यास पाण्डेय, श्री शुकदेव लाल (बैरिया), केदार प्र० चौधरी (रक्सौल), श्री रामसुन्दर तिवारी, श्री दारोगा महतो, श्री सहदेव राम (सकरार), जैसे लोगों ने जगह-जगह नमक-कानून भंग कर गैर-कानूनी नमक बनाने में जिस अपरिमित उत्साह का परिचय दिया, उसके चलते कई लोग जेल की सीखचों में में भी बन्द हुए। फुलवरिया के श्री लक्ष्मीनारायण झा ने गम्हरिया में नमक-कानून भंग करने में अहम भूमिका अदा की।

सन् १९४० की रामगढ़-कांग्रेस में सर्वश्री रामानन्द सिंह, लक्ष्मी सिंह, मदनमोहन गुप्त, गौरीशंकर प्र०, रामवरन प्र०, रामजीवन प्र०, जैसे कांग्रेस के प्रबल समर्थकों ने भाग लिया। उनके रक्सौल लौटने पर उनका भव्य स्वागत हुआ तथा रक्सौल बाजार में एक बड़ा जुलूस निकला। ३-४-१९४० को कई व्यक्ति पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए और जेल भेज दिए गए।

इस तरह विदेशी वस्तुओं की होली जलाना, नमक-कानून तोड़ना, विदेशी कपड़ा और शराब की दुकानों पर धरना देना, तथा खादी प्रचार के साथ कुछ अन्य रचनात्मक कार्य चलते रहे कि सन् १९४१ का समय आया, और रक्सौल-बाजार में एक विचित्र घटना घट गयी, जिसका संबंध आजादी की लड़ाई से कम, लूट से अधिक है। रक्सौल-क्षेत्र के सिसवा-सौनाहा गांव के कुछ उग्र विचारधारा से प्रभावित लोगों ने रक्सौल के धनी-मानी लोगों पर आतंक फैलाने के उद्देश्य से सन् १९४१ में बाजार की कई दुकानों को, खासकर कपड़ा की दुकानों को, लूट लिया। इसमें बाजार के भी कई नवयुवक सम्मिलित थे। इनमें से कई पकड़े गए, जिन्हें जेल की सजा भुगतनी पड़ी। इसी सजा की बदौलत उनमें से कुछेक आज स्वतन्त्रता-सेनानी के रूप में २०० रु० प्रति माह पेंशन प्राप्त कर रहे हैं!

सन् १९२१ से सन् १९४१ तक कांग्रेस के झंडे के नीचे रक्सौल ने जिस रूप में स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी, उसकी चर्चा संक्षेप में ऊपर आ चुकी है। हाँ, इस लड़ाई में हजारीमल हाई स्कूल, रक्सौल की भी प्रमुख भूमिका रही है। इस विद्यालय के यादवचन्द्र पांडेय, महेन्द्र सिंह, सत्यनारायण प्र०, यदुनन्दन प्र०, नन्दकिशोर प्र०, बीरेन्द्र कुमार गुप्त, बब्बन पांडेय प्रभृति विद्यार्थी कमोबेश उग्र विचारधारा से प्रभावित थे, जिन्होंने सत्ता में आतंक फैलाते हुए यह लड़ाई अपने ढंग से लड़ी। ऐसे छात्रों में यादवचन्द्र पांडेय, जिनकी

उम्र अभी मुश्किल से अठारह की होगी, बड़े सुलझे मस्तिष्क वाले व्यक्ति समझे जाते थे। इस उम्र में ही इन्होंने ढेर सारी क्रांतिकारी पुस्तकें पढ़ डाली थीं।

रक्सौल-हजारीमल उ० विद्यालय के शिक्षक स्व० हरिबाबू ने किसी तरह क्रांतिकारी गुलाब चन्द्र गुलाली से सम्पर्क स्थापित कर छोटा-मोटा बम बनाना सीख लिया था, और फिर उनसे यादव चन्द्र पांडेय तथा कुछ अन्य छात्रों ने। बेल की खोल में कार्बन, पोटाश आदि से निर्मित हल्का-फुल्का बम मात्र आतंक फैलाने के लिए इन विद्यार्थियों ने एक-दो बार थाना, आदि में फेंका था। नागा बाबा का मठ, जहाँ आज रामजानकी मंदिर है तथा बाजार-स्थित पलटोका के श्री रामसुन्दर साह का गोला—ये दो स्थान उन दिनों ऐसे छात्रों के प्रमुख अड्डे थे। बाहर से क्रांतिकारी विचारों से भरे पैम्फलेट आते और वहाँ कार्बन से उनकी प्रतियाँ तैयार की जातीं। ये प्रतियाँ न केवल बाजार के विभिन्न स्थानों में साटी जातीं, बल्कि कुछ साहसी छात्र थाना तथा अन्य कार्यालयों में भी साट आते। थाना-दारोगा लाला तेजनारायण सिन्हा का पुत्र लाला राधा कुमार सिन्हा, जो उन दिनों रक्सौल हाई स्कूल का ही छात्र था, छात्र क्रांतिकारियों को बहुत सहयोग करता। उसके माध्यम से थाना में होनेवाली बहुत सारी गुप्त बातें छात्र क्रांतिकारियों को मालूम हो जातीं।

उन दिनों स्वतन्त्रता-प्रेमियों के दो और अड्डे थे – राष्ट्रीय विद्यालय तथा श्री हरिनारायण गुप्त का निवास-स्थान। श्री हरिनारायण गुप्त का पूरा परिवार ही आजादी का दीवाना था।

अगस्त क्रांति—५ अगस्त १९४२ से रक्सौल में बड़ी चहल-पहल थी। ७ अगस्त को बम्बई में कांग्रेस की महत्वपूर्ण बैठक होनेवाली थी। लोगों का ऐसा अनुमान था कि इस महत्वपूर्ण बैठक में कोई निर्णायक कदम उठाया जायेगा। लोगों का यह भी अनुमान था कि इस बार ब्रिटिश सरकार कांग्रेस की मांग 'पूर्ण स्वतंत्रता' को स्वीकार कर लेगी और उसे अपना मित्र बना लेगी। पिछले ४-५ दिनों से लोगों में सनसनी, उत्साह और आशा का संचार हो ही रहा था कि ९ अगस्त को संध्या ६ बजे लोगों ने रेडियो पर सुना कि गांधी-नेहरू के साथ अन्य प्रमुख नेताओं को भी सरकार ने गिरफ्तार कर लिया है। इसकी बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। यह समाचार सुनने के कुछ ही घंटे बाद बाजार के श्री गौरीशंकर प्रसाद, श्री सीताराम, श्री ब्रह्मदेव राम, आदि अगली सुबह से हड़ताल कराने के उद्देश्य से बाजार में घूम गए। फिर, श्री रामजीवन प्र०, श्री गौरीशंकर प्र० आदि लोगों का एक

समूह हाई स्कूल, मिड्‌ल स्कूल, आदि विद्यालयों के छात्रों से भी मिला, जिसके फलस्वरूप दूसरे दिन, यानी १० अगस्त को बाजार तथा शिक्षण-संस्थाओं में पूर्णतः हड़ताल रही। रक्सौल के विद्यार्थी अलग-अलग जत्था बनाकर रामगढ़वा, सिकटा, आदापुर, सुगौली, आदि स्थानों में भी गए और वहाँ हड़ताल कराने में सफलता प्राप्त की। १० अगस्त की संध्या में चौक पर पं० राधा पांडेय, मंत्री, थाना-कांग्रेस कमिटी की अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें पाँच सौ से ऊपर व्यक्ति सम्मिलित हुए। सभा शान्तिपूर्वक समाप्त हुई। पांडेय जी रक्सौल में तो नहीं, पर मोतिहारी जाने पर गिरफ्तार कर लिए गए। रक्सौल बाजार में ११ अगस्त को पूरी हड़ताल रही। १२ अगस्त को 'रेल हमारी है' का नारा लगाते हुए विद्यार्थियों ने यत्र तत्र रेल पर भ्रमण किया तथा जहाँ-तहाँ कई अंग्रेजों से मिलकर 'क्विट इंडिया' के नारा से उन्हें परेशान किया। स्व० श्री राधाकृष्ण मिश्र 'विजय' के जामाता श्री नागेश्वर पाठक ने ट्रेन-ड्राइवर को दरभंगा की ओर ट्रेन ले जाने को मजबूर किया। स्वयं इंजन में चढ़ गए और ट्रेन को कमतौल तक ले गए।

१३-१४ अगस्त को रेल की पटरी उखाड़ना, टेलिफोन का तार काटना, आदि विध्वंसकारी कार्य होते रहे। १५ अगस्त, शनिवार को संध्या ४ बजे पुलिस थाना, पोस्ट ऑफिस, आबकारी थाना आदि पर उत्साही नवयुवकों ने तिरंगा झंडा फहरा दिया। कहीं से कोई विरोध नहीं हुआ। उसी संध्या आबकारी थाना के कुल कागजात जला दिए गए तथा पुलिस स्टेशन के कार्यालय में स्वतन्त्रता-सेनानियों ने अपना ताला लगा दिया। फिर, विद्यार्थी पोस्ट-ऑफिस पर 'आजाद डाकघर' लिख आये, तो कहीं 'आजाद आश्रम' और कहीं 'आजाद भवन'। हाई स्कूल, रक्सौल का लाल भवन भी 'आजाद' शब्द से जुड़ गया। वह 'आजाद' शब्द वहाँ आज भी मौजूद है। १६ अगस्त को बंगरी पुल में मिट्टी तेल छिड़क कर जला देने की कुछ लोगों ने चेष्टा की, पर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। १६ अगस्त की संध्या में श्री महादेव देसाई के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करने के लिए एक वृहत् सभा हुई। १७ अगस्त को 'महावीरी झंडा' के दिन रक्सौल में छात्रों के जत्थे ने रामगढ़वा में मस्जिद के आगे लेटकर झंडा का जुलूस गुजरने से रोक दिया और इस तरह हिन्दू-मुस्लिम दंगा की संभावना टल गयी। १८ अगस्त को म० सईद हुसैन दरभंगा से तथा श्री देवनारायण शास्त्री (जो कि यारी—उन दिनों 'शास्त्री' नहीं थे) जो बी० एन० कॉलेज, पटना के छात्र थे, पटना से पैदल चल कर रक्सौल पहुंचे, क्योंकि जगह-जगह रेल की पटरियाँ उखाड़ दी गयी थीं।

उनके पहुँचने पर दिन के ३ बजे श्री रघुनाथ प्र० भरतिया की अध्यक्षता में एक आम सभा हुई, जिसमें पाँच सौ से ऊपर लोगों ने भाग लिया। प्रमुख वक्ता दो थे—श्री सईद तथा श्री शास्त्री, जिन्होंने क्रमशः दरभंगा तथा पटना की स्थितियों पर प्रकाश डाला। श्री भरतिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विस्तार से बतलाया कि क्यों और किस तरह ब्रिटिश फौज को वर्मा, सिंगापुर मलाया आदि स्थानों से हटना पड़ा और किस तरह उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही है। इस तरह श्री भरतिया ने अपने भाषण द्वारा उपस्थित जन-समुदाय में पर्याप्त उत्साह का संचार किया।

दारोगा ने थाना से झंडा उतारकर किसी अज्ञात स्थान में छुपा दिया था। फलस्वरूप छात्रों तथा कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं में बड़ा रोष था। १९ अगस्त को एक वृहत् जुलूस रक्सौल नगर की परिक्रमा करता हुआ थाना पहुँचा और वहाँ पुनः झंडा फहराया। उसी दिन रेजिडेन्सी-कार्यालय पर भी तिरंगा झंडा लहरा उठा। संध्या समय 'आजाद आश्रम' में (रक्सौल हाई स्कूल का छात्रावास 'आजाद आश्रम' में परिणत हो चुका था) छात्रों तथा अन्य कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक हुई, जिसमें डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सड़क को विनष्ट करने की योजना बनी। २०-२१-२२ अगस्त को रेल की पटरी उखाड़ना, टेलिफोन का तार काटना, सड़क तोड़ना आदि काम जोरों पर चलता रहा। २२ अगस्त को रक्सौल-राष्ट्रीय युद्ध-समिति शाखा का गठन हुआ, जिसका नेतृत्व श्री देवनारायण शास्त्री पर सौंपा गया। २३ अगस्त की १२ बजे रात में विद्यार्थियों ने रक्सौल-रेलवे स्टेशन के अंग्रेजी उपाहारालय (केल्नर) को लूट लिया और खाने का अधिकांश सामान चट कर गए। २४ अगस्त को भी तोड़-फोड़ जारी रही।

रक्सौल-राष्ट्रीय युद्ध-समिति के तत्वावधान में २५ अगस्त को जो काम हुआ, उस रक्सौल स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उस दिन सुबह से ही समिति के सदस्य बड़ी शीघ्रता से गांव-गाव में फैल गए। रक्सौल में १२ बजे दिन में एक आम सभा हुई, जिसमें ढाई हजार से ऊपर व्यक्ति सम्मिलित हुए। रक्सौल की अबतक की यह सबसे बड़ी सभा थी। इसकी अध्यक्षता लौकरिया के श्री भुवनेश्वर सिंह ने की। इस सभा में श्री नागेश्वर दत्त पाठक के ओजस्वी भाषण ने, खासकर विद्यार्थियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। उन्होंने अपने भाषण में थाना तथा अन्य सरकारी कार्यालयों के कागजात जला देने तथा कार्यालयों पर अधिकार कर लेने के लिए जोरदार शब्दों में अपने विचार रखे। इसके

पश्चात् युद्ध-समिति के सदस्य तथा सभा में भाग लेने देहात से आये लोग, 'पुलिस हमारे भाई हैं,' 'थानेदार हमारे भाई हैं' का नारा लगाते हुए थाना-अहाते में घुस गए, जमादार से ऑफिस की चाभी ले ली, ताला खोल दिया और फिर अन्दर प्रवेश कर गए। वहाँ से सारे कागजात उठाकर हि० उ० विद्यालय के अहाते में ले आये और उनमें आग लगा दी। इस समूह को थाना का मालखाना तोड़ने में भी कामयाबी मिली। इस साहसपूर्ण काम में बरेली के मौलाना एकरामुल हक, जो बाजार में 'चाचा' के नाम से प्रसिद्ध थे, उत्तर प्रदेश के श्री काशीनाथ वर्मा, जो उन दिनों व्यवसाय के सिलसिले में रक्सौल में ही रहते थे, और छपरा के स्वामी योगानन्द गिरि की अहम् भूमिका रही। इस मालखाने में थाना के जेवर, पिस्तौल, आदि तो थे ही, हाई स्कूल, पोस्ट ऑफिस, आदि ने भी सुरक्षा की दृष्टि से अपने कई बहुमूल्य सामान रख छोड़े थे। एकरामुल साहब न केवल मालखाना का जंगला तोड़ने में कामयाब हुए, बल्कि तिजोरी का ताला तोड़ने में भी उन्हें शीघ्र सफलता मिल गयी। इनके इस काम में सहयोग देनेवाले उपर्युक्त दो व्यक्ति प्रमुख थे। हाई स्कूल की डुप्लीकेटिंग मशीन,जो मालखाने में रखी थी,स्वतंत्रता-संघर्ष में काम आने लगी। और इसी तरह थाने की ६ चैम्बर की पिस्तौल किसी ने आजादी की लड़ाई में व्यवहार के लिए उड़ा ली। इस तरह कई दिनों तक पूरे नगर पर स्वतंत्रता-सेनानियों का अधिकार-सा रहा।

३ सितम्बर को कैम्प साहब के नेतृत्व में गोरी सेना रक्सौल आ धमकी। हाई स्कूल का छात्रावास स्वतंत्रता-सेनानियों का अड्डा था, जहाँ श्री नागेश्वर दत्त पाठक ने गोरे सैनिकों के मोतिहारी से चल देने की खबर शीघ्रता में भेज दी। स्वतंत्रता-सेनानी किसी तरह बच निकले। बहुतों ने सीमा-पार शरण ली।

थाना-डकैती केस में श्री एकरामुल हक, स्वामी योगानन्द गिरि, ब्रह्मदेव राम 'निगम' आदि गिरफ्तार किये जा चुके थे। गोरे सैनिकों ने रेलवे रेस्ट हाउस तथा डंकन अस्पताल के एक बंगले को अपना निवास बनाया, जहाँ वे डेढ़ महीनों तक रह गए।

इन डेढ़ महीनों की अवधि में इन गोरे सैनिकों ने रक्सौल में तथा इसके इर्द-गिर्द के गांवों में बड़ा उत्पात मचाया। वस्तुतः पुलिस जिससे बदला लेना चाहती थी, उसे पकड़वा देती थी, क्योंकि गोरे सैनिक तो यहाँ के लोगों को पहचानते नहीं थे। परेउआ के कई लोगों के साथ अमानुषिक व्यवहार हुआ। बाज़ार में भी आतंक छा गया। पं० जगदीश झा, ओभर-

सियर का सामान इन सैनिकों ने लूट लिया, उन्हें बुरी तरह पीटा और गिरफ्तार भी कर लिया। श्री सीताराम, भोला साह, वैद्यनाथ प्र० सोनार, विद्या प्रसाद, गौरीशंकर प्र०, जगन्नाथ प्र०, सरयुग प्र०, आदि के सामानों को इन अंग्रेजों ने भारी क्षति पहुँचायी। बाजार में केवल बूढ़े रह गए। शेष में से अधिकांश ने नेपाल की भूमि में शरण ली।

इस बीच कुछ साहसी स्वतन्त्रता-सेनानियों ने अंग्रेज सैनिकों से मोर्चा लेने की ठानी। कई गांवों के लोगों में उन्होंने जागृति पैदा की। चिकनी और कौड़िहार में युद्ध-समिति की बैठक हुई। कौड़िहार गांव की बैठक में सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए। रेलवे रेस्ट हाउस पर, जिसमें गोरे सैनिक रह रहे थे, आक्रमण करने की योजना बनी। लोगों में बड़ा उत्साह था। पर वीरेन्द्र कुमार गुप्त ने लोगों को समझाया कि अंग्रेजों से भीड़ जाने के लिए हमारे पास अभी ताकत नहीं है, हम व्यर्थ मर जायेंगे, ·· ··· यह हमारी मूर्खता होगी ·· ··· ··· आदि। फलस्वरूप यह योजना कार्यान्वित नहीं हो सकी। इसके बाद कुछ ने नेपाल की शरण ली, कुछ यहीं छिपकर काम करते रहे। श्री महादेव राम रौनियार ने विकट घड़ी में महत्वपूर्ण सूचनाएँ तथा कार्बन कागज, पैम्फलेट आदि पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। बहुत होशियारी से काम करने के बावजूद कई पुलिस की गिरफ्त में आ गए और जेल भेज दिए गए।

इस स्वतन्त्रता-संग्राम में रक्सौल तथा इस इलाके के जिन लोगों ने प्रमुख रूप से भाग लिया, उनका यहाँ एक साथ नाम दे देना अप्रासंगिक न होगा। वैसे नाम हैं—सर्वश्री एकरामुल हक, काशीनाथ वर्मा, स्वामी योगानन्द गिरि यादवचन्द्र पांडेय, बब्बन पांडेय, रामजीवन प्र०, गौरीशंकर प्र०, रामसुन्दर तिवारी, राधा पांडेय, मदनमोहन गुप्त, वीरेन्द्र कुमार गुप्त, राजेन्द्र कुमार गुप्त, लक्ष्मी सिंह, रामानन्द सिंह, रमेशचन्द्र झा, जमादार राउत, बह्मदेव राम निगम, सहदेव राम, सीता राम, इब्राहिम मियां, जंगबहादुर प्र०, इन्द्रदेव प्र०, दारोगा लाल, महेन्द्र सिंह, देवनारायण शास्त्री, दारोगा महतो, रामबरन प्र० ठाकुर प्र०, खेदारू राय, जंगी राउत (सिसवा), परमानन्द (पलनवा), पहवारी राउत (कौड़िहार); जमादार राउत (सिसवा), मन्नु अहिर, सुदामा प्र०, हरिहर प्र०, रघुनाथ राम, अयोध्या भगत (जयमंगलापुर), रामबहादुर गुप्त, सुखाड़ी दास, विसुन राम (हरैया), रतनलाल गुप्ता, ठाकुर मिश्र विश्वनाथ उपाध्याय (पलनवा), कंचन महतो (सतपिपरा), कन्हैया प्र० मास्टर (सतपिपरा), मथुरा दूबे, (सतपिपरा), कपिलदेव सिंह (बंधुबरवा), सूरज

पांडेय (बंधुबरवा) जामवंत (पखनहिया) दीनदयाल राम (शितलपुर) पहवारी राउत (जयमंगलापुर) किसुल चमार, चन्द्रवत गुप्ता, शुभनारायण सिंह, योगेन्द्र प्र०, गोपाल नोनिया, रमेश ठाकुर, ठाकुर मिश्र (मुसहरवा), लालजी राम (जटियाही), शुकदेव लाल (बैरिया) विश्वनाथ प्र० (सकरार), दुखी प्र० (रामगढ़वा), भिखारी राम (रामगढ़वा) मोती प्र० एवं अशर्फी सोनार (रामगढ़वा) अजीम शमसी (सेरिहरवा) म० इमाम (अधकपरिया) वीर शमशेर सिंह (महदेवा), तपेसर राम (जोकियारी) रामसुन्दर साह (पनटोका), हरिनारायण गुप्त, देवनन्दन सिंह (सिरिसिया), सत्यनारायण प्र०, रघुनाथ प्र० भरतिया, महन्थ रघुनाथ सरस्वती (जोकियारी), आदि। इनमें से अनेक ने जेल की यातनाएँ भी सहीं।

रक्सौल बाजार के जिन व्यक्तियों का इसमें आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा, उनके नाम हैं—सर्वश्री ताराचन्द्र अग्रवाल, हरि प्र० जालान, श्रीलाल भरतिया, टोरमल अग्रवाल, आदि।

रक्सौल अंचल के अन्तर्गत जिन व्यक्तियों को सन् १९७२ के १५ अगस्त से स्वतंत्रता-सेनानी के रूप में २०० रु० प्रति माह पेंशन प्राप्त होता है, उनके नाम हैं—सर्वश्री किसूल चमार, विसुन राम, चन्द्रवत्त गुप्ता, रामसुन्दर तिवारी शुभनारायण सिंह, ठाकुर प्र०, जमादार कुर्मी, योगेन्द्र प्र०, दारोगा महतो, सुखाड़ी दास, सुदामा प्रसाद, भन्लु अहीर, पटवारी, गोपाल नोनिया, रमेश ठाकुर, हरिहर प्र०, एवं जंगी राउत।

१५. शिक्षा

(तेलिया मास्टर से महाविद्यालय तक)

शिक्षा के मामले में न केवल रक्सौल का इलाका बल्कि सम्पूर्ण चम्पारण पिछड़ा रहा है। सन् १९०६-०७ में पूरे चम्पारण जिला में मात्र ३१ प्राइमरी स्कूल थे, जिनमें विद्यार्थियों की कुल संख्या १३३२ थी। हाँ, लोअर प्राइमरी स्कूलों की संख्या अवश्य कुछ अधिक थी। रक्सौल क्षेत्र के अन्तर्गत पड़ने वाले गांवों में जो इने-गिने प्राथमिक विद्यालय थे, उनमें से कुछ को लोकल बोर्ड की सहायता प्राप्त थी। कुछ स्कूलों को हरदिया कोठी के साहब द्वारा भी आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाती थी।

रक्सौल बाजार की स्थापना के कुछ ही दिनों के बाद आज के एक्सचेंज रोड के दक्खिनी भाग में एक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना हुई थी, जिसे लोकल बोर्ड से सहायता प्राप्त थी। उन दिनों ऐसे विद्यालयों में कैथी हिन्दी पर विशेष बल दिया जाता था। पनटोका के श्री रामसुन्दर साह के रक्सौल-स्थित गोला में बहुत दिनों तक एक प्राथमिक विद्यालय चला था, जहाँ पाँचवें वर्ग तक की पढ़ाई होती थी, और इसे भी लोकल बोर्ड से सहायता प्राप्त थी। २-८-'३४ को यह अपर प्राइमरी विद्यालय श्री रतनलाल मस्करा के मकान में चला आया, जहाँ से ७-१०-१९३६ को स्थानीय फूलचन्द साह मिड्ल स्कूल में सरकारी आदेशानुसार सम्मिलित कर लिया गया। श्री रामसुन्दर साह के गोला में चलनेवाले प्राथमिक विद्यालय में स्व० श्री राधाकृष्ण मिश्र 'विजय' ने बहुत दिनों तक अपनी सेवाएँ दी थीं।

उन दिनों एक शिक्षक बड़े ही लोकप्रिय थे, जो "तेलिया मास्टर" के नाम से इलाके में प्रसिद्ध थे। ये शिक्षक बन्धु जाति के तेली थे। फलतः इन्होंने "तेलिया मास्टर" की संज्ञा प्राप्त कर ली थी। "तेलिया मास्टर" ने एक लम्बी अवधि तक बाजार के बच्चों को शिक्षा दी। उनके पढ़ाये हुए छात्रों में से आज भी अनेक रक्सौल में मौजूद हैं, जो उनकी याद करते हैं।

दूसरे दशक की समाप्ति के बाद रक्सौल में लोअर गर्ल्स स्कूल (निम्न-प्राथमिक बालिका विद्यालय) की स्थापना हुई, जिसमें श्री व्यास पांडेय की पत्नी तथा उनकी पुत्री कौशल्या देवी ने शिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। स्व० श्री राधाकृष्ण मिश्र विजय की पुत्री ने भी इस विद्यालय में शिक्षिका के पद पर वर्षों काम किया। यह निम्न प्राथमिक बालिका विद्यालय

एक लम्बे अर्से तक श्री रामगोविन्द राम के मिल-अहाते में चलता रहा। आज लगभग एक दशक पूर्व से इस विद्यालय का अस्तित्व समाप्त है।

गांधी राष्ट्रीय विद्यालय—गांधी जी के आह्वान पर रक्सौल में ८-२-१९२१ को राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई। इस विद्यालय की स्थापना में स्व० श्री डूंगरमल भरतिया, स्व० श्री जगन्नाथ प्र० जालान, स्व० श्री वीर-शमशेर सिंह, स्व० श्री दारोगा लाल (हरैया) जैसे लोगों ने आर्थिक-शारीरिक सहयोग किया। रक्सौल बाजार तथा इर्द-गिर्द के लोकल बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों को सरकारी विद्यालय समझकर कुछ छात्रों ने बहिष्कार करना शुरू किया और इस विद्यालय में नामांकन कराने लगे। प्रारंभ में चार शिक्षकों की नियुक्ति हुई—पं० व्यास पांडेय (प्रधानाध्यापक) श्री रामरीझन पांडेय, श्री सर्यू प्र० एवं श्री जंगबहादुर प्रसाद की। कुछ ही दिनों के बाद पं० रामसकल पांडेय (काव्य मध्यमा) की भी नियुक्ति हुई। शिक्षण बिहार-विद्यापीठ के पाठ्य क्रमानुसार होता था। विद्यालय-प्र० कारिणी समिति में ११ सदस्य थे—श्री जगन्नाथ प्र० जालान-सभापति, श्री श्रीलाल भरतिया सचिव तथा श्री महादेव प्र० सोकरिया कोषाध्यक्ष थे।

उन दिनों यह विद्यालय राष्ट्र-प्रेमियों का आश्रय-स्थल था, जहाँ कांग्रेस के कार्यक्रम निर्धारित होते और रचनात्मक कार्यक्रमों का सूत्रपात होता। कई बार रक्सौल-थाना ने इस पर छापा मारा और ढेर सारे पैम्फलेट आदि बरामद किये। '४२ के आन्दोलन के समय तो इस पर गोरे सैनिकों का पहरा भी बैठा था।

उन दिनों चूंकि रक्सौल में यह एक मात्र शिक्षण-संस्था थी, जो राष्ट्रीयता की भावनाओं से ओतप्रोत थी, रक्सौल आनेवाले कुछ विशिष्ट व्यक्ति इसे अवश्य देखते। गांधी जी की शिष्या मीरा बेन (यूरोपीय महिला) ने २०-१०-१९२८ को इस विद्यालय को देखने के बाद लिखा है—"मैं नेपाल में खादी का काम देखने के लिए प्रभुदास गांधी के साथ रक्सौल पहुँची। हमें नेपाल जाने का आदेश नहीं मिला, पर हमारा समय नष्ट नहीं हुआ। क्योंकि हमने दो दिन इस छोटे पर सहानुभूतिपूर्ण विद्यालय में बिताए। यहाँ ठहरकर एवं छोटे-छोटे बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने-हेतु आते देखकर - विशेषतः खादी का काम देखकर हमें वास्तविक आनन्द प्राप्त हुआ है। हम इसे सदा याद रखेंगे।" डंकन अस्पताल के संस्थापक डा० सेसिल डंकन के पिता, जो दार्जिलिंग में मिशनरी स्कूलों के सुपेरिन्टेन्डेन्ट थे, ने भी इस विद्यालय को दो बार देखकर प्रशंसात्मक शब्द लिखे हैं।

सम्प्रति विद्यालय में ५ शिक्षक तथा दो शिक्षिकाएँ हैं। श्री शिववचन प्रसाद सिन्हा विद्यालय के प्रधानाध्यापक हैं।

हजारीमल उच्च विद्यालय—रामगढ़वा १९२९में रक्सौल थानान्तर्गत था। उस समय पूरे चम्पारण जिला में मोतिहारी और बेतिया के अतिरिक्त मात्र मेहसी में ही हाई स्कूल था। इसी वर्ष रामगढ़वा में 'मुरला कन्सर्न' के मालिक मि० हारमन ने अपने बंगला के निकट एक हाई स्कूल का शुभारंभ किया, जिसका नाम 'हारमन हाई स्कूल' पड़ा। इसके प्रथम प्रधानाध्यापक स्व० श्री मथुरा प्र० (पलनवा) नियुक्त हुए। पर कुछ ही दिनों के बाद इन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और श्री रामदयाल प्र० सिन्हा इसके प्रधानाध्यापक हुए।

रामगढ़वा के लोगों ने इस विद्यालय में विशेष रुचि नहीं ली। फलस्वरूप विद्यालय की स्थिति लड़खड़ाने लगी और सितम्बर १९३२ में यह विद्यालय रक्सौल बाजार के कुछ उत्साही एवं शिक्षा में अभिरुचि रखनेवाले नवयुवकों के प्रयास से उठकर रक्सौल चला आया। स्व० श्री श्रीलाल भरतिया, स्व० श्री रामरीझन पांडेय जैसे लोगों ने विद्यालय की स्थापना में विशेष अभिरुचि ली। रक्सौल के स्व० सेठ हजारीमल जी ने अपना बड़ा-सा गोदाम (जो आज भी बैंक रोड में अवस्थित है) अस्थायी तौर पर विद्यालय-संचालन के लिए दे दिया। श्री रामदयाल प्र० सिन्हा, श्री नरसिंह बहादुर, श्री ब्रजवंश उपाध्याय, म० उस्मान जैसे शिक्षकों के प्रयास एवं श्रम से, जो रामगढ़वा स्कूल के साथ ही यहाँ आये थे, विद्यालय चल निकला। न केवल चम्पारण के दूरस्थ स्थानों से बल्कि नेपाल के तराई-क्षेत्र के भी विद्यार्थी यहाँ बड़ी संख्या में आने लगे।

३ मई १९३३ को चम्पारण के जिलाधीश श्री एस० एल० मारवूड, आई० सी० एस० ने विद्यालय-भवन का शिलान्यास किया और कुछ ही महीनों में लाल भवन बनकर तैयार हो गया। दानशील सेठ हजारीमल जी ने विद्यालय-भवन तथा छात्रावास-भवन आदि बनाने में मुक्त हस्त से उस सस्ती के जमाने में २५ हजार रुपये व्यय किए।

सन् १९३२ से सन् १९४२ तक के दशक में इस विद्यालय में अनेक सुयोग्य शिक्षकों की नियुक्तियाँ हुई। श्री प्रेमचन्द्र, श्री हरिनारायण प्र०, श्री कौलेश्वर प्र० वर्मा, श्री काली प्र०, श्री मुकुन्द नाथ देव, श्री बिन्दा प्र०, श्री रघुनाथ प्र०, श्री रामदयाल पांडेय—जैसे सुयोग्य शिक्षकों नें यहाँ शिक्षा के क्षेत्र में जो कीर्तिमान स्थापित किया, वह एक लम्बी अवधि तक उज्वल रहेगा।

विद्यालय प्र० कारिणी-समिति के सचिव के रूप में स्व० श्री श्रीलाल भरतिया ने लगभग ३५ वर्षों की लम्बी अवधि में विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए जो कुछ किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। सम्प्रति श्री सगीर अहमद अध्यक्ष एवं श्री त्रिभुवन प्र० सिन्हा सचिव हैं।

तेजी से प्रगति कर रहे इस विद्यालय को १९४२ की क्रांति के समय एक जोरों का धक्का लगा। विद्यालय के छात्रों एवं प्रधानाध्यापक ने इस क्रांति में सक्रिय भाग लिया। विद्यालय का छात्रावास 'आजाद आश्रम' बना। प्रधानाध्यापक श्री सिन्हा जेल भेज दिए गए। कई महीनों तक विद्यालय बन्द रहा।

श्री प्रेमचन्द्र नये प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। स्थानीय लोगों के सहयोग से विद्यालय की स्थिति धीरे-धीरे सुधरने लगी।

सन् १९६१ में विद्यालय उच्चतर मा० विद्यालय में परिणत हुआ। छात्रों एवं शिक्षकों की संख्या में वृद्धि हुई। पर दूसरी तरफ छात्रावास-भवन ढहने लगा, उसमें झाड़-झंखाड़ उग आयी। आज विद्यालय-अहाते में प्रवेश करते ही सबसे पहले भग्नावशेष पर दृष्टि जाती है और विद्यालय की शेष खूबियाँ चरमरा जाती हैं।

वर्त्तमान शिक्षक-लिपिकों के नाम यों हैं —सर्वश्री बब्बन मिश्र, रामाद्या प्र० सिन्हा, कन्हैया प्र० (बी० एस-सी०) रामलखन प्र० गुप्त, काशीनाथ शर्मा, कन्हैया प्र० (बी० ए० आनर्स), तारकेश्वर सिंह, लक्ष्मी प्र०, सतीश चन्द्र सिन्हा, रमाकान्त झा, जनार्दन झा, गंगाधर मिश्र, रामएकबाल सिंह, बदरुल हसन, विद्यानन्द सिंह, म० रब्बानी, ज्योतिनारायण सिंह, सुखेन प्र० ठाकुर (प्र० लिपिक) एवं जयनारायण राम (स० लिपिक)

ह० उ० विद्यालय के चार प्रधानाध्यापक—

● श्री रामदयाल प्र० सिन्हा—सन् '३२ से '४२ के पूरे दशक में विद्यालय की चतुर्दिक प्रगति के लिए श्री रामदयाल प्र० सिन्हा ने एक सुयोग्य प्रधानाध्यापक के रूप में जिस निष्ठा का सुपरिचय दिया, उसे यह जनपद एक लम्बी अवधि तक स्मरण रखेगा। श्री रामदयाल प्र० सिन्हा एक सफल प्रशासक थे, एक सुयोग्य शिक्षक थे और एक सच्चे देश-भक्त थे। श्री रामदयाल प्र० सिन्हा को रक्सौल के लोगों ने विशेषतः इन्हीं रूपों में देखा था। '४२ की क्रांति में सक्रिय भाग लेने के कारण वे जेल गए और जेल से मुक्त होने पर मोतिहारी के हेकॉक एकेडमी, जिसकी हालत बड़ी बदतर हो गयी थी, प्रधानाध्यपक नियुक्त हुए और कुछ ही दिनों में उसे जिला की प्रथम श्रेणी के स्कूलों में ला खड़ा किया। उन्होंने बिहार मा० शिक्षक संघ तथा मोतिहारी-नगरपालिका के अध्यक्ष

पद को भी सुशोभित किया है। सम्प्रति मोतिहारी में सेवा-निवृत्ति का जीवन-यापन कर रहे हैं।

● श्री प्रेमचन्द्र—सन् १९३२ में ह० उ० विद्यालय, रक्सौल के एक सहायक शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारंभ करने वाले स्व० श्री प्रेमचन्द्र, इस विद्यालय के सहायक प्रधानाध्यापक हुए, प्रधानाध्यापक हुए, प्राचार्य हुए और फिर बिहार-मंत्रिमंडल में मंत्री हुए।

सन् १९४२ से १९६९ तक की अवधि में इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक के रूप में अपने सहयोगियों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए, अपनी सहिष्णुता, मृदुभाषिता, नम्रता आदि सद्गुणों का जो सुपरिचय दिया, उससे वे न केवल अपने सहयोगियों के बीच लोकप्रिय रहे, बल्कि समाज में भी उन्होंने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की। अंग्रेजी के एक सफल एवं सुयोग्य शिक्षक के रूप में उन्होंने जो कीर्तिमान स्थापित किया, वह विद्यालय के शिक्षण-इतिहास में अक्षुण्ण रहेगा। विद्यालय में सेवा-रत रहते हुए शुद्ध पत्रकारिता के प्रति उन्होंने जो रुचि दिखलाई वह भी रक्सौल के पत्रकारिता-इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

सन् १९६९ में बिहार के मध्यावधि चुनाव में श्री प्रेमचन्द्र को न केवल कांग्रेस की ओर से टिकट मिली, बल्कि पर्याप्त वोटों से विजयी भी हुए और दारोगा प्र० राय-मंत्रिमंडल में उद्योग एवं प्राविधिक विभाग के राज्य मंत्री बने।

● श्री रामयश शर्मा--९-५-१९४६ को श्री रामयश शर्मा की नियुक्ति ह० उ० विद्यालय, रक्सौल में सहायक प्रधानाध्यापक के रूप में हुई। फिर १९६९ की फरवरी से ३० जून १९७८ तक अर्थात् अपने सेवा-निवृत्ति-काल तक इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक पद पर रहे।

इस विद्यालय में श्री रामयश शर्मा का प्रथम दशक-काल कई दृष्टियों से बड़ा उज्वल रहा। गणित और भूगोल के सफल शिक्षक के रूप में इनकी ख्याति तो थी ही, अनुशासन के मामले में भी श्री शर्मा का बड़ा नाम था। चाहे खेल का मैदान हो या विद्यालय का प्रांगण—सर्वत्र श्री शर्मा की बड़ी कद्र थी। पर शिक्षा-क्षेत्र के बिगड़े माहौल तथा परिस्थितियों के अनुकूल अपने को ढाल लेने के कारण श्री रामयश शर्मा प्रधानाध्यापक के रूप में अधिक प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सके।

● श्री सत्यनारायण प्र० सिंह—हजारीमल उच्च विद्यालय के भूतपूर्व छात्र, श्री सत्यनारायण प्र० सिंह, जिन्होंने इस विद्यालय में एक सहायक शिक्षक

के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया था, १ जुलाई १९७८ से विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पद पर नियुक्त हैं। श्री सत्यनारायण प्र० सिंह ने वंशीधर उच्च विद्यालय, आदापुर में भी प्रधानाध्यापक के पद पर काम किया है। एम० ए०, डिप० एड-डिग्री-प्राप्त श्री सिंह स्थानीय व्यक्ति हैं।

● एक सेवा-निवृत्त आदर्श शिक्षक—**श्री रघुनाथ प्र०**

(जिन्होंने ४ दशकों तक विद्यालय की सेवा की)

हजारीमल उच्च विद्यालय में सन् १९३८ से एक सहायक शिक्षक के रूप में काम करनेवाले श्री रघुनाथ प्र० चार दशकों के अपने सेवा-काल में एक सुयोग्य एवं आदर्श शिक्षक के रूप में हजारों विद्यार्थियों का जीवन-निर्माण किया है और समाज के विभिन्न तबकों में प्रतिष्ठा पायी है।

अपने सेवा-काल की लम्बी अवधि में—शुरू से अन्त तक—एक-सा जीवन-यापन करनेवाले—सादा जीवन एवं उच्च विचार के हिमायती रघुनाथ बाबू शिक्षक-समुदाय में उदाहरण-स्वरूप हैं।

दुनिया के छल-छद्म से दूर, शान्त-प्रकृति एवं धार्मिक प्रवृत्ति के रघुनाथ बाबू में शिक्षकोचित अनेक गुण भरे हैं।

जून १९७८ से सेवा-निवृत्त हो आज भी रक्सौल में अनेक छात्रों का जीवन-निर्माण करते हुए निश्चिंतता का जीवन यापन कर रहे हैं। रघुनाथ बाबू आज पहले की अपेक्षा अधिक स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त हैं। ईश्वर उन्हें दीर्घायु प्रदान करें!

फूलचन्द साह मध्य विद्यालय—जुलाई १९३४ से एक फूस की झोपड़ी में मात्र छठे वर्ग से इस विद्यालय का शुभारंभ हुआ, जिसके प्रथम शिक्षक श्री ठाकुर प्रसाद वर्मा नियुक्त हुए। जनवरी '३५ से सातवें वर्ग की पढ़ाई होने लगी और प्रथम प्रधानाध्यापक श्री कन्हैया मिश्र (आई० ए०) हुए। नवम्बर १९३७ में विद्यालय के पक्के भवन का विधिवत् उद्घाटन हुआ। पर १ नवम्बर १९४१ से चम्पारण-जिला बोर्ड ने पूर्णतः इसे अपने अधिकार में ले लिया और विद्यालय का नया नाम हुआ—'फूलचन्द साह बोर्ड मिड्ल इंगलिश स्कूल।' जुलाई १९३४ से अक्टूबर १९४१ तक विद्यालय की प्र० कारिणी-समिति के अधिकारी एवं सदस्य के रूप में जो अधिक मुखर एवं क्रियाशील रहे, वे हैं—सर्वश्री वीर शमशेर सिंह, बाबूलाल राम, अशर्फी राम, सरयुग प्र० साह, लक्ष्मी प्र०, रामचन्द्र प्र०, तपेसर साह, इब्राहिम मियाँ, राधा पांडेय, दारोगा लाल, आदि।

इस विद्यालय के विगत ४५ वर्षों के लम्बे इतिहास में जिन प्रधानाध्या-

पकों एवं प्रमुख शिक्षकों ने अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं, इनमें से कुछ के नाम यों हैं—प्रधानाध्यापक : सर्वश्री कन्हैया मिश्र, सिंहेश्वर प्र०, राजेन्द्र पांडेय, युगेश्वर दत्त पाठक, महावीर मिश्र, श्रीकान्त मिश्र, मथुरा प्रसाद, सूर्य राव, रघुनाथ प्र० एवं राजेश्वर चौधुर । सम्प्रति श्री गगनदेव प्र० सिंह विद्यालय-प्रधानाध्यापक हैं। शिक्षक—सर्वश्री सूर्य सिंह, अनिरूद्ध सिंह, कंचन सिंह, उपेन्द्र नारायण मिश्र, जनार्दन पांडेय, शुकदेव सिंह, मगनी शुक्ल, आशिक हुसैन, आदि । वर्त्तमान शिक्षकों के नाम यों हैं - सर्वश्री आद्या मिश्र, ध्रुव-नारायण मिश्र, योगानन्द पांडेय, हरेन्द्र प्र०, हीरालाल प्र० यादव, वैद्यनाथ प्र० एवं म० तैयब हुसैन ।

● वर्त्तमान प्रधानाध्यापक श्री गगनदेव प्र० सिंह—श्री गगनदेव प्र० सिंह, बी० ए०, डिप० एड०-पखनाहा, छौड़ादानों एवं सिकटा के मध्य विद्यालयों में प्रधा-नाध्यापक के रूप में कार्यरत रहने के बाद जून १९७१ से रक्सौल रा० मध्य विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं । विगत ८ वर्षों से श्री सिंह विद्यालय की चतुर्दिक प्रगति के लिए जिस श्रम एवं निष्ठा के साथ काम कर रहे हैं, वह विद्यालय के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। पब्लिक स्कूलों की होड़ के बावजूद विद्यालय में छात्र-संख्या ४०० तक पहुँच गयी है, जो एक रेकर्ड है। अपने विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयत्नशील श्री गगनदेव प्र० सिंह चम्पारण जिला प्राथमिक शिक्षक-संघ के उपाध्यक्ष पद को १९७४ से सुशोभित कर रहे हैं। रक्सौल के साहित्यिक-सामाजिक कार्यकलापों में भी इनकी विशेष रुचि है ।

दयानन्द आर्य विद्यालय—सन् १९४६ में स्थानीय आर्य समाज के प्रांगण में एक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना हुई, जिसके प्रथम शिक्षक के रूप में श्री धुरन्धर झा एवं श्री रामलखन पंडित के नाम आते हैं । सन् १९५३ में श्री बी० के० शास्त्री जैसे कर्मठ एवं आर्यसमाजी विचारों से प्रभावित प्रधानाध्यापक की नियुक्ति से विद्यालय तेजी से प्रगति करने लगा। सर्वश्री रामनारायण राम, कंचन राम, गया राम, अखिलानन्द ने विद्यालय के लिए भवन बनवाए और यश के भागी बने। सन् १९७१ से श्री साधु ठाकुर इसके प्रधान हैं, जो रक्सौल अंचल प्राथमिक शिक्षक-संघ के सचिव भी हैं ।

● आर्य कन्या म० विद्यालय—श्री ओम् प्रकाश राजपाल ने अपने पूज्य पिता सुगनामल राजपाल एवं माता वीरमती के कीर्तिचिह्न-स्वरूप तथा स्व० श्री अखिलानन्द की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती देवी ने अपने स्वर्गीय पति की पुण्य स्मृति में आर्य कन्या म० विद्यालय के लिए एक एक कोठरी का

निर्माण कराया। २२ फरवरी १९६३ को विद्यालय का उद्घाटन हुआ। श्री बी० के० शास्त्री इस विद्यालय के प्रधान हैं।

कस्तूरबा कन्या उच्च विद्यालय—इस विद्यालय की स्थापना २ जनवरी १९७३ को हुई। उन दिनों विद्यालय-प्रबंध-कारिणी समिति के अध्यक्ष श्री सगीर अहमद एवं सचिव श्री शिवशंकर प्रसाद ने समिति के कुछ सक्रिय सदस्यों—जैसे डा० पी० डी० सिन्हा, श्री मुन्द्रिका सिंह, अभियंता, दिनेश त्रिपाठी आदि के सहयोग से विद्यालय की प्रगति में विशेष अभिरुचि ली। विद्यालय को कुमारी विमला शर्मा जैसी सुयोग्य प्रधानाध्यापिका मिली।

विद्यालय की नयी प्र० का० समिति के अध्यक्ष श्री रघुनाथ प्र० भरतिया, उपाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश राजपाल तथा श्री प्रह्लाद प्र०, सचिव श्री दुखभंजन प्र० एवं उपसचिव श्री भरत प्र० हैं। विद्यालय को अब अपना पक्का भवन है। सम्प्रति विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती दमयंती देवी बरनवाल हैं।

रक्सौल-नगरपालिका-क्षेत्र के अन्तर्गत चलने वाले अन्य दो प्रमुख विद्यालय हैं—श्री हरिहर प्रसाद राजकीय मध्य विद्यालय, तुमड़िया टोला तथा रेलवे मध्य विद्यालय, रक्सौल। तुमड़िया टोला-निवासी श्री हरिहर महतो ने लगभग १५ हजार रुपये व्यय कर तुमड़िया टोला में एक उच्च प्राथमिक विद्यालय की नींव डाली। सन् १९७१ से यह विद्यालय मध्य विद्यालय में प्रोन्नत है। सम्प्रति श्री रामाज्ञा राम विद्यालय के प्रधानाध्यापक हैं।

रेलवे मध्य विद्यालय—रेलवे कॉलोनी में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय, जो रेलवे-कर्मचारियों-अधिकारियों के सहयोग से चला, बाद में मध्य विद्यालय में प्रोन्नत हो गया। सहायक शिक्षक श्री कुलानन्द झा को विद्यालय के उद्भव और विकास में विशेष श्रेय प्राप्त है।

स्वतन्त्र विद्यालय—इन दिनों रक्सौल में स्वतन्त्र विद्यालयों (पब्लिक स्कूलों) की धूम है। जैसे-जैसे रक्सौल नगर का विकास होता गया है, नये-नये विभाग खुलते गए हैं, सरकारी अधिकारियों—कर्मचारियों की संख्या बढ़ती गयी है, वैसे-वैसे पब्लिक स्कूलों की संख्या में वृद्धि हुई है। सम्प्रति रक्सौल में चलने वाले ऐसे विद्यालय हैं—पशुपति आदर्श शिक्षालय, भारतीय विद्या मंदिर, भारत-नेपाल शिशु-मंदिर, विद्या-निकेतन, भारत-नेपाल आदर्श विद्यालय, संत मेरीज स्कूल, ज्ञान भारती, आलोक भारती, बाल भारती, सरस्वती विद्यालय, नव ज्योति आदर्श विद्यालय, बौद्धिक विकास विद्यालय, (इन दिनों बन्द), बेबी लैंड एकेडमी, जे० पी० आदर्श शिक्षालय, जय शंकर विद्यालय और मस्करा मॉडर्न इन्स्टीच्यूट। इनमें से ५-६ विद्यालय छात्रा-

वास-युक्त हैं। इन विद्यालयों में कुल मिलाकर लगभग दो हजार छात्र विद्याध्ययन करते हैं। इन विद्यालयों द्वारा ८० से ऊपर शिक्षकों की जीविका चलती है। पर कुछ विद्यालयों की आर्थिक स्थिति बड़ी नाजुक है।

को-ऑपरेटिव कोचिंग-सेन्टर—सन् १९७९ के जनवरी माह से कोइरिया टोला में हाई स्कूल स्तर के छात्रों को स्वतंत्र रूप से पढ़ाने के लिए 'को-ऑपरेटिव कोचिंग सेन्टर' के नाम से एक शिक्षा-केन्द्र की स्थापना हुई है, जिसके प्रधान श्री जनार्दन प्रसाद हैं। इस कोचिंग सेन्टर को कतिपय स्थानीय शिक्षकों का सहयोग प्राप्त है। सम्प्रति छात्रों की संख्या ५० है।

धार्मिक विद्यालय—मखतब-रक्सौल-स्थित मस्जिद में चौथे दशक के प्रारंभ से ही एक मखतब स्थापित हैं, जिसमें रक्सौल के इर्द-गिर्द के अल्पवयस्क मुसलमान छात्र धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन करने के अतिरिक्त हिन्दी-हिसाब भी पढ़ते हैं।

● मदरसा-मस्जिद में ही लगभग सन् १९५५ से संचालित 'मदरसा जहीरूल इस्लाम' के संस्थापक-शिक्षक स्व० मौ० अब्दुल मन्नान, मौ० उस्मान, हाफिज जैनुल आबदीन के प्रयास से आज इस मदरसे की संतोषजनक है। मदरसे की ओर से ३० छात्रों के निःशुल्क निवास तथा भोजन की व्यवस्था है। मैट्रिक स्तर तक शिक्षण देनेवाले इस मदरसे में हिन्दी, अंग्रेजी, हिसाब की पढ़ाई के अतिरिक्त धार्मिक पुस्तकों के शिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है। शुरू से ही श्री जहीर हसन साहब इसके सदर हैं। सम्प्रति श्री बदरुल हसन का इस मदरसे को विशेष सहयोग प्राप्त है।

● मदरसा जयायुल उलुम, परेउआ—रक्सौल-अंचल-कार्यालय से सटे इस मदरसे की स्थापना १९६७ ई० में हुई, जिसके संस्थापकों में मौ० नजीर अहमद, स्व० म० जहीर, अब्दुल मजीद, म० अफजल, अब्दुल गनी, म० खलील, म० शफी, हाफीज अफजल आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। अभी शिक्षकों की संख्या ६ तथा छात्रों की संख्या ५० है, जिनके निःशुल्क निवास एवं भोजन की व्यवस्था है। इसके सदर हाफीज अफजल साहेब हैं।

● मसीही शिक्षा-केन्द्र—डंकन अस्पताल, रक्सौल के अहाते के अन्तर्गत पिछले ७-८ वर्षों से संचालित मसीही शिक्षा-केन्द्र में बाजार के भी छात्र पढ़ते हैं। यह सही है कि इस विद्यालय की पृष्ठभूमि धार्मिक है, पर छात्रों को शिक्षा-विभाग के पाठ्यक्रम के अनुसार ही शिक्षा दी जाती है। श्री ऋषि राम आचार्य इसके संचालन में विशेष अभिरुचि लेते रहे हैं।

● आर्य समाज विद्यालय बच्चों में आर्य समाजी विचारों के बीजारोपण के

स्थानीय सहयोग के अतिरिक्त सरकारी अनुदान की भी अपेक्षा करती है ।

सम्प्रति महाविद्यलय में विद्यार्थियों की संख्या लगभग ५००, प्राध्यापकों की संख्या १२ तथा अन्य कर्मचारियों की संख्या ९ है । विगत आठ वर्षों से प्राचार्य, प्राध्यापक एवं अन्य कर्मचारी जो अवैतनिक सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं, उन्हें इसके लिए वस्तुतः साधुवाद मिलना चाहिए । महाविद्यलय की प्रगति के लिए शुरू से ही पं० राधा पांडेय, श्री लालपरेखा मिश्र, प्राचार्य श्री ज्वाला प्र० श्रीवास्तव और प्राध्यापकों में श्री पृथ्वीचन्द्र प्र० जो श्रम कर रहे हैं, उसे भुलाया नहीं जा सकता ।

सचिव श्री कृष्ण लाल अग्रवाल हैं । सम्प्रति कार्यरत प्राध्यापकों के नाम यों हैं – सर्वश्री पृथ्वीचन्द्र प्र०, गंगा प्र०, नारायण जी झा, महेश्वर झा, ब्रजनन्दन प्र०, रामचन्द्र प्र० गुप्त, रघुनाथ प्र०, विजय कुमार पांडेय, रतिरंजन प्र० श्रीवास्तव, बालकृष्ण दास और भाई राजा जोशी ।

१६. साहित्य-साधना की जलती लौः पत्रकारिता के उभरते स्वर

रक्सौल के साहित्यिक उषाकाल में ब्रजभाषा में लिखनेवाले स्व० श्री गणेश प्रसाद 'निर्भीक', श्री रामरूप सिंह (जोकियारी) और श्री ब्रह्मदेव राम 'निगम' के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने बहुत कुछ लिखा, बहुतों को लिखना सिखलाया। श्री 'सनेही' के सम्पादकत्व में कानपुर से प्रकाशित होनेवाली साहित्यिक पत्रिका 'सुकवि' में प्रथम दो कवियों की रचनाएँ सन् १९२९-३० में ही प्रकाशित होने लगी थीं। उन दिनों समस्या-पूर्ति के माध्यम से कवित्व निखारने का प्रचलन था। सुकवि के अप्रैल १९३३ के अंक में प्रकाशित स्व० श्री गणेश प्र० 'निर्भीक' की एक शृंगार-परक समस्या-पूर्ति का जायका आप भी लें —

बैठी वियोगिनी थी जो अटा पर आवत देख लियो पति राह में
शोक-वियोग को भूल गई अस मग्न भई निरभीक उछाह में
दौरि कपाट को खोल्यो झटाक सों पीतम सों मिलिबे की सुचाह में
पाइ पिया-पद धाइ परि नहीं बोली सकी परि प्रेम-प्रवाह में।

'सुकवि' के ही मई-'३३ के अंक में उनकी प्रकाशित भक्तिमूलक एक अन्य रचना —

कासी प्रयाग में बास नहीं पुनि गंगा की धार में ना बहते हैं
मन्दिर में न रहें मसजीद में पाठ और पूजा नहीं चहते हैं
हैं न कहीं अरू हैं सिगरे थल संत सभी श्रुति ये कहते हैं
पावन प्रेम हिये जिसके तिनके ढिग राम सदा रहते हैं।

'सुकवि' के सितम्बर १९३३ के अंक में श्री रामरूप सिंह, जोकियारी की प्रकाशित एक रचना —

बिन जानेइ आज अजान गई सखि ! काह कहौं जमुना तट की
उत साँवरो एक अहीर को छोकरो ठाढ़ भयो छहियाँ बट की
पट पीत कसे मुरली कर में मुख पै छवि छाय रही लट की
थिर नैनन देखि बुलाय रह्यो मोहि इंगित सों पियरे पट की।

स्व० श्री गणेश प्र० निर्भीक' के सुपुत्र श्री दुखभंजन प्रसाद के सौजन्य से मुझे 'सुकवि' के जो ६०-७० पुराने अंक प्राप्त हुए, उनमें से दर्जनों में

उपर्युक्त दोनों कवियों की रचनाएँ प्रकाशित हैं। अन्य कई श्रोतों से जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं, उनसे भी यह स्पष्ट है कि उन दिनों ये दोनों कवि काव्य-रचना में बड़ी अभिरुचि लेते थे।

'सुकवि' के मई-'३१ अंक में प्रकाशित जोकियारी के ही एक अन्य कवि श्री अशोक नारायण 'बंजुल' की एक रचना—

आनन चरन कर मंजुल सलिल जात ग्रीवा चारु शंख सीप श्रवन सुघर है
चिकुर शैवाल दृग सफरी मृनाल बाहें बदन को तिल बैठ्यो कंज पै भ्रमर है
श्रोणि मनोहर तट त्रिला सो अगम्य जल चक्रवाल 'बंजुल' युगल पयोधर है
पंचसर बान सो तपित तन जाको भयो ताके हित लागि विधि रच्यो रम्य सर है

'सुकवि' के जनवरी १९३१-अंक में मोतीलाल नेहरू के निधन पर स्व० श्री दारोगा लाल, हरैया की 'शोक' शीर्षक से प्रकाशित एक कविता—

तन, मन, धन कुल देश को दियो है दान,
दानी कर्ण भूप सो प्रकट जस छै गयो।
शिव सो प्रनत पाल जानत जहान सब,
आत्म त्यागि जन में जनक सम ह्वै गयो॥
वैभव विहीन इस हिन्द का दुलारा मोती,
लाल सम लाल जो पै सत्तर बितै गयो।
हिया हहरत मुख हाय निकरत नाहीं,
सुनि 'लाल' हिन्द का दुलारा मोती खवै गयो॥

राष्ट्रीय विद्यालय, रक्सौल के भूतपूर्व शिक्षक स्व० श्री जंगबहादुर लाल की राष्ट्रोत्थान-संबंधी अनेक रचनाओं में से एक बानगी के तौर पर—

जाहु लला प्रिय मोहन के ढिग कांग्रेस-कार्य में हाथ बटैयो,
शांति सों काम कर्‌यो निसिवासर सत्तु भुजा मिले प्रेम से खैयो,
वस्त्र विदेसी औ दारू दूकान पै हानि रु लाभ की बात बतैयो,
बैन कटू कहिके सुत हे! कबहूँ कहूँ काहू को जी न दुखैयो॥

स्व० श्री ब्रह्मदेव राम 'निगम' की ब्रजभाषा में लिखी अनेक रचनाएँ २-३ वर्ष पूर्व तक प्राप्य थीं, पर वह बहुमूल्य पांडुलिपि आज अनुपलब्ध है।

स्व० श्री मदन मोहन गुप्त सन् १९३५-३६ में ही काव्य के प्रति अनुरक्त हो गए थे, जब वे हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के ८वें, ९वें वर्ग के छात्र थे। स्व० श्री गणेश प्र० 'निर्भीक' एवं स्व० श्री गुप्त में उन दिनों बहुधा कविता के माध्यम से ही पत्राचार हुआ करता था। श्री गुप्त द्वारा लिखे वैसे बहुत सारे पत्र स्व० श्री 'निर्भीक' के घर में लगभग एक दशक पूर्व तक

सुरक्षित थे ।

स्व० श्री गुप्त यदि पत्रकारिता की ओर उन्मुख न हुए होते तो एक लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार होते, इसमें संदेह नहीं । फिर भी उनकी बहुत सारी रचनाएँ उपलब्ध हैं । श्री रमेशचन्द्र झा ने उनमें से कुछ महत्व की रचनाओं को अपनी पुस्तक—'स्मृति के फूल : श्री मदनमोहन गुप्त' के रचना-खंड में 'कुछ गीत : कुछ कविताएँ' शीर्षक से प्रकाशित किया है । विभिन्न भाव-भूमि पर आधारित ये रचनाएँ, जिनकी संख्या इस पुस्तक में ३० से ऊपर होगी, स्व० श्री गुप्त की काव्य-प्रतिभा की परिचायक हैं । इन रचनाओं में ब्रजभाषा की भी रचनाएँ हैं और खड़ी बोली की भी ।

रक्सौल के साहित्यिक वातावरण को एक गति मिली, जब रक्सौल, ह० उ० विद्यालय में सन् १९४० के आस-पास कविवर श्री रामदयाल पांडेय (भूतपूर्व अध्यक्ष, बिहार-हिन्दी साहित्य-सम्मेलन) की हिन्दी-शिक्षक के पद पर नियुक्ति हुई । जिस विद्यार्थी में श्री पांडेय को साहित्य के प्रति थोड़ी भी अभिरुचि दिखलाई पड़ी, वे उसके साहित्य-सृजन में लग गए । श्री मदनमोहन गुप्त श्री रमेशचन्द्र झा, श्री यादव चन्द्र पांडेय, श्री शंकर लाल मस्करा, प्रभृति व्यक्तियों के साहित्यिक निर्माण में कविवर श्री रामदयाल पांडेय का बहुत बड़ा योगदान है ।

ह० उ० विद्यालय, रक्सौल में श्री पांडेय की प्रेरणा से स्थापित हिन्दी साहित्य-परिषद् के तत्वावधान में वर्षों आयोजित होने वाली 'भारतेन्दु-जयन्ती के अवसर पर जो कवि-सम्मेलन सम्पन्न होते रहे, उनसे सचमुच रक्सौल का साहित्यिक वातावरण प्राणवंत हो उठा । इस साहित्य-परिषद् की स्थापना के साथ ही रक्सौल के इतिहास में पहली बार रक्सौल के छात्रों के साथ नागरिकों को बडे पैमाने पर आयोजित किसी कवि-सम्मेलन में सम्मिलित होने तथा विद्वान वक्ताओं के साहित्यिक भाषण सुनने का अवसर प्राप्त हुआ । इस परिषद् के स्थापना-काल के प्रथम दशक में इन साहित्यिक आयोजनों एवं कवि-सम्मेलनों की धूम थी । पर धीरे-धीरे अभिरुचि में कमी आती गयी और यह संस्था आज मृतप्राय है ।

हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के उपर्युक्त छात्र-कवियों के अतिरिक्त एक और छात्र-कवि का नाम उभरकर सामने आता है, जिन्होंने हिन्दी-जगत् में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है । वे हैं श्री बालकृष्ण उपाध्याय, जो आज दिल्ली की किसी साहित्यिक संस्था से संबद्ध हैं ।

सन् १९५२ में रक्सौल रेलवे स्टेशन में पदस्थापित यात्री-बन्धु श्री सूर्य

कुमार शास्त्री के प्रयास से 'नगपति नागरी निकेतन' नाम से रक्सौल में एक साहित्यिक संस्था का उद्भव हुआ था, जिसके संचालन में ह० उ० विद्यालय, रक्सौल के हिन्दी-शिक्षक एवं पूर्वी चम्पारण जिला-माध्यमिक शिक्षक संघ के वर्त्तमान सचिव श्री बब्बन मिश्र का योगदान प्राप्त था। पर शास्त्री जी के स्थानान्तरण के साथ ही यह संस्था मृत हो गयी।

पिछले दो दशकों में पूरे नगर के पैमाने पर रक्सौल में जो साहित्यिक जागरण आया, उसका बहुत बड़ा श्रेय श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद वर्मा को जाता है।

हिन्दी साहित्य-परिषद्, रक्सौल–श्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा ने रक्सौल के कुछ ऐसे नवयुवकों को संगठित किया, जिनमें हिन्दी साहित्य के प्रति कुछ अनुराग था। सन् १९६१ में रक्सौल-हिन्दी साहित्य-परिषद् का बाजाप्ता गठन हुआ। इस हिन्दी साहित्य-परिषद् के संदर्भ में द्वितीय पक्ष, जून १९७४ की 'सेतु' पाक्षिक पत्रिका में इस पुस्तक के लेखक द्वारा लिखे 'सम्पादकीय' का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—"सन् १९६२ के मई मास में सम्प्रति बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० श्याम नन्दन किशोर के कर-कमलों द्वारा रक्सौल-हिन्दी साहित्य-परिषद् का विधिवत् उद्घाटन हुआ। तब से सार्वजनिक संस्था आर्य समाज, रक्सौल के प्रांगण में हिन्दी साहित्य-परिषद् के तत्वावधान में अनेक कवि-सम्मेलन आयोजित हुए, कई साहित्यिक गोष्ठियाँ सम्पन्न हुईं। समय-समय पर चोटी के कवियों-साहित्यकारों को इस मंच ने एकत्र किया, और नगर में साहित्य की पीयूष धारा प्रवाहित की। लोग साहित्यिक वातावरण में आकंठ डूबने लगे। इस व्यवसाय - प्रधान स्थान की गहमागहमी में साहित्य ने शीतलता प्रदान की, एन नयी चेतना जाग्रत की। साहित्य के विस्तृत आयाम ने लोगों को छोटी-मोटी बातों से दूर हटाकर सोचने-समझने के लिए एक मंच दिया। परिषद की मुख पत्रिका 'नीलिमा' ने साहित्य के सर्जनात्मक क्षेत्र में अहम् भूमिका अदा की। पुराने और सिद्धहस्त रचनाकारों के साथ नये हस्ताक्षर भी सामने आये। एक तरह से अध्ययन–लेखन का वातावरण सृजित हुआ। लगा कि रक्सौल चम्पारण जिला में बाजी मार जायेगा। सर्वश्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा गगनदेव प्र० सिंह, तुलसी प्र० अरुण, बी० के० शास्त्री, ब्रह्मदेव प्र० 'पुष्कर', आदि उत्साही युवकों के साथ इन पंक्तियों के लेखक को भी कुछ अंश में अपना सहयोग प्रदान करने का अवसर मिला। हमें भलीभांति स्मरण है कि इन पाँच-सात वर्षों में इन सहयोगियों में जो वैचारिक समता थी, एक दूसरे

के लिए त्याग की जो उत्कट भावना थी, परिषद् के कार्यक्षेत्र को विस्तृत एवं जन-प्रिय बनाने की जो एक ललक थी, वह धीरे-धीरे कम होने लगी और अन्त में इस संस्था का भी वही हश्र हुआ, जो आज के वातावरण में आम संस्थाओं का होता है। माना कि इन प्रारंभिक स्तंभों में से कुछेक की दीर्घकालीन अस्वस्थता, कुछेक का रोजी-रोटी के चक्कर में बुरी तरह फंसना, आदि इस परिषद् में आयी निष्क्रियता के कारण हो सकते हैं, पर हमें लगता है, उससे भी ताकतवर कुछ अन्य कारण हैं और वे हैं आठवें दशक के प्रारंभिक वर्षों में इस संस्था में कुछ नये तत्वों का प्रवेश, पदों के लिए आपसी टकराव, स्वार्थपरता, ईर्ष्या, जलन जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ। परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों, आज वर्षों से यह साहित्यिक संस्था निस्तेज है, निष्प्राण है।"

इस 'सम्पादकीय'को लिखे आज पाँच वर्ष गुजर गए हैं। हाँ, इस सम्पादकीय' का प्रतिफल यह हुआ कि श्री अनिल कुमार 'अनल' के प्रयत्नों से हिन्दी साहित्य-परिषद् , रक्सौल पुनर्जीवित हो उठी। एक-दो साहित्यिक आयोजन भी हुए। स्व० श्री श्रीलाल भरतिया का निधनोपरांत अभिनन्दन-समारोह हुआ और उस अवसर पर परिषद् की मुख पत्रिका 'नीलिमा' का प्रकाशन भी।

रचना और रचनाकार

(पुस्तकें : रचनाएँ : पांडुलिपियाँ)

स्व० श्री गणेश प्रसाद 'निर्भीक एवं श्री रामरूप सिंह, जोकियारी की रचनाओं का, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं आदि में बिखरी पड़ी हैं, संकलन किया जाय तो वे पुस्तक का रूप धारण कर सकती हैं। स्व० श्री मदनमोहन गुप्त की कुछ रचनाओं का संकलन हुआ है, इसकी पहले चर्चा आ चुकी है।

स्व० श्री ब्रह्मदेव राम ' निगम ' की रचनाओं की पांडुलिपि अनुपलब्ध है, पर इतना अवश्य है कि उनकी अधिकांश रचनाएँ ब्रजभाषा में थीं। कुछ कविताओं में राष्ट्रीयता, कुछ में शृंगारिकता तथा अधिकांश रचनाओं में धर्म के वाह्याडम्बर पर सीधा आक्षेप था।

श्री अशोक नारायण ' बंजुल', श्री दारोगालाल और श्री जंगबहादुर लाल की रचनाओं की चर्चा भी ऊपर आ चुकी है।

● श्री तुलसी 'अरुण'—ह० उ० विद्यालय, रक्सौल में मात्र ९ वें वर्ग तक शिक्षा-प्राप्त श्री तुलसी 'अरुण' ने स्वाध्याय और साधना के बल पर साहित्य-क्षेत्र में जो कुछ प्राप्त किया है, उतना बहुत कम लोग प्राप्त कर पाते हैं। ढेर सारे उपन्यास एवं कहानियों को पढ़ जाने वाले श्री तुलसी ' अरुण ' की

भाषा में प्रवाह है, विचारों में सफाई है और शैली में निखार है। दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं में श्री 'अरुण' अब तक छप चुके हैं। उनकी कहानियाँ एवं कविताएँ बड़े चाव से पढ़ी गयी हैं। श्री 'अरुण' द्वारा लिखित दो दर्जन से अधिक उपन्यासों की पांडुलिपियाँ वर्षों से प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। साधन और 'पहुँच' के अभाव में पठनीय सामग्री भी प्रकाशित होने से वंचित रह गयी है। श्री तुलसी 'अरुण' रक्सौल के एक मात्र साहित्यकार हैं, जिन्होंने हजारों पृष्ठ लिखे हैं और बहुत सफाई के साथ लिखे हैं।

सर्वश्री रमेशचन्द्र झा, शंकर लाल मस्करा, बालकृष्ण उपाध्याय, विश्वनाथ प्र० (मुरला) यादवचन्द्र पांडेय जैसे उच्च कोटि के कवि-लेखक यद्यपि आज रक्सौल में नहीं हैं, परन्तु उनके साहित्यकार ने निश्चय ही रक्सौल को मिट्टी से प्रेरणा ग्रहण की है, अपने को सजाया-संवारा है। आज भी इन साहित्यकारों का रक्सौल से आत्मीय संबंध हैं। वे यहाँ की पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं और यहाँ के साहित्यिक आयोजनों-समारोहों में यदाकदा स्नेहपूर्वक सम्मिलित होते हैं।

५० से अधिक पुस्तकों के प्रणेता श्री रमेशचन्द्र झा के ऊपर रक्सौल को गर्व है कि ह० उ० विद्यालय, रक्सौल की मिट्टी ने ऐसे सशक्त रचनाकार का निर्माण किया है।

प्रकाशित पुस्तकें —

- कुछ गीत : कुछ कविताएँ स्व० श्री मदन मोहन गुप्त
- ढलता हुआ सूरज — श्री उमेशचन्द्र-(भूतपूर्व उपाधीक्षक-विक्रय कर, विभाग, रक्सौल)
- नया जागरण संदेश — नन्दलाल 'इन्कलाबी'
- गीतों की आवाज — ,,
- सामान्य ज्ञान — श्री ध्रुव प्रसाद, रक्सौल
- तोहफए इस्लाम (उर्दू)—म० बदरुल हसन (शिक्षक)
- तोहफए हज — (उर्दू) ,, ,,
- तिलक और इसलाम (उर्दू) ,, ,,
- रक्सौल : अतीत और वर्त्तमान — कन्हैया प्रसाद

अप्रकाशित पुस्तकें :—

श्री तुलसी 'अरुण' के अप्रकाशित उपन्यास, जिनकी पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं— दर्द (१९५४), क्षणिक मुस्कान ('५४), दीवाना—दो खंडों में, ('५५), कलाकार ('५५), वेणी ('५५), नदी का तट ('५६), झोंपड़ी का चिराग ('५५), शलभ

('५६), राकेश ('५६), अश्क ('५६), सिंदूर ('५७', मस्त नजर ('५७), निष्ठुर ('५७), कब्र पर ढले दो आंसू ('५८), प्रेम और रोटी ("५८), अपने और सपने ('५९', प्रगति के पथ पर ('५९), जिन्दगी की फरियाद ('५९), गांधी का सपना ('५९), गाँव की कहानी ('६०), स्वप्निल प्रेम ('६१', प्रतिकार ('६१), प्यार का भूत ('६२', नटनी-दो खडों में ('६३-'६४), एक म्यान दो तलवारें ('६४) सूखा दरख्त (६५), सहज और शुभ ('६७), चम्पा केसर ('६१)।

- विश्वास—गगनदेव प्रसाद सिंह
- इनसे मिलिए—कन्हैया प्र० (विदेशियों से ली गई अन्तर्वीक्षाओं पर आधारित)
- कुछ स्फुट विचार— ,, (कुछ सम्पादकोय एवं अग्रलेखों का संकलन)
- सरगम के स्वर -श्री ब्रह्मदेव पुष्कर

पत्रकारिता

रक्सौल में पत्रकारिता गोबिन्दगंज थानान्तर्गत संग्रामपुर-निवासी स्वर्गीय

● **प० राधाकृष्ण मिश्र** 'विजय' के रक्सौल-आगमन के साथ ही आयी। श्री राधाकृष्ण मिश्र 'विजय' यहाँ लगभग तीसरे दशक के अन्त में एक शिक्षक के रूप में पहुँचे थे। इसके पूर्व 'विजय' जी इलाहाबाद में 'विद्यार्थी' साप्ताहिक से सम्बद्ध रहे, मदन मोहन मालवीय के सम्पर्क में आए और फिर, गांधी जी द्वारा ढाका के बरहवा लखनसेन में स्थापित विद्यालय में अपनी सेवाएँ दीं। राष्ट्रीयता की भावनाओं से भरे विजय जी पत्रकार-प्रवर स्व० श्री देवव्रत शास्त्री के भी निकट सम्पर्क में आए।

रक्सौल में आते ही 'विजय' जी ने सम्वाद-प्रेषण का काम शुरू कर दिया। पर वे श्रमजीवी पत्रकार कभी नहीं रहे। अध्यापन जीविका का साधन था और पत्रकारिता मनोरंजन का मात्र एक शगल।

रक्सौल में 'विजय' जी के आने के पूर्व 'एक सम्वाददाता' के रूप में कुछ लोग समाचार-पत्रों में सम्वाद भेज देते थे और वे संवाद छप भी जाते थे। उन दिनों रक्सौल का न तो कोई महत्व था, न ही विशेष महत्व के सम्वाद होते थे।

'विजय' जी ने 'नवशक्ति के सम्वाददाता के रूप में बहुत दिनों तक काम किया। 'नवराष्ट्र', राष्ट्रवाणी आदि पत्रों से भी सम्बद्ध हुए।

● **श्री प्रेमचन्द्र**—हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक स्व० श्री प्रेमचन्द्र ने सन् १९४० के पूर्व ही पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया था। रक्सौल से ए० पी० आई० (एसोशिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया)

तथा फिर पी० टी० आई० (प्रेस ट्रस्ट ऑफ इन्डिया) के प्रतिनिधि के रूप में लगभग तीन दशकों तक स्व० श्री प्रेमचन्द्र ने जिस शालीनता के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया, वह लम्बे समय तक स्मरण किया जायेगा। पत्रकारिता के अनुरूप विशिष्ट व्यक्तित्व से युक्त, अंग्रेजी भाषा के अच्छे जानकार श्री प्रेमचन्द्र ने बिहार-मंत्रिमंडल में सम्मिलित होने के पूर्व तक, यानी १९६९ ई० तक, पत्रकारिता के दायित्व का बखूबी निर्वाह किया।

● **श्री मदन मोहन गुप्त**—श्रमजीवी पत्रकार के रूप में रक्सौल में काम करनेवालों में स्व० श्री मदन मोहन गुप्त का नाम सर्वप्रथम आता है। स्व० श्री मदन मोहन गुप्त ने मात्र मैट्रिक तक शिक्षा पायी थी, पर साहित्य के प्रति विशेष आकर्षण होने के कारण हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बखूबी काम करने लगे थे। श्री गुप्त के पत्रकार-जीवन का आरंभ १९४५ ई० के आसपास से होता है। परन्तु मात्र ६ वर्ष ही रक्सौल में पत्रकारिता से सम्बद्ध रहने के बाद १९५१ ई० के आसपास नेपाल की राजधानी काठमांडू जा बसे। श्री रमेशचन्द्र झा की पुस्तक 'स्मृति के फूल : श्री मदन मोहन गुप्त' के अनुसार—"भैया सर्वप्रथम नेपाली गोरखापत्र के वैतनिक सम्वाददाता नियुक्त हुए, फिर अंग्रेजी 'स्टेट्समैन' के प्रतिनिधि तथा यू० पी० आइ०, पी० टी० आई० जैसे प्रसिद्ध समाचार-संस्थान से सम्बद्ध हो गए। एसोशियेटेड प्रेस तथा एजेन्स फ्रांस प्रेस के लिए अपनी पत्नी चन्द्रावती आर्या के नाम से काम करना शुरू किया। नित नयी सफलता के चरण मिलने लगे। बहुत अच्छी अंग्रेजी लिखने-बोलने के साथ ही राजनीति का सम्यक् ज्ञान भी सफलता की देहरी तक ले गया।

यूनाइटेड प्रेस ऑफ इन्डिया के तिरोहित होने के बाद प्रसिद्ध अमरीकी समाचार-संस्थान यूनाइटेड प्रेस इन्टरनेशनल के विशेष प्रतिनिधि मनोनीत हुए। यह संभवतः तब की बात है जब नेपाल संसार के राजनीतिक ज्ञान स अलग-सा था। नेपाल के तत्कालीन महाराजाधिराज श्री त्रिभुवन वीर विक्रम शाह ने यूनाइटेड प्रेस इन्टरनेशनल से आग्रह किया कि वह नेपाल के लिए विशेष रूप से 'प्रेस' (समाचार-मंच) की व्यवस्था करे। यही प्रेरणा भाई मदन मोहन गुप्त को काठमांडू ले गयी, यूनाइटेड प्रेस इन्टरनेशनल के विशेष प्रतिनिधि के रूप में।"

● **श्री जगत् नारायण साह**—सन् १९४६–'४७ के आसपास रक्सौल में एक अन्य पत्रकार का उद्भव हुआ—श्री जगत्नारायण साह का,

जिन्हें ईश्वर ने अल्पायु में ही हमसे छीन लिया। कम पढ़े-लिखे (मिड्ल उत्तीर्ण), मिष्टभाषी तथा सामाजिक कार्यकलापों में अभिरुचि लेनेवाले श्री जगत् नारायण साह में पत्रकारिता के लिए समर्पण की भावना थी—एक उत्साह था। बनारस से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आज' तथा पटना से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आर्यावर्त्त' का रक्सौल से प्रतिनिधित्व करनेवाले श्री साह सन् १९५५ के आसपास टाइफायड से पीड़ित हो कालकवलित हो गए।

● **श्री श्रीनिवास मस्करा**—रक्सौल के श्री श्रीनिवास मस्करा ने सन् १९५० में पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। 'हिन्दुस्तान-समाचार', 'प्रदीप' एवं 'आर्यावर्त्त' के सम्वाददाता के रूप में वर्षों इन्होंने रक्सौल का प्रतिनिधित्व किया। सन् १९५२-५३ में श्री मस्करा चम्पारण जिला-सम्वाददाता संघ के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए और सन् १९५६ में हिन्दुस्तान समाचार की ओर से पटना में आयोजित बिहार प्रांतीय पत्रकार-सम्मेलन में भाग लिया। आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त श्री मस्करा को संवाद-संकलन में विशेष सफलता मिली। सम्प्रति श्री मस्करा निज के समाचार-पत्र से सम्बद्ध हैं।

● **श्री गणेश प्रसाद**—सन् १९५० से सन् १९६० के दशक में रक्सौल में जो दो-तीन व्यक्ति पत्रकार के रूप में उभरे, उनमें एक श्री गणेश प्रसाद का भी नाम आता है। यह मानना पड़ेगा कि जितनी कम उम्र में श्री गणेश प्र० ने पत्रकारिता की देहलीज पर कदम रखे और जिस अल्पावधि में पत्रकारिता के क्षेत्र में छा गए, बहुत कम लोग छा पाते हैं। अपने पत्रकार-जीवन के प्रारंभिक वर्षों में श्री गणेश प्र० कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाले 'सन्मार्ग' तथा पटना से प्रकाशित होनेवाले 'नवराष्ट्र' से सम्बद्ध रहे। फिर वर्षों हिन्दुस्तान समाचार, 'इन्डियन नेशन', एवं 'सर्चलाइट' का रक्सौल से प्रतिनिधित्व किया। श्री गणेश प्रसाद चम्पारण जिला-सम्वाददाता-संघ से भी वर्षों सम्बद्ध रहे। पिछले कुछ वर्षों से पत्रकारिता के प्रति उनकी कोई खास दिलचस्पी नहीं रह गई है।

● **श्री गोपाल प्रसाद**—पत्रकारिता से संबंधित पूछे गए कुछ प्रश्नों के उत्तर में श्री गोपाल प्रसाद द्वारा प्रेषित पत्र के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं—"... ... ... व्यक्तिगत व्यस्तता और कुछ हद तक थोथे आदर्श का प्रतिपादन करनेवाले आज के पत्रों से उत्पन्न वितृष्णा के कारण एक अंतराल से सक्रिय पत्रकारिता से अलग हूँ। सब कुछ विस्मृत होने लगा है अब तो। ... ... " आठ वर्ष की उम्र से व्यावसायिक वातावरण में नौकरी

करते हुए साहित्य की ओर कब और कैसे आकर्षित हुआ, यह तो याद नहीं, पर पत्रकारिता की शुरुआत सन् १९५९-'६० में हुई ।

श्री जगत्नारायण साह के निधन के पश्चात् दैनिक आर्यावर्त्त को शौकिया तौर पर कुछ समाचार भेजे और सम्वाददाता के रूप में नियुक्ति के लिए आवेदन-पत्र दे दिया । आर्यावर्त्त ने सन् १९६० में मुझे रक्सौल से अपना सम्वाददाता नियुक्त कर लिया । उन दिनों आर्यावर्त्त में प्रकाशित 'चम्पारण की चिट्ठी' मैं हीं लिखा करता था । सन '६० से सन् '७३ के मध्य तक आर्यावर्त्त से जुड़ा रहा । ··· ··· 'आर्यावर्त्त' के अलावा दैनिक विश्वबन्धु, साप्ताहिक चाणक्य तथा स्थानीय पत्रों में भी छपता रहा हूँ। एक अपना अखबार निकालने की लालसा रही थी, पर पहले तो नौ मन तेल न रहा फिर अखबारों की दुनिया में खाने के दांत और दिखाने के दांत और देखे तो 'भरम' टूट गया ।"

● **श्री रामेश्वर तिवारी**—रामगढ़वा, उच्च विद्यालय के शिक्षक श्री तिवारी पिछले एक दशक से रक्सौल की पत्रकारिता से निष्ठा के साथ जुडे हैं । रक्सौल से पी० टी० आई० एवं टाइम्स ऑफ इन्डिया का प्रतिनिधित्व करने वाले तिवारी जी आर्यावर्त्त, इन्डियन नेशन और सर्चलाइट के भी सम्वाददाता हैं । पत्रकारिता के लिए समर्पित नवयुवक पत्रकार श्री तिवारी बिहार के पत्रों के अतिरिक्त भारत की अन्य कई पत्र-पत्रिकाओं से भी सम्बद्ध हैं । चम्पारण-जिला सम्वाददाता-संघ के अलावा अन्य कई संस्थाओं से जुडे श्री तिवारी के पास आज भी काफी ऊर्जा है, जिससे काम के बोझ से वे कभी घबड़ाते नहीं ।

● **श्री अर्जुन सिंह भारतीय**—बन्धुबरवा ग्राम-निवासी तथा स्थानीय राष्ट्रीय गांधी विद्यालय के सहायक शिक्षक श्री अर्जुन सिंह भारतीय पिछले लगभग ५ वर्षों से रक्सौल में पत्रकारिता से सम्बद्ध हैं । 'भारती' 'हिन्दुस्तान समाचार' तथा दैनिक 'प्रदीप' के सम्वाददाता के रूप में श्री भारतीय एक जागरूक एवं जीवंत पत्रकार की भूमिका निभा रहे हैं । चम्पारण जिला-सम्वाददाता संघ से जुडे श्री भारतीय एक सजग पत्रकार तो हैं ही, रक्सौल की कई सामाजिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध हैं ।

श्री ठाकुर प्र० (आर्यावर्त्त), श्री हिमाचल सिंह (शेरे सम्वाद), ने कभी रक्सौल से प्रतिनिधित्व किया था। सम्प्रति श्री विजय कुमार पांडेय (भारत मेल) तथा श्री रामेश्वर पांडेय (जन-शक्ति) के सम्वाददाता हैं ।

पत्रिकाएँ

● **अरुणिमा** – रक्सौल से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में काल की दृष्टि से 'अरुणिमा' का नाम सर्वप्रथम आता है, जिसका प्रकाशन सन् १९५७ में प्रारंभ हुआ। हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के छात्रों और शिक्षकों की इस वार्षिक पत्रिका के अबतक १४ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। सन् १९६८ का दशाब्दी विशेषांक विशेष उल्लेखनीय रहा है। शुरू से ही इस पत्रिका के सम्पादक कन्हैया प्रसाद हैं। सम्पादन-कार्य में अन्य शिक्षकों का भी सहयोग प्राप्त होता रहा है।

● **नीलिमा** – हिन्दी साहित्य - परिषद्, रक्सौल की वार्षिक पत्रिका 'नीलिमा' का प्रथम अंक १९६२ ई० में श्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। इसके बाद अबतक इसके मात्र दो अंक प्रकाशित हुए हैं—पहला सन् १९७२ में-सम्पादक-कन्हैया प्र०, दूसरा १९७८ ई० में—पत्रिका का श्री श्रीलाल भरतिया-विशेषांक – सम्पादक– कन्हैया प्रसाद। इस साहित्यिक पत्रिका के माध्यम से रक्सौल के दर्जनों जाने-अजाने हस्ताक्षर सामने आये हैं। कइयों को लिखने-पढ़ने की प्रेरणा मिली है।

● **हरीतिमा**—सन् १९६३ में हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के १० वें विज्ञान वर्ग के छात्रों के स्तुत्य प्रयास से एक हस्त-लिखित पत्रिका प्रकाश में आयी थी। वर्ग के छात्र अनिल कुमार 'अनल' का इसमें विशेष योगदान था।

● **किशोरवाणी**—सन् १९७२ में स्थानीय फूलचन्द साह राजकीय मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री गगनदेव प्रसाद सिंह के सम्पादकत्व में एक किशोरोपयोगी विद्यालय-पत्रिका का प्रकाशन हुआ था। विद्यालय के भूतपूर्व लोकप्रिय प्रधानाध्यापक स्व० मथुरा बाबू की स्मृति में प्रकाशित इस अंक के बाद दूसरा अंक प्रकाश में नहीं आया है।

● **अनलकण**—सन् १९७२ के जनवरी माह में रक्सौल के साहित्योत्थान के लिए समर्पित श्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा के सम्पादकत्व में 'अनलकण' नाम से एक शुद्ध साहित्यिक त्रैमासिक का शुभारंभ हुआ। इस 'अनलकण' ने अपनी शुद्ध साहित्यिकता के कारण बहुतों को आकृष्ट किया। यह पहला अवसर था, जब रक्सौल की किसी पत्रिका के माध्यम से पाठकों को स्थानीय नये-पुराने हस्ताक्षरों के साथ हिन्दी-जगत् के मूर्द्धन्य कलाकारों को एक साथ पढ़ने का मौका मिला। साहित्य-जगत् में इस पत्रिका ने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। पर इस पत्रिका का भी वही हश्र हुआ जो आज के

युग में सीमित साधनों से संचालित ऐसी शुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं का हुआ करता है। सन् '७२ में ३ अंक, सन् '७३ में १ अंक, और फिर, सन् १९७५ में १ अंक छपने के बाद पत्रिका का प्रकाशन बंद है।

● **सीमान्त**—श्री शैलेन्द्र 'सुमन' के सम्पादकत्व में सन् १९७२ के अगस्त में आकाशवाणी श्रोता-जगत् से सम्बद्ध एक त्रैमासिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। पर इसके भी दो-तीन अंक ही निकल पाये। सीतामढ़ी से मुद्रित इसका संभवतः दूसरा अंक, आवरण, साज-सज्जा, वैविध्य, आदि की दृष्टि से अनूठा था।

● **अचानक**—श्री शैलेन्द्र 'सुमन' के ही सुसम्पादन में जुलाई १९७४ से हास्य-व्यंग्य-प्रधान मासिक 'अचानक' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। दो-तीन अंकों के प्रकाशन के बाद यह भी काल-कवलित हो गया।

पिछले दिनों रक्सौल में आकाशवाणी श्रोता-संघ की धूम रही है। संगीत-प्रेमी नवयुवकों ने यहाँ ऐसे कई श्रोता-संघ स्थापित किए और समय-समय पर पत्रिकाएँ भी प्रकाशित कीं। पर इन पत्रिकाओं का कोई स्थायी महत्व नहीं है।

स्मारिकाएँ

● **स्वतन्त्रता रजत जयन्ती-स्मारिका**—भारतीय स्वतन्त्रता की २५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर विधायक श्री सगीर अहमद के सद्-प्रयास, डा० पी० डी० सिन्हा एवं श्री मुन्द्रिका सिंह के श्रम, गगनदेव प्र० सिंह के सम्पादन तथा कन्हैया प्रसाद के प्रबंध-सम्पादन में प्रकाशित रजत जयंती-स्मारिका की प्रतियाँ न केवल रक्सौल में वितरित हुईं, बल्कि श्री सगीर अहमद, विधायक ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को मोतिहारी-हवाई अड्डा पर उसकी एक प्रति भेंट कर स्मारिका की गरिमा बढ़ायी।

● **आर्य समाज-स्वर्ण जयंती-स्मारिका**—सन् १९७५ में रक्सौल-आर्य समाज ने अपनी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर एक वृहद् स्मारिका का प्रकाशन किया। आर्य समाज, रक्सौल के विगत ५० वर्षों के इतिहास के अतिरिक्त आर्य-जगत् के विद्वान लेखकों की रचनाओं से समन्वित इस स्मारिका के मुख्य सम्पादक गगनदेव प्र० सिंह एवं कन्हैया प्रसाद तथा सम्पादक बी० के० शास्त्री, रामाज्ञा ठाकुर, गोपाल प्र० तथा भरत प्रसाद आर्य थे। इस विशिष्ट स्मारिका का विमोचन-समारोह वीरगंज के साहेब ज्यू चन्द्रविक्रम शाह के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ, जिसमें वीरगंज के ही उद्योगपति श्री शंकर लाल केडिया ने अहम् भूमिका अदा की।

● **लियो क्लब-स्मारिका**—रक्सौल के लियो क्लब ने अपने 'चार्टर प्रेजेन्टेशन'-उत्सव के अवसर पर १० फरवरी १९७६ को अंग्रेजी में एक स्मारिका प्रकाशित की, जो हिन्दी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में प्रकाशित होनेवाली पहली स्मारिका थी। स्मारिका-समिति के अध्यक्ष पी० के० सर्राफ तथा सदस्य-बी० के० शाह, यू० के० अन्थोनी, के० एम० अग्रवाल, आर० के० भरतिया तथा सी० डी० गुप्ता थे।

● **लायन्स क्लब-स्मारिका**—रक्सौल लायन्स-क्लब के उद्घाटन के अवसर पर दिनांक १७ दिसम्बर १९७६ को प्रकाशित स्मारिका भी अंग्रेजी भाषा में थी। स्मारिका-समिति के अध्यक्ष डा० पी० डी० सिन्हा तथा सदस्य श्री रामेश्वर तिवारी और श्री जगदीश प्र० सीकरिया थे। लायन्स क्लब, रक्सौल की दूसरी स्मारिका ४ अप्रैल १९७७ को प्रकाशित हुई।

● **कुष्ठ-नियन्त्रण-स्मारिका**—३० जनवरी १९७७ को गांधी-निधन-दिवस के अवसर पर कुष्ठ-नियंत्रण इकाई, रक्सौल के तत्वावधान में आयोजित समारोह के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के संयोजक रक्सौल-कुष्ठ नियंत्रण इकाई के डाक्टर भुवन शंकर प्रसाद थे।

साप्ताहिक-पाक्षिक समाचार-पत्र

● **चम्पारण टाइम्स**—श्री नन्दलाल प्रसाद के सम्पादकत्व में रक्सौल से पहली बार किसी समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। १५ जनवरी १९६२ से पाक्षिक के रूप में प्रकाशित होनेवाले 'चम्पारण टाइम्स' के कुछ ही अंक निकल पाये।

● **सीमा**—साप्ताहिक—सम्पादक श्री श्रीनिवास मस्करा द्वारा सन् १९६६ से सन् १९७२ तक नियमित रूप से प्रकाशि होता रहा।

● **मर्यादित सीमा**—श्री श्रीनिवास मस्करा ने साप्ताहिक पत्र 'सीमा' का नाम कतिपय कारणों से 'मर्यादित सीमा' में परिवर्तित कर दिया और इसी नाम से सन् १९७२ से इस पत्र को प्रकाशित कर रहे हैं। 'सीमा' और 'मर्यादित सीमा' के मात्र नाम में ही फर्क है। सम्पादकीय मान्यताएँ तथा अन्य व्यवस्था ज्यों-की-त्यों है। रक्सौल का यह एक मात्र समाचार-पत्र है, जो विगत १३ वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है तथा विज्ञापन के लिए बिहार सरकार तथा डी० ए० वी० पी०, दिल्ली से स्वीकृत है। इसके सम्पादक श्री श्रीनिवास मस्करा रक्सौल के एक मात्र श्रमजीवी पत्रकार हैं। इन दिनों पत्रिका पहले की अपेक्षा अधिक स्तरीय एवं साहित्यिक हो गयी है, जिसे लब्ध-प्रतिष्ठ

साहित्यकार श्री रमेशचन्द्र झा का लेखन और सहयोग प्राप्त है।

● **सरहद**—सन् १९६७ में श्री नन्दलाल प्रसाद ने 'सरहद' नाम से एक साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ किया था, पर इसके कुछ ही अंक निकल पाये थे कि वह पत्र बन्द हो गया। सन् १९७० में इन्होंने इसे पुनः चालू किया, पर इस बार भी इसके कुछ ही अंक प्रकाशित हो पाये।

● **नारायणी**—सन् १९७४ में एक नये पत्र के साथ श्री नन्दलाल प्रसाद पुनः पत्रकारिता के मोर्चे पर आए, पर 'साप्ताहिक नारायणी' के कुछ ही अंक निकल पाये थे कि श्री नन्दलाल प्रसाद डी० आई० आर० के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिए गए। उनकी अनुपस्थिति में भी श्री वृजलाल अग्रवाल के प्रयास से इसके २-३ अंक प्रकाशित हुए। श्री नन्दलाल प्रसाद रक्सौल के एक सधे हुए सजग पत्रकार हैं, जिन्हें राजनीति का सम्यक् ज्ञान है।

● **सेतु**—१५ अगस्त १९७३ से भारत-नेपाल मैत्री पर आधारित "सेतु" नाम से एक विचार-प्रधान पाक्षिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जो जून १९७७ तक नियमित रूप से प्रकाशित होता रहा। इसके सम्पादक कन्हैया प्रसाद तथा सम्मानक सम्पादक गगनदेव प्र० सिंह थे।

● **सांस्कृतिक सेतु**—जुलाई १९७४ से 'सेतु' का नाम बदल कर सांस्कृतिक सेतु' कर दिया गया और उपर्युक्त व्यक्तियों के ही सम्पादकत्व में सन् १९७७ के अन्त तक प्रकाशित होता रहा।

● **चम्पारण संदेश**- सन १९७२ के अन्त से श्री रामेश्वर तिवारी के सम्पादकत्व में साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होने वाला 'चम्पारण संदेश' बाद में पाक्षिक में परिणत हो गया। आज भी वह पाक्षिक के रूप में ही प्रकाशित हो रहा है। बीच-बीच में इसके प्रकाशन में कुछ अनियमितता आयी है। समाचार-प्रधान यह पाक्षिक जनवरी १९७९ से नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है।

● **रक्सौल टाइम्स**—साप्ताहिक 'रक्सौल टाइम्स' का प्रथम अंक २ अक्टूबर १९७४ को प्रकाश में आया। पत्रिका-प्रकाशन में सम्पादक श्री उमाशंकर 'अनुज' को खेमचन्द महाविद्यालय, रक्सौल के प्राध्यापक श्री पृथ्वीचन्द्र प्रसाद का सहयोग प्राप्त है। कुछ दिनों तक श्री शैलेन्द्र 'सुमन' का नाम सह-सम्पादक के रूप में आता रहा है। बीच-बीच में पत्रिका अनियमित हुई है। पिछले लगभग ६ महीनों से पाक्षिक के रूप में प्रकाशित होनेवाला 'रक्सौल टाइम्स' नियमित है। विचारों की निर्भीकता पत्रिका की जान है।

● **सागरमाथा** सन् १९७५ के मध्य से प्रकाशित होनेवाले पाक्षिक

१५ कहानियाँ अबतक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री रमाकान्त झा की लम्बी कहानियाँ तथा श्री शैलेन्द्र 'सुमन' की लघु कथाएँ भी चर्चित रही हैं।

● **नवगीत**—श्री शैलेन्द्र 'सुमन' के अबतक दर्जनों नवगीत प्रकाशित हुए हैं। उनमें से कुछ नवगीतों ने श्री 'सुमन' की काव्य-प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है।

● **कविताएँ**—समय-समय पर स्वान्तः सुखाय अथवा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए जो कविताएँ लिखते रहे हैं, वे हैं—सर्वश्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा, तुलसी 'अरुण', ब्रह्मदेव पुष्कर, गगनदेव प्र० सिंह, उमाशंकर अनुज, काशीनाथ शर्मा, अनिल कुमार 'अनल', नन्दलाल 'इन्कलाबी', जनार्दन प्र०, आदि।

● **हास्य-व्यंग्य**—अबतक रक्सौल में श्री रमाकान्त झा ने हास्य-व्यंग्य विधा में सबसे अधिक लिखा है। वे 'झापड़' और रमाकांत झा के नाम से विभिन्न स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखते रहे हैं। इन दिनों 'रक्सौल टाइम्स' में नियमित रूप से 'झापड़' के नाम से छप रहे हैं। श्री शैलेन्द्र 'सुमन' ने 'ढोलक चम्पारणी' नाम से दर्जनों हास्य कुंडलियाँ, क्षणिकाएँ एवं अन्य कविताएँ लिखी हैं। सर्वश्री भरत प्र० आर्य, उमाशंकर अनुज गगनदेव प्र० सिंह, कन्हैया प्र०, मानवेन्द्र कुमार गुप्त, आदि भी व्यंग्य लिखते हैं।

● **निबंध**—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए—विशेषतः रक्सौल से प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्रों के लिए सम-सामयिक राजनैतिक निबंध लिखनेवाले हैं—सर्वश्री नन्दलाल प्रसाद, बब्बन मिश्र, चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा, प्रो० पृथ्वीचन्द्र प्रसाद, प्रो० विजय कुमार पांडेय, उमाशंकर अनुज, रामेश्वर तिवारी, अर्जुन सिंह भारतीय, गगनदेव प्र० सिंह, आदि।

● **अन्तर्वीक्षा**—कन्हैया प्रसाद की अबतक दर्जनों हिन्दी और अंग्रेजी में भारतीयों तथा विदेशियों से ली गयी अन्तर्वीक्षाएँ प्रकाशित हुई हैं। छिटफुट रूप में श्री रामेश्वर तिवारी एवं श्री अर्जुन सिंह भारतीय की भी।

● **रिपोर्ताज**—सर्वश्री गगनदेव प्र० सिंह, पृथ्वीचन्द्र प्रसाद, कन्हैया प्रसाद, आदि के रिपोर्ताज प्रकाशित हुए हैं।

● **यात्रा-संस्मरण**—श्री रामाज्ञा ठाकुर, श्री बी० के० शास्त्री, श्री मानवेन्द्र कुमार गुप्त के यात्रा-संस्मरण प्रकाशित हुए हैं।

● **लेख**—सर्वश्री बब्बन मिश्र, श्री मोहन लाल गुप्त, श्री बी० के० शास्त्री, गोपाल प्रसाद, मुन्द्रिका सिंह, रामाज्ञा ठाकुर, मानवेन्द्र कुमार गुप्त, सत्यना-

रायण प्र० सिंह आदि।

● **नाट्य**—श्री तुलसी 'अरुण' ने 'सौदा' नाम से एक नाटक लिखा है, जो अप्रकाशित है। सर्वश्री बी० के० शास्त्री, भरत प्र० आर्य, उमाशंकर अनुज, शिवनाथ प्र० गुप्त, हृदयानन्द प्र०, आदि ने समय-समय पर नाटकों के मंचन के लिए छोटे-छोटे नाटक एवं नाट्य-प्रहसन लिखे हैं।

● **अंग्रेजी**—अंग्रेजी में जिनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं वे हैं—सर्वश्री प्रेमचन्द्र, रघुनाथ प्र०, बब्बन मिश्र, सत्यनारायण प्र० सिंह, कन्हैया प्र०, रमाकान्त झा, जनार्दन झा, रामयश शर्मा, मदनमोहन गुप्त, डा० पी० डी० सिन्हा, रामेश्वर तिवारी, कन्हैया प्र० (बी० एस-सी०), द्वारका प्र० सीकरिया, आदि।

● **भोजपुरी**—सर्वश्री चन्द्रेश्वर प्रसाद वर्मा, प्रभुनाथ पांडेय, मोहनलाल गुप्त, काशीनाथ शर्मा, गगनदेव प्र० सिंह।

● **उर्दू**—श्री बदरुल हसन।

जिनकी छिटफुट रचनाएँ छपती रही हैं, वे हैं सर्वश्री महेश्वर झा, देवेन्द्र प्र० सिंह (जीवन बीमा-निगम), राजेन्द्र पटेल, छेदीलाल अग्रवाल, गोकुल प्र०, जगदीश प्र० स्वर्णकार, मुन्द्रिका सिंह, राजेन्द्र प्र० (अभियंता), शिवेन्द्र कुमार सिंह, ओमप्रकाश राजपाल, रामेश्वर गुप्त, आदि।

साहित्यिक आयोजन

हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल तथा हिन्दी साहित्य-परिषद्, रक्सौल द्वारा सम्पन्न साहित्यिक आयोजनों की चर्चा पहले आ चुकी है। रक्सौल के साहित्यिक इतिहास में रक्सौल क्लब द्वारा सन् १९७२ में आयोजित कवि-सम्मेलन विशेष महत्व रखता है, जिसमें न केवल भारत के उच्च कोटि के कई कवि बल्कि नेपाल के राष्ट्र-कवि श्री बालकृष्ण सम ने भी भाग लिया था। इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफल सम्पन्नता में जिन्होंने हार्दिक सहयोग किया, उनके नाम हैं—सर्वश्री बी० पी० सिंह, एस० एन० पी० शर्मा, एल० शुक्ला, गगनदेव प्र० सिंह एवं गणेश प्र०, पत्रकार।

खेमचन्द महाविद्यालय, रक्सौल के हिन्दी-प्राध्यापक श्री पृथ्वीचन्द्र प्र० के सद्प्रयास से पिछले २-३ वर्षों में हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर) के अवसर पर महाविद्यालय ने साहित्यिक गोष्ठियाँ आयोजित कर छात्रों में साहित्योन्मेष किया है।

लियो क्लब, रक्सौल ने सन् १९७७ में लेख-प्रतियोगिता तथा लायन्स क्लब, रक्सौल ने १५ अगस्त १९७८ को काव्य-प्रतियोगिता आयोजित कर पारितोषिक द्वारा विद्यार्थियों का उत्साह-वर्द्धन किया है।

स्व० श्री श्रीलाल भरतिया ने कृष्णाष्टमी के शुभावसर पर अपने मंदिर के प्रांगण में २-३ बार कृष्ण-साहित्य पर भाषण आयोजित किया, जिसमें पं० रामदयाल पांडेय जैसे उच्च कोटि के वक्ता भी आमंत्रित थे।

रक्सौल के पिछले लगभग ४० वर्षों के साहित्यिक इतिहास में जिन साहित्य-मनीषियों ने यहाँ पदार्पण किया है, उनके नाम हैं—सर्वश्री जानकी वल्लभ शास्त्री, हंस कुमार तिवारी, देवेन्द्र नाथ शर्मा, प्रि० केशरी, प्रि० बेणी-माधव मिश्र, जगन्नाथ प्र० मिश्र, रामदयाल पांडेय, डा० श्यामनन्दन किशोर, डा० श्याम नारायण पांडेय, डा० शम्भुनाथ सिंह, डा० लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु', डा० इन्दुशेखर, नजीर बनारसी, काका हाथरसी, आरसी प्र० सिंह, त्रिलोचन शास्त्री, नेपाल के राष्ट्रकवि बालकृष्ण सम आदि।

पं० राहुल सांकृत्यायन भी रक्सौल में एक बार आये हैं, पर उनका प्रयोजन नेपाल में प्रवेश करना था, जहाँ से वे तिब्बत जाना चाहते थे—ऐसी चर्चा उन्होंने अपनी पुस्तक 'सोवियत भूमि' में की है। इस पुस्तक के आधार पर इन पंक्तियों के लेखक ने एक स्थानीय पत्र में 'रक्सौल में राहुल सांकृत्यायन' शीर्षक से एक लेख लिखा था, पर दुर्भाग्य से वह लेख अनुपलब्ध है। संभवतः १९३० के पहले श्री सांकृत्यायन ने यह यात्रा की थी और जैसाकि ऊपर कहा गया है, नेपाल होते हुए तिब्बत जाने के लिए रक्सौल में रुके थे। नेपाल की राहदानी (Passport) प्राप्त करने के लिए उन्हें दो-तीन दिनों तक यहाँ प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। पर राहदानी उन्हें नहीं मिल सकी और इस बार, उन्हें निराश लौटना पड़ा। सिरिसिया नदी के किनारे, ठीक सीमाभूमि पर, साधु की एक कुटिया में उन्होंने अपना अस्थायी निवास बनाया था। उनकी मुलाकात स्व० श्री श्रीलाल भरतिया से भी हुई थी।

हिन्दी के प्राध्यापक श्री श्रीकान्त चौधरी तथा श्री रामदेव द्विवेदी अलमस्त के समय में (आज से १५-२० वर्ष पूर्व तक) वीरगंज के शैक्षणिक प्रांगण में तुलसी-जयन्ती, कवि-सम्मेलन (हिन्दी) और साहित्यिक गोष्ठियाँ सम्पन्न हुआ करती थीं, जिनमें रक्सौल के साहित्य-प्रेमी भी निस्संदेह आमंत्रित होते थे। नेपाल-भारत सांस्कृतिक केन्द्र में सन् १९७२ के आसपास तक पुस्तकाध्यक्ष श्री अनन्त बिहारी लाल दास 'इन्दु', जो स्वयं हिन्दी के एक उच्च कोटि के कवि एवं साहित्यकार हैं, के सद्प्रयास से विभिन्न अवसरों पर इस तरह के साहित्यिक आयोजन सम्पन्न हुआ करते थे, जिनमें वीरगंज तथा रक्सौल के हिन्दी-प्रेमी सोत्साह भाग लेते थे। पर अब तो वह सांस्कृतिक केन्द्र भी बन्द है और साथ ही नेपाल सरकार की भाषा-सम्बन्धी नीति में भी काफी

कुछ परिवर्त्तन आ गया है ।

वीरगंज तथा उसके निकट के जिन व्यक्तियों की रचनाएँ अबतक रक्सौल की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं, उनके नाम हैं— सर्वश्री अनन्त बिहारी लाल दास 'इंदु', महावीर मयंक, रामचन्द्र प्र० शिक्षक, स्व० पशुपति नाथ घोष, स्व० डा० म० अमीन, द्वारका प्र० सीकरिया, रामजी लाल अग्रवाल, राधाकृष्ण प्र०, हरिकृष्ण गुप्त (परसौनो) रामजी प्र० गुप्त, (पकहा), जयनारायण प्र० (भेड़िहारो), आदि ।

वीरगंज के वैसे सुहृद्‌जन, जिन्होंने रक्सौल के साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में विशेष अभिरुचि ली है, वे हैं-सर्वश्री हरि प्र० गिरि,शंकर लाल केडिया, चिरंजीवी लाल सरावगी,द्वारका प्र० सीकरिया,रविभूषण शर्मा, रामजी लाल अग्रवाल,गोपालजी प्र०,चन्द्रेश्वर सिंह,रामानन्द पांडेय, रामचन्द्र प्र०,आदि ।

● प्रमुख अभिनन्दन-समारोह,जिनमें साहित्यिक भाषण आयोजित हुए—डा. सेसिल डंकन का (१९४१ ई०) हाई स्कूल के प्रांगण में-मुख्य भूमिका श्री प्रेमचन्द्र । डा० स्ट्रौंग का नागरिक अभिनन्दन—आर्य समाज के प्रांगण में (१९७९ ई०) अध्यक्षता श्री श्रीलाल भरतिया तथा नटराज सेवा संगम के तत्वावधान में-अध्यक्षता श्री पुष्परंजन मल्लिक । डा० डंकन का अभिनन्दन-ह० उ० वि० के प्रांगण में-अध्यक्षता श्रीलाल भरतिया । स्व० श्री प्रेमचन्द्र का नागरिक अभिनन्दन-'सेतु' संस्था की ओर से, अध्यक्षता-श्री श्रीलाल भरतिया । श्री काशीनाथ झा (सुगौली) सचिव-अ० भा० प्रा० शिक्षक संघ तथा श्री जयनारायण सिंह, सचिव जि० प्रा० शिक्षक संघ का अभिनन्दन – अध्यक्षता श्री लालबाबू मिश्र । श्री रघुनाथ प्र० शिक्षक एवं श्री रामयश शर्मा, प्र० अध्यापक-अध्यक्षता श्री सगीर अहमद । श्री आशिक हुसैन शिक्षक का- मिड्ल स्कूल के प्रांगण में- अध्यक्षता श्री बी० के० शास्त्री। श्री श्रीलाल भरतिया का (निधनोपरांत) हिन्दी साहित्य परिषद् की ओर से-अध्यक्षता श्री उमेश चन्द्र। विदेश से लौटने पर श्री रामाज्ञा ठाकुर का-अध्यक्षता श्री बब्बन मिश्र। अमेरिका से लौटने पर श्री जगदीश नारायण का-मिड्ल स्कूल के प्रांगण में-अध्यक्षता श्री भृगुनाथ प्र० श्रीवास्तव । अमेरिका से लौटने पर डा० लक्ष्मण प्र० का, हाई स्कूल के प्रांगण में-अध्यक्षता श्री रामयश शर्मा । बीस स्वतन्त्रता सेनानियों का नागरिक अभिनन्दन-१५ अगस्त १९७२ को-श्री सगीर अहमद द्वारा-अध्यक्षता-श्री बब्बन मिश्र ।

● विमोचन समारोह—'सागरमाथा' पाक्षिक का—अध्यक्षता श्री श्रीनिवास मस्करा । 'किशोरवाणी' का विमोचन-समारोह-श्री नरसिंह बैठा द्वारा । 'रक्सौल टाइम्स' का वर्षगांठ-समारोह-अध्यक्षता श्री श्रीनिवास मस्करा । 'जनशक्ति दैनिक' का वर्षगांठ-समारोह (स्थानीय स्तर पर) अध्यक्षता-श्री इब्राहिम मियाँ ।

१७. कला के चितेरे : संस्कृति के उपासक

रक्सौल बाजार की स्थापना के प्रारंभिक वर्षों में नगर-वासियों के मनोरंजन के साधन मात्र रामलीला, कुश्ती और छोटे-मोटे खेल-तमाशे हुआ करते थे। पहले कहा गया है कि बाजार बसाने के उद्देश्य से फलेजर ऐसे छोटे-मोटे खेल-तमाशों में—खासकर रामलीला के आयोजन में विशेष अभिरुचि लिया करता था। पुराने पोखरा के निकट प्रतिवर्ष महीनों रामलीला होती, जिसमें न केवल बाजार के बल्कि निकट के ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी भारी संख्या में एकत्र होते। फलेजर की ओर से प्रसाद-वितरण की व्यवस्था होती। फलेजर ने रामलीला की जो परम्परा डाली, सन् १९१५ में उसके इंगलैंड चले जाने के बाद भी कायम रही। सन १९५० के बाद तक लगभग प्रतिवर्ष, 'रतन लाल चौक' पर रामलीला का आयोजन होता रहा और रक्सौल-वासियों का कला और संस्कृति के नाम पर विशेषतः उन्हीं कलाकारों से सीधा सम्पर्क था। उन दिनों भजन हरिकीर्तन, झूलन, रामलीला, रामायण-पाठ ही रक्सौल-निवासियों में सांस्कृतिक उन्नयन के विशेष साधन-स्रोत थे। सन १९३०-३२ के बाद की अवधि में दरभंगा से समय-समय पर कुछ संगीतज्ञ रक्सौल आने लगे थे और फिर वहीं 'रतन लाल-चौक' पर उनका कार्यक्रम प्रस्तुत होता।

उन दिनों पलनवा के श्री बाबूलाल प्रसाद का संगीत में बड़ा नाम था, जिन्होंने ग्वालियर से संगीत तथा तबलावादन आदि में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया था, और जो अक्सरहां रक्सौल में ही रहा करते थे। उन्हीं के साथियों थे—श्री राम प्र० राय थारू तथा श्री सत्यनारायण प्र० थारू, जिन्होंने भी कलकत्ता, ग्वालियर आदि स्थानों में रहकर संगीतकला में महारत हासिल की थी। बाबूलाल प्र०, राम प्र० राय थारू एवं सत्यनारायण प्रसाद थारू की बड़ी धूम थी उन दिनों यहाँ।

तीसरे दशक में रक्सौल-आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी। स्व० श्री कमलाकांत ठाकुर अभी-अभी संगीतज्ञ के रूप में उभर रहे थे। आर्यसमाजी विचारों से प्रभावित स्व० श्री ठाकुर ने दयानन्द सरस्वती के आदर्शों को अपने सुरीले कंठ और जादूभरी अंगुलियों से प्रचारित करना शुरू किया था। हारमोनियम-वादन में दक्ष श्री ठाकुर संगीत के क्षेत्र में एक लम्बी अवधि तक छाये रहे। रक्सौल के ही स्व० शंकर प्रसाद का नाम ढोलक-वादक के रूप में

उभर कर सामने आता है, जो अकसरहां उन दिनों स्व० श्री कमलाकांत ठाकुर के हारमोनियम-वादन में संगत किया करते थे।

आर्यसमाजी उपदेशक के रूप में हारमोनियम पर गानेवाले नन्दलाल ठाकुर (उत्तर प्रदेश) ने भी उन दिनों रक्सौल में समय-समय पर आकर अपने संगीत की स्वर-लहरियों से, रक्सौल-वासियों को अपनी ओर आकृष्ट किया था।

सन् १९२९ में ढोलक तथा तबला-वादक के रूप में रक्सौल के एक अन्य व्यक्ति सामने आये—श्री वैद्यनाथ प्रसाद (मास्टर), जो लगभग दो दशकों से ऊपर इस क्षेत्र में छाये रहे। एक लम्बी अवधि तक श्री रामचन्द्र प्र० (सूर) का नाम हरमोनियम-वादक एवं संगीतज्ञ के रूप में लिया जाता रहा है। श्री रामलखन प्र० गुप्त (शिक्षक) को भी कभी ढोलक-वादन से शौक था।

ऐसा ज्ञात होता है कि सन् १९३०-३२ के बाद से ही यहाँ नौटंकी तथा नाटक की पेशेवर कम्पनियाँ लगभग प्रतिवर्ष आने लगी थीं। इन कम्पनियों के कलाकारों द्वारा रक्सौलवासियों का मनोरंजन तो होता ही, रक्सौल के नवयुवकों में से कई कलाकार के रूप में भी उभरे। भले ही हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के छात्रों द्वारा विशेष अवसरों पर छोटे-मोटे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हों, पर १९४३ ई० में ही रक्सौल के नागरिकों द्वारा नागाबाबा के मठ के प्रांगण में पहली बार बाजाप्ता सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें रक्सौल के इलाकत मियां, फिदा मियां, सागर महाराज, वैद्यनाथ प्र० (मास्टर) हरिहर राम कुर्मी, आदि ने विशेष भूमिकाएँ निभायीं।

उन दिनों सवाक् सिनेमा (टॉकी) का प्रचलन नहीं था। पहले-पहल रक्सौल में मूक सिनेमा दिखलाने की व्यवस्था स्व० श्री रामगोविन्द राम ने थाना के सामने, डाकबंगला के उत्तरवाली भूमि में की थी। कुछ ही दिनों के बाद सवाक् सिनेमा (टॉकी) उन्हीं के द्वारा आज के ताज मार्केट के पूरब वाली भूमि में चलाया गया था। श्री पुरुषोत्तमलाल सीकरिया के निवास के सामने स्थित गोले में सन् १९४३-४४ के लगभग 'प्रताप टॉकीज' नाम से सवाक् सिनेमा कुछ दिनों के लिए चला था। संभवतः सन् १९४९ की बात है जब श्री रामगोविन्द राम के मिल-अहाते में कुछ महीनों के लिए 'टुरिस्ट सिनेमा' के नाम से चलने वाले हॉल में रक्सौल के लोगों ने फिल्में देखी थीं। बाद में रक्सौल में जिन दो सिनेमा हॉलों की स्थापना हुई, उनकी चर्चा विस्तार के साथ अध्याय ७ में आ चुकी है।

सन् १९५० के बाद के काल को कला और और संस्कृति का उत्कर्ष काल कहा जा सकता है, जब रक्सौल में एक नयी पीढ़ी उभर कर सामने आयी और नगर को श्री बी० के० शास्त्री, श्री श्याम नारायण वर्मा जैसे कला-निर्देशक प्राप्त हुए। सन् १९५३ में स्थानीय आर्यसमाज में श्री बी० के० शास्त्री के आगमन के साथ ही कला को जैसे पर लग गए। श्री शास्त्री के सफल निर्देशन में एक से एक उच्च कोटि के नाटक अभिनीत हुए। चाहे आर्यवीर दल के तत्वावधान में नाटक अभिनीत हो, या बिहारी आर्य पुस्तकालय के अथवा दयानन्द विद्यालय के, सर्व में श्री बी० के० शास्त्री की अहम भूमिका रही। सन् १९६२ में भारत-चीन-युद्ध के समय भारत-सुरक्षा-कोष के लिए अभिनीत नाटक 'कश्मीर की एक शाम' तथा 'आधी रोटी' ने दर्शकों का मनोरंजन तो किया ही, कलाकारों का हौसला भी बुलंद किया।

इन दस-बारह वर्षों की अवधि में कलाकारों की संख्या दर्जनों में पहुँच गयी। हाँ, इसी बीच छोटी-मोटी बातों को लेकर इन कलाकारों में पारस्परिक मतभेद भी शुरू हुए। फलतः एक नयी नाट्य-परिषद् —वीणा कला परिषद् का १९६५ ई० में जन्म हुआ, जिसका प्रथम नाटक 'कलिंग विजय' श्री श्याम नारायण वर्मा, तत्कालीन ग्राम पंचायत पर्यवेक्षक, रक्सौल के निर्देशन में सफलतापूर्वक अभिनीत हुआ। इसके कुछ हीं दिनों के बाद बिहार के सूखा-पीड़ितों के सहायतार्थ 'वीणा कला परिषद्' द्वारा स्थानीय कृष्णा टॉकिज में आयोजित अखिल भारतीय संगीत-सम्मेलन महत्व का रहा है।

'वीणा कला परिषद्' के समानान्तर 'वन्दना कला परिषद्' 'कमल कला परिषद्' 'विनय कला परिषद्' बाल कला परिषद् आदि नामों से कई नाट्य परिषदें अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा नगर के लोगों का मनोरंजन करती रहीं, पर निस्संदेह कला के क्षेत्र में वर्चस्व वीणा कला परिषद् का ही रहा।

सन् १९७५ में 'वीणा कला परिषद्' के तत्वावधान में विधायक श्री सगीर अहमद के सद्प्रयास से सहायता कार्य के लिए रक्सौल में आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन यद्यपि अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल नहीं हो सका, पर बम्बई के फिल्मी कलाकारों—विशेषतः पद्म श्री श्री महेन्द्र कपूर द्वारा प्रस्तुत मनोरंजक कार्यक्रम, बैठने की समुचित व्यवस्था, आदि की दृष्टि से रक्सौल का यह प्रथम विशिष्ट सांस्कृतिक कार्यक्रम था, इसमें संदेह नहीं।

आगे चलकर वीणा कला परिषद् के कलाकारों में भी आपसी मतभेद

शुरू हुए और फलस्वरूप सन् १९७३ में 'नटराज सेवा संगम' का उद्‌भव हुआ। श्री भरत प्र० आर्य के निर्देशन में अबतक लगभग आधा दर्जन नाटक अभिनीत करनेवाली इस नयी संस्था में निस्संदेह जीवंतता है, जिसकी बदौलत इस संस्था ने कला के क्षेत्र में अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित की है। पता नहीं इस 'नटराज सेवा संगम' के गर्भ में कौन-सी नाट्य परिषद् छिपी है?

सन् १९५० से सन् १९७९ तक की लगभग तीन दशकों की अवधि में नाटक के क्षेत्र में जिन कलाकारों के नाम कुछ फख्र के साथ लिये जा सकते हैं, वे हैं— सर्वश्री बी० के० शास्त्री, भरत प्र० आर्य, उमाशंकर अनुज, शिवनाथ प्र० गुप्त, रामनाथ प्र०, मोहन लाल, आर्यानन्द प्र०, हृदयानन्द प्र०, भरत कलाकार, प्रमोद कुमार मल्लिक, देवनन्दन प्र०, रामातार शर्मा, महेश सिंह मदन प्रसाद, दीनानाथ प्र०, उमेश प्र०, विपिन विहारी प्र० श्रीवास्तव, नारायण प्र०, मुकुन्दी लाल, अशोक कुमार, जगदीश प्र०, आदि।

वीणा कला परिषद् यद्यपि आज सक्रिय नहीं है, पर इसकी क्रियाशीलता के दिनों में सर्वश्री फरहादुल आजम, सरदार दर्शन सिंह दिनेश त्रिपाठी, राजनन्दन राय, राजेश्वर सिंह, जैसे लोग इसके संचालक-मंडल के अधिकारी-सदस्य के रूप में तथा श्री उमाशंकर अनुज, श्री शिवनाथ प्रसाद गुप्त, आदि कलाकार के रूप में काफी लोकप्रिय रहे हैं। सम्प्रति 'नटराज सेवा संगम' के अध्यक्ष श्री जगदीश प्र० सीकरिया हैं तथा श्री भागवत प्रसाद इस संस्था के प्राण हैं। श्री आर्यानन्द प्र० संस्था के सचिव हैं।

श्री विन्ध्याचल प्रसाद 'फ्रेमर' को कला जैसे विरासत में मिली है। विविध संगीत के गायक तथा अनेक वाद्ययंत्रों के वादक श्री विन्ध्याचल प्र० ने यहाँ एक कीर्तिमान स्थापित किया है। उनके ही अनुज सत्यप्रकाश में 'पियानो एकार्डियन' पर धून छेड़ने की विशिष्ट कला है। हारमोनियम पर गाने-बजानेवालों में डा० विपिन बिहारी श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार मल्लिक, भरत प्र०, मोहन लाल, अर्जुन प्र०, आदि आज काफी लोकप्रिय हैं। इनमें से कई तबलावादक के भी अभ्यासी हैं। भरत कलाकार ने सितार के तारों को तरंगायित करने में कमाल हासिल किया है। नारी की भूमिका में नृत्य प्रस्तुत करने में भी अब यहाँ के कतिपय युवकों में कोई झिचक नहीं रही है। देवनन्दन प्र०, शिवनाथ प्र० गुप्त, लालबाबू विश्वकर्मा, हरि ठाकुर, बन्धु प्रसाद जैसे कलाकारों ने स्वच्छन्द रूप से विभिन्न नृत्य प्रस्तुत करते हुए प्रतिष्ठा अर्जित की है।

फिल्मी धून पर गानेवाले नवयुवकों की भी यहाँ कमी नहीं है। पर

नन्दलाल 'इन्कलाबी' के स्वरचित गीत और (और बम्बइया गीत भी) जब तरंगायित होते हैं तो श्रोताओं का मजमा लग जाता है। परिस्थितियों का मारा बेचारा नन्दलाल 'इन्कलाबी' मिठाई बेचने के लिए जब खजड़ी पर संगीत छेड़ता है, सुननेवालों की भीड़ लग जाती है।

मूर्तिकला के क्षेत्र में भी रक्सौल का आज अपना स्थान है। आज से मात्र दो दशक पूर्व छोटी-मोटी मूर्तियों के लिये भी इस इलाके के लोगों को बेतिया और मुजफ्फरपुर जाना होता था। पर आज मिट्टी के लोंदों में अपनी जीवंत उंगलियों से प्राण फूंक देनेवाले कलाकारों की संख्या यहाँ आधा दर्जन तक पहुँच गयी है। सर्वश्री पशुपति प्र०, भरत कलाकार और पन्नालाल प्र० ने तो इस कला में महारत ही हासिल कर ली है।

चित्रकला में सर्वश्री पुरुषोत्तम प्र०, अयोध्या प्र०, भरत कलाकार, पन्नालाल प्र०, रमाशंकर सहनी, श्याम बहादुर श्रेष्ठ, हरि पेन्टर, आदि ने अर्थ के साथ यश भी अर्जित किया है।

विदेश में शिक्षा-प्राप्त डा० पी० डी० सिन्हा एक जन्मजात कलाकार हैं। साधारण लकड़ी के प्लेट को मामूली उपकरणों—ब्लेड और नहरनी की सहायता से प्राणवंत बना देनेवाले डा० पी० डी० सिन्हा ने अनेक अवसरों पर कुछ ही मिन्टों में नेताओं, विशिष्ट व्यक्तियों आदि का ब्लॉक निर्मित कर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है। शौकिया कलाकार डा० सिन्हा ने अबतक ऐसे पचासों ब्लॉक निर्मित किए हैं। डा० सिन्हा को पेंसिल-स्केच एवं कार्टून बनाने का भी शौक है।

१८. धर्म का दीप : अध्यात्म की बाती

इस क्षेत्र में धार्मिक अनुष्ठानों-समारोहों का अगुआ रक्सौल मौजे रहा है। ऐसे यज्ञ-अनुष्ठानों की गंगा में बाजार के लोग भी अवगाहन करते रहे हैं। रक्सौल बाजार की स्थापना के प्रारंभिक वर्षों में धार्मिक आयोजन के नाम पर प्रतिवर्ष जो रामलीला हुआ करती थी, उसकी चर्चा पहले आ चुकी है। ऐसा ज्ञात होता है कि रक्सौल मौजे में उन्हीं दिनों एक रामायण-मंडली का गठन हो चुका था। उन दिनों इस रामायण-मंडली के लोगों में बड़ा उत्साह था। न केवल रक्सौल और इसके इर्द-गिर्द के गाँवों में बल्कि वीरगंज तथा अन्य नेपाली क्षेत्रों में भी इस मंडली की बड़ी पूछ थी। इस तरह रामलीला और रामायण पाठ के अतिरिक्त झूलन, महावीरी झंडा, मुहर्रम, जैसे धार्मिक त्योहारों-उत्सवों में बड़े उत्साह से लोग भाग लिया करते थे। सचमुच उन दिनों ऐसे आयोजनों में धार्मिकता अधिक थी, प्रदर्शन कम!

रक्सौल मौजे में ही सन् १९२८ के आसपास एक हरिकीर्त्तन मंडली का गठन हुआ, जो आजतक प्रतिवर्ष गांव तथा रक्सौल के नागरिकों के सहयोग से समय-समय पर भगवत्-भजन का आयोजन करती आ रही है। उन दिनों स्व० जगदेव राम का इस हरिकीर्त्तन मंडली को संगठित करने में विशेष योगदान था। अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक स्व० रामगोविन्द राम जी इस मंडली के सचिव रहे। सम्प्रति रक्सौल के श्री रामजतन राम जी (भगत जी) इसके सचिव हैं।

रक्सौल में मंदिरों की कमी नहीं है, पर पता नहीं दूतावास-सदन-स्थित महावीर-मंदिर के 'हनुमान जी' में क्या शक्ति है कि वहाँ मंगलवार और शनिवार को भीड़ उमड़ी पड़ती है! इन दिनों रक्सौल में आयोजित होनेवाली सरस्वती पूजा, दूर्गा पूजा, विश्वकर्मा पूजा, आदि में धार्मिकता कितनी है, यह कहना बड़ा कठिन है!

● इसाई धर्म — रक्सौल बाजार की स्थापना के कुछ ही दिनों बाद से यहाँ इसाई धर्म का प्रचार शुरू हो गया था। हरदिया कोठी के साहबों के अतिरिक्त सन् १९०७ में फलेजर द्वारा रक्सौल में बसाया गया पहला भारतीय क्रिश्चन लॉरेन्स था, जो बढ़ई का काम करता था। कुछ दिनों के बाद इसाई धर्म के प्रचार के लिए फलेजर ने बाजार में दो कट्ठा साढ़े पाँच धूर

की वह प्रशस्त भूमि मोतिहारी की किसी इसाई धर्म-प्रचारक-मंडली को दी, जिसपर आज श्री पुष्परंजन मल्लिक का सन् १९४२ से स्वामित्व है। उन दिनों सोनू बाबू (डंकन अस्पताल के भूतपूर्व रेडियोलॉजिस्ट) के पितामह सुखलाल बाबू इस भूमि में अपने अन्य सहयोगियों के साथ इसाई धर्म का प्रचार किया करते थे—खासकर हाट के दिनों—बुधवार और रविवार को। सन १९१० के बादवाले दशक में डंकन अस्पताल के संस्थापक श्री सेसिल डंकन के पिता दार्जिलिंग से यहाँ धर्म-प्रचार के लिए आया करते थे, इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है। सन् १९३१ में डंकन अस्पताल की स्थापना के साथ ही इसाई धर्म-प्रचार को बल मिला। सन् १९४१ में अस्पताल तो बन्द हो गया, पर मात्र धर्म-प्रचार के लिए मिस ली नामक एक विदेशी क्रिश्चन महिला अस्पताल में रह गयी, जिसे सन् १९४२ की अगस्त-क्रांति में रक्सौल छोड़ना पड़ा। सन् १९४८ में जब यह अस्पताल पुनः चालू हुआ, यहाँ कुछ देशी-विदेशी क्रिश्चन आये। सन् १९४८ से सन् १९७९ के तीन दशकों की लम्बी अवधि में डंकन अस्पताल ने बड़ी संख्या में लोगों को इसाई बनाया हो, ऐसा नहीं लगता। हाँ, कुछ इने-गिने अपढ़ एवं गरीब लोग इसाई अवश्य बने हैं, पर उनमें नेपालियों एवं थारुओं की संख्या अधिक है।

● आर्य समाज—सन् १९२५ में रक्सौल-आर्य समाज की नींव पड़ी। पिछले लगभग ५० वर्षों में इस आर्यसमाज ने चतुर्दिक प्रगति की है। इस संदर्भ में इस पुस्तक के लेखक द्वारा रक्सौल-आर्य समाज-स्मारिका (१९७५ ई०) के लिए लिखी गई कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत हैं।—"

अबतक (१९२५ ई० तक) यहाँ कुछ प्रगतिशील लोग आ चुके थे, अपने साथ नये विचारों को लिए हुए। दिघवारा (छपरा) से श्री हरिनारायण गुप्त, बन्नाव से श्री मुन्नालाल, छपरा से श्री ब्रह्मदेव राम, श्री सीताराम, रतनमाला से श्री लक्ष्मी प्र०, आदि यहाँ व्यवसाय के सिलसिले में आये थे। यद्यपि यह वह जमाना था जबकि अधिकांश लोग परम्परागत मान्यताओं के शिकार थे, रूढ़ि तथा अंधविश्वासों के विरुद्ध जाने का किसी में साहस नहीं था, पर उसी समय एक ऐसी घटना घटी कि कुछ प्रगतिशील लोगों को आगे आने का मौका मिला। परीछन नामक एक नोनिया मुसलमान हो गया था। सन् १९२५ के आरंभ में श्री लक्ष्मी प्रसाद, हरिनारायण गुप्त, आदि के प्रयत्नों से वह पुनः हिन्दू बनने के लिए तैयार हो गया। फिर क्या था? सन् १९२५ के अप्रैल माह में शुद्धि-संस्कार के लिए एक बैठक हुई, जिसमें सर्वश्री लक्ष्मी प्रसाद,

दारोगा लाल, हरिनारायण गुप्त, मुन्नालाल, रामदयाल सिंह, आदि उपस्थित हुए। संयोगवश उस समय आर्य समाज के प्रचारक स्वामी सत्यानन्द जी प्रचार के सिलसिले में रक्सौल उपस्थित थे। उन्हीं के कर-कमलों द्वारा यह शुद्धि-संस्कार सम्पन्न हुआ। इस शुद्धि-संस्कार के बाद आर्य समाज के सिद्धांतों पर स्वामी जी का भाषण हुआ तथा स्वामी जी की ही अध्यक्षता में रक्सौल आर्य समाज का गठन हो गया। श्री लक्ष्मी प्रसाद जी इसके प्रधान नियुक्त हुए तथा सर्वश्री मुन्नालाल, दारोगा लाल, हरिनारायण गुप्त, रामदयाल सिंह, वीरशमशेर सिंह इसके प्रथम सक्रिय सदस्य हुए।

'रघुवीर राम-गया राम' की कीराना-दुकान के सामने आर्य समाज के लिए खरीदी गयी जमीन पर एक मामूली-सी फूस की झोपड़ी खड़ी हुई, जिसमें प्रत्येक रविवार को सत्संग होने लगा। रक्सौल-आर्य समाज के इतिहास में सन् १९४४ का वर्ष विशेष महत्वपूर्ण है, जिसमें सर्वश्री नन्दकिशोर सीकरिया, सीताराम साह, मदनमोहन गुप्त, हरिहर प्र०, सहदेव राम, रामजीवन प्र०, गौरी शंकर प्र०, आदि के प्रयास से बिहार बैंक (रक्सौल शाखा) की ७ कट्ठा ९ धूर जमीन एक हजार आठ सौ साढ़े अठारह रुपये में खरीदी गयी, जिसपर आज आर्य समाज का भव्य मंदिर खड़ा है।

सन् १९५० से सन् १९७९ का काल रक्सौल-आर्य समाज का स्वर्ण काल है। इस अवधि में रक्सौल आर्य समाज ने अपने अहाते में भवन-निर्माण की दृष्टि से अथवा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। आज इस आर्य समाज के प्रांगण में दयानन्द भवन, कंचन यज्ञशाला, आर्य कन्या मध्य विद्यालय, दयानन्द उच्च प्राथमिक विद्यालय, बिहारी आर्य पुस्तकालय, निर्गुण राम दातव्य औषधालय, साधु आश्रम, आदि यहाँ के आर्य समाजियों के श्रम एवं निष्ठा की दुन्दुभी बजा रहे हैं। रक्सौल-आर्य समाज के विभिन्न भवन-निर्माण तथा विशेष दान के लिए सन् १९७४ में आर्य समाज, रक्सौल ने जिन व्यक्तियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये, उनके नाम हैं—सर्वश्री भोलाल भरतिया, रामनारायण राम लोहिया, रामधारी साह, गया प्र० बरनवाल, अखिलानन्द, सुगना मल राजपाल, विद्यावती देवी, रामाज्ञा ठाकुर, जुरीमल महादेव प्र०, गुलाब चन्द्र प्र०, विजय कुमार, अमरनाथ झा, अशर्फी राम कंचन राम और निर्गुण राम।

इनके अतिरिक्त जिन अन्य आर्य समाजियों ने रक्सौल आर्य समाज के बहुमुखी विकास में प्रमुख भूमिका निभायी है, उनके नाम हैं—सर्वश्री

राजालाल जी, कमलाकांत ठाकुर, बी० के० शास्त्री, रामचन्द्र आर्य, गोपाल प्र०, ओम्प्रकाश राजपाल, भरत प्र० आर्य, देवनन्दन प्र०, मुन्द्रिका सिंह, वीरप्रकाश तापड़िया, आदि। सम्प्रति आर्य समाज, रक्सौल के प्रधान-श्री वीरप्रकाश तापड़िया, उप प्रधान श्री रामाज्ञा ठाकुर, श्री नन्दकिशोर सीकरिया तथा सचिव श्री भरत प्रसाद आर्य हैं। श्री बी० के० शास्त्री इस संस्था के प्राण हैं।

● सत्संग—सन् १९५५ के आसपास रक्सौल पुलिस चेक-पोस्ट के दारोगा श्री भुवनेश्वर सिंह के पदस्थापन के साथ ही रक्सौल में कुछ आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों की सामूहिक बैठक शुरू हुई। धीरे-धीरे इस सामूहिक साधना-पद्धति ने जोर पकड़ा और सत्संगियों की संख्या दर्जनों में पहुँच गयी। सर्वश्री कंचन राम, गौरीशंकर प्र०, रामज्ञान राम (स्वर्णकार) नथुनी साह कानू, शिवबालक साह, नागेश्वर प्र०, जयगोविन्द राम, जयचन्द प्र०, सरयुग राम केसरियावाले, केशरी अग्रवाल, ताराचन्द गोयल, बनारसी राम, आदि इस साधना-पद्धति की ओर आकृष्ट हुए। आज इनकी संख्या बहुत कम रह गयी है।

● कबीर-पंथ—रक्सौल मौजे में ही आज से लगभग एक दशक पूर्व गला में कंठी धारण करनेवाले कबरीपंथियों की एक जमात का उद्भव हुआ। रक्सौल मौजे के एक व्यक्ति को किसी कबीरपंथी से कुछ लाभ पहुँचा था--और उसने मौजे के कई लोगों को इस पथ का अनुगामी बनाया। रक्सौल मौजे के श्री रामधारी महतो, श्री वंशी साह, आदि आज भी इस पथ के अनुगामी हैं।

● विपश्यना साधना—कभी वर्मा में रहनेवाले श्री सत्यनारायण गोयन्का ने बुद्धदेव की इस साधना-पद्धति को अपने जीवन में उतारकर अपरिमित लाभ उठाया था। आज वर्षों से श्री गोयन्का इस पद्धति का प्रचार भारतवर्ष में कर रहे हैं। इसी क्रम में सन् १९७२ में रक्सौल में १० दिनों का एक विपश्यना-साधना शिविर उन्होंने आयोजित किया, जिसमें रक्सौल तथा वीरगंज के ६० लोगों ने तथा १० विदेशियों ने भाग लिया। दूसरी बार सन् १९७५ में श्री गोयन्का ने पुनः १० दिनों का एक शिविर रक्सौल में आयोजित किया, जिसमें विदेशियों तथा वीरगंज-निवासियों की संख्या अधिक थी। ये दोनों शिविर श्री जगदीश प्रसाद सीकरिया के सद्प्रयास से आयोजित हुए। सर्वश्री जगदीश प्र० सीकरिया, द्वारका प्र० सीकरिया, (सम्प्रति वीरगंज-प्रवासी) सरदार सबीन्द्र सिंह, गगनदेव प्र० सिंह, आदि आज भी चित्त-विशुद्धि के निमित्त व्यक्तिगत तथा सामूहिक साधना में भाग लेते हैं।

आचार्य रजनीश के शिष्यों ने सन् १९७७ में होटल एशिया में तीन दिनों का एक शिविर आयोजित किया था, जिसमें रक्सौल के कई लोगों ने भाग लिया।

श्री विन्ध्याचल प्र० 'फ्रेमर' के निवास पर आध्यात्मिक विचारों से प्रभावित कुछ व्यक्तियों की बैठक अक्सरहां हुआ करती है। यहाँ बैठनेवालों में डा० एस० एन० राय ने आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुँत कुछ प्राप्त किया है।

● बहाई आध्यात्मिक सभा—पिछले दिनों बहाई आध्यात्मिक सभा ने विश्व-पैमाने पर पूरा जोर पकड़ा है। इसका मुख्य कार्यालय ईरान में है तथा इसके अनुयायियों की संख्या हजारों में है। सन् १९७४ में प्रो० पी० एन० राय की प्रेरणा से वीरगंज के कई लोग इस आध्यात्मिक सभा की ओर आकृष्ट हुए। २१ अप्रैल १९७८ को रक्सौल में इस आध्यात्मिक सभा का गठन हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री काशीनाथ शर्मा तथा सचिव श्री रामाशीष प्र० रावत निर्वाचित हुए। आज यहाँ कुल बहाई सदस्यों की संख्या ३६ है। इसके तत्वावधान में एक नवयुग बहाई विद्यालय भी रक्सौल में संचालित है। श्री काशीनाथ शर्मा उत्तर बिहार राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के प्रतिनिधि के रूप में दिल्ली अधिवेशन में इस वर्ष अप्रैल में सम्मिलित हो आए हैं।

१६. कुछ अन्य विभाग, योजनाएँ एवं संस्थाएँ

(सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं गैरसरकारी)

● **विद्युत् विभाग**—रक्सौल बिजली विभाग की पुरानी पंजियों को देखने से ज्ञात होता है कि रक्सौल में ८-१०-१९५७ को प्रथम उपभोक्ता ने बिजली की आपूर्ति प्राप्त की। उन दिनों रक्सौल को बैरगनिया-स्थित पावर हाउस से ऊर्जा प्राप्त होती थी, जहाँ बाद में बरौनी से ऊर्जा मिलने लगी। भारत सरकार के सहयोग से नेपाल में निर्मित त्रिशूली-पावर हाउस से, भारत नेपाल के बीच हुए एक समझौते के अनुसार, विद्युत् अवर प्रमंडल, रक्सौल को सन् १९७३ से बिजली-आपूर्ति की व्यवस्था हुई है। यह सही है कि चम्पारण के अन्य स्थानों की अपेक्षा, जहाँ बरौनी से बिजली आती है, रक्सौल-अवर प्रमंडल की अवस्था अच्छी है, पर यह भी सही है कि उतनी अच्छी नहीं है, जितनी अच्छी होनी चाहिए। त्रिशूली से अनवरत २४ घंटे, कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, बिजली की आपूर्ति होती रहती है, परन्तु स्थानीय अव्यवस्था के कारण उपभोक्ताओं को आये दिन घोर संकट का सामना करना पड़ता है।

इन दिनों विद्युत् अवर-प्रमंडल, रक्सौल के अन्तर्गत चार प्रशाखाएँ हैं—रक्सौल, रामगढ़वा, सुगौली एवं घोड़ासहन। ७० गांवों में विद्युतीकरण हो चुका है।

● **जलापूर्ति योजना**—रक्सौल में वाटर-सप्लाई के लिए आज से लगभग दो दशक पूर्व सन् १९६० में ६ लाख रु० की एक योजना तैयार हुई। पर काम में व्यवधान पड़ने के कारण श्रम-दर तथा सामानों के मूल्य में वृद्धि होती गयी और अब यह योजना १८ लाख रु० की हो गयी है।

पिछले कुछ वर्षों में रक्सौल की महत्ता में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है, जैसाकि पहले गया है। अतः रक्सौल में अनेक सरकारी कार्यालयों की स्थापना हुई है, जिनमें से कई की चर्चा कुछ पिछले अध्यायों में विस्तार के साथ हुई है। कुछ अन्य सरकारी कार्यालय एवं विभाग यों हैं—कर-विभाग कार्यालय, उत्पाद-कर विभाग-कार्यालय, मौसम विभाग-कार्यालय, श्रम कार्यालय, पौधा संरक्षण-कार्यालय, भ्रष्टाचार निरोध कार्यालय, वैज्ञानिक कृषि-विभाग (एग्रोनोमी), वित्त एवं उत्पाद विभाग के अन्तर्गत जाँच-चौकियाँ, आदि।

● **बैंक**- बहुत पहले यहाँ बिहार बैंक लि० की एक शाखा थी, जो १९४४

के आसपास बन्द हो गयी। उसने अपनी जमीन भी बेच दी, जिसके एक भाग पर आर्य समाज का भव्य मंदिर खड़ा है। सम्प्रति सेन्ट्रल बैंक, स्टेट बैंक, भूमि विकास बैंक, एवं चम्पारण ग्रामीण क्षेत्रीय बैंक इस क्षेत्र के लोगों की सेवा कर रहे हैं। सन् १९७४ में वीणा क्रेडिट एंड इन्भेस्टमेंट, अलका क्रेडिट एंड इन्भेस्टमेंट' जैसी कम्पनियों ने अधिक सूद देने के कारण बड़ी तेजी से लोगों को अपनी तरफ आकृष्ट किया था, पर कुछ ही दिनों के बाद ये कम्पनियाँ रातोरात रफूचक्कर हो गयीं।

सार्वजनिक संस्थाएँ

● **पुस्तकालय**—पहला सार्वजनिक पुस्तकालय आर्य समाज द्वारा संचालित था, जो आर्य समाज की स्थापना के साथ ही कुछ धार्मिक-आध्यात्मिक पुस्तकों के साथ प्रारंभ हुआ। सन् १९३० के बाद स्व० श्री हरद्वारीमल के शिक्षा-प्रेमी सुपुत्र श्री बिहारीलाल ने "बिहारी सार्वजनिक पुस्तकालय" के नाम से एक पुस्तकालय का शुभारंभ किया, जो सन् १९५२ के आस-पास तक बैंक रोड में चलता रहा। पर किन्हीं परिस्थितियों में इसकी समस्त पुस्तकें आर्य समाज, रक्सौल को उपलब्ध हो गयीं और दोनों के नाम को स्थाई रखने के लिए एक नया नामकरण हुआ, 'बिहारी आर्य पुस्तकालय, जिस नाम से आज भी यह आर्य समाज के प्रांगण में अवस्थित है। नये पुस्तकालय भवन के निर्माण में श्री चन्द्रदेव प्र० सर्राफ का आर्थिक-शारीरिक योगदान पुस्तकालय के इतिहास में अक्षुण्ण रहेगा। किन्हीं परिस्थितियों में बीरगंज का नेपाल-भारत सांस्कृतिक केन्द्र बन्द हो गया और रक्सौल के नागरिकों के प्रयास से उसकी सारी पुस्तकें, जिनकी कीमत आज की दर से एक लाख रुपये से भी अधिक होगी, भारत के विदेश विभाग द्वारा बिहारी आर्य पुस्तकाल को उपलब्ध हो गईं। दो संस्थाओं के आपसी संघर्ष के कारण बहुत दिनों तक यह पुस्तकालय बन्द रहा। वस्तुतः यह पुस्तकालय आज रक्सौल की एक निधि है।

समय-समय पर और भी कई सार्वजनिक पुस्तकालय खुले—विशेषतः छात्रों-किशोरों द्वारा, पर उनमें से अधिकांश बन्द हो गए और जो एक-दो शेष हैं, उनमें जीवंतता नहीं के बराबर है।

● **नेहरू-युवा-विचार-मंच**—श्री अर्जुन सिंह भारतीय, पत्रकार के सद्‌प्रयास एवं श्री अवधेश कुमार गुप्त (परसौनी गद्दी) के सहयोग से सन् १९७६ में रक्सौल में नेहरू-युवा-विचार मंच का गठन हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह (महदेवा), उपाध्यक्ष श्री रामपुकार सिंह एवं सचिव श्री प्रभाषचन्द्र गुप्त निर्वाचित हुए। लगभग डेढ़-दो वर्षों तक रक्सौल नगर

के साथ-साथ इर्द-गिर्द के इलाकों में वैचारिक जागरण के निमित्त इस मंच ने प्रशंसनीय कार्य किया जिसमें विशेषतः श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह का योगदान महत्वपूर्ण था।

● **नेहरू-युवा-क्रीड़ा-परिषद्**—नेहरू-युवा विचार-मंच के तत्वावधान में एक क्रीड़ा-परिषद् का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह, तथा सचिव श्री संतोष कुमार हुए। इस क्रीड़ा-परिषद् ने अपने जीवन के एक-डेढ़ वर्षों में मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, आदि स्थानों से रक्सौल में कई शानदार क्रिकेट मैच आयोजित किए।

● **रक्सौल-क्रीड़ा-परिषद्**—२५-११-'७६ को रक्सौल क्रीड़ा-परिषद का गठन हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री सगीर अहमद, उपाध्यक्ष श्री बब्बन मिश्र, सत्येन्द्र प्र० सिंह एवं दिनेश त्रिपाठी तथा सचिव श्री रामलखीन सिंह, निर्वाचित हुए। परन्तु इस परिषद् ने क्रीड़ा के क्षेत्र अब तक कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं किया है।

● **बोर्डर स्पोर्ट्स क्लब**—१५ अगस्त १९७७ को इस क्लब का गठन हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री पवन कुमार चौधरी, उपाध्यक्ष श्री राधामोहन पाठक, सचिव श्री विद्यानन्द सिंह (शिक्षक) निर्वाचित हुए। इस क्लब ने मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, बैरगनिया, वीरगंज, सुगौली आदि स्थानों से क्रिकेट एवं भॉलीबॉल के कई महत्वपूर्ण मैच खेले। सम्प्रति क्लब की गतिशीलता में कुछ कमी आ गयी है।

● **इन्डियन स्पोर्ट्स क्लब**—आज से लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व रक्सौल में इस क्लब की स्थापना हुई, जिसके अध्यक्ष श्री दिनेश प्रसाद, मैनेजर श्री सुरेश कुमार तथा सचिव श्री अशोक कुमार सिन्हा हुए। श्री नागेश कुमार वर्मा इस संस्था के प्राण थे। इस क्लब ने भी बाहर से कई मैच आयोजित किए। इन दिनों इस क्लब में निष्क्रियता आ गयी है।

● **स्टार एलेवेन**—श्री नरेश कुमार मित्तल, श्री संजय कुमार चौरसिया, श्री प्रभात कुमार सीकरिया, आदि के सक्रिय सहयोग से स्टार एलेवेन ने कई क्रीड़ा-प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं। परन्तु आज यह क्रीड़ा-परिषद भी निष्क्रिय है।

सार्वजनिक क्लब—सन १९५२-५३ के आसपास रक्सौल में आज के स्टेट बैंक के सामने के मकान में पहली बार एक सार्वजनिक क्लब की स्थापना हुई थी, जिसमें संध्या समय कतिपय सरकारी अधिकारी एवं रक्सौल के कुछेक नागरिक गपशप, ताश एवं कभी-कभार गोष्ठी के माध्यम

से अपना मनोरंजन किया करते थे। परन्तु १९६० ई० के पूर्व ही इस संस्था की मृत्यु हो गई।

● **रक्सौल क्लब**—सन् १९७० के आसपास बड़े जोर-खरोश से एक और क्लब (रक्सौल क्लब) की स्थापना हुई, जिसमें रक्सौल-स्थित गुप्तचार विभाग के तत्कालीन निरीक्षक श्री बी० पी० सिंह, अभियंता मुन्द्रिका सिंह, डा० पी० डी० सिन्हा, आदि के प्रयास से इस क्लब में जान आ गयी। इस संस्था के तत्वावधान में सन् १९७२ में आयोजित विराट् कवि सम्मेलन विशेष महत्व रखता है, पर इस वृहत् आयोजन के बाद सदस्यों में बिखराव आ गया और यह संस्था भी काल-कवलित हो गयी।

● **सोशल-मिट-टुगेदर**—सन् १९७६ में सोशल-मिट-टुगेदर (Social-Meet-Together) नाम से रक्सौल में एक संस्था का उद्‌भव हुआ, जिसमें प्रत्येक बुधवार को बारी-बारी से एक-एक सदस्य के निवास-स्थान पर चाय की चुस्कियों के बीच मनोरंजन के साथ-साथ विभिन्न पहलुओं पर विचार-विनिमय होते। इस संस्था के सदस्यों की संख्या ३० तक पहुँच गयी थी, पर यह संस्था एक वर्ष तक भी जीवित नहीं रह सकी।

● **लायन्स क्लब**--वीरगंज के लायन्स क्लब के प्रयास से, जिसमें लायन द्वारका प्र० सीकरिया का विशेष योगदान था, १७ दिसम्बर १९७६ को अन्तर्राष्ट्रीय नगरी रक्सौल में अन्तर्राष्ट्रीय संस्था लायन्स क्लब का उद्‌भव हुआ। इस संस्था की स्थापना में श्री सगीर अहमद, डा० पी० डी० सिन्हा, श्री रामेश्वर तिवारी, श्री जगदीश प्र० सीकरिया, आदि ने विशेष अभिरुचि ली। इस समाज-सेवी संस्था ने सन् १९७७ में नेत्र-शिविर आयोजित कर लगभग १५० चक्षु-रोगियों को रोशनी प्रदान की, सन् १९७८ में आन्ध्र प्रदेश के तूफान-पीड़ित लोगों के लिए १०१० रु० की नकद राशि, सैकड़ों रु० के वस्त्र तथा ५ हजार रु० की दवाएँ भेजीं। इस क्लब के अधिकारी-सदस्य यों हैं - श्री टी० पी० सिन्हा-अध्यक्ष, श्री पी० डी० सिन्हा-प्रथम उपाध्यक्ष, श्री जगदीश प्र० सीकरिया-द्वितीय उपाध्यक्ष, श्री रामेश्वर तिवारी-तृतीय उपाध्यक्ष, श्री एन० सी० पांडेय-सचिव; श्री सुशील कुमार सीकरिया संयुक्त सचिव; श्री ओ० पी० सरावगी-कोषाध्यक्ष। सदस्य—डा० म० यूसुफ, श्री लालबाबू रूंगटा, श्री सीताराम सराफ, श्री किशनलाल अग्रवाल, श्री जगदीश प्र० मित्तल, श्री बद्री प्र० सीकरिया, श्री सुरेश कुमार सक्सेना, श्री श्रवण कुमार हलवासिया, डा० आफताब आलम, श्री बी० डी० सिन्डे, श्री शिवकुमार भरतिया।

● **धर्मशाला**—सन् १९३० के आस-पास छपरा जिला-निवासी स्व० श्री बिन्दा प्र० द्वारा स्थापित धर्मशाला लम्बे समय तक बाहर के यात्रियों को आवासीय सुविधाएँ मुहैया करती रही है। पर आज इस धर्मशाला में सुव्यवस्था का अभाव है। यह धर्मशाला कम, किरायाशाला अधिक बन गयी है। रक्सौल बाजार-स्थित मस्जिद से सम्बद्ध सराय की भी हालत कुछ ऐसी ही है।

● **डूंगरमल भरतिया स्मृति सदन**—एक ही साथ टाउन-हॉल, विवाह-भवन, सुविधा-सम्पन्न धर्मशाला आदि के अभाव की यह पूर्ति करता है। काश ! यह स्मृति सदन नगर के बीच में होता ।

● **जिला पर्षद निरीक्षण भवन**—डिस्ट्रिक्ट बोर्ड डाकबंगला के नाम से प्रसिद्ध इस निरीक्षण भवन का निर्माण आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व हुआ था। ब्रिटिश शासन के जमाने में रक्सौल आनेवाले अंग्रेजों, अन्य भारतीय अधिकारियों तथा नेताओं आदि का यह अस्थायी निवास बनता रहा। आज भी विशेषत: इसमें सरकारी अधिकारी ही टिका करते हैं ।

● **गंडक योजना निरीक्षण भवन**—रक्सौल-स्थित गंडक योजना-कार्यालय के परिसर में नयी शैली पर निर्मित्त, सुविधाओं से सम्पन्न इस निरीक्षण भवन में विशेषतः मंत्री, उच्च पदस्थ पदाधिकारी टिका करते हैं।

● **अंचल कार्यालय**—रक्सौल अंचल का निर्माण २-१०-१९५७ को हुआ। इस अंचल के अन्तर्गत ८ हल्का और १६ पंचायत हैं। इन १६ पंचायतों के राजस्व गांवों की संख्या ४५ है, जिनमें १२२९१ परिवार निवास करते हैं। १-४-१९६६ से रक्सौल में शैडो पैकेज कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सम्प्रति श्री त्रिभुवन प्र० सिन्हा परियोजना कार्यपालक पदाधिकारी तथा श्री श्यामसुन्दर प्र०, अंचलाधिकारी हैं। ९-४-७९ से पंचायती राज्य-अन्तर्गत प्रमुख श्री लाल बहादुर सिंह का कार्यालय भी इस अंचल-कार्यालय में अवस्थित है।

● **वाणिज्य-कर-विभाग**—पिछले लगभग दो वर्षों से रक्सौल में वाणिज्य-कर-विभाग की स्थापना से रक्सौल के व्यापारियों-व्यवसायियों को बड़ी सुविधा हो गयी है। सम्प्रति रक्सौल वाणिज्य-कर अनु-अंचल में श्री महेश्वरी प्रसाद महेश, वाणिज्य-कर अपर अधीक्षक हैं।

१९७८-७९ वर्ष में बिक्री-कर के अन्तर्गत दो लाख एकतीस हजार आठ सौ चार रुपये वसूले गए, जो गत वर्ष की तुलना में बावन हजार नौ सौ एकतालीस रुपये ज्यादा हैं। मनोरंजन-कर-अन्तर्गत तीन लाख दस हजार आठ सौ रुपये संग्रह हुए, जो पिछले वर्ष की तुलना में उनचास हजार एक सौ उन्यासी रुपये ज्यादा हैं।

२०. विशिष्ट व्यक्तित्व : जिनकी श्रम-साधना ने रक्सौल को गति दी

यशस्वी दिवंगत आत्माएँ

● **श्री मुन्नालाल अग्रवाल**—रक्सौल बाजार के प्रारंभिक दिनों में बसनेवालों में उन्नाव (उत्तर प्रदेश) के श्री मुन्नालाल अग्रवाल अपने जीवन-पर्यन्त (सन् १९३६ ई० तक) रक्सौल बाजार के विविध महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यों के सम्पादन में प्रथम पंक्ति में रहे। चाहे आर्य समाज की स्थापना हो, पुस्तकालय का विस्तार हो या आजादी की लड़ाई में सक्रिय सहयोग देने का संदर्भ--सब में श्री अग्रवाल ने अहम् भूमिका निभाई।

● **श्री वीरशमशेर सिंह**—महदेवा ग्राम-निवासी श्री राजेश्वर सिंह के पिता श्री वीरशमशेर सिंह का सामाजिक कार्य-क्षेत्र रक्सौल रहा है। सन् १९१८ से सन् १९४० (निधन काल) तक रक्सौल की विभिन्न संस्थाओं के संस्थापन-संचालन में इन्होंने सक्रिय सहयोग दिया। विशेषतः राष्ट्रीय गांधी विद्यालय, रक्सौल (१९२१ ई०) और फूलचन्द साह म० विद्यालय, रक-सौल (१९३४ ई०) के निर्माण में इन्होंने जो आर्थिक-शारीरिक सहयोग दिया, वह रक्सौल के शिक्षा-जगत् के इतिहास में अमिट है। फूलचन्द साह म० विद्यालय, रक्सौल की कार्य-कारिणी के सभापति-पद को वर्षों सुशोभित करनेवाले श्री वीरशमशेर सिंह रक्सौल, आर्यसमाज के उपप्रधान पद को भी गौरवान्वित कर चुके हैं। आजादी की लड़ाई में उनका आर्थिक-वैचारिक सहयोग उनके जीवन का एक दूसरा महत्वपूर्ण अध्याय है।

● **श्री जगन्नाथ प्र० जालान**—रक्सौल बाजार की नींव पड़ते ही बसनेवाले प्रथम प्रमुख व्यवसायी स्व० श्री जगन्नाथ प्र० जालान का नाम एक सामाजिक चेतनशील व्यक्ति के रूप में सामने उभर कर आता है। गांधी राष्ट्रीय विद्यालय की प्रबंध--कारिणी-समिति के सभापति-पद को एक लम्बी अवधि तक गौरवान्वित करनेवाले स्व० श्री जालान ने अपने जीवन-काल में रक्सौल की अनेक संस्थाओं को न केवल मुक्त हस्त से आर्थिक दान दिया, बल्कि इन संस्थाओं को अपने वैचारिक सहयोग भी दिए। रक्सौल में प्रथम मोटरकार और प्रथम रेडियो-सेट के स्वामी, लक्ष्मी के वरद पुत्र श्री जालान ने स्वयं सुखमय जीवन तो जिया ही, कई विपन्न लोगों के जीवन को

भी सुखमय बनाने में भारी सहयोग किया। आवश्यकता पड़ने पर लोगों की सहायता के लिए वे जिस रूप में तैयार रहते थे, उसकी याद आज भी कई बूढ़े लोग करते हैं। ५ नवम्बर १९३० को उनके निधन-दिवस पर रक्सौल बाजार पूर्णतः बन्द रहा, जो उनकी लोकप्रियता का द्योतक है।

● **श्री रतनलाल मस्करा**—नायकटोला (आदापुर) से रक्सौल आनेवाले स्व० श्री रतन लाल मस्करा न केवल एक प्रमुख व्यवसायी रहे हैं, बल्कि रक्सौल बाजार के निर्माण में भी उनका हाथ रहा हैं। रक्सौल बाजार के निर्भीक लोगों की श्रेणी में वे प्रथम आते हैं, जिन्हें रक्सौल बाजार के संस्थापक मि० एफ० डी फ्लेचर जैसे शक्तिशाली अंग्रेज से भी लोहा लेने में हिचक नहीं हुई। विजयश्री स्व० श्री मस्करा को ही मिली और उन्होंने रक्सौल की शेष भूमि को स्वयं बन्दोबस्त किया। कानून से वास्ता रखनेवाले, गंभीर प्रकृति के स्व० श्री मस्करा ने बाजार के लिए कुछ सामाजिक कार्य भी किए, जिनमें 'रतन लाल चौक' तथा बाजार में कई जगह कुएँ का निर्माण आदि प्रमुख हैं। श्री मस्करा का निधन' सन्' ४५ में हो गया।

● **श्री रामचन्द्र प्र०**—अभी-अभी बस रहे रक्सौल में वीरगंज से आनेवाले स्व० श्री रामचन्द्र प्र० (रौनियार) का नाम व्यवसायी के साथ एक प्रमुख सामाजिक व्यक्तित्व के रूप में भी लिया जाता है। ऐसा सुना जाता है कि स्व० श्री रामचन्द्र प्र० रक्सौल के प्रथम कपड़ा-व्यवसायी थे, जिन्होंने करीने से कपड़ा की दुकान लगाने की नींव डाली, अर्थात् आलमारी में सुरुचिपूर्ण ढंग से कपड़ा सजाने का शुभारंभ किया। कम पढ़े-लिखे, पर व्यवहार-कुशल श्री प्रसाद की पूछ उन दिनों रक्सौल की हर सामाजिक-धार्मिक-शैक्षणिक संस्था में होती थी।

● **श्री हजारीमल जी**-इस शताब्दी के दूसरे दशक में रक्सौल आनेवाले स्व० सेठ हजारीमल जी ने कपड़ा के व्यवसाय में अपनी निष्ठा एवं लगन के फलस्वरूप रक्सौल से लेकर काठमांडू तक जो कीर्तिमान स्थापित किया, वह रक्सौल के व्यावसायिक इतिहास में अमिट है। महान् धर्मपरायण सेठजी ने तदनुरूप अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग भी किया। हजारीमल उच्च विद्यालय, रक्सौल के अतिरिक्त सीमा से सटे नेपाली क्षेत्र में भव्य विष्णु मन्दिर, वीरगंज धर्मशाला, आदि उनके शिक्षा-प्रेम और धार्मिक प्रवृत्ति के ज्वलंत उदाहरण एवं कीर्ति-स्तम्भ हैं। जरूरतमंद लोगों की सहायता में तत्पर, धार्मिक-सामाजिक अनुष्ठानों की सम्पन्नता में आगे सेठजी लगभग ८५ वर्ष की अवस्था में बनारस की पुण्य-भूमि में अपने इहलौकिक शरीर का

परित्याग कर स्वर्गवासी हो गए।

● **श्री रामरीझन पांडेय**—गोविन्दगंज थाना-निवासी स्व० श्री रामरीझन पांडेय ने रक्सौल, गांधी राष्ट्रीय विद्यालय में सन् १९२२ के आस-पास एक अंग्रेजी-शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया था। वर्षों शिक्षक के पद पर काम करने के पश्चात् पांडेय जी श्री हरि प्रसाद जालान की मिल में मैनेजर के पद पर नियुक्त हो गए। पर शिक्षा-जगत से उनका संबंध कभी नहीं टूटा। रक्सौल में हाई स्कूल की स्थापना में जिन दो-चार व्यक्तियों के नाम प्रथम पंक्ति में आते हैं, उनमें स्व० पांडेय जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

● **श्री गणेश प्र० 'निर्भीक'**—सन् १९०४ में गोबरी जनेरवा गांव में जन्मे श्री गणेश प्र० 'निर्भीक' एक कवि थे, स्वतंत्रता-सेनानी थे, आर्य समाजी थे और थे चेतनशील नागरिक। कानपुर से छपनेवाले 'सुकवि' में स्व० निर्भीक' की १९३०-३२ में प्रकाशित कविताएँ न केवल पठनीय हैं, बल्कि रक्सौल के साहित्यिक इतिहास के लिए महत्वपूर्ण भी हैं। बड़े लोगों से सम्पर्क स्थापित करना तथा पत्राचार करना जिनका शौक था, जो सामाजिक कार्यों की सम्पन्नता के लिए सदा तत्पर रहते थे, जो कुरीतियों से टक्कर लेने के लिए हमेशा तैयार रहते थे, वैसे 'निर्भीक' पुरुष का निधन हृदय गति रुक जाने से अल्पायु में हो (मात्र ४३-४४ की उम्र में) हो गया।

● **श्री ब्रह्मदेव राम 'निगम'**—छपरा जिला-निवासी श्री ब्रह्मदेव राम 'निगम' रक्सौल के एक ऐसे प्रखर व्यक्तित्व थे, जिनमें साहित्यिक प्रतिभा थी, अच्छा अध्ययन था, शास्त्रार्थ करने की कला थी और समाज की सेवा करने की उत्कट अभिलाषा थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्व० श्री 'निगम' से पोंगापंथी पनाह मांगते थे, असामाजिक तत्व भय खाते थे और अधकचड़ ज्ञान वाले दूर भागते थे।

● **श्री लक्ष्मी प्र०**—रतनमाला-ग्राम निवासी श्री लक्ष्मी प्र० बाजार बसने के प्रारंभिक दिनों में ही आये और अपने प्रखर व्यक्तित्व तथा प्रगतिशील विचारों से थोड़े ही दिनों में रक्सौल में जनप्रिय हो गए। सामाजिक कार्यकलापों में विशेष अभिरुचि रखनेवाले श्री लक्ष्मी प्र० सन् १९२८ में ही रक्सौल आर्य समाज के उप-प्रधान पद पर पहुंच गए थे।

● **श्री अशर्फी राम**—छपरा जिला-निवासी श्री अशर्फी राम ने अपने अध्यव्यवसाय एवं निष्ठा की बदौलत रक्सौल में सम्पत्ति तो अर्जित की ही, अपनी धार्मिक प्रवृत्ति एवं खुले विचारों के कारण पर्याप्त यश भी प्राप्त

किया। चाहे आर्य समाज के लिए दान देने का प्रसंग हो, या नगर के विकास का मुद्दा, श्री अशर्फी राम अगली पंक्ति में होते। दानशील स्व० श्री अशर्फी राम ने रक्सौल की कई संस्थाओं को मुक्त हस्त से दान दिया और यश के भागी बने।

● **श्री अखिलानन्द**—श्री अखिलानन्द जी के जीवन पर गुरुकुल में प्राप्त शिक्षा-दीक्षा की गहरी छाप थी। आर्य समाज के विचारों के प्रचार-प्रसार के निमित्त समर्पित श्री अखिलानन्द ने रक्सौल, आर्य समाज-मन्दिर तथा इससे संबद्ध अन्य संस्थाओं के उन्नयन-उत्थान में जीवन-पर्यन्त जिस उत्साह, सुरुचि और निष्ठा के साथ सक्रिय सहयोग किया, वह रक्सौल, आर्य समाज के इतिहास में अमिट रहेगा।

● **श्री रामगोविन्द राम**—संग्रामपुर में सन् १८९३ ई० में जन्मे श्री रामगोविन्द राम अपने पिता श्री सखीचन्द साह के साथ रक्सौल में उस समय पहुँचे जब रक्सौल बाजार अभी-अभी बस रहा था। कम पढ़े-लिखे श्री रामगोविन्द राम में कर्मठता, सामाजिकता, व्यवहार-कुशलता कुछ ऐसे गुण थे जिनकी बदौलत उन्होंने धन भी अर्जित किया और यश भी। विभिन्न भवनों, सड़कों आदि के सफल ठेकेदार के रूप में काम करनेवाले श्री राम-गोविन्द राम रक्सौल यूनियन बोर्ड के सन् १९४६ से १९५५ तक उपाध्यक्ष के पद पर समासीन रहे। बाजार में किसी की बारात निकलती हो या कोई धार्मिक जुलूस, श्री रामगोविन्द राम उसकी शोभा, श्री-सम्पन्नता और सफ-लता के लिए अगली पंक्ति में होते। ऐसे समाज-सेवी व्यक्ति का निधन ८५ वर्ष की उम्र में १५ अगस्त १९७७ को हो गया।

● **श्री श्रीलाल भरतिया**—रक्सौल बाजार के प्रारंभिक दिनों में एक मात्र सबसे अधिक पढ़े-लिखे व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले स्व० श्री श्रीलाल भरतिया व्यवसाय के सिलसिले में सन् १९२० के आस-पास रक्सौल आए। अन्नपूर्णा राइस मिल के संचालक स्व० श्री श्रीलाल भरतिया कई शैक्षणिक-सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं से न केवल सम्बद्ध रहे, बल्कि उनके संचालन के दायित्वपूर्ण भार को उन्होंने बखूबी निभाया। गांधी राष्ट्रीय विद्यालय तथा हजारीमल उच्च विद्यालय की कार्यकारिणी समि-तियों के सचिव के रूप में एक लम्बी अवधि तक उन्होंने जो कीर्तिमान स्था-पित किया, वह रक्सौल के शिक्षा-जगत् के इतिहास में लम्बे समय तक अंकित रहेगा। धार्मिक अध्ययन-मनन में लीन रहनेवाले भरतिया जी ने रक्सौल में कई कीर्ति-स्तम्भ खड़े किए हैं।

● **श्री दारोगा लाल**—स्वतन्त्रता-संग्राम में सक्रिय भाग लेनेवाले दारोगालाल जी ने जेल की यातनाएँ भी सहीं। पक्के गांधीवादी श्री दारोगा लाल ने सर्वोदयी विचारधारा तथा उसके साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया था। बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि ऐसे सीधे-सादे, स्वतन्त्रता-सेनानी को सरकार की ओर से पेन्शन भी प्राप्त नहीं हो सका और इस वयोवृद्ध व्यक्ति ने ८५ वर्ष की उम्र में ३० अप्रैल १९७९ को चक्षुरोग तथा अन्य कई बीमारियाँ झेलते हुए अपनी इहलिला समाप्त कर दी।

● **श्री प्रेमचन्द्र**—कृपया पृष्ठ १२४ और १३७ देखें।

● **श्री मदनमोहन गुप्त**--छपरा जिला से आये कट्टर आर्यसमाजी श्री हरिनारायण गुप्त के ६ यशस्वी पुत्रों में से एक स्व० श्री मदन मोहन गुप्त, रक्सौल के एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व रहे हैं, जिन्होंने नेपाल की राजधानी काठमांडू में रक्सौल का नाम वर्षों रौशन किया है। आर्यसमाजी विचारों से प्रभावित श्री मदन मोहन गुप्त ने रक्सौल आर्यसमाज के उत्थान के लिए बहुत कुछ किया है। श्री गुप्त के साहित्यिक एवं पत्रकारिता से सम्बद्ध प्रकरणों के लिए कृपया पृष्ठ १३२ और १३८ देखें।

● **कुछ अन्य दिवंगत विभूतियां**--रक्सौल के सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के पृष्ठों को पलटने पर ऐसी कई दिवंगत आत्माओं के नाम अंकित मिलते हैं, जिन्हें यहाँ दे देना प्रासंगिक होगा। वैसे नाम हैं—सर्वश्री राजलाल जी, कमलाकांत ठाकुर, लखिचन्द राम, बिहारी लाल भरतिया, डूंगरमल भरतिया, सहदेव राम, तपेसर राम, आदि।

● सामाजिक-राजनैतिक कार्यकर्त्ता, जिनका योगदान आज भी रक्सौल को सुलभ है—

● **श्री लक्ष्मी सिंह**—बन्धुबरवा-ग्राम-निवासी श्री लक्ष्मी सिंह अपनी युवावस्था से ही राजनीति में अभिरुचि लेते रहे हैं। सन् १९४२ की अगस्त-क्रांति में जेल-यातना भोगने वाले तथा स्वतन्त्रता-सेनानी के रूप में पेंशन प्राप्त करने वाले श्री लक्ष्मी सिंह का कार्य-क्षेत्र भले ही विस्तृत हो, पर सदा से रक्सौल ही उनका मुख्य अड्डा रहा है। रक्सौल के भूतपूर्व विधायक पं० राधा पांडेय के अन्यतम सहयोगी, कभी संगठन कांग्रेस के सक्रिय सदस्य आज रक्सौल जनता पार्टी के क्रियाशील कार्यकर्त्ता तथा जिला जनता पार्टी कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में अपनी अस्वस्थता के बावजूद राजनीति में लगे हैं।

● **श्री नन्दलाल प्रसाद**—अपनी किशोरावस्था से ही समाजवादी विचारधारा से प्रभावित श्री नन्दलाल प्र० ने लोहिया-साहित्य को पढ़ा है, गुना है और उसे जीवन में उतारा है। स्वाध्याय के बल पर ठोस ज्ञानार्जन करनेवाले श्री नन्दलाल प्र० रक्सौल में उदाहरण-स्वरूप हैं। एक सजग एवं निर्भीक पत्रकार के रूप में भी श्री नन्दलाल प्र० ने प्रतिष्ठा पायी है। रक्सौल के भूतपूर्व विधायक स्व० श्री विन्ध्याचल सिंह के कंधे से कंधा मिलाकर रक्सौल-क्षेत्र के गांव-गांव, डगर-डगर समाजवादी विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए श्री नन्दलाल प्र० ने स्तुत्य श्रम किया है। सुलझे हुए व्यक्तित्व तथा सुवक्ता श्री नन्दलाल प्र० पूर्वी चम्पारण जनता समाजवादी मंच के सचिव के महत्वपूर्ण पद को बखूबी निभा रहे हैं।

● **श्री लालपरेखा मिश्र**—गोविन्दगंज थानान्तर्गत सरेया-पिपरा के निवासी श्री लालपरेखा मिश्र ने आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व पशुपति राइस, फ्लवार एंड वायल मिल्स, रक्सौल के प्रबंधक के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया था। कुछ वर्षों तक वहाँ काम करने के बाद वे सक्रिय राजनीति में आ गए। श्री लालपरेखा मिश्र कांग्रेस के प्रबल समर्थक रहे हैं—उसके सुदिन में भी, दुर्दिन में भी। आज कांग्रेस इ० के कट्टर पक्षधर श्री मिश्र रक्सौल में राजनीति का सम्यक् ज्ञान रखनेवाले व्यक्तियों में एक हैं। समय-समय पर होनेवाले कांग्रेस के आयोजनों-समारोहों की सफलता में उनका अप्रतिम योगदान है। खेमचन्द महाविद्यालय, रक्सौल के संस्थापक-सदस्यों में एक श्री मिश्र इसकी प्रगति के लिए सतत सचेष्ट हैं। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के एक सदस्य के रूप में रक्सौल से प्रतिनिधित्व करनेवाले श्री लालपरेखा मिश्र सोत्साह काम करते हैं।

● **श्री शंकर प्र० यादव**—रामगढ़वा के जगवलिया ग्राम-निवासी श्री शंकर प्र० यादव, जो शुरू से ही समाजवादी विचार-धारा से प्रभावित हैं, अबतक रक्सौल-क्षेत्र से विधान सभा-सदस्य के प्रत्याशी के रूप में कई बार खड़े हो चुके हैं। यह सही है कि विजय-श्री उन्हें प्राप्त नहीं हुई, पर हरबार उनके द्वारा प्राप्त मतों की संख्या-क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता प्रकट करती है। नम्र, हंसमुख और मिष्ट-भाषी श्री यादव पूर्वी चम्पारण जिला जनता पार्टी की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य हैं।

● **श्री राजनन्दन प्र० राय**—सिसवा ग्राम-निवासी श्री राजनन्दन प्र० राय अपने गाँव के इलाके में लोकप्रिय तो हैं हीं, जिसका प्रमाण कई बार उनका मुखिया चुना जाना है, विगत दिनों रक्सौल बाजार में भी

इन्होंने काफी लोकप्रियता हासिल की है। हर किसी की बात सुनने के लिए तैयार, हर किसी की मदद के लिए तत्पर श्री राय का जीवन समाज के लिये समर्पित है। कई संस्थाओं से संबद्ध श्री राय कांग्रेस के समर्थक हैं।

● **श्री म० शफी**—डुमरिया ग्राम-निवासी शफी साहब समाजवादी विचार-धारा से प्रभावित हो सक्रिय राजनीति में आये। शफी साहब की श्री-सम्पन्नता उन्हें राजनीति में भाग लेने की अनुकूलता प्रदान करती है। सन् १९७७ के बिहार-विधान सभाई चुनाव में म० शफी स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में खड़े थे, जिसे जनता मोर्चा का समर्थन-सहयोग प्राप्त था। इस चुनाव-अभियान में असफलता के बावजूद शफी साहब ने बहुत सारे अनुभव प्राप्त किए। रक्सौल अंचल-कार्यालय के निकट स्थापित मुस्लिम धार्मिक-शैक्षणिक संस्था के उन्नयन-उत्थान के लिए सन् १९७६ में म० शफी द्वारा किया गया प्रयास उनकी बेजोड़ कार्य-क्षमता प्रकट करता है।

● **श्री ओम प्रकाश राजपाल**—सिन्ध से शरणार्थी के रूप में आये, राष्ट्रीयता और हिन्दुत्व के प्रबल समर्थक श्री ओमप्रकाश राजपाल ने रक्सौल में अपने श्रम और सद्गुणों से धन और यश दोनों अर्जित किया है। नम्र-हृदय, मितभाषी, उदारमना श्री राजपाल ने पिछले दो दशक में रक्सौल के सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेषतः रक्सौल जनसंघ पार्टी के भूतपूर्व अध्यक्ष के रूप में। रक्सौल कस्तूरबा कन्या उच्च विद्यालय के उपप्रधान तथा आर्य समाज, रक्सौल के अधिकारी के रूप में श्री राजपाल ने इन दोनों संस्थाओं के चतुर्दिक विकास में अपना अप्रतिम योगदान दिया है। रक्सौल जनता पार्टी नगर तदर्थ समिति के अध्यक्ष तथा रक्सौल नगर लोक समिति के संयोजक के रूप में श्री राजपाल जी अहम् भूमिका निभा रहे हैं।

● **श्री बृजलाल अग्रवाल**—पिछले एक दशक से रक्सौल की राजनीति तथा सामाजिक गतिविधि में सक्रिय भाग लेनेवाले आतिथ्य-प्रेमी श्री बृजलाल अग्रवाल का रक्सौल-स्थित व्यवसाय केन्द्र राजनैतिक-सामाजिक नेताओं और कार्यकर्त्ताओं का केन्द्र स्थल है, जहाँ रक्सौल से संबंधित राज-नीतिक संदर्भ में न जाने अबतक कितने महत्वपूर्ण निर्णय लिए जा चुके हैं। अपनी व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद कुछ समय निकाल कर सामाजिक कार्यों में योगदान करनेवाले श्री अग्रवाल रक्सौल नगरपालिका के आयुक्त हैं तथा रक्सौल जनता पार्टी नगर तदर्थ समिति के एक सचिव भी।

● **श्री श्याम सुन्दर सर्राफ**—रक्सौल जनसंघ के भूतपूर्व उपा-

ध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर सर्राफ सम्प्रति रक्सौल जनता पार्टी तदर्थ समिति के एक सचिव हैं। जनसंघी विचार धारा से प्रभावित श्री सर्राफ के पास राजनीति में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय है। अपेक्षा है केवल उसके सदुपयोग की। श्री सर्राफ इन दिनों रक्सौल गौशाला के मंत्री भी हैं।

● **श्री भूदेव नारायण सिंह**—रामगढ़वा के पटनी ग्राम-निवासी भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के नेता श्री भूदेवनारायण सिंह, एम० ए० का कार्यक्षेत्र इर्द-गिर्द के ग्रामीण क्षेत्रों के अतिरिक्त रक्सौल बाजार भी है। ह०उ० विद्यालय, रक्सौल के भूतपूर्व शिक्षक श्री सिंह सम्प्रति को-ऑपरेटिव कॉलेज रामगढ़वा में प्राध्यापक हैं। इतिहास के विद्यार्थी श्री भूदेव सिंह को राजनीति से विशेष लगाव है।

● **श्री देवनारायण शास्त्री**—जोकियारी-ग्राम-निवासी श्री देवनारायण शास्त्री, जिन्होंने राष्ट्रीय विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की, समाज-सेवा के लिए पूर्णतः समर्पित हैं। समाज की भलाई करते हुए सक्रिय राजनीति में भाग लेने के उद्देश्य से न केवल उन्होंने अपना व्यवसाय छोड़ दिया है, बल्कि अपनी पैतृक सम्पत्ति का एक बहुत बड़ा भाग सामाजिक कार्यों में लगा दिया है। श्री शास्त्री के पास समाज में 'सम्पूर्ण क्रांति' लाने के लिए अनेक नायाब नुस्खे हैं। अबतक श्री शास्त्री बिहार विधान सभाई चुनाव में तीन बार स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में खड़े हो चुके हैं। यह बात और है कि तीनों बार दूसरे प्रत्याशी सफल हुए, पर श्री शास्त्री के उत्साह में कभी कमी नहीं आयी। रक्सौल-क्षेत्र की विभिन्न शिकायतों के सन्दर्भ में उच्च पदस्थ अधिकारियों तथा राजनेताओं से सम्पर्क साधना श्री शास्त्री की 'हॉबी' है। काश! श्री शास्त्री अपनी ऊर्जा का सदुपयोग कुछ अधिक संतुलित ढंग से कर पाते!

● **श्री भागवत प्र०**—रक्सौल बाजार में श्री भागवत प्र० का एक सामाजिक व्यक्ति के रूप में शुमार होता है। रक्सौल की विभिन्न संस्थाओं को अपना समय देनेवाले भागवत जी व्यवसायी वर्ग में काफी लोकप्रिय हैं। खुदरा-किराना-विक्रेता संघ, नटराज सेवा संगम, कस्तूरबा कन्या उच्च विद्यालय जैसी संस्थाओं के अप्रतिम सहयोगी भागवत जी में आज भी पर्याप्त ऊर्जा है, जिससे दायित्व-भार से वे कभी घबड़ाते नहीं।

● **श्री रामाज्ञा ठाकुर**—प्रखर आर्यसमाजी और कांग्रेस (इ०) के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री रामाज्ञा ठाकुर को राजनीति और समाज-सेवा दोनों ही प्रिय हैं। आर्य समाज, रक्सौल के बहुमुखी विकास के लिए सदा-सर्वदा

तत्पर श्री रामाज्ञा ठाकुर ने रक्सौल आर्य समाज के अधिकारी के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित आर्य समाजी समारोहों-आयोजनों में भाग लेने के सिलसिले में भारत का विस्तृत भ्रमण किया है। पिछले दिनों (सन् १९७८ के सितम्बर माह में) नैरोबी में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज-सम्मेलन में सम्मिलित होकर न केवल रक्सौल का नाम रोशन किया है, बल्कि अपनी चिर पोषित विदेश-यात्रा की अभिलाषा भी पूरी की है। रक-सौल आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान श्री ठाकुर ने अखिल आर्यवीर दल के संचालक के रूप में वर्षों नेपाल में आर्य-विचारों के प्रचार-प्रसार के निमित्त अपना अमूल्य योगदान दिया है। स्वतंत्रता-सेनानी के रूप में पेंशन प्राप्त करनेवाले श्री ठाकुर राजनीति, समाज-सेवा और साहित्य-सेवा में समान अभिरुचि रखते हैं।

● **श्री बी० के० शास्त्री**—बक्सर में जन्मे, बनारस के आर्य समाजी वातावरण में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त, बैरगनिया-गुरुकुल से सन् १९५३ में रक-सौल, आर्यसमाज में आनेवाले श्री बी० के० शास्त्री यहाँ कर्मठता के पर्याय बन गए हैं। रक्सौल, आर्यसमाज के प्रांगण में खड़े एक-से-एक भव्य भवन श्री शास्त्री के अध्यव्यवसाय, निष्ठा एवं सतत जागरूकता की कहानी कहते हैं। हैदराबाद निजाम द्वारा कभी हो रही घोर पाशविकता के विद्रोह में उठ कर खड़े होनेवाले तथा निजाम के जेलखानों में महीनों घोर कष्ट सह-नेवाले श्री शास्त्री ने न केवल रक्सौल-आर्यसमाज की चतुर्दिक प्रगति में अभिरुचि ली है, बल्कि सम्पूर्ण चम्पारण जिला में आर्य समाज के संगठना-त्मक कार्यों में अपना अप्रतिम योगदान दिया है। रक्सौल की सांस्कृतिक-सामाजिक-शैक्षणिक संस्थाओं में सदा अभिरुचि लेनेवाले श्री शास्त्री रक्सौल नगरी में बड़े ही लोकप्रिय हैं।

● **श्री रामनारायण राम लोहिया**—रक्सौल आर्य समाज के प्राण श्री लोहिया ने अपनी इस प्रिय संस्था के प्रति तन-मन और धन से विगत ३० वर्षों में जो सेवाएँ अर्पित की हैं, वह रक्सौल, आर्य समाज के इतिहास में अमिट है। अपनी इस चहेती संस्था के प्रति उन्होंने जिस लगन एवं निष्ठा का सुपरिचय दिया है, उसके प्रतिदान-स्वरूप इस संस्था ने भी उन्हें लगातार बीस वर्षों तक प्रधान के पद पर समासीन कर उनके प्रति अपना स्नेह सम्मान, विश्वास एवं आभार प्रकट किया है। मिष्टभाषी एवं उदारमना श्री लोहिया सामाजिक कार्यकलापों तथा कांग्रेस की गतिविधियों में भी निष्ठा रखनेवाले व्यक्ति हैं।

● **श्री निर्गुण राम**—रक्सौल के व्यवसायी, मुरला ग्राम-निवासी श्री निर्गुण राम अपनी युवावस्था में ही आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। सन् १९४२ की अगस्त-क्रांति में सक्रिय भाग लेनेवाले श्री राम आजतक कांग्रेस में समान रूप से निष्ठा रखनेवाले व्यक्ति हैं। रामगढ़वा-प्रखंड कांग्रेस (इ०) के अध्यक्ष श्री राम अपने क्षेत्र में लोकप्रिय तो हैं हीं, रक्सौल में भी अपनी सामाजिकता की बदौलत उन्होंने अच्छी ख्याति अर्जित की है। विभिन्न संस्थाओं को समय-समय पर दान देनेवाले श्री निर्गुण राम का रक्सौल आर्य समाज से विशेष लगाव है, जिसके वे प्रधान भी रह चुके हैं। अपने क्षेत्र में कई मन्दिरों के निर्माता श्री राम ने को-ऑपरेटिव कॉलेज, रामगढ़वा के कक्ष-निर्माण में भी आर्थिक योगदान किया है।

● **मो० इब्राहिम**—खिरलिचिया ग्राम-निवासी मो० इब्राहिम का प्रमुख कार्य-क्षेत्र रक्सौल रहा है। राष्ट्रीय गांधी विद्यालय, रक्सौल में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त श्री इब्राहिम महात्मा गांधी के आह्वान पर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। विदेशी-वस्तु-बहिष्कार तथा '४२ की क्रांति में सक्रिय भाग लेनेवाले मो० इब्राहिम ने कांग्रेस द्वारा आहूत अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में निष्ठा के साथ हिस्सा लिया है। इब्राहिम मियाँ कांग्रेस के ऐसे सजग सिपाही रहे हैं, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना बहुत कुछ त्याग किया है और जेल-यातनाएँ भी सही हैं। ताम्र-पत्र-धारी तथा स्वतंत्रता-सेनानी के रूप में पेंशन-याफ्ता इब्राहिम साहब को आज भी राजनीतिक बहस-मुबाहसों में अभिरुचि लेते देखा जा सकता है।

● **श्री बनारसी लाल**--कपड़ा-व्यवसायी श्री बनारसी लाल को एक लम्बी अवधि से राजनीति से भी लगाव है। रक्सौल-नगर कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री बनारसी लाल अपने इस दायित्वपूर्ण-भार को शालीनता के साथ निभाते आ रहे हैं।

● **श्री हरेन्द्र सिंह**-नरेन्द्र आश्रम, रक्सौल के समाजवादी वातावरण में वर्षों रहनेवाले हरेन्द्र सिंह जनता पार्टी के सक्रिय सदस्य हैं। नगर की अपेक्षा रक्सौल के ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी के संगठनात्मक पक्ष को मजबूत करने में श्री सिंह का योगदान महत्वपूर्ण है।

● **श्री जयनारायण सिंह**—जटियाही ग्राम-निवासी श्री जयनारायण सिंह रक्सौल के राजनीतिक क्षितिज पर उभर रहे एक नवयुवक कार्यकर्त्ता हैं। किसी के साथ निर्भीकतापूर्वक बातें करनेवाले तेज-तर्रार नवयुवक श्री सिंह का राजनैतिक भविष्य उज्ज्वल है।

● **श्री मदनमोहन झा**—सेमरी ग्राम-निवासी श्री मदनमोहन झा एक दशक से ऊपर से सक्रिय राजनीति में हैं। पहले जनसंघ के लिए एक राजनैतिक कार्यकर्त्ता के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित करनेवाले श्री झा सम्प्रति रक्सौल जनता पार्टी नगर तदर्थ समिति के एक सचिव हैं।

● **श्री छेदीलाल अग्रवाल**—रक्सौल के व्यवसायी श्री छेदीलाल अग्रवाल को वर्षों से राजनीति से भी लगाव है। पिछले दिनों जनसंघ के लिए समर्पित वे अपनी पार्टी में लोकप्रिय रहे हैं। सम्प्रति श्री अग्रवाल रक्सौल जनता पार्टी नगर तदर्थ समिति के एक सक्रिय सदस्य हैं।

● **श्री म० रफीक**—रामगढ़वा के बेला ग्राम-निवासी म० रफीक ने कांग्रेस के लिए अबतक अपने जीवन का एक लम्बा समय समर्पित किया है। वर्षों से बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के एक सदस्य के रूप में रामगढ़वा का प्रतिनिधित्व करते आ रहे हैं। कांग्रेस (इ०) के प्रबल समर्थक रफीक साहब का अधिक समय रक्सौल की राजनीति में ही गुजरता है।

● **श्री बलिराम प्र०**—रक्सौल मौजे-निवासी श्री बलिराम प्र०, स्वर्णकार ने जनसंघ के एक सक्रिय सदस्य के रूप में पार्टी के लिए उत्साह के साथ काम किया था। आपात्कालीन स्थिति के दौरान जेल की सजा भुगतनेवाले श्री बलिराम प्र० इन दिनों रक्सौल जनता पार्टी नगर तदर्थ समिति के एक क्रियाशील सदस्य हैं।

● **श्री एबादत हुसैन**--कौड़िहार-निवासी श्री एबादत हुसैन वर्षों से रक्सौल की समाजवादी पार्टी से जुड़े रहे हैं। सम्प्रति रक्सौल जनता पार्टी नगर तदर्थ समिति के एक सक्रिय सदस्य हैं।

● **श्री नेक महम्मद अंसारी**—रक्सौल में लकड़ी-व्यवसाय से जुड़े श्री नेक महम्मद अंसारी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, रक्सौल नगरपालिका शाखा के सचिव हैं। मितभाषी श्री असारी ने पार्टी के लिए अपनी सामर्थ्य से अधिक पैसे एवं समय का परित्याग किया है।

● **श्री नारायण सिंह**—महदेवा-ग्राम निवासी नवयुवक श्री नारायण सिंह ने युवा कांग्रेस, रक्सौल के विकास एवं संगठनात्मक पक्ष को मजबूत करने के लिए इस संस्था के एक अधिकारी के रूप में सक्रिय भूमिका निभाई थी। श्री सिंह आज भी अपने इलाके में काफी लोकप्रिय हैं।

रक्सौल के राजनीतिक-सामाजिक क्षितिज पर ऐसे अन्य अनेक नक्षत्र हैं, जिनके नामों की सूची दे देना यहाँ उपयुक्त होगा। वैसे नाम हैं—सर्वश्री ओमप्रकाश मस्करा, अवध बिहारी सर्राफ, सिंहासन गिरि, हनीफ

मियाँ, दिनेश त्रिपाठी, हैबत मियाँ, म० आलम, कामरेड वैद्यनाथ प्रसाद, महेश सिंह, विन्ध्याचल प्र०, का० रामाश्रय प्र० (भेलाही) का० श्री कृष्ण प्र०, (भेलाही) विश्वनाथ प्र० अग्रहरी, शिवनाथ प्र० गुप्त, प्रहलाद प्र०, भरत प्र०, दुखभंजन प्रसाद, भरत प्रसाद (रक्सौल मौजे) आदि ।

जिन्हें कभी राजनीति से प्यार था

● **श्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा**—मुंशी सिंह कॉलेज, मोतिहारी में अध्ययन के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निकट सम्पर्क में आनेवाले श्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा पर हिन्दी, हिन्दुत्व और हिन्दुस्तानी का ऐसा रंग चढ़ा कि अपनी एम० ए० की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने अपने जीवन को इन्हीं आदर्शों के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया । (रक्सौल में साहित्यिक जागरण के प्रति वर्मा जी की क्या देन है, इसके लिए कृपया पृष्ठ १३४ देखें) । क्षीणकाय शरीर में सबल आत्मा धारण करनेवाले वर्मा जी द्वारा उन दिनों राष्ट्रीयता पर दिए गए जोशीले भाषणों की याद आज भी अनेकों को है । जनसंघ की टिकट पर बिहार विधान सभाई चुनाव में दो-दो बार लड़नेवाले रक्सौल जनसंघ के भूतपूर्व उपाध्यक्ष वर्मा जी ने सचमुच इस इलाके में एक जनसंघी माहौल बनाया था । लम्बी अवधि की अनवरत अस्वस्थता ने श्री चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा को राजनीति से संन्यास ले लेने को बाध्य किया । सक्रिय राजनीति से विरक्त श्री वर्मा इन दिनों कुछेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए मात्र राजनीतिक लेखादि लिख लिया करते हैं ।

● **श्री चन्द्रदेव प्र० सर्राफ**—जिन दिनों कांग्रेस एक थी, जिसका सर्वत्र वर्चस्व था, उन दिनों रक्सौल के व्यवसायी श्री चन्द्रदेव प्र० सर्राफ, कांग्रेस के प्रबल समर्थक, कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं अन्यतम सहयोगी थे । रक्सौल क्षेत्र के भूतपूर्व विधायक श्री राधा पांडेय के साथ पार्टी के लिए निष्ठापूर्वक काम करने वाले श्री सर्राफ का उन दिनों अपनी पार्टी में महत्वपूर्ण स्थान था । समय और अर्थ—दोनों से कभी कांग्रेस को मजबूत करनेवाले सर्राफ जी आज के माहौल में राजनीति में बहुत कम दिलचस्पी लेते हैं । सामाजिक कार्यकलापों में अभिरुचि लेनेवाले श्री चन्द्रदेव प्र० सर्राफ रक्सौल अधिसूचित क्षेत्र समिति के उपाध्यक्ष भी रहे हैं । रक्सौल बिहारी आर्य पुस्तकालय-भवन के निर्माण तथा पुस्तकालय संचालन में श्री सर्राफ का विशेष योगदान रहा है ।

● **श्री शिवशंकर प्र०**—रक्सौल की समाजवादी पार्टी के उन्नयन-उत्थान में पिछले दिनों श्री शिवशंकर प्र० ने जिस जोशखरोश के साथ काम

किया था, उससे पार्टी वस्तुतः लाभान्वित हुई थी। रक्सौल विधान सभा के चुनाव में समाजवादी प्रत्याशी की कामयाबी के निमित्त श्री प्रसाद ने जो अथोर श्रम किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। अपनी बातों के ढंग से किसी को भी शीघ्र प्रभावित करने वाले वाक्-पटु श्री शिवशंकर प्रसाद ने राजनीतिक क्षेत्र में अनेक प्रखर व्यक्तियों से सम्पर्क साधा। कस्तूरबा कन्या उच्च विद्यालय की स्थापना तथा उसकी कार्यकारिणी के सक्रिय सचिव के रूप में उसकी चतुर्दिक प्रगति के निमित्त वर्षों श्री प्रसाद द्वारा किये गए घोर श्रम की कहानी विद्यालय में मौजूद है।

● **श्री जगदेव सिंह**—जब कांग्रेस का विभाजन नहीं हुआ था, श्री जगदेव सिंह की गणना रक्सौल के प्रमुख कांग्रेसियों में होती थी। कांग्रेस के अनेक कार्यकलापों में सहयोग प्रदान करनेवाले श्री सिंह भूतपूर्व एम० एल० ए० पं० राधा पांडेय के अन्यतम सहयोगियों में थे। बिहारी आर्य पुस्तकालय के भूतपूर्व सक्रिय सदस्य श्री जगदेव सिंह व्यापार की व्यस्तता में इन दिनों राजनीतिक-सामाजिक गतिविधियों में उतना समय नहीं दे पाते।

● **श्री दारोगा महतो**—सन १८९२ में लौकरिया ग्राम में जन्मे श्री दारोगा महतो ने सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन से ही सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। सन १९२१ से सन् '४२ की क्रांति तक उन्होंने आजादी की लड़ाई में जो सक्रिय भूमिका निभायी, उसके चलते उन्हें कई बार जेल की यातनाएँ भी सहनी पड़ीं। अपनी समाज-सेवा के प्रतिदान-स्वरूप श्री महतो जिला बोर्ड के सदस्य भी निर्वाचित हुए, जिस पद पर वर्षों वे समासीन रहे। रक्सौल ह० उ० विद्यालय की प्रबन्ध-कारिणी-समिति के सदस्य के रूप में भी इन्होंने वर्षों अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। स्वतन्त्रता-सेनानी के रूप में पेंशन प्राप्त करने वाले श्री दारोगा महतो अपनी वृद्धावस्था में पिछले कुछ दिनों से सक्रिय राजनीति से विरक्त हैं।

● **श्री रामदयाल प्र० सिंह**—ओकियारी ग्राम-निवासी वयोवृद्ध श्री रामदयाल प्र० सिंह का राजनैतिक-सामाजिक अतीत बड़ा ही उज्ज्वल रहा है। श्री सिंह ने एक लम्बे समय तक रक्सौल की विभिन्न सामाजिक-शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना तथा उसकी प्रगति के लिए अपना अमूल्य समय एवं योगदान किया था। कांग्रेस के प्रबल समर्थक, गांधी टोपी-धारी श्री सिंह उन दिनों कांग्रेस द्वारा संचालित सभी प्रमुख आन्दोलनों एवं कार्यक्रमों में भाग लेते रहे। आज भी श्री सिंह कुछेक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं, पर राजनीति में इनकी दिलचस्पी निश्चित रूप से कम हो गयी है।

● **श्री रामाकृष्ण अग्रवाल**—रक्सौल के प्रमुख व्यवसायी श्री रामाकृष्ण अग्रवाल ने बड़ी कम उम्र में राजनीति में अभिरुचि लेना शुरू किया था। कांग्रेस के प्रबल समर्थक रामा बाबू उन दिनों अनेक विशिष्ट राजनेताओं के सम्पर्क में आये। अपने पक्ष के राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को सदा सहयोग करनेवाले श्री अग्रवाल को उन दिनों राजनीति ही सबसे अधिक प्रिय थी। कांग्रेस की स्थिति से असंतुष्ट रामा बाबू ने १९७७ के आम चुनाव में जनता पार्टी के प्रत्याशी को अपना हार्दिक समर्थन एवं सहयोग दिया था। राजनीति के बिगड़ते माहौल में इन्होंने इन दिनों सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया है और पूर्णतः अपने व्यापार में संलग्न हैं।

● **श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह**—महदेवा-निवासी एवं श्री कृष्णा टॉकिज, रक्सौल के संचालक श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह सम्प्रति मुजफ्फरपुर के 'संजय टॉकिज' के निजी प्रोप्राइटर हैं। सन् १९७२ के आसपास से आज लगभग एक वर्ष पूर्व तक, अर्थात् मुजफ्फरपुर में जाने के पहले तक श्री सिंह ने रक्सौल की राजनैतिक-सामाजिक गतिविधियों में गहरी दिलचस्पी ली थी। नेहरू-युवा विचार मंच, रक्सौल के अध्यक्ष, रक्सौल व्यापार-मंडल के डाइरेक्टर, बी० डी० सी० रक्सौल के सक्रिय सदस्य आदि के रूप में श्री सिंह ने रक्सौल के विभिन्न कार्य-कलापों में सक्रिय योगदान किया था। श्री सिंह उन दिनों रक्सौल की पत्र-पत्रिकाओं में भी छपते रहे तथा साहित्यिक कार्य-कलापों में विशेष अभिरुचि लीं। श्री शिवेन्द्र कुमार सिंह ने नेहरू-युवा क्रीड़ा परिषद् के अध्यक्ष की हैसियत से रक्सौल में क्रीड़ा के क्षेत्र में भी एक जागृति पैदा की थी।

व्यापार-मंडल, गौशाला, पंचायती राज के प्रमुख

● **श्री कुँअर सिंह**—गोविन्दगंज थाना-निवासी श्री कुँअर सिंह, जो वर्षों से हरैया में कृषि-कार्य में संलग्न हैं, रक्सौल के राजनैतिक-सामाजिक जीवन में भी अभिरुचि लेते आ रहे हैं। कभी पुरानी कांग्रेस के प्रबल समर्थक, सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं भूतपूर्व विधायक पं० राधा पांडेय के प्रबल सहयोगी श्री सिंह ह० उ० विद्यालय, रक्सौल की प्र० का० स० के वर्षों सदस्य भी रह चुके हैं। सम्प्रति रक्सौल व्यापार-मंडल के अध्यक्ष पद को सुशोभित करनेवाले श्री कुँअर सिंह हरैया पंचायत के लोकप्रिय मुखिया भी हैं।

● **श्री बिन्दा सिंह**—रक्सौल बाजार के प्रमुख आलू एवं गल्ला-व्यापारी श्री बिन्दा सिंह ने पिछले ८-१० वर्षों में सार्वजनिक जीवन में विशेष अभिरुचि ली है। सन् १९७० के आसपास से राजनीति में भाग लेनेवाले

बिन्दा बाबू ने समय-समय पर राजनैतिक-सामाजिक कार्यकलापों में आर्थिक सहयोग भी दिया है। दो-दो बार व्यापार-मंडल, रक्सौल का अध्यक्ष चुना जाना बिन्दा बाबू की लोकप्रियता का परिचायक है। सम्प्रति श्री बिन्दा सिंह रक्सौल-गोशाला के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

● **श्री लालबहादुर सिंह**—लोकरिया ग्राम-निवासी श्री लालबहादुर सिंह ने पुलिस विभाग (दारोगा पद) से सेवा-निवृत्त होने के बाद से अपने ग्रामीण क्षेत्र के सार्वजनिक जीवन में विशेष अभिरुचि ली है। मुखिया-पद को दो-दो बार सुशोभित करने वाले लोक-प्रिय श्री सिंह के ऊपर इन दिनों पंचायती राज्य योजनान्तर्गत प्रमुख का दायित्वपूर्ण भार है। अपने महत्वपूर्ण कार्यों के निष्पादन हेतु श्री सिंह को रक्सौल-प्रखंड-कार्यालय में एक अलग कक्ष आवंटित है। ९ अप्रैल १९७९ से कार्यरत श्री लालबहादुर सिंह को प्रमुख के रूप में अपनी कार्यक्षमता दिखलाने का वस्तुतः अभी विशेष अवसर नहीं मिला है। पर आशा की जाती है कि श्री सिंह अपने गुरुतर दायित्व के अनुरूप सिद्ध होंगे।

रक्सौल क्षेत्र के चार विधायक

● **श्री राधा पांडेय**—बन्धुबरवा ग्राम में जन्मे पचहत्तर वर्षीय पं० राधा पांडेय के जीवन की लगभग आधी शती सार्वजनिक क्षेत्र में ही व्यतीत हुई है। प्राथमिक शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारंभ करनेवाले पांडेय जी गांधी जी के आह्वान पर अपनी भरी जवानी में आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। कांग्रेस का प्रचार एवं संगठनात्मक पक्ष को मजबूत करनेवाले पांडेय जी अपनी कर्मठता की बदौलत इस क्षेत्र में थोड़े ही दिनों में लोक-प्रिय हो गए। सन १९३७-३८ के दिनों में रक्सौल थाना कांग्रेस कमिटी के मंत्री के रूप में सम्पूर्ण थाना (उस समय रामगढ़वा भी रक्सौल थानान्तर्गत था) में कांग्रेस की पताका फहराने वाले पांडेय जी ने कई बार जेल की यातनाएँ भी सहीं। सन् १९५२, ५७, '६२ और ६७ के आम चुनावों में रक्सौल-विधान सभाई क्षेत्र से लगातार विजय प्राप्त करनेवाले पं० राधा पांडेय निस्संदेह उन दिनों इस इलाके में एकमात्र सक्षम कांग्रेसी नेता थे। अपने लगभग दो दशकों के सदस्यता-काल में अपने क्षेत्र के न जाने कितने लोगों का शिक्षक, आदि के पद पर नियुक्ति कराकर पांडेय जी ने कल्याण किया। सबको प्रसन्न करने वाले पांडेय जी कांग्रेस के सक्षम संगठनकर्ता के रूप में जाने जाते रहे हैं, जिन्होंने अपने क्षेत्र के चप्पा-चप्पा में भ्रमण कर अपने 'वोटरों' के सुख-दुख में शामिल होना अपना ध्येय बना लिया था। अपनी ढलती उम्र के बावजूद जनता पार्टी के क्षेत्रीय नेता के रूप में पांडेय जी आज भी अपनी शक्ति से

अधिक क्रियाशील हैं।

● **श्री रामसुन्दर तिवारी**—सन् १९१० में गोनहा (रक्सौल) में जन्मे श्री रामसुन्दर तिवारी का सम्पूर्ण जीवन कर्ममय है। रक्सौल गांधी विद्यालय तथा मोतिहारी हेकॉक एकेडमी में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करनेवाले श्री तिवारी ने तीसरे दशक से ही सक्रिय राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया था। अपनी कर्मठता एवं देश-भक्ति की बदौलत श्री तिवारी ने शीघ्र ही कांग्रेस में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। उन दिनों चम्पारण जिला युवक कांग्रेस का मंत्री, मोतिहारी-अनुमंडल कांग्रेस कमिटी का उपमंत्री तथा फिर जिला कांग्रेस कमिटी का कार्यालय-मंत्री उनका चुना जाना श्री तिवारी की लोकप्रियता एवं कांग्रेस में उनकी निष्ठा का द्योतक है। सन १९३० के नमक-सत्याग्रह में सश्रम कारावास पानेवाले श्री तिवारी ने १९३२, '३३ और '४२ में भी जेल की यातनाएँ सहीं। चम्पारण जिला की बीसियों राजनैतिक-सामाजिक-शैक्षणिक संस्थाओं से वर्षों सम्बद्ध रहने वाले श्री रामसुन्दर तिवारी ने अपने दायित्व को निष्ठापूर्वक निभाया है। सन १९४१ से सन् १९५२ तक चम्पारण जिला कांग्रेस कमिटी के सचिव, सन् १९५२ से १९५७ तक आदापुर क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य तथा सन् १९७२ से सन् १९७८ तक रक्सौल क्षेत्र से बिहार विधान परिषद् के सदस्य के रूप में श्री तिवारी ने जो अपनी सेवाएँ अर्पित की हैं, वह उनके सार्वजनिक-राजनैतिक जीवन का प्रमुख भाग है। आज ७० वर्ष की उम्र में भी श्री तिवारी में ताजगी है, काम करने की ललक है और कांग्रेस के प्रति पूर्ववत् निष्ठा है।

● **श्री विन्ध्याचल सिंह**—नेताओं और राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को जन्म देनेवाले ग्राम बन्धुबरवा में सन् १९१८ में जन्मे स्व० श्री विन्ध्याचल सिंह ने मझौलिया चीनी मिल में एक सिपाही के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया था, जहाँ उनपर पूँजीपतियों की शोषण-प्रवृत्ति का गहरा प्रभाव पड़ा था। इस नौकरी से छुट्टी पाकर स्व० श्री सिंह ने रक्सौल थाना के बीट नं० ५ के दफादार के रूप में काम करना शुरू किया था कि पुलिस-अधिकारियों से भी इनकी पट नहीं पायी। एक किसान-नेता के भाषण से प्रभावित स्व० श्री सिंह पूर्णतः सोशलिस्ट बन गए और 'सामन्तशाही के विरुद्ध गरीबों का एक अभेद्य संगठन बनाने के कार्यों में जुट गए'। गरीबों के मसीहा विन्ध्याचल भाई, अपनी बहादुरी, निर्भीकता, कर्मठता एवं ईमानदारी के फलस्वरूप सन् १९५२-५३ तक इलाके में 'नेताजी' के नाम से जाने जाने लगे थे। सन् १९६९ के मध्यावधि चुनाव में रक्सौल क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य के रूप

में विजयी स्व० श्री विन्ध्याचल सिंह ने अपने १८ महीने के कार्यकाल में रक्सौल क्षेत्र का शालीनता के साथ प्रतिनिधित्व किया था। चम्पारण जिला सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष-पद को सुशोभित करनेवाले विन्ध्याचल भाई वर्षों से दुःसाध्य रोग झेलते हुए २६ फरवरी १९७२ को इस दुनिया से चल बसे।

● **श्री सगीर अहमद**—रक्सौल के एक सम्पन्न एवं संभ्रांत व्यवसायी श्री जहीर हुसैन के पाँच यशस्वी पुत्रों में एक विधायक श्री सगीर अहमद के जीवन पर रामपुर (उत्तर प्रदेश) की धार्मिक शिक्षण-संस्था की शिक्षा-दीक्षा की गहरी छाप है। भाषण-कला में पारंगत श्री अहमद ने सन् १९६५ में पाकिस्तानी आक्रमण के समय, जब उनकी उम्र मुश्किल से १८-१९ की रही होगी, अपने प्रथम सार्वजनिक भाषण से ही श्रोताओं को अपनी तरफ आकृष्ट कर लिया था और लोगों को उनके भावी सार्वजनिक जीवन की एक झलक मिल गयी थी। सन् १९७२ तथा १९७७ के विधान सभाई चुनाव में रक्सौल-क्षेत्र से श्री सगीर अहमद की लगातार विजय उनकी लोकप्रियता एवं उनके परिवार की सार्वजनिक देन की परिचायक है। खासकर कांग्रेस की गिरी हुई साख एवं जनता पार्टी के उत्थान के दिनों में (सन् १९७७ में) कांग्रेस की टिकट पर विजय प्राप्त करना श्री अहमद की विशेषता है। लगभग एक दशक के अपने सार्वजनिक जीवन में दर्जनों संस्थाओं से सम्बद्ध श्री अहमद ने अपनी कर्मठता एवं कार्यक्षमता का सुपरिचय दिया है। विकट राजनैतिक परिस्थितियों के भंवर से बाहर निकलनेवाले युवक विधायक श्री सगीर अहमद ने संघर्षों से जूझना सीख लिया है। बिहार की कांग्रेस (इ.) में श्री अहमद का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वह इस बात से सिद्ध होता है कि श्री सगीर अहमद सन् १९७८ से आजतक बिहार प्रदेश कांग्रेस (इ.) के एक सचिव हैं।

रक्सौल नगरपालिका के चार स्तम्भ

● **श्री ज्वाला प्र० श्रीवास्तव**—रक्सौल की प्रथम नगरपालिका (समिति) के प्रथम चेयरमैन श्री ज्वाला प्र० श्रीवास्तव सन् १९५७ से सन् १९६२ तक रक्सौल अधिसूचित क्षेत्र समिति के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० की डिग्री-प्राप्त श्री श्रीवास्तव सन् १९५३ से ही ठाकुर राम कॉलेज, वीरगंज में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। रक्सौल में महाविद्यालय की स्थापना के पुनीत कार्य में अपना अप्रतिम योगदान देनेवाले ज्वाला बाबू सम्प्रति इस खेमचन्द महाविद्यालय, रक्सौल में प्राचार्य के रूप में अपनी अवैतनिक सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं। मितभाषी

एवं व्यवहार-कुशल ज्वाला बाबू रक्सौल में जनप्रिय तो हैं हीं, अपने ढाई दशक के सेवा-काल में वीरगंज (नेपाल) में भी लोकप्रियता प्राप्त की है। रक्सौल नगरपालिका के इस प्रथम अध्यक्ष से रक्सौलवासियों को नगरपालिका की सड़ांध दूर करने की बड़ी आशाएँ हैं।

● **श्री विजय कुमार**—रक्सौल के नवयुवक सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री विजय कुमार ने गत रक्सौल नगरपालिका-चुनाव में वार्ड नं० ८ से विजय प्राप्त की और रक्सौल नगरपालिका के सभापति (प्रेसिडेन्ट) निर्वाचित हुए। नगर को समस्याओं के प्रति समय देनेवाले श्री कुमार कांग्रेस (इ.) के सक्रिय कार्यकर्त्ता भी हैं। कभी वीणा कला परिषद् से सम्बद्ध श्री विजय कुमार कला में भी अभिरुचि रखते हैं।

● **श्री हरिहर महतो**—तुमड़िया टोला-निवासी श्री हरिहर महतो विगत नगरपालिका चुनाव में वार्ड नं० २ से विजयी आये और नगरपालिका के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। कांग्रेस के समर्थक एवं सहयोगी श्री महतो एक सामाजिक व्यक्ति भी हैं। तुमड़िया टोला में श्री महतो द्वारा निर्मित मध्य विद्यालय इनका कीर्ति-स्तम्भ है। सामाजिक संस्थाओं को सहयोग देनेवाले श्री महतो अपने इलाके में बड़े ही लोकप्रिय हैं।

● **श्री जफर अहमद**—रक्सौल-निवासी श्री जहीर हुसैन के सुपुत्र एवं विधायक श्री सगीर अहमद के अग्रज श्री जफर अहमद, जिन्होंने गत रक-सौल-नगरपालिका चुनाव में वार्ड नं० ५ से विजय प्राप्त की, एक सुलझे हुए व्यक्तित्व हैं। श्री जफर अहमद रक्सौल-क्षेत्र से विधान सभाई चुनाव में सन् १९६७ में स्वतन्त्र पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव भी लड़ चुके हैं। रक्सौल के सामाजिक जीवन में अपना स्थान रखनेवाले श्री जफर ने नगरपालिका में भी अपने अनुकूल स्थान चाहा। आज सारे संघर्षों की समाप्ति के बाद नगर-पालिका को श्री जफर अहमद का सहयोग प्राप्त है। स्थानीय स्वशासी क्षेत्र (रक्सौल-सुगौली मोतिहारी) से जिला पर्षद् के लिए निर्वाचित सदस्य श्री जफर अहमद का दायित्व इन दिनों और बढ़ गया है, जिसे वे निष्ठापूर्वक निभा रहे हैं।

विदेश से लौटे व्यक्ति, जिनका कार्यक्षेत्र रक्सौल है

● **डा० पी० डी० सिन्हा**—रोहतास जिलान्तर्गत तिलौथू ग्राम-निवासी डा० पी० डी० सिन्हा रक्सौल के एक ऐसे चिकित्सक हैं, जिन्होंने अपने अवकाश के क्षणों का उपयोग रक्सौल के विभिन्न सामाजिक कार्यों की सम्पन्नता में किया है। स्वनिर्मित मनुष्यों में उदाहरण-स्वरूप डा० पी०

डी० सिन्हा इर्विन क्रिश्चन कॉलेज, इलाहाबाद में अध्ययन करने के पश्चात् सन् १९५१ में ७ वें विश्व स्काउट जम्बूरी में एक स्काउट के रूप में यूरप गए और १४ वर्ष यूरप में ही रह गए। लन्दन, वियना (आस्ट्रिया) में शिक्षा-प्राप्त डा० सिन्हा ने ग्राज विश्वविद्यालय (आस्ट्रिया) से एम० डी० की डिग्री प्राप्त की और सन् १९७० से रक्सौल में एक स्वतन्त्र चिकित्सक एवं समाज-सेवी के रूप में कार्यरत हैं। रक्सौल के नगरपालिका नवचेतन-संघ एवं लायन्स क्लब जैसी समाज-सेवी संस्थाओं के उद्भव–विकास में सक्रिय सहयोग देनेवाले डा० सिन्हा एक मजे हुए कलाकार भी हैं।

● **श्री मुन्द्रिका सिंह**—गया जिलान्तर्गत पलकिया ग्राम-निवासी अभियंता मुन्द्रिका सिंह ने भारत में इन्जीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अमेरिका में तद्विषयक उच्च शिक्षा ग्रहण की और वहीं वर्षों कार्यरत रहे। अमेरिका में दिखाई गई नेपाल-सम्बन्धी एक फिल्म से प्रभावित श्री सिंह ने वहां त्यागपत्र दे दिया और नेपाल में अपनी सेवाएँ अर्पित कर दीं। लग-भग ६ वर्ष नेपाल में रहने के बाद वे भारत लौटे जब भारत में बैंकों का राष्ट्रीय-करण हुआ और विदेश में उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीय इंजीनियरों को स्वतन्त्र काम करने के लिए आर्थिक सुविधाएँ प्राप्त हुईं। तब से रक्सौल में कंक्रीट प्रोडक्टस मैनुफैक्चरिंग कम्पनी के संचालक के रूप में कार्यरत श्री सिंह रक्-सौल की कई सामाजिक-औद्योगिक संस्थाओं के सदस्य-अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं। आर्यसमाजी श्री सिंह को योग और गीता से भी प्यार है।

● **श्री सत्यनारायण प्र० गुप्त**—गोविन्दगंज थानान्तर्गत महा-राजगंज में सन १९१३ में जन्मे श्री सत्यनारायण प्र० गुप्त ने सन १९३९ में बिहार पी० डब्ल्यू० डी० को अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। सन् १९५६ में अमे-रिका के इलिनॉय विश्वविद्यालय से एम० एस-सी० (इंजीनियरिंग) की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सिन्दरी में प्लानिंग ऑफिसर (सहायक अभियंता) के पद पर चार वर्षों तक काम किया। फिर नेपाल में कार्यपालक अभियन्ता के पद पर और कुछ दिनों तक इंजीनियरिंग-संबंधी प्रमुख ठेके का काम करने के पश्चात् सन् १९७१ में रक्सौल लौटे, जहाँ अभियंता श्री मुन्द्रिका सिंह के साथ कंक्रीट प्रोडक्टस मैनुफैक्चरिंग क० का शुभारंभ किया। रक्सौल के मुख्य मार्ग पर स्थित उनका निवास 'शान्ति सदन' श्री गुप्त की सुरुचि, सौन्दर्य-प्रियता तथा शान्त प्रकृति का द्योतक है। नियमित जीवन जीनेवाले श्री गुप्त में ६६ वर्ष की उम्र में भी जवानी है, स्फूर्ति है और काम करने के प्रति एक

उत्साह है। 'काम अधिक, बातें कम' में विश्वास करनेवाले श्री गुप्त ने अपने आचरण और व्यवहार में कई पाश्चात्य सद्गुणों को भी उतारा है।

● विदेश से लौटे रक्सौल के वैसे व्यक्तियों के नाम, जो बाजाप्ता उच्च शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि मात्र भ्रमणार्थ अथवा शिक्षण-भ्रमण आदि के उद्देश्य से गए थे—श्री रामाकृष्ण अग्रवाल (जापान)

श्री द्वारका प्र० सीकरिया—(जापान, कोरिया, हांककांग, थाइलैंड)
,, रामाज्ञा ठाकुर —(नैरोबी केनिया)
,, रामलखन प्र० गुप्त --(मिश्र)
,, विजय कुमार सर्राफ—(यूरप)

● वैसे व्यक्ति जो विदेश में रक्सौल का नाम रौशन कर रहे हैं—

डा० लक्ष्मण प्र०, चम्पापुर—(अमेरिका)
श्री पवन कुमार भरतिया, रक्सौल—(अमेरिका)
,, कमल प्रसाद, सिहोरवा—(रूस)
,, धर्मराज प्रसाद, रक्सौल—(इंगलैंड)
,, विष्णु कुमार भरतिया, रक्सौल—(इंगलैंड)
,, अशोक कुमार भरतिया, रक्सौल—[इंगलैंड]

२१. रक्सौल और नेपाल : राजनीतिक दृष्टि से

नेपाल के कारण रक्सौल की महत्ता है, यह पिछले कई अध्यायों से स्पष्ट है। त्रिभुवन-राजपथ के निर्माण तथा नेपाल में हो रही तीव्र प्रगति के कारण रक्सौल की महत्ता में तेजी से वृद्धि हुई है, हो रही है।

विश्व में संभवतः भारत और नेपाल ही ऐसे दो देश हैं, जिनके नागरिकों को एक दूसरे के देश में प्रवेश करने के निमित्त 'पासपोर्ट' या 'विसा' की आवश्यकता नहीं होती। हाँ, यह सुविधा नेपाल में राणाशाही की समाप्ति के पश्चात् सन १९५० से ही उपलब्ध है। पर इसके पूर्व भी भारतीयों के लिए नेपाल-प्रवेश में कोई विशेष कठिनाई नहीं थी। केवल भीतरी हिस्से में, नेपाल की राजधानी काठमांडू जाने के लिए भारतीयों को नेपाल की राहदानी प्राप्त करनी होती थी। वैसे, शासकों की बिना अनुमति प्राप्त किए काठमांडू के बाहर रहने वाले नेपालियों को भी काठमांडू-प्रवेश निषिद्ध था। "विदेशियों, खासकर अमेरिकियों तथा यूरोपवासियों को (अंग्रेजों को छोड़कर) नेपाल जाने की अनुमति नहीं थी, जबतक ब्रिटिश भारत के राजनैतिक विभाग द्वारा उन्हें 'उचित' नहीं घोषित कर दिया जाता।"

उन दिनों काठमांडू का कोई विशेष महत्व नहीं था। इसलिए कुछ इनेगिने व्यापारी ही रक्सौल से काठमांडू जाया करते थे, जिन्हें राहदानी प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। हाँ शिवरात्रि पर्व के अवसर पर काठमांडू जानेवाले भारतीयों की संख्या अवश्य हजारों में होती। इन तीर्थयात्रियों को राहदानी देने की व्यवस्था बहुत पहले कलैया में थी, जो बाद में बीरगंज और रक्सौल में हो गयी। हाँ, कभी-कभार बीच में भी कोई श्रद्धालु तीर्थ यात्री-काठमांडू जाता था, जिसके पास गंगाजल-भरा पात्र होता और उसे आसानी से राहदानी मिल जाती।

बिना 'पासपोर्ट' का एक दूसरे के देश में प्रवेश की छूट से अपराधकर्मियों तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं ने विशेष लाभ उठाया है। सन् १८५७ के गदर के संदर्भ में श्री पी० सी० राय चौधरी ने लिखा है—"१८५८ की ५ फरवरी को नेपाल के रेजिडेन्ट ने चम्पारण के ज्वायन्ट मजिस्ट्रेट, तिरहुत के मजिस्ट्रेट तथा सीवान के डेपुटी मजिस्ट्रेट को लिखा कि नेपाल दरबार ने आगामी शिवरात्रि पर्व के अवसर पर, जो १२ फरवरी १८५८ को शुरू होनेवाला है, पर्वतीय मार्ग को अवरुद्ध रखने का निर्णय लिया है। यह विद्रोहियों

के नेपाल-प्रवेश पर रोक लगाने का एक स्पष्ट कदम था।"

फिर भी समय-समय पर अनेक तत्व एक दूसरे के देश में प्रवेश करते रहे हैं। उनके प्रवेश को इस खुली सीमा से रोक पाना कठिन ही नहीं, असंभव-सा रहा है।

रक्सौल और नेपाल की जन-जागृति—नेपाल से राणाशाही की समाप्ति के लिए जिन नवयुवकों ने साहसिक कदम उठाये, उनमें छपरा जिला-निवासी, आर्य समाजी विचारों से प्रभावित राजालाल जी भी एक थे, जो उन दिनों काठमांडू में एक प्रमुख व्यापारी के रूप में जाने जाते थे। राणा शासन ने क्रूर दमन चक्र चलाया, कइयों को फांसी हुई, अनेक जेल की सीखचों में बंद हुए, दर्जनों ने भागकर भारत में शरण ली। श्री राजालाल जी को काठमांडू-स्थित अपनी सारी सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ा और उन्होंने रक्सौल को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। आर्य समाजी राजालाल जी रक्सौल आर्य समाज के कार्य-कलापों में विशेष अभिरुचि लेने लगे और ५-४-१९३५ को इसके प्रधान निर्वाचित हुए। इस अवधि में राजालाल जी से नेपाली क्रांतिकारियों का विशेष सम्पर्क रहा। बाद में तो रक्सौल आर्य समाज मंदिर इन क्रांतिकारियों का आश्रय-स्थल ही बन गया। सर्वश्री गणेशमान सिंह, मातृका प्र० कोइराला, डा० के० आई० सिंह, धर्मरत्न यमि, कृष्ण प्र० उपाध्याय, पुष्प लाल श्रेष्ठ, तुलसी लाल अमात्य, गोपाल प्र० भटराई, 'केदार मान' 'व्यथित,' प्रेम बहादुर, भागवत प्र० यादव, तेज बहादुर अमात्य, जैसे व्यक्तित्व इस आर्यसमाज मंदिर में रहकर नेपाल से राणाशाही को खत्म करने के लिए योजनाएँ बनाते रहे। इस आर्यसमाज मंदिर में इन क्रांतिकारियों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। भारत के समाजवादी तथा अन्य नेताओं से प्रेरणा ग्रहण करनेवाले नेपाली क्रांतिकारियों का यह मंदिर उन दिनों हृदय-स्थल था। नेपाली श्री ऋषिकेश शर्मा ने अपनी पुस्तक "नेपाल एण्ड वर्ल्ड" में लिखा है—'प्रजातांत्रिक देश भारत एकतंत्रीय नेपाल को कठिनाई के साथ सहन कर सकता था। अतः स्वतंत्र भारत नेपाल में राष्ट्रीयता और प्रजातंत्र की स्थापना की नीति में सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध था। वस्तुस्थिति यह है कि नेपाली स्वतंत्रता-संग्राम का मूल भारतीय मिट्टी में था और बहुत अंश में भारतीय राष्ट्रीय संग्राम ने नेपालियों के प्रेरणा-स्रोत एवं आदर्श के रूप में काम किया। — — — भारत ने नेपाल के प्रजातांत्रिक अधिकार तथा आजादी के लिए जो सहयोग दिया, नेपाली इतने बड़े ऋण को चुका नहीं सकते।"

पटना, कलकत्ता, बनारस और रक्सौल में नेपाली क्रांतिकारी अपने-अपने ढंग से काम कर रहे थे कि सन् १९५० के अप्रैल माह में कलकत्ता में नेपाली कांग्रेस का जन्म हुआ, जिसने नेपाल में जन-आन्दोलन छेड़ देने का प्रस्ताव स्वीकृत किया। ६ नवम्बर १९५० को शिकार खेलने के बहाने नेपाल के राजा श्री त्रिभुवन ने भारतीय दूतावास में शरण ले ली। इस घटना ने नेपाल की स्थिति को एक नया मोड़ दिया। भारत में नेपाली कांग्रेस के लिए यह अनुकूल अवसर था, जिसकी उसे प्रतीक्षा थी। 'श्री ५ सरकार जिन्दाबाद' 'राणाशाही मुर्दाबाद' के नारों से क्रांति शुरू हो गई। आजाद हिन्द फौज में प्रशिक्षण-प्राप्त नेपाली सैनिक भी इस क्रांति में कूद पड़े।

इस क्रांति तथा रक्सौल से संबंधित एक संदर्भ यहाँ प्रस्तुत है, जो इस पुस्तक के लेखक द्वारा रक्सौल से निकलनेवाले 'सरहद' साप्ताहिक के १ फरवरी १९७१ अंक में प्रकाशित हुआ था—"सन् १९५० की दीपावली की रात का वह ठिठुरन-भरा अन्तिम प्रहर। फिर भी सारा वीरगंज जूआ के माहौल में मस्ती ले रहा था। .... तब हाई स्कूल के ९वें वर्ग का छात्र था मैं। ११नवम्बर की रात्रि में घर पर दीपावली मनाने के बाद वीरगंज की दीपावली देखने की इच्छा से मैं अपने कुछ साथियों के साथ निकल पड़ा था वहाँ। जूआ के माहौल ने हमें इतना आकृष्ट किया कि रात्रि का कब एक बज गया, आभास तक नहीं हुआ। लौटकर घर पर मात्र दो-ढाई घंटा सोने के पश्चात् जिस घटना का समाचार सुना उस पर कानों को विश्वास नहीं हुआ। अभी-अभी तो हम लोग वीरगंज से लौटे थे—इतनी ही देर में ऐसी भयंकर घटना कैसे घट गयी? पर हमारी आंखों के समक्ष, रक्सौल सरकारी अस्पताल के सामने श्री सरयुग प्र० के मकान में, जिसकी एक-दो कोठरियाँ नेपाली क्रांतिकारियों ने किराये पर ले रखी थीं, एक नंगी चौकी पर वीरगंज के गवर्नर श्री सोमशमशेर जंगबहादुर राणा उदास मुद्रा में चुप-चाप बैठे थे। कई जिलों के अधिकारी श्री सोमशमशेर जंगबहादुर राणा सपत्नीक नेपाली क्रांतिकारियों की गिरफ्त में थे।.........दीपावली की वह गहरी रात, जबकि सभी दीपक बुझ चुके थे, केवल अमा की कालिमा व्याप्त थी, सिपाही से लेकर बड़े-बड़े अधिकारी तक जूआ का आनन्द लेने के पश्चात् या तो गाढ़ी नींद का आनन्द ले रहे थे या उनमें से कुछ अभी भी जूआ के अड्डों पर जमे बैठे थे। नेपाली क्रांतिकारी इस मौके की अनुकूलता से अच्छी तरह परिचित थे। पूर्व योजनानुसार आकाश-मार्ग से पर्चा गिराने के शीघ्र पश्चात् वीरगंज के गोश्वारा के निकट स्थित श्री

सोमशमशेर जंगबहादुर राणा के निवास-स्थान पर उन्होंने धावा बोल दिया और सुबह होते नाजारा ही कुछ दूसरा था। उत्सुकतावश कि देखूँ इस परिवर्तित माहौल में नेपाली क्षेत्र की मिट्टी तथा आबोहवा में क्या-कुछ परिवर्त्तन आया है, अपने विद्यालय के ही एक छात्र श्री वैद्यनाथ पांडेय के साथ चुपके से सरहद पार कर गया था। पुल के बाद १०-१५ कदम ही हम बढ़े होंगे कि नेपाली क्रांतिकारियों की फौज, जिसमें हमें अधिकांश आजाद हिन्द फौज के ही सैनिक मालूम पड़े, वीरगंज की तरफ बढ़ती हुई दिखाई पड़ी। सभी सैनिक पूरे संगीन के साथ लैस बड़ी हीं मंथर गति से पूरे जोश के साथ 'मार्चिंग सौंग' गाते हुए आगे बढ़ रहे थे। उनमें जो उल्लास और उत्साह दिखलाई पड़ता था, उनका किन शब्दों में वर्णन करूँ? थोड़ी ही देर के बाद टुकड़ी के कप्तान की दृष्टि हम पर आ पड़ी, वह धीरे से बोला-भाग जाओ, वरना गोली से मर जाओगे, पता नहीं दोनों तरफ से कब गोलियाँ चलने लगें।'' उसके कहने का हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हम उससे थोड़ी दूर पीछे रहते हुए आगे बढ़ते रहे। सचमुच यह हमारी निर्भीकता नहीं थो, पूर्णतः लड़कपन का अज्ञानता से भरा हुआ दुस्साहस था।.........जेल की तरफ जानेवाली रेलवे लाइन पर, जहाँ से घुमाव शुरू होता है, पहुँचते हीं गोलियों की दनादन बौछार होने लगी। हमारी हालत ऐसी कि काटो तो खून नहीं। अब हमें अपने दुस्साहस का भान हुआ। दोनों तरफ से आक्रमण-प्रत्याक्रमण देखकर भागने के सिवा दूसरा उपाय नहीं था। पर सीधी सड़क से भागना भी खतरे से खाली नहीं था। अतः घेरा फांदकर हम फुलवारी में आ रहे। अब तो बस कानों को ही 'गन' और 'मशीनगन' की आवाज सुनाई पड़ती थी।...—......सैनिकों ने जेल तोड़ दी, उसके फाटक खोल दिए। सभी कैदी बड़ी तेजी से हाथों और पैरों में सिकड़ और बेड़ी झनझनाते हुए भागे आ रहे थे। अजीब दृश्य था वहाँ का। जिधर भी नजर जाती उधर ही पीले-पीले सूखे हुए कैदी दिखाई पड़ते। सिकड़ और बेड़ी की झनझनाहट उनकी दयनीय दशा को और भी मुखर कर देती।...... कैदियों के अन्तिम जत्थे के साथ, उत्साहपूर्वक अपनी 'बहादुरी' पर गर्व करते हुए हम रक्सौल चल पड़े..............।"

यहाँ यह उल्लेख कर देना कम दिलचस्प न होगा कि रक्सौल, हजारीमल उच्च विद्यालय के भूतपूर्व छात्र स्व० श्री तेज बहादुर अमात्य ने, जो नेपाली कांग्रेस के एक बहादुर सैनिक थे, इस क्रांति में पहली गोली चलाने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'नेपाल की कहानी' में लिखा है—"दीपावली की रात्रि में जबकि सभी सरकारी सैनिक तथा कर्मचारी जूआ-शराब में अलस्त थे कि नेपाली कांग्रेस के छापामारों ने वीरगंज पर अचानक कब्जा करके सरकारी कोष और शास्त्रागार पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त कर लिया। उस समय वीरगंज के सरकारी कोष में लगभग पैंतालीस लाख रुपये तथा सोने-चाँदी के कुछ छड़ आदि भी थे और जिसकी बंदरबांट विद्रोहियों के कुछ उच्च नेताओं के बीच हुई।... ... ... —वीरगंज में मुक्ति सेना और राणा फौज में घमासान लड़ाई हुई। दोनों पक्ष में अनेकों व्यक्ति गोली के शिकार हुए, जिनमें विद्रोही नेता थिरबम मल्ल का नाम स्मरणीय है।" थिरबम मल्ल का देहांत रक्सौल-डंकन अस्पताल में हो गया।

९ दिनों तक वीरगंज नेपाली कांग्रेस के अधिकार में रहा। स्व० श्री तेज बहादुर अमात्य प्रथम मिलिट्री गवर्नर नियुक्त हुए। इस दौरान १८ नवम्बर १९५० को त्रियुद्ध हाई स्कूल, वीरगंज के अहाते में जो आम सभा हुई, उसमें रक्सौल के अनेक व्यक्तियों ने भाग लिया था। नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति श्री मातृका प्रसाद कोइराला ने इस सभा में क्रांतिकारियों के विरुद्ध राणाओं द्वारा पाकिस्तान से मदद के लिए चुपके से बातचीत करने का आरोप लगाया था।

इस एक सप्ताह के दौरान रक्सौल अखबारनवीसों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया था। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के श्री निवासन, 'सर्चलाइट' के श्री विनय सिंह, 'आज' के श्री अरोरा, 'इन्डियन नेशन' के श्री आर० बालचन्द, 'लन्दन ऑबजर्वर' के मि० नौक्स, यूनाइटेड प्रेस ऑफ अमेरिका के लिवर चेक, मि० विल्फ्रेड, लेजारस, 'लंडन एक्सप्रेस' के रसेल स्पर जैसे अखबारनवीस रक्सौल में उन दिनों बड़े ही सक्रिय थे।

बिहार आर्म्ड कॉन्सटैबलरी भी सीमा पर सुरक्षा की दृष्टि से पूरी सतर्क थी। उन दिनों रक्सौल में अजीब गहमागहमी थी। तिरहुत के तत्कालीन कमिश्नर श्री हरबंस लाल, आई० सी० एस०, और श्री चन्द्रमोहन झा, डी० आई० जी०, पुलिस, बिहार ने पूरी सतर्कता बरती कि एक मित्र राष्ट्र की सीमा पर अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन न हो। यह सही है कि भारत के अनेक नेताओं की सहानुभूति नेपाली क्रांतिकारियों के साथ थी, पर सरकारी स्तर पर नियमों का पालन हो, ऐसा प्रयत्न किया गया।

१६ नवम्बर तक राणा प्रशासन की फौज सेमरा तक आ गयी। लगने लगा कि कुछ ही घंटों में वीरगंज भी उनके हाथों में आ जायेगा। सिरिसिया

नदी (रक्सौल) पर स्थित पुल, जो दो देशों के बीच सीमा का काम करता है, महत्वपूर्ण हो उठा । पुल के पास भारतीय सीमा में सुरक्षा की दृष्टि से सशस्त्र भारतीय दस्ता तैनात हो गया, जैसा कि ऊपर कहा गया है ।

राणा प्रशासन ने भारत पर नेपाली क्रांतिकारियों द्वारा सीमा से होने वाली गतिविधि पर आंख मूंद लेने का आरोप लगाया और ब्रिटिश-अमेरिकी मदद की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगा ।

२० नवम्बर तक नेपाली क्रांतिकारियों को वीरगंज को पूर्णतः खाली कर देना पड़ा और वहाँ राणा शासन पहले की तरह स्थापित हो गया ।

श्री काशी प्र० श्रीवास्तव ने लिखा है—"नेपाली कांग्रेस के नेता वीरगंज के खजाने को पाकर जबकि अपने मन की मुरादें पूरी करने में मस्त थे, राणा सरकार के सैनिकों ने वीरगंज पर पुनः अधिकार कर लिया । ········ वीरगंज के पतन के पश्चात् जनता को नेपाली कांग्रेस में विश्वास नहीं रह गया और वह अवसरवादियों से अपना पिंड छुड़ाकर विशुद्ध राष्ट्रवादी तत्वों की अभीक्षा करने लगी।"

२० नवम्बर को संध्या ठीक ४.३० बजे रक्सौल-स्थित सीमा-पुल के मध्य में नेपाली फौज के अधिकारी भारतीय अधिकारियों से मिले । कैप्टेन शैलेन्द्र बहादुर, कै० दबल बहादुर, कै० चन्द्रबहादुर और डा० प्रधान एक जीप से उतरे और पुल के ठीक बीच तक पैदल आये, जहाँ बिहार आर्म्ड पुलिस के अधिकारी श्री चन्द्रशेखर झा से हाथ मिलाये । इस दृश्य को रक्सौल के अनेक लोगों ने देखा था ।

पर पूरे नेपाल में छिटफुट संघर्ष चलता रहा और अन्त में राणाओं को झुकना पड़ा । १८ फरवरी १९५१ को महाराजा त्रिभुवन दिल्ली से काठमांडू पहुँचे और नेपाल में एक संविद सरकार का गठन हुआ, जिसके प्रधान मंत्री स्वयं मोहन शमशेर हुए। पर नवम्बर १९५१ में मोहन शमशेर को बाध्य होकर इस्तीफा दे देना पड़ा और श्री मातृका प्र० कोइराला प्रधान मंत्री बने । फिर एक-एक कर कई प्रधान मंत्री आये । १५ दिसम्बर १९६० को राजा ने बी० पी० कोईराला-मंत्रिमंडल को भी भंग कर दिया और कोइराला के साथ उनके अन्य कुछ सहयोगियों को कैद करने का आदेश दिया। नेपाल की स्थिति फिर बिगड़ गयी। राजा ने सारे अधिकार अपने अधीन कर लिए और देश में आपातकालीन स्थिति लागू कर संविधान के साथ मौलिक अधिकार भी स्थगित कर दिये। इसे पंडित नेहरू ने "प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का पूर्णतः व्यतिक्रम" बताया।

एक बार फिर प्रजातंत्र में विश्वास रखने वाले अनेक नेपाली नागरिकों को भारतीय सीमा में प्रवेश करना पड़ा और रक्सौल पुनः उनका प्रमुख केन्द्र-स्थल बना। सन् १९५० की सशस्त्र क्रांति के योद्धा श्री तेज बहादुर अमात्य के साथ उन दिनों नेपाली कांग्रेस के दर्जनों कार्यकर्त्ता रक्सौल में देखे जा सकते थे।

रक्सौल बम-कांड — सन् १९६२ के दिनों में श्री तेज बहादुर अमात्य रक्सौल के चावल-बाजार-स्थित श्री वैद्यनाथ प्र० गुप्त के मकान में अपने कई साथियों के साथ रहा करते थे। यह भवन उनके निवास के साथ-साथ नेपाली कांग्रेस की गतिविधियों का प्रमुख स्थल भी था। २९ मई १९६२ को इस मकान में एक ऐसा कांड हुआ, जिसे 'रक्सौल-बम कांड' के नाम से जाना जाता है। दिन के लगभग १२ बजे एक बम का विस्फोट हुआ और मकान के तीसरे तले का सम्पूर्ण भाग ध्वस्त हो गया। आज भी उस ध्वस्त भाग को उसी हालत में देखा जा सकता है। विस्फोट के समय श्री तेज बहादुर किसी कार्यवश मकान से बाहर बाजार में थे। किसी तरह उनके प्राण बच गए। उस समय कुछ ऐसी अफवाह उड़ी कि इस मकान में बिल्कुल ही गुप्त रूप से बम बन रहा था, जो गलती से विस्फोट कर गया। पर जाँच के बाद सरकार ने इस अफवाह को गलत पाया। इस संदर्भ में कलकत्ता से प्रकाशित अंग्रेजी पाक्षिक 'नेपाल टु-डे' के १५ अप्रैल १९६६ के अंक में प्रकाशित एक अंश प्रस्तुत है—"वे (श्री तेजबहादुर अमात्य) कभी भी विरोधियों से समझौता नहीं कर सके और लगातार जिस तरह राणा शासन के विरुद्ध लड़ते रहे, वर्त्तमान अप्रजातांत्रिक शासन से भी संघर्ष करते रहे। इससे वे शक्तिशाली लोगों के दुश्मन बन गए। अतः उनकी जान लेने की कई बार कोशिश की गई। तीन वर्ष पहले रक्सौल के उनके निवास पर बम फेंका गया, पर वे बच गए—उस समय वह बाहर थे।"

पर श्री तेज बहादुर अमात्य बच नहीं सके। १० अप्रैल १९६६ को संध्या रक्सौल बैंक रोड की एक कपड़ा की दुकान पर खड़े थे कि किसी ने पिस्तौल से गोली दाग दी और हत्यारा अंधेरी गली से गायब हो गया। मोतिहारी में शव-परीक्षा के बाद उनका पार्थिव शरीर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, रक्सौल के कार्यालय नरेन्द्र आश्रम में रखा गया, जहाँ से १२ अप्रैल १९६६ को शव-यात्रा शुरू हुई और सिरिसिया नदी में उनका दाह-संस्कार सम्पन्न हुआ। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, रक्सौल ने अपने प्रस्ताव में कहा—',विभीषण की शरणस्थली भारत में शरणार्थी बने हुए नेपाली नेता के प्राणों की

रक्षा न तो यहाँ की सरकार कर सकी और न ही जनता। यह अत्यन्त खेदजनक है। .... खासकर गत १९६२ में जबकि रक्सौल में एक और गोली-कांड हुआ था और चार-चार व्यक्ति घायल हुए थे तो उसके बाद भी भारत और बिहार की सरकारों को रक्सौल में सतर्क रहना चाहिए था, पर सरकार ने अपेक्षित सतर्कता नहीं बरती।........"

नेपाली कांग्रेस की गतिविधि में कमी नहीं आयी। नेपाल के खिलाफ इस सीमा-भूमि के अतिरिक्त भारत के अन्य क्षेत्रों से जो कुछ हो रहा था, उससे नेपाल सरकार बहुत खफा थी। उन दिनों नेपाल में भारत के राजदूत श्री श्रीमन्नारायण थे, जो भारत-नेपाल-संबंध को मधुर बनाने के लिए हृदय से प्रयत्नशील थे। उन्हीं दिनों चीन द्वारा नेपाल के पूरब-पश्चिम राजमार्ग (महेन्द्र राजमार्ग) के पूर्वी खंड के निर्माण की बात से भारत सरकार बहुत चिंतित थी, क्योंकि पूर्वी तराई में सैकड़ों चीनियों की उपस्थिति से हमारी उत्तरी सीमाओं को खतरा हो सकता था। पहले नेपाल सरकार ने इसके निर्माण के लिए भारत सरकार से कहा था, पर उचित जवाब नहीं मिलने पर चीन से बात चलायी और चीन सहर्ष तैयार हो गया। नेपाल और चीन के बीच समझौता पर हस्ताक्षर भी हो गए। फिर भी श्री श्रीमन्नारायण ने भारत सरकार द्वारा इसे बनाने की सहमति प्राप्त कर नेपाल के प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री से बातें चलायीं, जिन्होंने इस परिस्थिति में अपनी असमर्थता दिखलाई। श्री श्रीमन्नारायण ने राजा से स्वयं बातें कीं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'इंडिया एण्ड नेपाल' में लिखा है—"स्वभावतः राजा भी कुछ क्षणों के लिए हिचकिचाए। यह उनके लिए कठिन था कि वे चीनियों को तराई छोड़ देने के लिए कहें और कहीं अन्यत्र दूसरी योजना का सर्वेक्षण करने के लिए बात चलाएं। फिर भी, उन्होंने इस बात पर गौर करने का वचन दिया। अनेक स्पष्ट वार्त्तालापों के पश्चात् राजा ने स्वीकार किया कि हमारी सीमाओं पर चीनियों की भारी संख्या के जमावड़े से भारतीय सुरक्षा को खतरा पहुँच सकता है। लेकिन चीन सरकार से इस नाजुक प्रश्न को उठाने के पूर्व वे दृढ़ रूप से निश्चयवान हो जाना चाहते थे कि नेपाल पर भारत का कोई अन्य इरादा तो नहीं है। भारत की ईमानदारी की सच्ची जाँच के लिए राजा चाहते थे कि भारत सरकार तथा सम्बद्ध राज्य सरकारों द्वारा नेपाल की दक्षिणी सीमा पर होनेवाली नेपाल-विरोधी गतिविधियाँ दृढ़ता के साथ रोकी जायं। इस संदर्भ में राजा को अपनी तत्परता दिखाने के उद्देश्य से मैंने स्वयं कई बार विस्तृत रूप से भारत नेपाल-सीमा की यात्राएँ कीं।

नेपाली नागरिकों द्वारा भारतीय भूमि से राजा तथा उनकी सरकार के विरुद्ध अवांछित गतिविधियों को प्रभावकारी ढंग से रोकने के लिए जिला-अधिकारियों से कहा। मैंने उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में नेपाली कांग्रेस के अनेक कार्यकर्त्ताओं से मुलाकातें कीं (श्री श्रीमन्नारायण रक्सौल भी आये थे।) और उनसे साफ-साफ शब्दों में कह दिया कि भारत मित्र नेपाल के विरुद्ध काम करने की उन्हें अब छूट नहीं देगा। अगर वस्तुतः वे नेपाल में प्रजातंत्र की स्थापना करना चाहते हैं तो उन्हें अपने देश में जाना चाहिए और बलिदान तथा सेवा की भावना से प्रतिफल का सामना करना चाहिए। नेपाली मित्रों ने मेरे तर्क-बल को महसूस किया और वे भारत नेपाल-सीमा पर राजनैतिक गतिविधि बन्द कर देने को सहमत हो गए।"

श्री श्रीमन्नारायण के इस प्रयत्न का कुछ फल हुआ। उन दिनों रक्सौल में हमने स्वयं देखा था कि नेपालियों की गतिविधि में वस्तुतः कमी आ गयी थी। और इसका सबसे बड़ा जो प्रतिफल हुआ, वह श्री श्रीमन्नारायण के ही शब्दों में पढ़ें—"उन्होंने (राजा ने) एक दिन मुझसे कहा—महामहिम, हमारी दक्षिणी सीमा पर शांति स्थापित करने में आपने जो निष्ठापूर्ण कदम उठाये हैं, इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। ... ... मुझे विश्वास है कि आपका सच्चा प्रयत्न जारी रहेगा। जहाँ तक मेरा संबंध है, मैंने, और मेरी सरकार ने अब निर्णय ले लिया है कि पूर्व-पश्चिम राजमार्ग के पूर्वी खंड को छोड़ देने तथा नेपाल के मध्य भाग में किसी दूसरे मार्ग के नये सिरे से सर्वेक्षण करने की हम चीन से प्रार्थना करेंगे।" यह भारत के लिए बड़ा ही स्वागतपूर्ण निर्णय था और जब मैंने शास्त्री जी (श्री लाल बहादुर शास्त्री) को इसकी सूचना दी, तो वस्तुतः उन्हें एक गहरी चिन्ता से मुक्ति मिली।"

रक्सौल में नेपाली नागरिकों की गतिविधि में कमी तो अवश्य आ गयी, पर उनका जमावड़ा अभी भी बना रहा। सीमा पार करने में उन्हें पकड़ लिए जाने का भय था। पर सन् १९६९ में शाही घोषणा के अनुसार कुछ लोगों पर से प्रतिबंध हट गया। रक्सौल में रह रहे नेपाली कांग्रेस के सर्वश्री वैद्यनाथ प्र०, रामजनम तिवारी, भागवत दूबे, हरिहर प्र० गुप्ता, विश्वनाथ अग्रवाल, मेघराज उपाध्याय, जैसे लोगों ने नेपाल में प्रवेश किया। पर स्थिति कुछ ऐसी हुई कि सन् १९७१ में कुछ लोगों को पुनः रक्सौल की भूमि में शरण लेनी पड़ी।

सन् १९७९ के अप्रैल माह के दूसरे सप्ताह में नेपाल के छात्रों ने अपनी कुछ प्रमुख मांगों को लेकर नेपाल में जगह-जगह हड़तालें कर दीं। उनका

प्रदर्शन उग्र रूप धारण करता गया। नेपाल में प्रजातंत्र चाहनेवाले लोगों ने उन्हें शह दी। नेपाल के विभिन्न भागों में संघर्ष ने उग्र रूप धारण किया। रक्सौल से सटे वीरगंज, कलैया जैसे स्थानों में भी भीड़ पर लाठी-चार्ज हुआ, गोलियाँ चलीं। सम्पूर्ण नेपाल में सैकड़ों हताहत हुए। नेताओं-कार्यकर्त्ताओं की धड़-पकड़ शुरू हुई और एक बार फिर रक्सौल की भूमि वीरगंज, कलैया आदि स्थानों से भागनेवाले नेपालियों का शरण-स्थल बनी। आज भी (२२ मई १९७९ को) रक्सौल में वैसे शरणार्थियों की संख्या पचासों में है।

स्व० श्री तेज बहादुर अमात्य के कंधे से कंधे मिलाकर चलनेवाले श्री वैद्यनाथ प्र० गुप्त ने, जिन्होंने नेपाल में प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के लिए अपना बहुत कुछ त्याग किया है, और एक तरह से अपना जीवन समर्पित कर दिया है, इन शरणार्थियों को आश्रय देने आदि के काम में बड़े गतिशील देखे जा रहे हैं। विगत दिनों नेपाल में वर्त्तमान व्यवस्था के खिलाफ तथा प्रजातंत्र के पक्ष में उनके कई वक्तव्य प्रसारित हुए हैं।

भारत और नेपाल की भौगोलिक-राजनीतिक स्थिति कुछ ऐसी है कि भारत से नेपाल और नेपाल से भारत आनेवाले राजनैतिक व्यक्तियों को रोका नहीं जा सकता। अतः रक्सौल की भूमि को नेपाली राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं से मुक्त रखना कठिन ही नहीं, असम्भव-सा है।

२२. नगर की कुछ ज्वलंत समस्याएँ एवं अपेक्षाएँ

ओवर ब्रिज—रक्सौल से गुजरनेवाले राष्ट्रीय उच्च पथ (२८ ए०) की महत्ता नेपाल के कारण इन दिनों कितनी बढ़ गयी है इसका अनुमान इस मार्ग से चौबीसों घंटे दौड़नेवाले वाहनों की संख्या से लगाया जा सकता है। नेपाल की राजधानी काठमांडू के लिए भारत, चीन, जापान,कोरिया, थाइलैंड, अमेरिका तथा विश्व के अन्य अनेक देशों से आनेवाली विविध सामग्रियों को पहुंचाने का एक मात्र प्रमुख साधन ट्रक हैं, जो मुख्यतः रक्सौल से जानेवाले इस प्रमुख मार्ग से गुजरते हैं। नेपाल की भूमि में प्रवेश करने के पूर्व अथवा नेपाल से लौटने पर भारतीय भूमि में प्रवेश करते ही इन वाहनों को उत्तर-पूर्व रेलवे की एक छोटी-सी गुमटी को पार करना होता है। इस रेल-पथ से दिन में यात्रीगाड़ियों अथवा मालगाड़ियों के गुजरने के समय रेलवे-फाटक के बन्द हो जाने के फलस्वरूप अकसर फाटक के दोनों तरफ ट्रकों, टैंकरों, स्कूटरों, रिक्शों, टांगों एवं मनुष्यों का जो भयंकर जमघट हो जाता है, उसे साफ होने में काफी लम्बा समय लग जाता है। ऐसे अवसरों पर इन वाहन-चालकों तथा अन्य यात्रियों को जितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है, उन्हें भुक्तभोगी ही जानते हैं। इस मार्ग में कई बार दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं, अनेकों बार दुर्घटनाएँ होते-होते बची हैं।

आज से लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व इस मार्ग पर ओवर ब्रिज (Over bridge) निर्मित करने की बात सामने आयी थी। पर इस मार्ग पर अवस्थित कई दुकानदारों ने इस योजना का तीव्र विरोध किया था। उनका विरोध किया जाना बहुत अंश में लाजिमी था। अगर यह ब्रिज निर्मित हो गया होता, तो मुख्य मार्ग की वह रौनक, जो आज दिखलाई पड़ती है, कबकी समाप्त हो गयी होती।

जो भी हो, सन् १९६०-६१ में एक नये मार्ग के निर्माण की योजना बनी थी। कोइरिया टोला से मोड़कर वर्त्तमान मार्ग से काफी पूरब होते हुए सिरिसिया नदी पर पुल बनाकर इस मार्ग को नेपाल की रक्सौल-भैंसे सड़क से मिला देने की योजना थी। इसके लिए बाजाप्ता सर्वेक्षण हुआ, आकलन बना। पर पता नहीं किन परिस्थितियों में यह योजना आज भी खटाई में फूल रही है।

भारत-नेपाल-सीमा को विभक्त करनेवाली सिरिसिया नदी पर निर्मित

काठ का पुल आज की आवश्यकताओं के अनुरूप बिल्कुल नहीं रह गया है। आज से लगभग ६५ वर्ष पूर्व निर्मित यह पुल आज इतना संकीर्ण हो गया है कि इसके कारण भी ट्राफिक-जाम की विकट समस्या उठ खड़ी होती है। यह पुल सचमुच एक अजूबा है, इस माने में कि इसके ठीक बीचोबीच से रेलवे लाइन (नेपाली रेलवे लाइन) गुजरती है, जिसके दोनों तरफ कभी फाटक नहीं थे, आज भी नहीं हैं। पहले इस पर यात्री-गाड़ियाँ दौड़ा करती थीं, आज केवल मालगाड़ियाँ चलती हैं। आवश्यकता है इसके स्थान पर एक नये पुल की—एक ऐसे नये पुल की, जो आनेवाले कम-से-कम ५०-६० वर्षों के भविष्य को देखकर निर्मित हो।

भारत-नेपाल के बीच हुए एक समझौते के अनुसार लगभग डेढ़ दशक पूर्व रक्सौल से हथौड़ा तक भारतीय रेलवे ने बड़ी लाइन बिछाने का सर्वेक्षण किया था। इस संदर्भ में भारतीय रेलवे के कतिपय उच्च पदस्थ पदाधिकारी समय-समय पर रक्सौल आते रहे और उन्होंने आवश्यक जाँच-पड़ताल की, पर यह योजना अभी तक कार्यान्वित नहीं हो सकी है। जुलाई माह में आकाशवाणी द्वारा प्रसारित एक समाचार के अनुसार इस योजना ने पुनः गति पकड़ी है। इस योजना के कार्यान्वयन से उपर्युक्त ट्राफिक-जाम-समस्या का समाधान निकल सकता है और नेपाल की संचार-व्यवस्था में एक क्रांतिकारी परिवर्त्तन आ सकता है। पर साथ ही रक्सौल-स्थित दर्जनों ट्रान्सपोर्ट कम्पनियों की हालत खस्ता हो जायगी इनसे जुड़े सैकड़ों लोगों को रोजी-रोटी की समस्या उठ खड़ी होगी और इस मुख्य मार्ग की गहमा-गहमी तो समाप्त हो ही जायेगी।

बस-स्टैंड—रक्सौल में बस-स्टैंड की भी बड़ी विकट समस्या है। रक्सौल से गुजरनेवाले उच्च पथ का वह भाग, जो रक्सौल सिनेमा के निकट पड़ता है, रक्सौल का व्यस्त स्थल ही नहीं, हृदय स्थल भी है। इस बस-स्टैंड के चलते विभिन्न वाहनों तथा पैदल यात्रियों को जिन असुविधाओं एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है, उनका किन शब्दों में वर्णन किया जाय ? आज रक्सौल की ज्वलंत समस्याओं में एक है बस-स्टैंड की समस्या, जिसे हल करने के लिए इसे स्थायी रूप से नगर से दूर ले जाने की नितांत अपेक्षा है।

नगर की नारकीय स्थिति— सुगौली की तरफ से रक्सौल आनेवाले नये रेल-यात्रियों को रक्सौल डिप्टी सिगनल के निकट घुमाव के पास से, नगर की भव्य अट्टालिकाओं के जो दर्शन होते हैं, उससे निश्चय ही रक्सौल के बारे में उनकी बड़ी अच्छी धारणाएँ बनती हैं, परन्तु नगर में प्रवेश करते

ही उनकी आशाएँ, निराशाओं में परिणत हो जाती हैं। यह बेतरतीब बसी नगरी बड़ा ही फूहड़ दृश्य उपस्थित करती है, और इस फूहड़पन के सामने नगर की बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं की छवि धूमिल पड़ जाती है।

तेजी से प्रगति कर रहे रक्सौल बाजार की जनसंख्या बढ़ रही है, नयी-नयी दुकानें खुल रही हैं, वाहनों की तादाद में दिनोंदिन वृद्धि हो रही है, अधिक आवागमन तथा घरों से जल-निकासी के कारण सड़कों की दुर्गति हो रही है। पर उस अनुपात में नगरपालिका की ओर से व्यवस्था पर ध्यान देने की बात कौन कहे, एक तरह से काम ठप्प है। हर वर्ष वर्षाकाल में नगर की नारकीय स्थिति अपेक्षाकृत अधिक वीभत्स होती जा रही है। बाजार की हर गली, हर कूचा बरसात के दिनों में कीचड़ से भरा होता है। गुजरनेवाले नाक-भौं सिकुड़ते हैं, भुनभुनाते हैं, पर कोई ठोस नतीजा नहीं निकल पाता।

रक्सौल-रेलवे स्टेशन को राष्ट्रीय उच्च पथ से संयुक्त करनेवाले रेलवे मार्ग की अपनी महत्ता है। पर वह सड़क भी जगह-जगह बुरी तरह टूट गयी है, उसकी बगल से गुजरनेवाली कच्ची नाली बन्द पड़ी है, सड़क पानी और कीचड़ में बुरी तरह डूबी है। भारतीय तेल निगम के अहाते की बगल में इस मार्ग पर प्रति दिन टैंकरों (तेल-वाहनों) की घंटों खड़ी रहनेवाली लम्बी कतारें यात्रियों को जो असुविधाएँ देती हैं, भुक्तभोगी ही जानते हैं।

हर वर्ष सुना जाता है—यह योजना बनी, वह योजना बनी, पर वस्तुतः होता कुछ नहीं। जुलाई १९७९ के तीसरे सप्ताह में भारतीय दूतावास, काठमांडू के एक उच्च अधिकारी श्री अरोरा, जो रक्सौल में तीन दिनों तक रुके थे—रक्सौल के नारकीय दृश्य को देखकर बड़े ही निराश हुए और उन्होंने बिहार सरकार के मुख्य सचिव के पास पत्र लिखकर रक्सौल की इस नारकीय हालत की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। श्री अरोरा ने रक्सौल को केन्द्रीय योजना में सम्मिलित करने के निमित्त दिल्ली से भी पत्राचार करने की बात की। पता नहीं इस संदर्भ में उन्होंने क्या-कुछ किया। पर अपेक्षा है रक्सौल के सामाजिक कार्यकर्ता, जन-नेता, आदि इस अहम् मसले को हल करने के लिए एकजुट हो जायं। इस अन्तराष्ट्रीय नगरी के सर्वांगीण विकास के लिए एक 'मास्टर प्लान' की आवश्यकता है। खासकर, उस हालत में जबकि पड़ोसी मित्र राष्ट्र नेपाल का सुन्दर शहर वीरगंज हमसे मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। रक्सौल में 'मास्टर प्लान' की बातें कई बार सामने आयी हैं। पर अबतक इस संदर्भ में कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सका है।

जलापूर्ति योजना—नगर-जलापूर्ति योजना के संदर्भ में पृष्ठ १६० में संक्षेप में कुछ चर्चा हुई है। रक्सौल की मिट्टी कुछ ऐसी है कि यहाँ पेय जल सवा या डेढ़ सौ फीट नीचे के बाद ही प्राप्त होता है, जबकि मोतिहारी, बेतिया, सीतामढ़ी, आदि स्थानों में मात्र ३०-४० फीट पर ही। रक्सौल में अच्छा पेय जल प्राप्त करने के लिए चापाकल लगाने में आजकल लगभग ढाई हजार रुपये लग जाते हैं। इसलिए भी यहां जलापूर्ति-योजना शीघ्रातिशीघ्र कार्यान्वित हो, इसकी नितान्त अपेक्षा है।

भूमि एवं आवासीय समस्या—पता नहीं इस रक्सौल की मिट्टी में क्या है कि वह इतनी महंगी है। सुनते हैं आज से कुछ वर्ष पूर्व रक्सौल बाजार में लगभग ५ धूर (११२५ वर्गफीट) जमीन एक लाख रुपये में बिक गयी थी! इस मामले में इस नगरी को 'छोटा कलकत्ता' की संज्ञा प्राप्त हैं। दुकान का किराया इतना तक पहुँच चुका है कि लगभग २०० वर्गफुट की एक कोठरी के लिए १२०० रु० मासिक किराया तक दुकानदार दे रहे हैं। आवासीय मकानों का भी किराया आसमान छू रहा है। इतनी महंगी भूमि तथा इतना अधिक किराया आखिर यहाँ है क्यों? यह सही है कि नेपाल के कारण रक्सौल का लगभग हर व्यापार आसमान पर है, पर साथ ही रक्सौल के विस्तार की गुंजाइश भी कम है। भूमि सीमित है तथा किराये के लिए निर्मित मकान मुट्ठी भर लोगों के हैं। रक्सौल बाजार से सटे उत्तर नेपाल, सटे पूरब सिरिसिया नदी, जिसके पार लोग जल्द जाना नहीं चाहते तथा पश्चिम-दक्खिन में प्रखंड-कार्यालय है। हाँ, कुछ लोग इस पश्चिम-दक्खिन भाग में भी बस रहे हैं, पर मुख्य मार्ग के दोनों तरफ दक्खिन भाग में लोगों में बसने का विशेष आकर्षण है, जिससे वह भूमि भी काफी महंगी बिक रही हैं। तेजी से विकास कर रहे रक्सौल जैसे प्रमुख नगर में अनेक सरकारी (राजकीय तथा केन्द्रीय) विभाग हैं और दिनोंदिन नये-नये विभाग खुल रहे हैं। इन सरकारी कार्यालयों में से अधिकांश के लिए न तो सरकारी भवन हैं, न ही उन सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए सरकार की ओर से कोई आवासीय व्यवस्था है। इसलिए भी यहाँ किराये के मकान बहुत महंगे हैं। आवश्यकता है सरकार अथवा नगरपालिका के प्रयत्नों से उपनगर बसाने की। पर फिलहाल नगरपालिका से ऐसी आशा करना फिजूल है।

फायर-ब्रिगेड—रक्सौल-स्थित तेल-डिपो में दो-दो बार आग लग चुकी है और नगर-निवासी बुरी तरह आतंकित हुए हैं। बाजार में स्थित भारतीय तेल निगम डिपो को इस प्रशस्त भूमि से कहीं अन्यत्र स्थानान्तरित किया

जाय, यह तो कुछ कठिन-सा है, पर रक्सौल में फायर ब्रिगेड की एक इकाई अवश्य होनी चाहिए। पिछले दिनों वीरगंज (नेपाल) स्थित फायर-ब्रिगेड इकाई ने हमारे इस भारतीय क्षेत्र में आग लगने की विषम परिस्थिति में विभिन्न अवसरों पर जो हमारा सहयोग किया है और आगे भी सहयोग करने के लिए प्रस्तुत है, उसके लिए इस क्षेत्र के निवासियों को वस्तुतः कृतज्ञ होना चाहिए। पर क्या ही अच्छा होता यदि रक्सौल में अपनी एक स्वतंत्र फायर ब्रिगेड इकाई होती।

अनुमंडल-निर्माण—प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से जब चम्पारण दो जिलों में विभक्त हुआ, तो रक्सौल में अनुमंडल-मुख्यालय की स्थापना की चर्चा चली। पर यह कह कर कि रक्सौल ठीक सीम-भूमि पर स्थित है, इसलिए इसे अनुमंडल-मुख्यालय नहीं बनाया जा सकता, इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया गया, ऐसा सुना जाता है। फिर, रक्सौल के स्थान पर कई महत्वहीन स्थानों को अनुमंडल-मुख्यालय बनाने की भी चर्चा चली। यदि सीमा पर स्थित वीरगंज नगर एक कमिश्नरी का मुख्यालय हो सकता है, तो सीमा पर स्थित रक्सौल अनुमंडल का मुख्यालय क्यों नहीं बन सकता ?

यह सही है कि विक्रय-कर (Sales Tax) विभाग, आदि की स्थापना से रक्सौल के व्यवसायियों को पर्याप्त सुविधा हो गई है, पर यदि कमसेकम यहाँ एक भूमि-रजिस्ट्रेशन-कार्यालय की स्थापना भी हो जाती, तो अनेक जमीन लिखने लिखाने वालों को बड़ी सुविधा प्राप्त हो जाती।

सबसे अहम् आवश्यकता है विभिन्न जन-नेताओं के पारस्परिक सहयोग की। अगर कोई एक जन-नेता नगर के हित में किसी एक सार्वजनिक काम को लेकर आगे बढ़ता है, तो दूसरे जन नेताओं का उसमें सहयोग अपेक्षित है, जिसके अभाव में रक्सौल की ढेर सारी समस्याओं का समाधान अबतक नहीं हो सका है।

२३. ये बोलते आंकड़े

रक्सौल बाजार-जन संख्या—६५९४ (१९५१); ९६९९ (१९६१), १२०६४ (१९७१, १७००० (१९७९) अनुमानतः।

रक्सौल अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों में घरों की संख्या—११३९५ (१९७१)

रक्सौल बाजार में घरों की संख्या—१८९८ (१९७१)

पूरे अंचल की जन-संख्या—७८३१४ (१९७१)

(पुरुष ४११८५ एवं स्त्री ३७१२९)

रक्सौल बाजार में पुरुष ६५६६, स्त्री ५४९८ (१९७१)

सन् १९७१ में साक्षर और शिक्षित व्यक्तियों की संख्या :

रक्सौल बाजार-पुरुष ३०७९ एवं स्त्री १२३६ = ४३१५

अंचल का ग्रामीण क्षेत्र-पुरुष ७२२३ एवं स्त्री १४९५ = ८७१८

(कुल-१३०३३)

सन् १९७१ में श्रमिकों की संख्या—

रक्सौल बाजार – पुरुष ३४६८ एवं स्त्री २२१ = ३६८९

अंचल का ग्रामीण क्षेत्र-पुरुष २०५०३ एवं स्त्री ३६५१ = २४१५४

(कुल योग – २७८४३)

सन् १९७१ में कृषकों की संख्या –

रक्सौल बाजार – पुरुष २१४ एवं स्त्री ४ = २१८

अंचल का ग्रामीण क्षेत्र – पुरुष ७२६४ एवं स्त्री २७१ = ७५३५

(कुल योग ७८५३)

सन् १९७१ में कृषक मजदूर

रक्सौल बाजार-पुरुष ६२६ एवं स्त्री ३३ = ६५९

अंचल का ग्रामीण क्षेत्र—पुरुष ११४२९ एवं स्त्री ३२६९ = १४६८८

(कुल योग १५३४७)

घरेलू उद्योग-(१९७१)

रक्सौल बाजार – पुरुष १७९ एवं स्त्री ६ = ३१५

ग्रामीण क्षेत्र – पुरुष २४३ एवं स्त्री ३८ = २८१

अन्य उद्योग-रक्सौल बाजार—पुरुष-३१० एवं स्त्री ५ = ३१५

ग्रामीण क्षेत्र – पुरुष २८३ एवं स्त्री २२ = ३०५

(कुल योग ६२०)

व्यवसाय-रक्सौल बाजार-१०११
ग्रामीण क्षेत्र-२७४
(कुल योग १२८५)

रक्सौल अवर प्रमंडल (विद्युत्) में विद्युतीकृत गांवों की संख्या ७० (१९७९)

रक्सौल अंचल में हलका-८, पंचायत-१६, ग्राम-४५ परिवार-१३२९१
अंचल का पूरा क्षेत्रफल ५१ वर्गमील
(जो २६°५५' से २७°१'१५'' अक्षांश तथा ८४°४१' से ८४°५३' देशान्तर के बीच स्थित है।)

धर्म और सम्प्रदाय के अनुसार रक्सौल बाजार की जनसंख्या (१९७१ ई०)

हिन्दू—पुरुष ५५४९ एवं स्त्री ४२३९
मुसलमान—पुरुष ९०९ एवं स्त्री ११०७
इसाई—पुरुष ७३ एवं स्त्री १२२
सिक्ख—पुरुष ३४ एवं स्त्री ३०
बौद्ध—पुरुष १

रक्सौल में औसत वार्षिक वर्षा १५६४ मि० मिटर
महत्तम तापक्रम ४३·४०°C, न्यूनतम तापक्रम ५·५६°C,

२५. कुछेक संस्थाओं के पदाधिकारी-सदस्य

● आर्य समाज—प्रधान-श्री वीर प्रकाश तापड़िया, उप प्रधान-श्री रामाज्ञा ठाकुर एवं श्री नन्दकिशोर सीकरिया; सचिव श्री भरत प्रसाद आर्य; कोषाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश राजपाल; अंकेक्षक-श्री बी० के० शास्त्री।

● कस्तूरबा कन्या उच्च विद्यालय—सभापति-श्री रघुनाथ प्र० भरतिया; उप-सभापति-श्री प्रहलाद प्र० एवं श्री ओमप्रकाश राजपाल; सचिव श्री दुखभंजन प्र०, उप सचिव श्री भरत प्र०; अंकेक्षक-श्री गगनदेव प्र० सिंह एवं बी० के० शास्त्री।

● हजारीमल उच्च विद्यालय (तदर्थ समिति)—सभापति-श्री सगीर अहमद विधायक, सचिव-श्री त्रिभुवन प्र० सिन्हा, पदेन-श्री सत्यनारायण प्र० सिंह, प्रधानाध्यापक, शिक्षक-प्रतिनिधि श्री रामाधा प्र० सिन्हा।

● वस्त्र-विक्रेता-संघ—सभापति-श्री बनारसी लाल अग्रवाल, उप सभापति श्री सत्यनारायण प्र०, सचिव श्री अमरदेव प्र०, उप सचिव-श्री भगवान प्र० अग्रवाल एवं श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, कोषाध्यक्ष-श्री विजय कुमार गुप्त, अंकेक्षक-श्री पारस प्रसाद।

● खुदरा किराना-विक्रेता-संघ सभापति-श्री भागवत प्र०, उप सभापति श्री विश्वनाथ प्र० अग्रहरी, सचिव-श्री कृष्णनाथ तिवारी, उप सचिव-श्री लक्ष्मण प्रसाद, कोषाध्यक्ष-श्री वैद्यनाथ प्र०; अंकेक्षक--श्री दुखभंजन प्रसाद।

● जेनरल मर्चेन्ट एसोसिएशन—सभापति-श्री विनोद अग्रवाल, उप सभापति श्री मुकुटधारी प्र०, सचिव-श्री विश्वनाथ प्र०, उप सचिव श्री शिवकुमार, कोषाध्यक्ष-श्री वासुदेव प्र०, अंकेक्षक-श्री पवन कुमार मगोदिया, संयोजक-श्री संतोष कुमार।

● नटराज सेवा संगम—अध्यक्ष-श्री जगदीश प्र० सीकरिया, उपाध्यक्ष-श्री भागवत प्र०, सचिव-श्री आर्यानन्द प्र०, उप सचिव-श्री मुकुन्द लाल, अंकेक्षक-श्री दुखभंजन प्रसाद।

● वीणा कला परिषद्—संचालन समिति-अध्यक्ष श्री राजेश्वर प्र० सिंह, उपाध्यक्ष-श्री दिनेश त्रिपाठी एवं श्री राम अवध सिंह, प्रधान सचिव-श्री राजनन्दन प्र० राय, सहसचिव-श्री नारायण सिंह। कलाकार-समिति-अध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव, सचिव--श्री रामनाथ प्र० गुप्त, कोषाध्यक्ष श्री अशोक गुप्त, निर्देशक भरत कलाकार एवं हृदयानन्द प्र० गुप्त।

● नगरपालिका नवचेतन संघ—सन् १९७४ में डा० पी० डी० सिन्हा एवं श्री रामेश्वर तिवारी के प्रयास से स्थापित इस संस्था ने अपने उद्भव के प्रारंभिक वर्षों में नगर के सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। इस संस्था के प्रमुख पदाधिकारी निम्नलिखित रहे हैं— श्री किशन लाल अग्रवाल, श्री रामेश्वर प्र० जालान, श्री पी० डी० सिन्हा, श्री रामेश्वर तिवारी, श्री कन्हैया प्र०, श्री गगनदेव प्र० सिंह।

● लायन्स क्लब—कृपया पृष्ठ १६३ देखें।

● लियो क्लब—२५ वर्ष से कम उम्र के युवकों के लिए १८ जनवरी, १९७१ को स्थापित इस क्लब ने रक्सौल नगरपालिका के कर्मचारियों की हड़ताल के समय नगर-सफाई, बाढ़-पीड़ित लोगों की सहायता, सिनेमा चौक के पास सड़क-मरम्मती जैसे कुछ महत्वपूर्ण काम किए हैं। कुछ अतीत और वर्त्तमान के सक्रिय लियो अधिकारियों-सदस्यों के नाम यों हैं—सर्वश्री प्रमोद कुमार सीकरिया, वीरेन्द्र किशोर शाह, उमेश कुमार अन्थोनी, रजेन्द्र कुमार भरतिया, सुरेश कुमार सीकरिया, राजेन्द्र प्र० गुप्त, कृष्ण मुरारी गुप्त, प्रेम कुमार गर्ग, रमेश चन्द्र शाह, नरेश कुमार गोयल, पवन कुमार सराफ, पवन कुमार मस्करा, यतीन्द्र कुमार खेतान, मोती खेतान, सत्यनारायण अग्रवाल, चिरंजीवी लाल शर्मा, चन्दनदत्त गुप्ता, श्रवण कुमार रूंगटा, ओम्प्रकाश मेवानी एवं शैलेन्द्र 'सुमन'। इस संस्था के उद्भव-विकास में वीरगंज के लब्ध-प्रतिष्ठ समाज-सेवी सर्वश्री हरि प्र० गिरि, द्वारका प्र० सीकरिया, चिरंजीवीलाल सरावगी, शंकर लाल केडिया एवं रविभूषण शर्मा का विशेष योगदान है।

● जातीय समितियां—मारवाड़ी सेवा समिति, वैश्व सेवा समिति, कुशवाहा क्षत्रीय सेवा-समिति, रौनियार सेवा-समिति, बिआहुत सेवा-समिति, सिन्धी समाज, आदि नामों से कई जातीय संस्थाएँ काम कर रही हैं, जिनके अधिकारी-सदस्य इन संस्थाओं के उन्नयन में क्रियाशील हैं।

● ट्रष्ट—२ जून १९७७ को स्थापित सरस्वती देवी महादेव सीकरिया सेवा ट्रष्ट के अध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद सीकरिया हैं। 'भरतिया' सेवा ट्रस्ट भी यहाँ कार्यरत है।

● हिन्दी साहित्य परिषद्—(तदर्थ समिति)—संयोजक श्री गगनदेव प्र० सिंह; सदस्य—सर्वश्री ओम्प्रकाश राजपाल, चन्द्रेश्वर प्र० वर्मा, कन्हैया प्र०, रमाकान्त झा, बी० के० शास्त्री, तुलसी 'अरुण', अनिल कुमार 'अनल' एवं शैलेन्द्र 'सुमन'।

● पत्रकार-संघ—अध्यक्ष—श्री श्रीनिवास मस्करा; सचिव-श्री अर्जुन सिंह

भारतीय ।

● रक्सौल नगर जनता पार्टी-नये चुनाव के अनुसार अध्यक्ष श्री वृजलाल अग्रवाल ।

● रक्सौल प्रखंड जनता पार्टी—अध्यक्ष श्री शत्रुघ्न सिंह (अधिवक्ता)

● कांग्रेस (इ०) अध्यक्ष-श्री बनारसीलाल अग्रवाल; सचिव श्री लाल परेखा मिश्र ।

● कांग्रेस – अध्यक्ष श्री इब्राहिम मियां, सचिव श्री राजनन्दन प्र० राय ।

● जिला जनता पार्टी सदस्य—सर्वश्री राधा पांडेय, लक्ष्मी सिंह, शंकर प्र० यादव ।

● मारवाड़ी सेवा समिति – अध्यक्ष-श्री रामेश्वर प्र० जालान, उपाध्यक्ष श्री ज्वाला प्र० सीकरिया; सचिव-श्री वृजलाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष श्री श्रवण कुमार मस्करा ।

● पंचायती मंदिर—अध्यक्ष श्री महादेव सीकरिया; सचिव श्री परमेश्वर प्र० रूंगटा; उपसचिव एवं कोषाध्यक्ष-श्री रामदेव प्र० बजाज ।

● रामजानकी मंदिर—अध्यक्ष-श्री शिवजी प्र०; उपाध्यक्ष श्री बिन्दा सिंह; सचिव श्री प्रहलाद प्र०; उपसचिव श्री शिववचन प्र०; कोषाध्यक्ष-श्री वैद्यनाथ प्रसाद ।

● गौशाला—अध्यक्ष श्री मोतीलाल अग्रवाल; सचिव श्री बिन्दा सिंह; उप-सचिव श्री श्याम सुन्दर सर्राफ । पृष्ठ १७९ पर भूल से श्री बिन्दा सिंह के लिए 'सचिव' के स्थान पर 'अध्यक्ष' मुद्रित हो गया है ।

२५. रक्सौल के व्यक्तित्व चित्रों में

रक्सौल के जिन व्यक्तियों की चर्चा इस पुस्तक में शब्दों द्वारा हुई है, उन सबके ब्लॉक उपलब्ध नहीं हो सके। जिनके ब्लॉक पूर्वनिर्मित थे, उन्हीं का उपयोग इस पुस्तक में किया जा सका है। शीघ्रता में बहुत कम लोगों के नये ब्लॉक बन सके हैं। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के ब्लॉक, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रणयन-प्रकाशन में विशेष योगदान दिया है, पुस्तक के प्रारंभिक पृष्ठों में मुद्रित हैं।

ब्लॉक-मुद्रण का कोई निश्चित-क्रम नहीं है। जैसे-जैसे ब्लॉक उपलब्ध होते गए, वैसे-वैसे उन्हें समाविष्ट किया गया है। प्रत्येक ब्लॉक के साथ उस विशिष्ट व्यक्ति का नाम तथा कोष्ट में पृष्ठ-संख्या अंकित है, जिस पृष्ठ पर उस व्यक्ति की विशेष चर्चा है।

दिवंगत विभूतियां

हजारीमल जी (१६६)
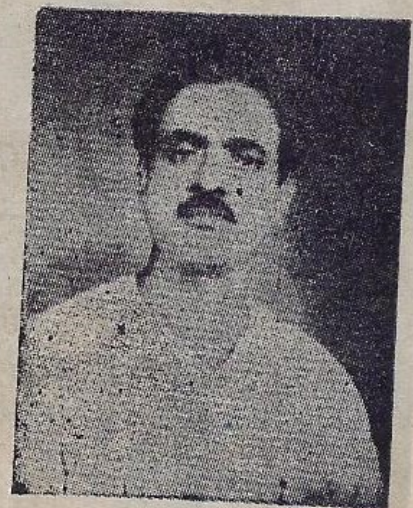
अखिलानन्द जी (१६८)
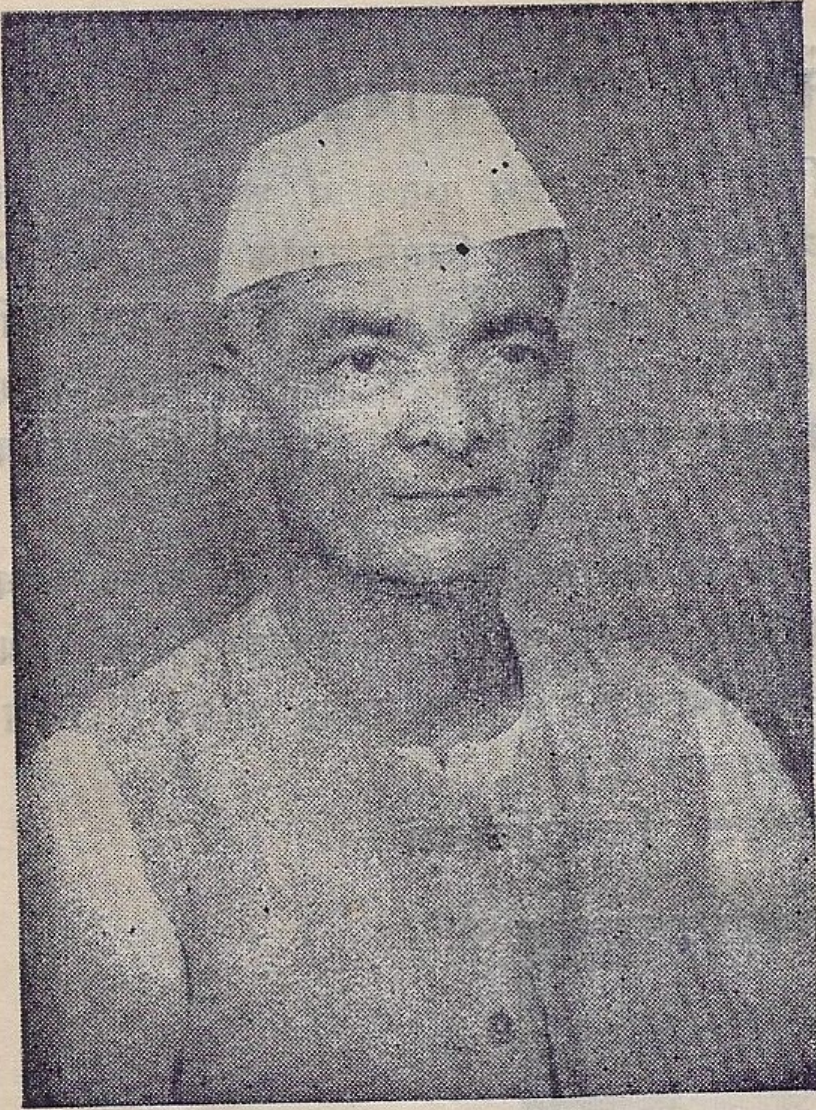
श्री प्रेमचन्द्र (१६९)

श्री जगत्‌नारायण साह
(१३८)

श्री मदनमोहन गुप्त (१६९)

श्री राधाकृष्ण मिश्र 'विजय' (१३७)
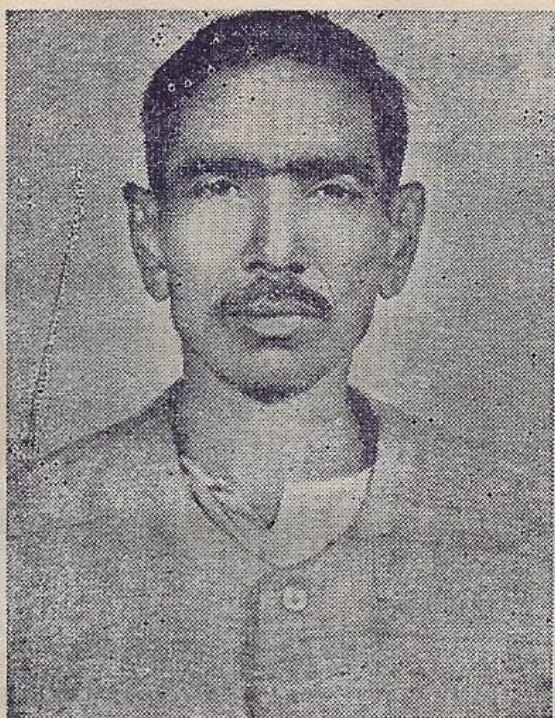
श्री रामगोविन्द राम (१६८)

श्री कमलाकांत ठाकुर (१५०)

श्री रामचन्द्र प्र० साह (१६६)

श्री श्रीलाल भरतिया (१६८)

जिनका योगदान आज भी रक्सौल को सुलभ है
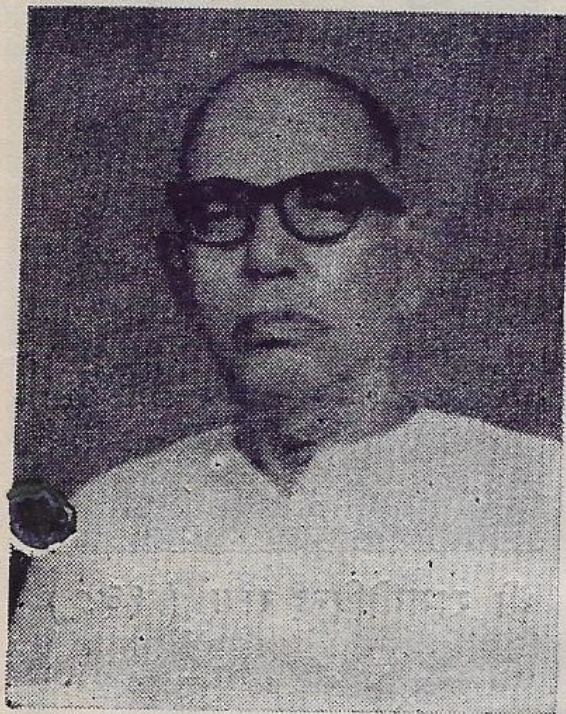
श्री राधा पांडेय (१७९)
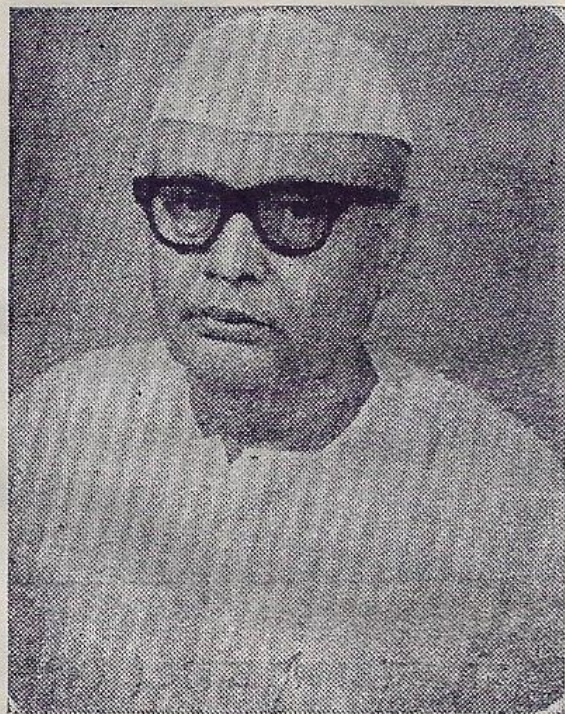
श्री रामसुन्दर तिवारी (१८०)
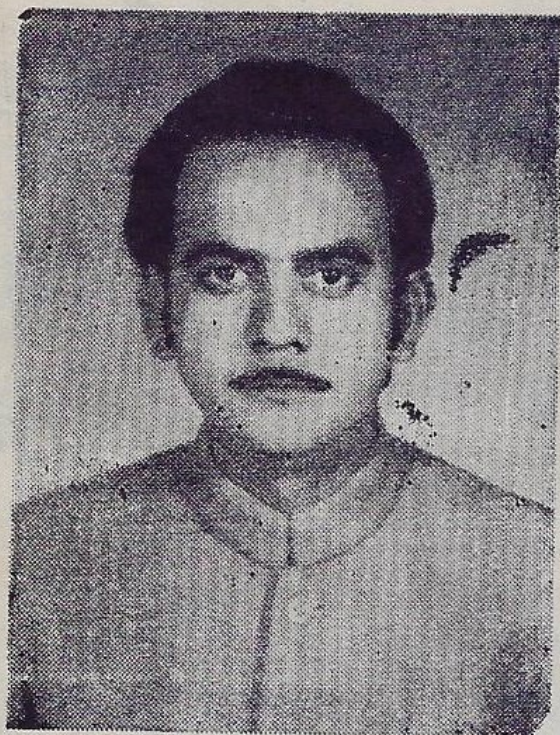
श्री सगीर अहमद (१८१)

श्री त्रिभुवन प्र० सिन्हा (१६३)
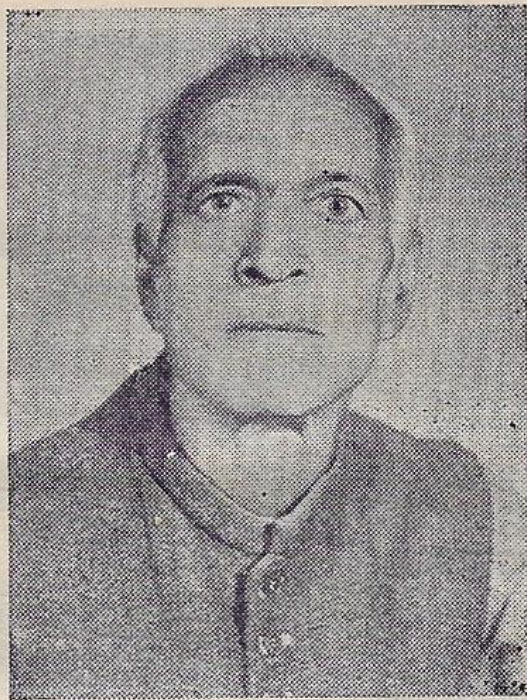
श्री रामयश शर्मा (१२४)

श्री सत्यनारायण प्र० सिंह (१२४)
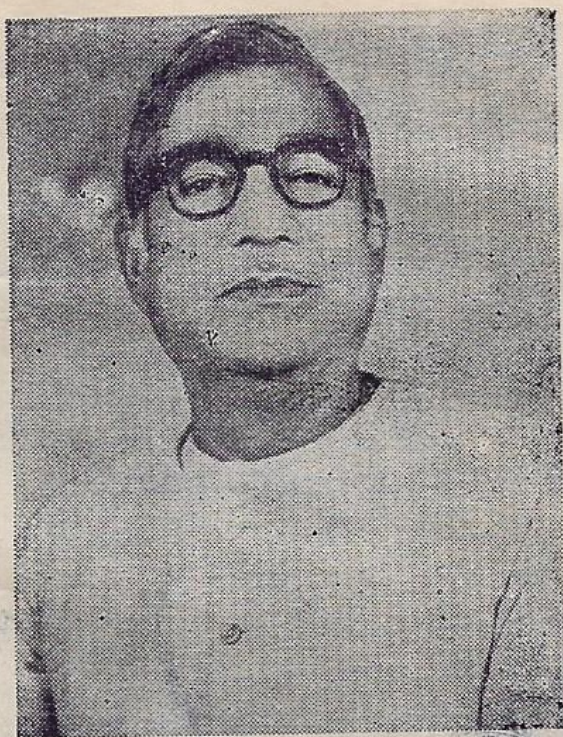
श्री वनारसी लाल अग्रवाल (१७४)
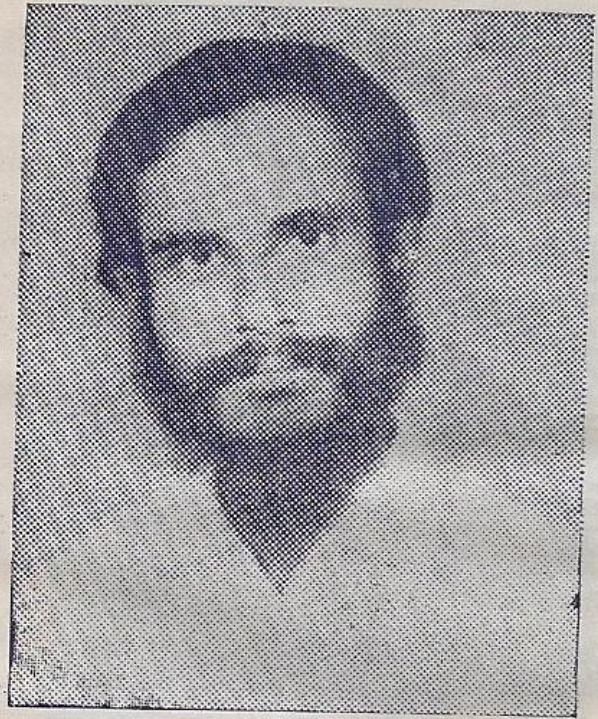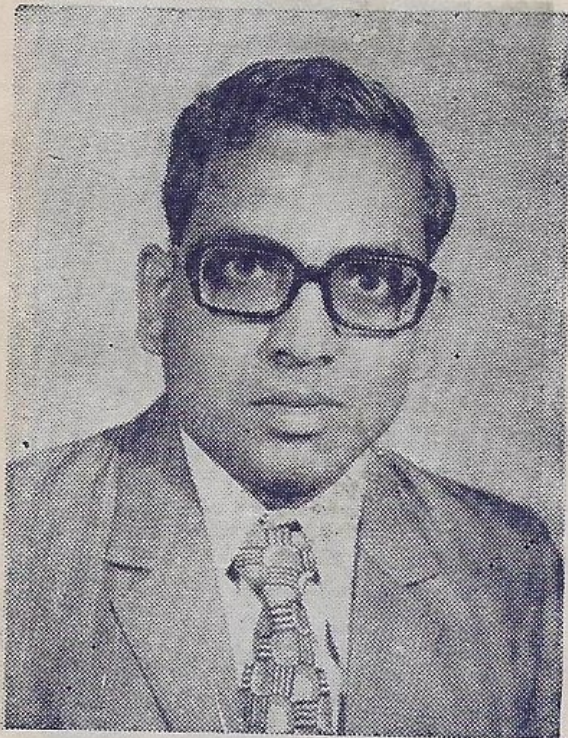
श्री जगदेव सिंह (१७७)

श्री बद्री प्रसाद सीकरिया (१६३)

श्री भरत प्र० आर्य (१५८)

श्री श्रवण कुमार हलवासिया (१६३)

श्री सुशील कुमार सीकरिया (१६३)

श्री रामदयाल प्र० सिंह (१७७)

श्री रामजीवन प्र० (११४)

श्री काशीनाथ शर्मा (१२३)

श्री लक्ष्मी प्र० (१२३)
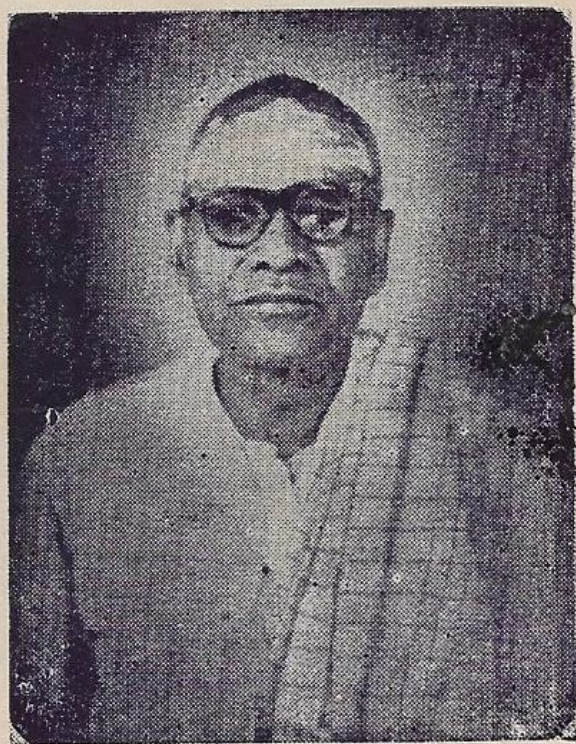
श्री गौरीशंकर प्र० ११४)
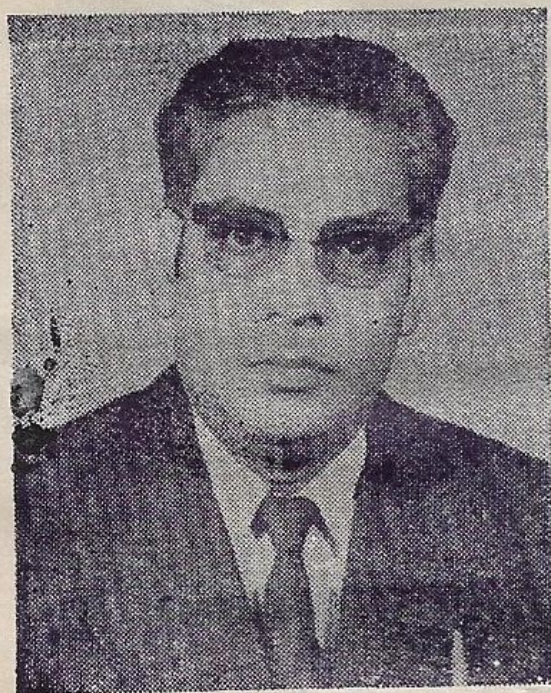
श्री जगदीश प्र० सोकरिया (१०२)

डा० म० यूसुफ (१०२)

डा० आफताब आलम (१०२)

श्री इन्द्रदेव अग्रवाल

श्री सीताराम सर्राफ (१६३)
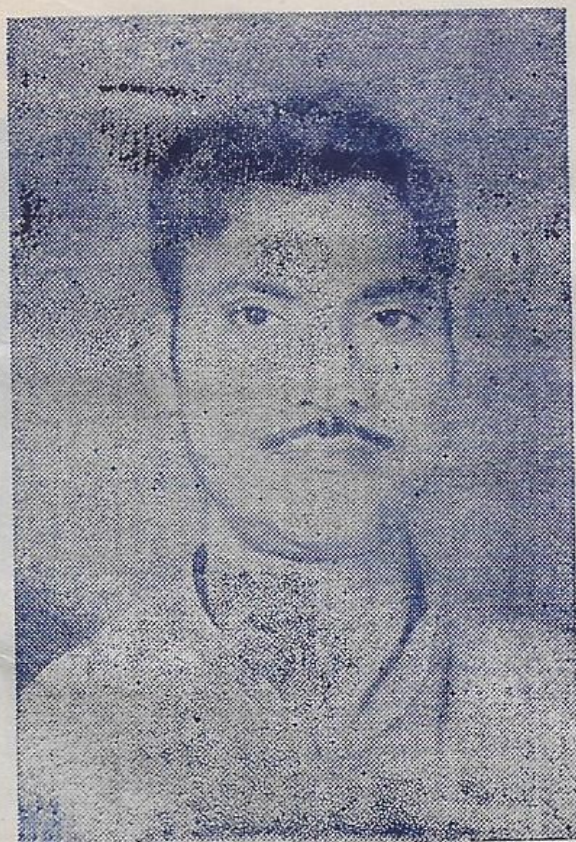
श्री विश्वनाथ अग्रहरी (२०२)
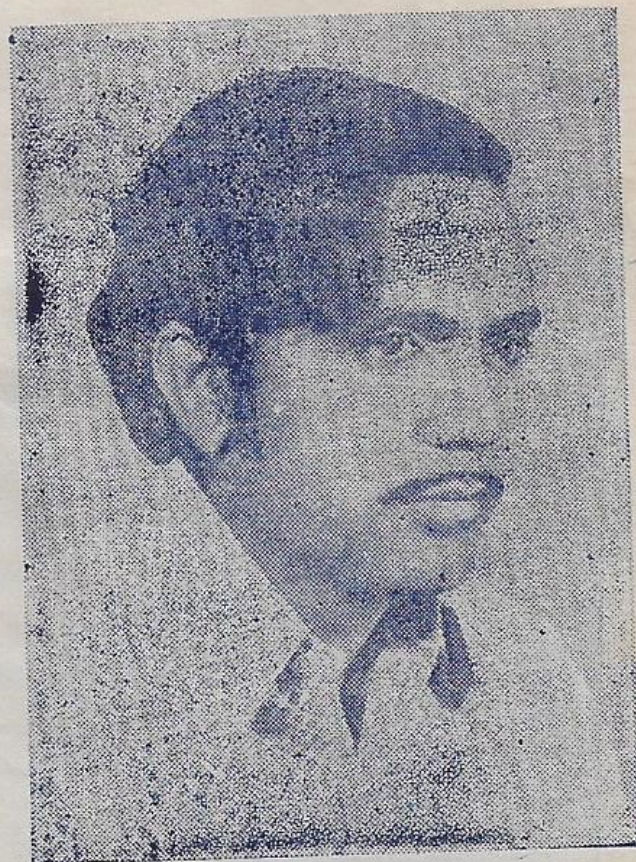
श्री रामपुकार सिंह (१६१)

श्र. श्री.निवास मस्करा (१६९)

श्री रामेश्वर तिवारी (१४०)

श्री अर्जुन सिह भारत य (१४०)

श्री रमाकांत झा (१४६)
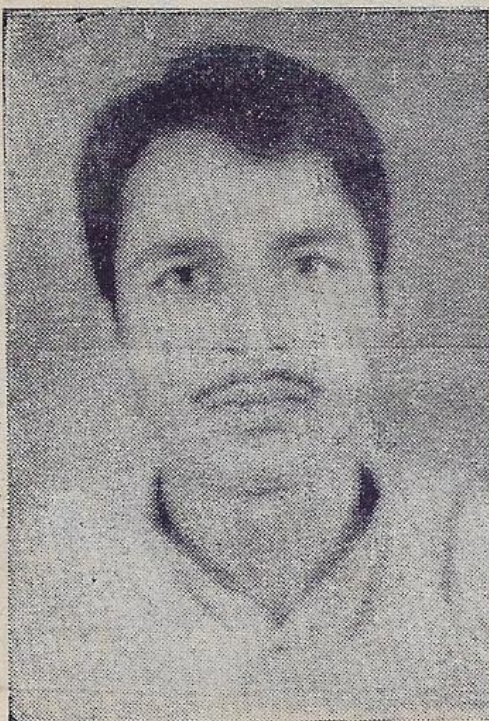
श्री रामलखीन सिंह (१६२)

श्री बी० के० शास्त्री (१७३)

श्री रामेश्वर प्र० जालान (२०४)

श्री किशन लाल अग्रवाल (१६३)

एक समूह चित्र

बायें से –सर्वश्री मानवेन्द्र कुमार गुप्त, गगनदेव प्र० सिंह, भरत प्र० आर्य, रामाज्ञा ठाकुर, कन्हैया प्र०, ओमप्रकाश राजपाल, गोपाल प्र० 'पत्रकार', साधु ठाकुर, बी० के० शास्त्री, रामनारायण राम लोहिया, रामचन्द्र आर्य एवं देवनन्दन प्रसाद ।

२६. सहायक पुस्तकें

१. Collected works of Mahatma Gandhi Vol 13

२. Collected works of Mahatma Gandhi Vol 14

३. Mahatma Vol. 1--Tendulkar

४. महादेव भाई की डायरी—दूसरा खंड—महादेव देसाई

५. चम्पारण (१९३९) - बम्ब बहादुर सिंह 'निगम'

६. India meets China in Nepal -- Giri Lal Jain.

७. Champaran District Gazetteer—P. C. Roy Chaudhury

८. नेपाल की कहानी—काशी प्र० श्रीवास्तव

९. A short history of Nepal--Netra Bahadur Thapa.

१०. Bengal & Assam : Bihar & Orrisa - G. Plyne.

११. Nepal and the world—Rishikesh Sharma.

१२. India & Nepal—Srimannarayan.

१३. A century of family Autocracy in Nepal—Regmi

१४. Champaran statistical handbook ('71).

२७. अनुक्रमणिका

(पुस्तक में आये स्थानीय व्यक्तियों के नामों की)

अखिलानन्द-१२६, १६८
अर्जु न सिंह भारतीय-१४०, १४५, १४६, १६१
अनन्त राम बनारसी लाल-७३
अनन्त बिहारीलाल दास 'इन्दु'-१४८
अनिल कुमार अनल-१३५, १४१, १४६
अब्दुल्लाह मियां- ४७
अमला प्र०- ११, १०४
अवध बिहारी सर्राफ- १७५
अवधेश कुमार गुप्त-१६१
अशर्फी साह-७१,१२५,१६७
अशोक कुमार-१५३
आदुया मिश्र १२६
आर्यानन्द प्र०- १५३,
आर. के. भरतिया-१४३
आफताब आलम-१०२, १६३
आशिक हुसेन- १२६
ओ. पी. सरावगी-१६३
ओम् प्रकाश मस्करा-१७५
ओम् प्रकाश राजपाल- १२६,१२७,१४७, १५८,१७१
उमाशंकर 'अनुज'- १४४, १४६, १४७, १५३,
इब्राहिम मियाँ ११, ११८, १२५, १४५, १४९,१७४
एकरामुलहक-११७, ११८
एन. आचार्या-१०८
एन. सी. पांडेय-१६३
एबादत हुसैन-१७५
एस. एन. राय-१००, १०२
एस. एन. सिन्हा-१००, १०२
कन्हैया प्र० (बी. एस-सी.) १२३, १४७
कमलाकांत ठाकुर-१५०,१५१,१५८,१६९
कामेश्वर सिन्हा (डा०)- १००
काशीनाथ झा-१४९
काशीनाथ शर्मा- १२३,१४७,१५९
कुँअर सिंह-१७८
कुलानन्द झा-१२७
किशन लाल अग्रवाल १३०,१६३
गगनदेव प्र० सिंह १२६,१३४,१३७,१४१, १४२,१४४,१४६,१५८
गंगाधर मिश्र- १२३
गणेश प्र० 'निर्भीक'-१३१,१३२,१३५,१६७
गंगा प्र० (प्रोफेसर)–१३०
गया राम- ७०,७५
गोपाल जी प्र० (वीरगंज)-१४९
गोपाल प्र०-१०३,११२,१३९, १४२, १४६
गौरीशंकर प्र०-११४,११८,१५८
गणेश प्र० १३९,१४७
गौरीशंकर प्र० जालान-७८
चन्द्रदेव प्र० सर्राफ-९५,१६१,१७६
चन्द्रेश्वर प्र० सिंह (वीरगंज)-१४९
चिरंजीवी लाल सरावगी-१४९
छेदीलाल अग्रवाल-१४७, १७५

छोटेलाल प्र० (आयुक्त)-९६
जगत्नारायण साह-१३८,१४०
जगदेव सिंह-१७७
जगदीश प्र० सीकरिया-७७, १०३, १४३ १५३,१५८,१६३
जयकिशुन राम-७२
जगदीश प्र० मित्तल-१६२
जयगोविन्द राम-१५८
जयचन्द्र प्र०-१५८
जफर अहमद-९६,१८३
जगन्नाथ प्र० जालान-४७, ७१, ७२, ७३ १२१, १६५
ज्वाला प्र० श्रीवास्तव-९५,९६,१२९,१३०, १८०
जहीर बाबू- ४७
जनार्दन झा-१२३, १४७
जयनारायण राम-१२३
ज्योतिनारायण सिंह-१२३
जयनारायण सिंह-१७४
ठाकुर राम महावीर प्र०-६०
डूंगरमल भरतिया-१२१,१६९
तपेसर साह-४७,४८,१००,११९,१६९
तारकेश्वर सिंह-१२३.
ताराचन्द्र अग्रवाल-११,७२,७५,११९, १२९.
तुलसी अरुण-१२४, १२५, १४५, १४६, १४७.
दारोगा लाल-११८,१२१, १२५, १२३, १३५,१६९
दारोगा महतो-११३,११८,१७७
द्वारका प्र० सीकरिया-१४७,१४९, १५८; १८४
द्वारिका प्र० चौधरी-११,४७
दिनेश त्रिपाठी-९६,१२७,१५३,१६२
दुखभंजन प्र०-१२७
देवनारायण शास्त्री-११५, ११६, ११८, १७२
धरीक्षण प्र०-६१, ८८
ध्रुवनारायण मिश्र-१२६
नन्दकिशोर सीकरिया-५१;७५,१०३;१५८
नन्दलाल 'इन्कलाबी'-१३६; १४६, १५४
नन्दलाल प्र०-१४३,१४४,१४६,१७०
नारायण प्र०-१५३
नारायण जी झा-१३०
नारायण सिंह-१७५
नागेश कुमार वर्मा-१६२
निर्गुण राम-१७४
नेक महमद अंसारी--१७५
प्रभाषचन्द्र गुप्त-१६१
प्रमोद कुमार मल्लिक-१५३
प्रभुनाथ प्र०–९६
प्रह्लाद प्र०-१२७
पन्नालाल कलाकार-१५४
पवन कुमार अग्रवाल-१२९
परमेश्वर प्र० रूंगटा-२०४
प्रभुनाथ पांडेय-१४७
पुरुषोत्तम लाल सीकरिया–१५१
पुष्परंजन मल्लिक–१०१,१०२,१२६
प्रेमचन्द्र-१२२, १२३, १२४, १२७, १४७
पृथ्वीचन्द्र प्र०-१२९ १४६,१४७
पी. डी. सिन्हा- १०१, १२७, १४२; १४७,१५४,१६३,१८२
पी. के. सराफ-१४३
बंगाली कुंअर-९५,१००,१०१

बनारसी दास दीक्षित-१०२
बब्बन मिश्र-१२३,१२४,१४६,१४७, १४९ १६२
बदरुलहसन-१२३,१३६,१४७
बनारसी लाल-१७४
बद्री प्र० सीकरिया-१६३
बालकृष्ण दास (प्रो०)-१३०
बी. एन. देव-१०२
बी. के. शाह-१४३
बी. के. शास्त्री-१२६, १२७, १३४,१४२, १५२,१७३
बिन्दा प्र० (डा० - १०२
बिन्दा सिंह-१७८
भरत प्र० आर्य- १४२ १४६, १४७, १५३, १५८
भरत कलाकार.१५३
भरत प्र० वृजनाथ प्र०-७४
भागवत प्र०-१५३, १७२
भरत प्र०-१२७
भूदेव नारायण सिंह-१७२
मजीद हुसैन-११
मदनमोहन झा-१७५,
महादेव सीकरिया-११,१२१.१४६,१४७, १५३
महावीर प्र०-(वीरगंज)-११
महावीर प्र० चौधरी-४७,६०
मदन प्र० कलाकार-१५३
महावीर 'मयंक'- १४९
महावीर प्र० (डा.)-१००
महेश्वर झा-१३०
महेन्द्रदेव नारायण सिन्हा-१०२
मदनमोहन गुप्त-११२,११३,११८, १३२, १३३,१३५,१३६,१३७,१४७,१६९
महेन्द्र सिंह-११३, ११८
मानवेन्द्र कुमार गुप्त- १४६
मनमोध साह-४८,७२
मुन्ना लाल अग्रवाल-१५६,१६५
मोहन प्र० (डा.)-१०३
मोहन लाल गुप्त-१४६.१४७
मोहनलाल अग्रवाल-७५
मुशहर साह बैंगा राम-६०,६१
मुन्द्रिका सिंह-७७,७८,१२७,१४२, १४६, १४७,१६३,१८३
मीना ठाकुर-४७
मुकुन्दी लाल-१५३
यमुना प्र० सिंह (डा.)-१०३
यादवचन्द्र पांडेय-११३,११४,११८, १३३, १३६
यूसुफ (डा०)-१०२,१६३
यू. के. अन्थोनी-१४३
योगेन्द्र मिश्र-१४५
योगानन्द पांडेय-१२६
रतनलाल मस्करा-५२,५३,७२,७३, १६६
रघुनाथ प्र० भरतिया-११६,११९,१२७
रघुनाथ प्र० (प्रो०) १३०
रघुवीर राम गया राम ७४
रब्बानी (म०) १२३
रफीक (म०) १७५
रमाकान्त झा-१२३,१४६,१४७
रतिरंजन प्र० (प्रो०) १३०
रमेशचन्द्र झा ९;१३,११८,१३३,१३५
रामजी प्र० (पकहा) १४९
रामउग्रह राम-११२
रामनाथ प्र० कलाकार-१५३
रामावतार शर्मा-१५३
राधामोहन पाठक-१६२
राजमीवन प्रसाद-११,११४,११८

रामसकल पांडेय-४५,१०१.१२१
रामधारी भगत-४७
रामधारी साह-४७,७२
रामगोविन्द राम-४७,४८,[illegible],७२,९५,
१२१,१५१ १६७ १५५
रामदयाल सिंह-५३
रामफल साह ज्ञानी राम-६०
रामेश्वर लाल मस्करा-९५,१२९
रामलखन प्र० गुप्त-९५
रामचन्द्र प्र० रौनियार-१००,१२५,१६६
रामवचन मिश्र, वैद्य-१०१
रामनाथ प्र० (डा० १०२
रामएकवाल सिंह (डा०) १०२
राजनन्दन प्र० राय-१५३,१७०
रामलवलीन सिंह-१६२
रामज्ञान राम, स्वर्णकार-१५८
रामरीझन पांडेय-१२१.१२२,१६७
रामाकृष्ण अग्रवाल-१७८ १८७
रामेश्वर प्र० जालान-२०४
रामसुन्दर तिवारी-११३.११८.१८०
राधा पांडेय-११५,११८.१२५,१२९,१७९
राधाकृष्ण मिश्र विजय-११५,१२०
राजेन्द्र कुमार गुप्त ११८
रामानन्द पांडेय १४९
रामदयाल प्र० सिन्हा-१२२,१२३
रघुनाथ प्र० शिक्षक-१२२,१२५,१४७
रामचन्द्र आर्य १५८
रामदयाल पांडेय १२८,१३३,१४८
रामाद्या प्र० सिन्हा-१२३
रामदयाल प्र० सिंह-१७७
रामजी लाल अग्रवाल-१४९
राम प्रकार सिंह-१६१
रामएकवाल सिंह (शिक्षक -१२३
रामयश शर्मा १२४ १४७
रामनारायण राम लोहिया-१२६,१७३
रामाज्ञा राम-१२७
रामाशीष प्र० रावत १२९
रामचन्द्र प्र० गुप्त (प्रो०)-१३०
राजाजोशी (प्रो०) १३०
रामेश्वर तिवारी १४०,१४३,१४४, १४६,
१४७,१६३
रामाज्ञा ठाकुर-१४२,१४६, १५८, १७२,
१८४
रामेश्वर गुप्त-१४५,१४७
राजेन्द्र पटेल-१४७
राजेश्वर सिंह-१५२
लक्ष्मण नारायण मस्करा-७१
लक्ष्मीनारायण झा-११३
लक्ष्मी सिंह-११३;११८,१६९
लक्ष्मी प्र०-१२३
लालबहादुर सिंह-१७९
लालधारी साह-४७
लालपरेखा मिश्र-१२९,१३०,१७०
लाल बाबू रूंगटा-१६३
बलिराम प्र०-१७५
ब्रह्मदेव राम-११४,११७,११८,१३१,१३२, [illegible],
१३५,१५६
ब्रह्मदेव पुष्कर १३४,१४६
व्रिजनन्दन प्र० (प्रो०-१३०
व्यास पांडेय-११३,१२०,१२१
वासुदेव हो०-८१
विन्ध्याचल प्र० क्रोमर-१५३,१५८
विजय कुमार-९६,१८२
विजय कुमार पांडेय-(प्रो०)-१३०, १४६

विद्यानन्द सिंह (शिक्षक):१२३,१६२
विश्वनाथ प्र० (मुरला)-१३६
विन्ध्याचल सिंह-१५०
वीरप्रकाश तापड़िया-१५९,२०२
वीरशमशेर सिंह-५३,१२१,१२५,१६५
वैद्यनाथ प्र० (वादक - १५१
वैद्यनाथ प्र० (शिक्षक)-१२६
वैद्यनाथ प्र० गुप्त-१९४
वृजलाल अग्रवाल-९६ १७१
वृजकिशोर कुमार (डा०)-१०२
शफी (महमद -१२८,१७१
शंकर लाल मस्करा-१३३;१३५
शंकर लाल केडिया-१४२;१४९
श्रवण कुमार हलवासिया-१६३
श्याम सुन्दर प्र०-१६४
श्याम नारायण वर्मा-१५२
श्याम सुन्दर सर्राफ-१७१
शिवकुमार भरतिया-१६३
शिवनाथ गुप्त (आयुक्त)-९६;१४७, १५३
शिवशंकर प्र०-१०७,१७६
शिवेन्द्र कुमार सिंह- १४७, १६१; १६२, १७८
श्रीलाल भरलिया ७२,१०५, १२१, १२२, १३५,१४८,१६७
श्रीनिवास मस्करा-[illegible],१३२,१४३,१४९,२०३
शैलेन्द्र र मन १४२,१४६
सगीर अ हमद १२३, १२७, १४२, १५२, १६२ १६३,१८०
सत्यनारायण प्र० सिंह-१२४,१४६, १४७
सरयुग राम वंशरियावाले- १५८
सत्यनारायण प्र० गुप्त-७७,१८३
सत्यप्रकाश-१५३
सत्यनारायण प्र० जालान-७८
सतीशचन्द्र सिन्हा--१२३
सुरेश कुमार सक्सेना १६३
सुरेश कुमार १६२
साधु ठाकुर-१२६
सुशील कुमार सीकरिया-१६३
सुखेन प्र० ठाकुर-१२३
सुगनामल राजपाल-१२६
सेसिल डंकन-१०४,१२१,१५६
स्ट्रौंग (डा०)-१०६,१०८
स्टीफन (मिस) १०७
सीताराम साह ११४,११८,१५६
सीताराम सर्राफ-१६३
सूर्य प्र० पत्रकार-१४५
हरिहर महतो-९६,१२७,१८२
हरिकृष्ण गुप्त (डा० -१४९
हरि प्र० जालान-११,४७,७८,९९
हजारीमल जी-७३,१२२,१६६
हरेन्द्र प्र० (डा०)-१०३
हरिनारायण गुप्त-११४,११९,१५
हरि प्र० शिक्षक)-११४,१२२
हरिहर प्र०-११८
हरेन्द्र [illegible] सिंह-१७४
हरेन्द्र प्र० (शिक्षक)-१२६
हरि प्र० गिरि १४९
हृदयानन्द प्र०-१४७,१५३
हौर्न (मिस)-१०८
त्रिभुवन प्र० सिन्हा-१२३,१६३,१६